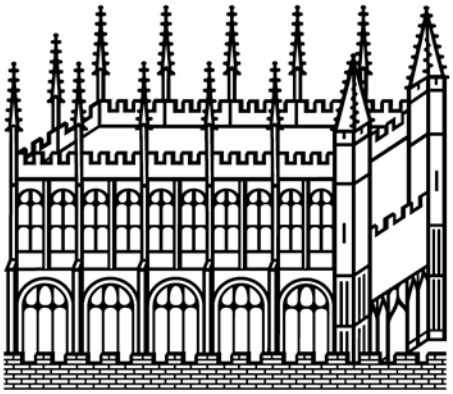


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

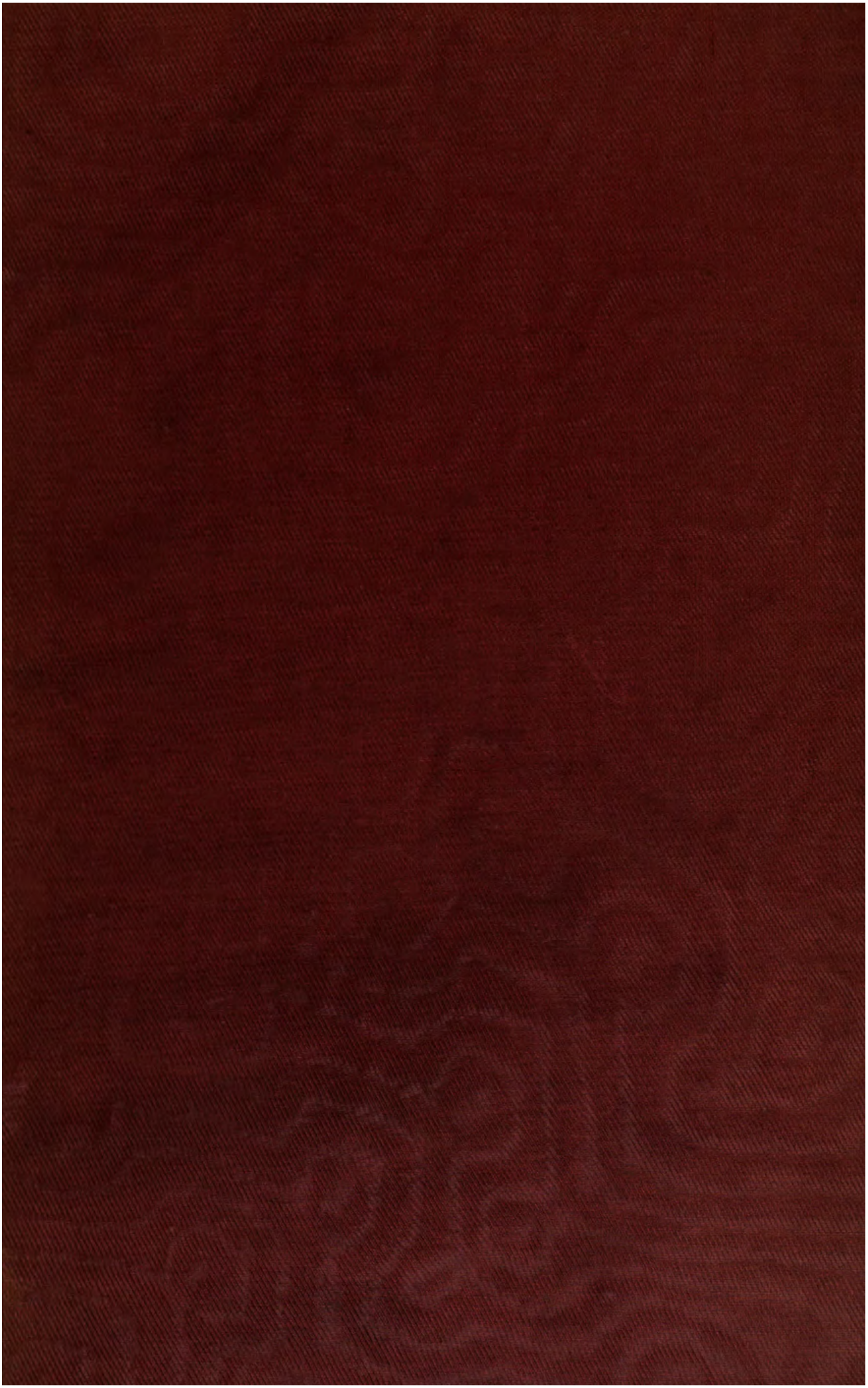
This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



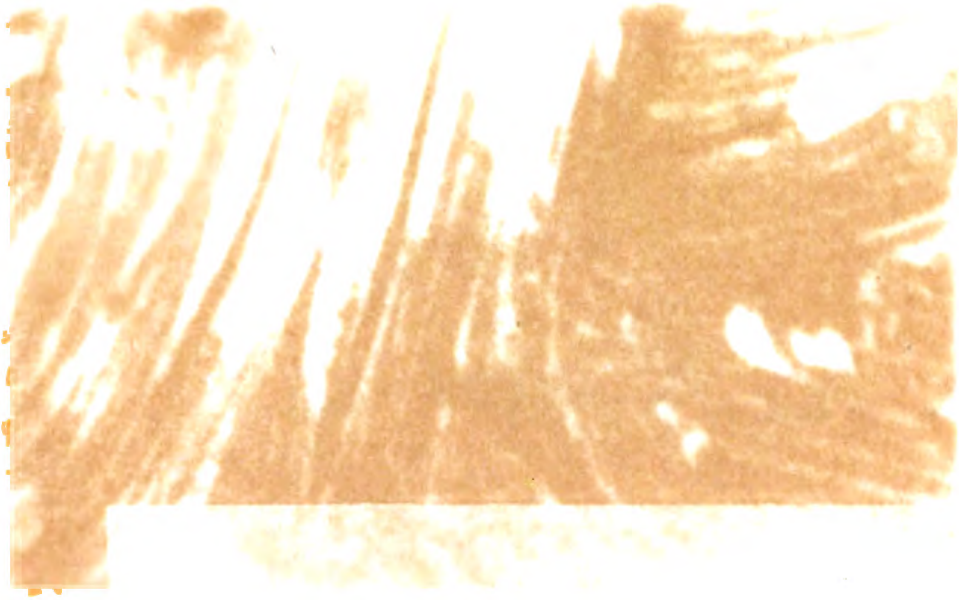
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

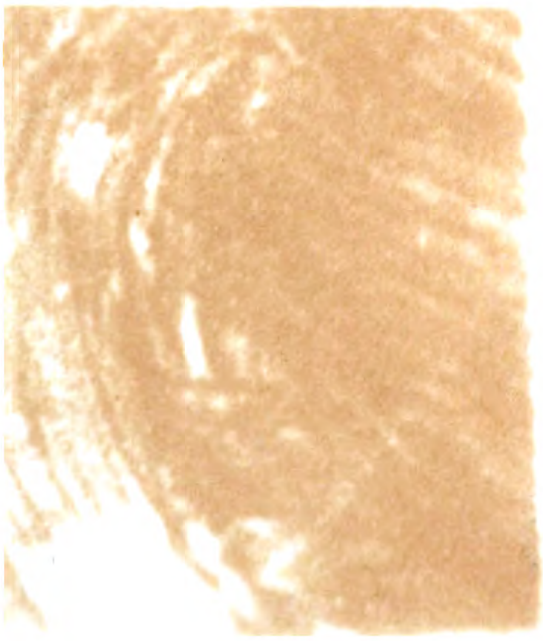


(13.C.71)

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.





Richard Rinaldanda.

Bihar Bendra Ban

सत्यनाम

बिहार बिन्द्रावन

जिसको

विहार विंद्रावनी पंथ के आचार्य्य बड़े परमार्थी शब्दाभ्यासी बोधमंत्र वेदान्त शास्त्र को आदि ले बड़े २ शास्त्रों के ज्ञाता श्रुत स्वी आगरे की मकीगली के रहने वाले श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप बिन्द्रावनजी

ने

वेदान्त विद्याभिलाषी परानुरागी संतसेवी चारों पदार्थों के चाहने वाले सत्संगी हरिभक्तानुरागियों के अभीष्टसिद्ध करी यकाने लिये

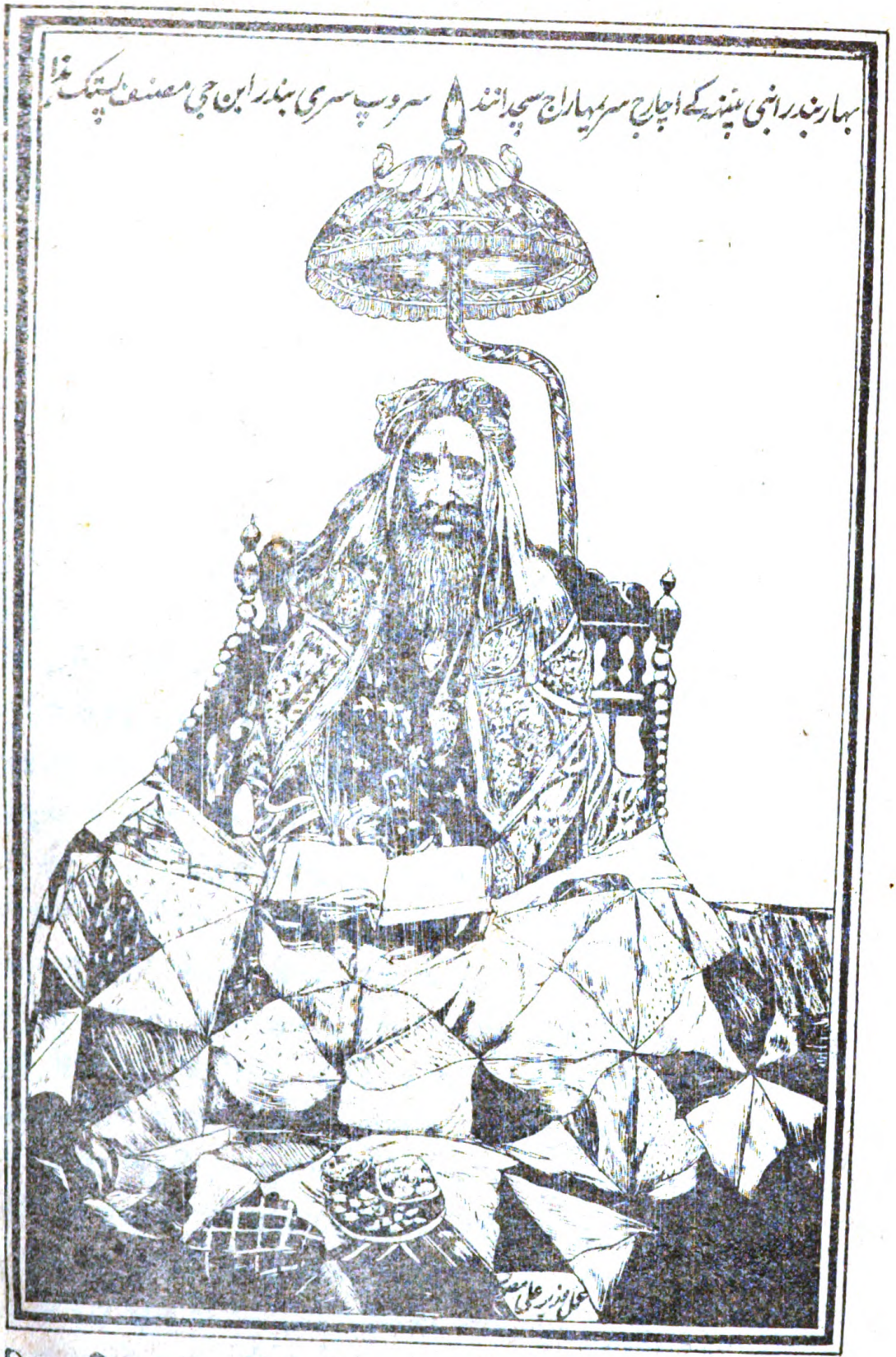
बनाई

स्यानलखनऊ

मन्शीभवलकिशोर के यंत्रालय में दूसरी बार छपी

सन १९७३ ई०

माह अगस्त ॥



विहारबिन्द्राबनी पंथके आचार्यश्री महाराजसच्चिदा
नंदस्वरूप श्रीबिंद्राबनजी ग्रिंथ कर्त्ता की मूरती॥

श्री सत्य नाम ॥

—ooo—

दोहा ॥

हरि गुरसंत अखंड हैं साखी बेद पुराण ।
बिन्द्राबन भज हृदेय से निस्चै हो कल्याण ॥

बिहार बिन्द्राबन पुस्तक का ग्रन्थकर्ता आधीनता और नम्रता पूरबक बिनै करता है कि इस मोक्ष बिहार का अवलोकन सब मतबादियों को योग्य है क्योंकि प्रथम तो इस ज्ञान रूपी उपबन में निज करके भाग दूसरे में बहुत से मतों की बाटि का परफुल्लित है और दूसरे जो शिक्षा रूपी पुष्प प्रथम और तृतिये भाग में बिकसे हुये हैं उनके अवलोकन से अनुरागियों को सुगंधित होना सब मतों के अनुसार योग्य है हां चौथे भागकी बिहार अद्वैत ज्ञाना कांक्षी कोही संतुष्टता और आनन्द का हेतु होगा और ज्ञान चाहने वालों को दिब्य दृष्टि की बिबिध समीर से बड़ा आनन्द प्राप्त होगा और उस ज्ञान का अमोल फल हाथ लगैगा परन्तु जिसका दर्पण रूपी चित्त सब प्रकार से शुद्ध और परकाशित नहीं है और जिस मुमुक्षू का अन्तः करण और भागों के बचन देखकर आरूढ़ और उतकंठित नहीं हुआ है और हृदय रूपी नेत्र ज्ञान की ओर खुले नहीं हैं उसको चौथे भाग और भूमिका के देखने से अस्त प्राप्त होना कठिन है किन्तु कठिन पीड़ा उतपन्न होने का भय है इस हेत से बिज्ञापन किया गया और पांचवें भागका देखना मानो ध्यान और बैराग बाटिका का बिहार करना है परंतु उस दसा में जबकि अभ्यन्तरी दृष्टि और सत्य

ेम हो और इतनी बिनय करनी और आवश्यक है कि साधारण बारतोक पर्दों के कारण इसका देखना बहुत सुगम है परंतु ध्येय का प्राप्त होना अहर निशिके अभ्यास बिना नहीं हो सक्ता क्योंकि मनका तृप्त होना दिन राच के भोजन बिना कठिन है और जोकि इसमें केवल मोक्ष के बिषय का बर्णन है कोई किस्सा कहानियां झगडा या केवल गाना आदि नहीं निस्संदेह इसमें मन मारेही पर अक्षयफल लाभ होगा और जब बिहार बिन्द्राबन का सम्पूरण अवलोकन होगा तो जैसा आनन्द चाहिये वैसाही प्राप्त होगा आगे अपनी अपनी इच्छा है और जो मेरी बिनय अयोग्य होय तो अपराध को क्षमा करके इस उपबन में जैसी इच्छा हो वैसे बिचरये मुझै निश्चय है कि किसी प्रकार इस का अब लोकन लाभ से रहित न होगा ॥

आगे सूचीपत्र आरम्भ हुआ इसके अवलोकन से सारे ग्रन्थ का विषय विदित होगा ॥

दोहा ॥

राम लखो निज आप में देखो निरख निहार ।
बिन्द्राबन में सांवरो कीन्ही शब्द विहार ॥

विहार बिन्द्रावन सांत वेद का सूचीपत्र ॥

भाग पहिला

———000———

गुरु की बन्दना और शब्दावली और ब्रह्म ईश्वर का निरूपण	१
सज्जन मनुष्यों के वर्णन में	१९
मीठा बोलने वाले और मिथ्यावादी यो खुशामदी के वर्णन में	२०
तरुण अवस्था के परिश्रम का फल आलसी आदमी के वर्णन में	२२
मूरखों का विनोद	२४
सलाह देने के विषय में	२६
शुद्ध चित्त मनुष्यों के विषय में	२७
जो गुण और विद्या में कुशल नहीं हैं उनके विषय में ...	२९
आदमी को अपने योग्य काम करना चाहिये ...	३२
वृथा वै करने के विषय में	३३
आव भगत के विषय में	
ईरखा करने वालों के विषय में	३५
चौसर और गंजीफा खेलने के विषय में ...	३६
नशे के विषय में	३७
कृपण का वर्णन और मूरखता की निन्दा ...	३८
शुभ कर्म में विलम्ब न लगाना घूम के विषय में ...	४३
किसी का दुःख न बढ़ाना	४९
सित्काकारी कठोर बचनों को श्रेष्ठ समझना ...	५०
शब्दावली	५१

भाग दूसरा ॥

पूर्वमीमांसा का सिद्धांत मुक्त आदि के विषय में	...		६६
न्याय और वैसेषिष तथा	...	...	७२
पातंजल और सांख्य तथा	...	...	७७
बेदांत अर्थात उत्तर मीमांसा तथा	...	...	८१
संतोंका मत तथा	...	...	८८
वैश्नव मत तथा	...	...	६३
स्वांसमत तथा	...	...	६७
सूफी अर्थात मुसल मान अद्वैत बादी तथा		...	६८
ईसाई और मुसल मानी मत तथा	...	...	१०२
नास्तक अरथात् जो करता नही मानते तथा		...	१०७
जैन मत तथा	...	...	१०६
सबदावली	...	...	१११

भाग तीसरा ॥

ममुक्षु को संदेह होना किइन मतो में से कौन मत श्रेष्ट है			१२४
पंच देव उपास कोंका बिनोद	...	...	१२६
ममुक्षु को योग्यता अनु सार वेदशास्त्र और महातमा ओंका कथन	...	...	१२८
अज्ञानियों की शिक्षा की रीत	...	...	१३५
दूसरे मतों के निन्दासे तातपरज	...	...	१३६
सब मत अपने अपने अस्थान शुद्ध हैं	...	...	१३७
निरगुण उपासना के वर्णन	...	...	१४०
धर्म बिपरजे	...	...	१४१
नाम और नेक नामी के वर्णन में	...	...	१४२
औतार और महात्माओं के कर्म के विषय में		...	१४३
गुरू की होड़ के वर्णन में	...	...	१४४
सत्संग की महिमा और सब संसार दुखिया होना		...	१४५
अपने समय को जगत के पदार्थों के हेतु वृथा खोना		...	१५०
गुरमुख अर्थात् गुरदिक्षा के वर्णन में	...	...	१५५

जगत के पदार्थों की न्यूनता में आनन्द		...	१५७
लोभ का वर्णन	...	...	१५८
मोहका वर्णन	...	...	१६०
काम का वर्णन	...	...	१६१
क्रोध का वर्णन	...	...	१६१
अहंकार वर्णन	...	...	१६२
निश्चै का फल वर्णन	...	...	१६३
त्याग वर्णन	...	...	१६४
ठाकुर पूजा तीर्थ बरत कथा के विषय में		...	१६५
शीलता वर्णन	...	...	१७०
संतोष	...	...	१७०
दया और हिंसाके बिषय में	...	...	१७३
धर्म के वर्णन में राजा हरिश्चन्द्र और जेदेव ब्राह्मण का बखान	...	...	१७४
सत्य बोलने के बिषय में	...	...	१७६
दीनता के बर्णन में	...	...	१८०
उदारता कृपिणता और साधू की रहन		...	१८१
मूर्खों का बर्णन	...	...	१८४
मारके आगे भूत भागने का बर्णन	...	...	१८६
महातमा के मिलने का फल महातमा की परीक्षा		...	१६२
जात कुल धन अवस्थाके अभिमान का बर्णन		...	१६३
सत्संग का बर्णन		...	१६६
धन स्त्री कुटम और वृद्ध अवस्था की दसा के विषय में			२००
दोहा चौपाई शब्दावली	...	...	२०४

भाग चौथा ॥

दोहा और चौपाई	...	...	२११
बेदांत के अधिकारी के वर्णन में	...	...	२१४
बेदाँतके अधिकारी और ज्ञानीके बिषय मेंकर्मकांडी का बचन		...	२१५
परम हंस का ठग्गर और वैराग्य का लच्छन		...	२१६

जगत की सत्यता के वर्णन में
कर्म कांडी का बचन
परम हंसका उत्तर
ज्ञानी को मूल सहित जगत के आभाव होने के वर्णन में ... २२८
जगत की सतता मे कर्म कांडी का वचन ... २३०
परम हंस का उत्तर और तीन सत्ता का बर्णन ... २३०
कर्म कांडी कावचन कि ब्रह्म सून्यहे औरज्ञानी के पास
कोई नहीं जाता २३३
परम हंसका उत्तर २३३
माया की अनिर बचनीयता सिद्ध करना ... २४४
जाग्रत और सुपन सृष्टि का बर्णन २४६
रेल और बिजुली के तार की सत्यता मे कर्म कांडी का वचन... २४६
प्रालब्ध के बर्णन मे २४८
जीव ब्रह्म की एकता और लक्षणा के बर्णन में ... २५३
ज्ञान किसे होता है इसके बर्णन में ... २५६
परले के बर्णन में २५६
तीन देह और पंचकोस के बर्णन में २५८
उपासना ओंकार की और समाधी के बर्णन में ... २६०
शाक्त मत के बर्णन में २६२
नास्तक मत के बर्णन में २६३
शास्त्रके परस पर के बिवाद के बर्णन में ... २६५
माया की असत्यता के बर्णन में २६५
जगत की रचना का वर्णनस्फुरना से २६६
ज्ञानी की प्रारब्ध के बर्णन में २७२
ब्रह्म और माया के बर्णन में २७३
वैकुंठ की मुक्ति के वर्णन में २७६
अस्ती भाती प्रिये के बर्णन में २७७
जीव ब्रह्म की एकता के विषय में
बेद शास्त्र और महातमाओं की साक्षी ... २७८
चेतन्यता ब्रह्म का स्वरूप है गुण नहीं ... २८३

न्याय सांख्य और वेदांत का भेद ... २८३
उपासना और कितनो मगतों का और पंचदेव और
भोतारों का बर्णन २८५
चौपाई और शब्दावली २९५
भाग चौथा निरा छन्दा बन्दी का ३०१

भाग पांचवां ॥

संतोष और बैराग के बर्णन में ४०७
नाद की उपासना के बर्णन में ४१६
संतों की साख नादकी, उपासनाके विषय में ... ४१८
शब्दावली ४२२
श्री सतगुर राम जीके पंथ के श्री महंत वा कुछ कुछ
साधों वा कुछ भगतों की शब्दावली ॥ ... ४२५

शब्दावली का सूचीपत्र ॥

भाग पहिला ॥

———000———

चौपाई—गुर महिमा संतन सब कीनी १
छन्द—कंजा कमल के दाहिने सुरती लगाओ प्रेम से २
ककहरा—येक ओंकार सतगुर परसादा ३
चौपाई—जो नर सतगुर राम धिआवै ५
बीनती—मैं आधीन दीनगत मोरी ६
वाहगुरूनामा-यहदुनिया जाय कयामनहीं ७
बारहमासा—असाढ मास बरखारुतो १२
होली—होली को साज कहोरी १२
होली—पल पल में शब्द से रचनारी १३
बसंत—जागो जागो सखीरी टुक उठ बैठो १३
बसंत—संत मिलन यह बसंत सखीरी १३
होली—आगलगै होली जल बल जाय १४
होली—होली होली हो रही तू कहां पड़ी सोवैरी १४
शेर—तेरीही ज़ात को वक़ा है मुदाम १४
रेखता—हम से मत मिलो लोगो ४८
ग़ज़ल—गुरतेग वहादुर ने बनाये हैं सभी काम ५१
रेखता—गुरकी टहल करता नहीं ५१
काफी—तू चेला है तुझे यह आपा मूल ५२
ग़ज़ल—गौर कर ऐसा रतन अन मोल फेंका जायगा ५२
रेखता—करूं तजबीज क्या इसकी ५३
काफी—सुन सुन मनतू अनहद ५३
ग़ज़ल—दरद भी देखा बेदरदी ५३
तिल्लाना—सुरतिया यारे घर जायलो ५४
सोरठा—जाना जीथारो भेस ५४
ग़ज़लदेस—कीजियो सब्र नहीं बात है घबराने की ५४
काफी—तू मद माता रे माता ५५
काफी—चिंताबा घट बसियोरी ५५

बिहाग—भजन बिन माती होइयां सखियां ५६
तिल्लाना—सतसंग मनरंग फल पाई ५६
रामकली—निम दिन वाजा वजै रसाल ५६
राम कली—जकड सुरत गुइयां शब्द सुन ५७
परबंध—निरबारै निज धामी निरत निरनं ५७
होली—ऐसी होली खेल जामें सत संग रंग रगोरी ५८
एकताला—मेरे अनहद की लाग दूसरा न कोई ५८
तथा—सत चित आनन्द नित पार ब्रह्म होई ५९
टप्पा—मेरे हाल रह दिया बे भर्म जाल ५९
कमोद—लहारे धुरपर नज तन अरे नित मीता ५९
ठुमरी—पल छिन मै तोरी चाकरिया ६९
तिलाना—जी यह जुग सुमिरन वेलाहै ६०
एमन—धुन ममता रस पीजिये ६०
भैरवीं—मनमेंरा गगरिया ले मैं पनि हारिन पिया कोरे ६१
येमन—दम चला गिरा कर गागरी ६१
धुरपद—तेरे माहि शब्द सारजा में पैठ ले दीदार ६१
कहरवा—दांहां तिल वाहा तिल दोनो इक होयरे ६२
अडिल—गुर हैं दीनदयाल लखावै अगमको ६२
शब्द—मनमेंदेखो निरख निहारा ६३
होली—समपत रतन सखी यहु चलीरी ६३
शब्द—जो नहि राम नाम भयो चेरो ६४
शब्द—गुर कही भली एक बातरी ६४
जैतश्री—काहे आपनपौ विस रायो ६४
गौरी—प्यारे बिष यन मत लपटानो ६४
बसंत—लख प्रथम बचन को कर बिचार ६५
रेखता—चढ़ूं किस भांत गगना पर गले जंजीर डाली है ६५
टप्पा—नामरस पीजेरी अबमत भूलो राम ६५
कहरवा—दाहां कर वाहां कर दोनो एक होयरे ६६
शब्द—श्याम सुंदर छबि मोहि मोहाई ६६
लटका—देखो एक नारी निहारी न जाय ६६

लटका—ज़ालम ग़ज़ब ज़माना बड़ों की छोट न माना ६६
कल्याण—नाम रस पीजे जी पीजे जी पीजे ६७

भाग दूसरा ॥

छन्द—बिन रूप रेखा सार पद जिस को कहा पूरन सभो १११
अलिफनामा— ११२
होली—होली आई मोकों भाई ११६
होली—विन्द्रबन ऐसे होली खेल ११६
काफी—सत गुर राम कहो मेरे प्यारे ११६
शब्द—सतगुर राम जपै मेरा जीया ११७
हिंडोला—हिंडोला झूलैं सतगुर राम ११७
हिंडोला—झूलत लेत नइ नइ तान ११७
शब्द—प्यारे मन ढूंढ सोई अपना ११७
रेखता—समझलो बूझ लो प्यारे ११८
शब्द—मेरा मन मुझे नचाइ रहा ११८
भक्तज्ञान—सम्वाद ११८

तीसरा भाग ॥

चौपाई—नरतन उनका जानो अमोला २०४
चौपाई—तज तू मोह विषै को मीता २०५
सवैया—खान मिला अरु पान मिला बहु मान मिला दिन
दिन अधिक मिला २०६
चौपाई—जीवन जगको सुपना होई २०६
सवैया—काम नहि क्रोध नाहि २०६
चौपाई—अपने को नीचा कर मानो २०६
चौपाई—रज तम छोड़ करत सत संगा २०७
बारहमासा—असाढ पिया बिन भारी २८०

चौथा भाग ॥

चौपाई—पूर्ण ब्रह्म ज्ञान जब होई २९५
चौपाई—कच्चा भुना अन्न जस होई २९६
चौपाई—हे स्वामी एक संसे आई २९०
मसनवी— २९०

पांचवां भाग ॥

लावनी— ४२२
मलार— ४२३
मलार— ४२३
लटका— ४२४
मंगल— ४२४
आरती— ४२५

———000———

१ ओं सतगुर प्रसादि ॥

श्री वाह गुरू सतगुरू राम अनाद

आदगुरएनमः युगादगुरएनमः

सतगुरएनमः श्रीगुरदेवआएनमः

श्रीगणेशायनमः ॥

भाग पहिला विहार विन्द्राबन सांत वेद का ॥

दोहा ॥

करौं बन्दना दण्डवत नानक शाह महबूब ।
दशौं दिशा में रमि रहे व्यापक जलथलदूब ॥

विन्द्राबन जहं परघटे सतगुर नानकशाह ।
सहजे उनकी बनगई शब्द रहे लौलाह ॥

चौपाई ॥

गुरु महिमा संतन सब कीन्ही । आखवेद एहीसिखदीन्ही ॥
रोम रोम जिह्वा होजावै । नहिंजसगुरुतमवरननआवै॥
रवि शशि ये सब जगदरसावा । घटका भेद गुरू से पावा ॥
गोपी ग्वाल कृष्ण घटमाहीं । गोवरधन लीलातेहिठाहीं ॥
राम अयोध्या तन विच देखा । गंगा यमुनासरस्वतिलेखा ॥
सरयू चार धाम दरसावा । गुरुबिनभेद कोईनहिंपावा ॥
सब रचना कर्ता दिखलाई । कर्ताको गुरुदीन्ह चिन्हाई ॥
पूरण सब में एक प्रकाशा । सोई प्रकाश घटअंतरबासा ॥
कैस कस गुरु उपमा कहिजाई । विन्द्राबन चौरासिछुड़ाई ॥

दोहा ॥

वाह गुरू जो चित धरैं सो नर बड़े कुलीन ।
इस जगमें निरभय रहैं पावे मुक्ति प्रवीन ॥

सवैया ॥

सन्त मता जिन बूझपरा तिन मारग सार बिहार लयो है।
आपन रूप अरूप पछानि लियो जब काल बिडारि दयो है।
जो ममता नहिं छांड़त भूत परेत मसान समान भयो है।
देखत देखत बूझत नाहिन कौन इहां थिर बास पयो है॥
शाह फ़कीर सबी घर बार तियागि चले कछु साथ लयो है।
मायक रूप कुरूप बिषै सब लाग भयानक भेष भयो है।
नाद बिसार दियो मनही अन जान न मानत सोग नयो है।
मोछि सरूप कहे बिन्द्राबन ज्ञान बसंदर ताव तयो है॥

चौपाई ॥

एक सुमिरनजिह्वा ते होई। दूजा स्वांस सुमिरनी सोई॥
तीजे सुरत नादसों लावै। सोई शब्द ब्रह्म कहावै॥
अक्षर को नहिं नाम बतावा। नहिं अक्षरके पार लखावा॥
घर अक्षर नहिं अक्षर भाई। सार शब्द इन पार लखाई॥

दोहा ॥

सब रचना ब्रह्मांड की छिपी धरी घट मांहिं।
बाहर लखि भीतर लखो सत्य पुरुष को पाहिं॥

छंद ॥

कंजा कमल के दाहिने सुरती लगावो प्रेम से।
जैसे पपीहा स्वाति कारण मुख पसारे नेम से॥
कई भाँति उठती शब्दकी धुन हो रहा घन घोर है।
अपनी सुरतको थिरकरो झिंगा सुनो जहिंसोर है॥
पाछे से घंटा संख है चित जोड़ के उसको सुनो।
जब बांसुरी धुनि सुन पड़ै तहां ध्यानधरसुर्तसेगुनो॥
अब और सब को छोड़ के धुनि ओं में राचे रहो।
इसबीचमेंजोतीकिझिलमिलको निरखि आनंद गहो॥
शोभा जो बिन्द्रा बनके मण्डल रहसकी अति सोहनी।
सत नाम सो हंसा वरा छबि क्या कहूं चित मोहनी॥

दोहा ॥

चिन्ता छोड़ जो अड़रहे सुरत शब्द में राख ।
गुरु सहायक होत हैं सन्तों की है साख ॥

ककहरा लिख्यते ॥

एक ओंकार सतगुर परसादा । कैसे होय गुरुगुन बादा ॥
ओंनमः सिद्धं गो कहि के । पढ़ोककहरागुरपदलहिके ॥

कक्का काछकाकुकद्रोहनकीजै । कीजच्छमा को मनमें लीजै ॥
करिये दया राख संतोखा । सतगुर रामबिन्द्राबनघोखा॥
खखाखेमकुशलतमसबकीचाहो । प्रेमप्रीति हरआननिबाहो॥
आदरभाव सभी बिध करिये । दीन होयबिन्द्राबन करिये ॥
गगागोबिन्दभजनसाधकीसेवा । चितसे करो तो पाओ मेवा ॥
भूखे प्यासे की प्रतिपाला । बिन्द्राबन हो जगउजियाला ॥
घघाघरअपनातुमघटबिचजानो । लाख कहैं कोई एकनमानो ॥
ध्यान करो बिन्द्राबन मांहीं । अलखपुरस कीहै परछाहीं ॥
ङङाअंगमलीनबिमलहोयतेरा । नादअनहदघटराख बसेरा ॥
ध्यान ज्ञान से नाम कहोगे । बिन्द्राबन सुख अलख लहोगे ॥
चचाचोरीजुआनिंद्या चाई । परसंताप खल दुष्ट बुराई ॥
ठग डाकू बटपार कुकर्मी । बिन्द्राबन बच सब से धरमी ॥
छछा छूछा तू जप सों सोहं । कटजावै चौरासी मोहं ॥
मनोकामना पूरन होवैं । बिन्द्राबन निजअमीबिलोवैं ॥
जजा जाम अष्ट तुम नाम रटोरे । बढ़ोदिन २ पलछिननघटोरे ॥
सुनो प्रेमसे होरहीं बानी । बिन्द्राबन संतन पहिचानी ॥
झझाझांझझनकारझनाझनझनकैबीनबांसुरीसुरचंगखनकै ॥
मिरदंगसितारमंजीरतमूरा । बिन्द्राबन का काम है पूरा ॥
ञञाञेवैं सुनो साधतुम साधू । संत होयजाव मिटै अपराधू ॥
आपसे आप खुलैं सब द्वारे । भली कही बिन्द्राबन प्यारे ॥
टटाटाबर ऊंटघोड़ गजहाथी । सुखपालचंडोलपालकीराथी॥
दल बादल से खटल बटोरे । बिना नाम बिन्द्राबन थोरे ॥

ठठाठाकुरलोक नहींकोइ बूझै । जहां रहै वहां तुमें न सूझै ॥
मेरा वासा हरिघट मांहीं । बिन्द्रावन से बोले साहीं ॥
डडाडोलोफिरोघलौतुमदौड़ो । दरबनामकी हरक्षिनजोड़ो ॥
परमारथ पर नेह लगावो । बिन्द्रावन पूरण सुख पावो ॥
ढ़ढाढब ऐसा अपने मन राखो । जोकोई बूझै तुरतहीभाखो ॥
मीठा बचन कहो तुम प्यारे । बिन्द्रावन गुर ध्यान लगारे ॥
णणाणोणा ईंट से मन्द्र छाया । पक्का कर पाथर लग वाया ॥
मनी जड़े और हीरा मोती । बिन्द्रावन यौमुक्ति नहोती ॥
ततातुरतहि दानमहाकल्याना । जोभर दे सुमेर समाना ॥
किंचित् अथवा प्रीत से देवो । बिन्द्रावन मन चीता लेवो ॥
थथा थिरराखोमनचंचलतासे । हिया के लोचन उघरै जासे ॥
काम क्रोध मोह अहंकारा । लोभ छुटे बिन्द्रावन प्यारा ॥
दद्दा दान पुन भूखे को दीजै । जात कुजात बिचार न कीजै ॥
भूख प्यास सबकोयक जानो । बिन्द्रावन सब घट सममानो ॥
धधाधर्मधुरंधुरजबहीकहावो । पर नारी से नेह न लावो ॥
रहोअधीनकरो हरिदरशन । सत बचन बोले बिन्द्रावन ॥
नननामकासुमिरनसाधकीसेवा । गुर आनन्द रहैं कुल देवा ॥
बिषय छीन सब मन के तेरे । सत लोक बिन्द्रावन नेरे ॥
पपापापी का संग कभीनकीजै । मेल मिलाप तरक कर दीजै ॥
इसमें तेरी होय भलाई । सत गुरराम बिन्द्रावन गाई ॥
फफा फूल भले उजाड़मेंफूले । वृथा गये न सुन सिर झूले ॥
भेष बनाय जगत को लूटा । बिन्द्रावन नहिं बंधन छूटा ॥
बबाबैरबिरोध महादुखदाई । बिन त्यागे सुख कबहु न पाई ॥
यासे बैर वैर से कीजै । बिन्द्रावन पूरन सुख लीजै ॥
भभाभरमदोखजंजालविनासा । सत्त होय जोसत गुर दासा ॥
वस्तु मात्र को ऐसा जानो । एक कहै बिन्द्रावन मानो ॥
ममामनसापूरन साधकीसंगत । मत बैठो झूठो की पंगत ॥
संत बचन तें संत बनावै । सत गुर राम परम पद पावै ॥

यथा यामें बिगड़ै नहीं तेरा । सतगुर राम घट राख बसेरा ॥
सोच बिचार मन में लावे । एक नाम बिन्द्रावन ध्यावे ॥
रारटो तुमनामहोयकल्याना । जपतजपतसिंध लहरसमाना ॥
एकी एक एक है एकी । दृष्टी होय तो देख बिबेकी ॥
लखा लक्षनयेहीनामगुणगावे । राखो मनमें ना बिसरावे ॥
सील क्षमा संतोख हो पूरा । बिन्द्रबन जगमें सो सूरा ॥
बबा बाहगुरुजो नाम लखाया । चार जुगोंका जापजपाया ॥
बासदेव हरि गोबिन्द रामा । बिन्द्रा बन सब पूरनकामा ॥
भग्गाशब्दध्यानराखोमनमाहीं । सुखसंपत आनन्द जोचाही ॥
बिनाशब्दमन थिरनहिंहोता । बिन थिरजुयेबादसबखोता ॥
षषाषष्टम पदहैसारपरकाशा । अन्तः करण चार आभाशा ॥
चेतन का आभाश बखानेा । सेा चेतन कोई बिरलाजानेा ॥
समासाधवेाहीजिनतनमनसाधा । ज्ञानपरकाशिमिटैसबव्याधा॥
बिन साधे कुछ हाथ न आवे । सतगुरुबिनाराह नहिं पावे ॥
हहा हंसगती गततेरी होवे । सत गुरु राम हृदै मेंजोवे ॥
मुक्ति पदारथ निश्चय पावे । सत नाम बिन्द्राबन ध्यावे ॥
जो यहककहरा कहे सुनावे । मनेा कामना पूरण पावे ॥
बिन्द्रावन गुरु नाम जोलेवै । लेाकसत्यऔर मुक्ति कोसेवे ॥

चौपाई ॥

जोनरसतगुरु रामधि आवे । चार पदारथ निश्चय पावे ॥
सतगुरुरामहै नाम अमोला । भेद सार कोई बिरलैतोला ॥
सत गुरु राम मूल है मंच । कलयुग माहिं लखायहजंच ॥
बिरछ बीजसे है नहिं न्यारा । बीज बिरछ में भेद अपारा ॥
जिन यह बचन हमारामाना । अलख रूप सहजे करजाना ॥
बिन्द्रावन यह देसनिनारा । बूझैगा कोई गुरुमुख प्यारा ॥

दोहा ॥

सतगुर रामके चरनमें सदारहेा तुमलाग ।
यह सुखतेा उनको मिले जिनके बड़ेहैं भाग ॥

दोहा ॥

करों बेनती बीसधर अधम उधारन पास।
यह मांगन मैं मांगहूं मम हिरदे तुम बास ॥

चौपाई ॥

मैं आधीन दीन गतमोरी। तुम दयाल सरनागत तोरी ॥
दयासिंधु कृपाल कहाओ। काल जाल से मोहि बचाओ ॥
भूल भरम से रहो भुलाई। जनम जनम चौरासी पाई ॥
महादुखी और दीन कहाई। संसै मोंहि रहो खपटाई ॥
विष सागर में अस्थत ढूंढ़ा। सुखसागर कासा रनबूझा ॥
बुधहीन माया रसपीते। जनमअनेक न यह विधबीते ॥
मनबस होय विषै नहिंत्यागा। भजनबंदगीसेनिसदिनभागा ॥
खान पियन में चित रचाया। निसफलमाराजनम गंवाया ॥
मान बड़ाई मनमें राखी। दिनदिन भई कुमतकी साखी ॥
भेद न जाना सतगुर रामा। सुक्ष पदारथ को निजधामा ॥
मनबसकियो न शब्दपयाना। इस जगको साँचा करमाना ॥
गुर आज्ञानिस दिनबिसराई। झूठे सुख से रह्यो लोभाई ॥

दोहा ॥

सुरत शब्द बिसराय के फासीगले डलाय।
बिन्द्राबन क्या होत है नाहक अब पछताय ॥
बीती का क्या सोच अब आगे की सुधधार।
बिन्दाबन तन मन अरप चाहे होवन पार ॥

चौपाई ॥

सतगुर राममैं सरन तुम्हारी। जसचाहो तसलेवहुउबारी ॥
कहांलग कहूं भूलभई भारी। कहत २ जिह्वा मोरी हारी ॥
महाअपराधी निडरकूचीला। नहि जानीमाया की लीला ॥
अब मोंको आपन करलीजै। सुरत शब्द को मेल करीजै ॥
गुर आज्ञा अस्थत करजानी। निसदिनचरनकमललो आनी॥
व्यापक एक सकसलसथाना। ऐसी निसचै होय निदाना ॥

विघनिखेद में भेदन होई। दुबधा दुरमत चितसे धोई॥
आसापूरन करो दयाला। हमहैं तुमरे बाल गोपाल॥

दोहा॥

बीनती करननजानहु ऐसो बुद्ध को हीन।
बिन्द्राबन सरनागती टीनन को मैं दीन॥

अथ बाइ गुर नामा॥

यह दुनिया जाय१ कयाम२ नहीं दोरोजमें यहां से जाना है। क्यों माल खुजाना जमा किया किसवासते तंबूताना है॥ क्यों दाम३ में दुनियाके आया सौदाई४ है दीवानाहै। झांसाफ़ निकल इस फंदे से अैसान अगर५ मरदना है॥ सब कामई त्याग जप नाम बिखमभर वाइ गुरु कहु बिन्द्राबन। बस मुक्ति मिलै सुख चैन बढ़ै और पाक रहै सारा तन मन॥ क्यौं फिरस७ हवा में जाके फसा ऐदिल क्या तुझको सौदा८ है॥ है खौफ़९ कोजा१० धोखे कीजा इस जापे निहायत११ खटका है। कुल्ल१ अमर२ हैं दुनिया बेजा३ सब छोड़ तुझै यह जेबा है४॥ इस काम मे सब कुछ बेहतर है५ गर६ अक्लत७ से तुझ को बहरा८ है॥ सब काम त्याग जप नाम बिखमभर वाइ गुरु कहु बिन्द्राबन। बस मुक्ति मिलै सुख चैन बढ़ै और पाक रहै सारा तन मन॥ बेखुद९ है ऐदिल १० खाहिश११ जर१२ और ऐब१३है आरायश१४ तन। बेकार१५ है खूबोंको१६ उलफ़त१७ बेरंग१८ है गुल१९ ग़शते२० गुलशन२१ बेफ़ायदे २२ असपे२३ फ़ील२४ शुतर२५ बेहासिल२६ तामीरे२७ सकन२८॥ गर अक्लत है यकजारी२९ तुझको

जगह१ असथिर२ जाल३ पागल४ जोइ५ कामआदिकह६ इरखा७ पागल पन८ डर९ जगह१० बिलकुल११

सब१ काम२ बुरे३ भला४ अच्छा५ जोद बुद्ध७ लाभ८ निसपरोजनह९ मन१० इच्छा११ धन१२ तुछ१३ बनाना१४ बुरा१५ इस्त्री१६ प्यार१७ विरथ१८ फूल१९ सेर२० बाग२१ निसपरोजन२२ घोड़ा२३ हाथी२४ ऊंट२५ निसपरोजन२६ बनाना२७ मकान२८ थोड़ी२९

दिन रात जपाकर यह सुमिरन। सब काम त्याग जप नाम विश्वंभर वाह गुरूकञ्जबिन्द्रावन। बससुक्ति मिलै सुख चैन बढ़ै और पाकर है सारातनमन॥ भौसागर घोर कठोर छुआ नहिंछूमत वारापारा है। संगी जहां एक नदी अपना तहनां कुछ और अधारा है॥ नइया झकझोरी पानी गहरा कंपितडिग मिग मंझ धारा है। स्वामी मेरे पार लगावें दूसर कौन सहारा है॥ सब काम त्याग जप नाम विश्वंभर वाह गुरू कञ्ज बिन्द्रावन। बस सुक्ति मिलै सुख चैनबढ़ै और पाकर है सारा तनमन॥ मंजिल दूर राह है अटपट सिर ऊपर बोझा भारा है। काम क्रोध मद घेर लियो है भाग्यो नहीं कछू सवारा है॥ जब छीन मलीन भयो तनमन कोइ सुनै न तेरी पुकारा है। छिनमें तनधन लूटें तेरा ताते अब यही बिचारा है॥ सबकामत्याग जपनाम विश्वंभर वाह गुरूकञ्जबिन्द्रावन। बस सुक्ति मिलै सुख चैनबढ़ै और पाकर है सारा तनमन॥ दुरलभ जन्म भयो यह तेरो क्यों वाह गुरू नहिं गाता है। पछतै है फिर औसर चूके मन माया में भरमाता है॥ जब काल भुअंगम आय डसै तब कोई संग न जाता है। होशसियार[1] जरा उठ बैठे सुनोसुगम[2] एक बाता है॥ सब काम त्याग जप नाम विश्वंभर वाह गुरूकञ्ज बिन्द्रावन। बस सुक्ति मिलैं सुखचैनबढ़ै और पाकर है सारा तन मन॥ जोदूरकी कहने वाले हैं और इस कूंचे[3] में रहते हैं। वह तलख[1] बञ्जत कुछकहतेहैं। गो[2] रंज[3] सुस्ती बल[4] सहतेहैं जब कहते हैं हक[5] कहतेहैं। गोवहेर[6] अलम[7] में बहतेहैं जोमर्द हक़ीक़तट[8] वीर[9] हैं। अयदिल वह हरदम यहीकहतेहैं सबकाम त्याग जप नाम विश्वभर वाह गुरू कञ्ज बिन्द्रावन बससुक्तिमिलै सुखचैन बढ़ै और पाकरहै सारा तनमन

सावधान[1] सहज[2] गली[3]

कड़ुआ[1] मानार[2] दुख[3] आपदा[4] सत[5] नदी[6] दुख[7] सतट[8] ज्ञाता[9]

जोकाल करना है आजकरो अब जलदी करना अच्छा है।
घड़ी में कुछ है घड़ी में कुछ है कलको किसने देखा है ॥ तूदिल
में अपने सोच जरा दुबलीस१ तो दुश्मन२ सबका है।
मैदान यही और गोय३ यही अब झटपट आ क्या अरसा
है। सबकाम त्याग जपनाम बिम्बंभर वाहगुरूकछविन्द्राबन ॥
बसमुक्ति मिलै सुखचैन बढ़ै और पाक रहै सारातनमन ॥
घटमें तेरे बसा है अनहद सुना करो तुम आठों जाम४।
सुनते सुनते अलख लखोगे सन्त बतावैं इसको नाम ॥
ध्यान है जिसका वहीमिलैगा नहीं है इसमें जराकलाम५ ॥
मिथ्या भर्म वही तू खुदई है सुझको भाता है यह काम ॥
सबकाम त्याग जप नाम बिम्बंभर वाहु गुरू कछु बिन्द्राबन।
बसमुक्ति मिलै सुखचैन बढ़ै और पाक रहै सारा तनमन ॥
होंटबंदकर नैन मीचले कान रोक६गुजरै८ अजर९ आजा१० ॥
ख्याल११ सहसम१२ तरफ़१३ रास्तेको१४ मुकाबिल१५ ॥
अबरू१६ सुनआवाज१७ सोहं द्वार इसीमें सब कुछ ॥ और
जुगतको कहिये साजा१८ यहीमार्फ़त१९ यही इक्रीक़त२० ॥
इसीपै मुझको है गानाजा२१ ॥ सबकाम त्याग जपनामबिम्बभर
वाहु गुरू कछु बिन्द्राबन। बसमुक्ति मिलै सुखचैन बढ़ै और
पाकरहै सारातनमन ॥ गर२२ ऐबकी२३ तुझको खाहिश२४
है तोजन्नत२५ है तेरी मंजल२६ वगर२७ तमन्ना२८ नहीं है
तुझकोदर्पनसारख अपनादिल मइव२९ जातचंमौज३० ब३१
दरिया३२नूर३३ में नूरसेहै वासिल३४ तसवीर३५ यही और
जिक्र३६ यही। और वही है अपना आवे३७ मिल३८ ॥

काल१ बेरी२ गेंद३ समय४ संदेह५ आप६ बंद७ रहित८से९ देरखा१० ध्यान११ तिल१२ ओर१३दाहीं१४ बराबर१५ भेा१६ शब्द१७ बनाबट१८ उपासना१९ ज्ञान२० मान२१जोर२२ विषय वृक्ष२३ चाह२४ बेकुंठ२५ जगह२६ जोर२७ इच्छा२८ लेर२९ लहर३०बीच३१ नदी३२ जोत३३ मिलाप३४माला३५ सुमिरन३६ पानी३७ मट्टी३८

सबकाम त्याग जपनाम बिश्वंभर बाङ्ग गुरूकङ्ग बिन्द्राबन। बस मुक्ति मिलै सुख चैनबढ़ै और पाकरहै सारा तनमन॥ कुल्ल मुहीत१ बाहिद२ या हक्क़ा कोई न था मुक़ामश३ और चीज। पैदायश४ तेरी कहां से आई अपने दिलमें करो तमीज५ अनलहक़६ हक्क७है क़ौल८ हक़ीक़त९ यही समझकर कल्ब१० अजीज११ बिर्द यही सुमरन में यही और यही गुजारिश१२ अयदिल नीज सब काम त्याग जपनामबिश्वंभर बाङ्ग गुरूकङ्ग बिन्द्राबन॥ बससुक्तिमिलैसुखचैनबढ़ै औरपाक रहैसारातनमन नफ्स१३ अम्मारा१४ अजाबस१५ नाक्षिस१६ मुती१७ जोड़ोगा इसका तू दोजख़१८ मिलै आग के खंभे। सड़े बदन आवे बद बू। बिच्छू भौंरे सांप लिपकली तनमें लिपटैस्याह होरू१९। पनाह२० रख अयहकताला२१ यहीहै दिलमें२२ गुफ्त गुन२३ सबकामत्याग जपनाम बिश्वंभर बाङ्ग गुरूकङ्ग बिन्द्राबन॥ बस मुक्तिमिलै सुखचैनबढ़ै और पाक रहै सारा तन मन॥ जिस कूचे२४में जो जाता हूं सुनता हूं वहां चरचा है यही। अफ़सोस बड़ दुनिया तजता है समझाओ चलो अच्छा है॥ यहीखूबङ्गया बङ्ग लाखकहै तक़्दीर२५ का यहां लिक्खा है यहीकहै गोकि यगाना२६बेगाना२७ परदिल को मेरे भाता है यही॥ सब काम त्याग जप नाम बिश्वंभर बाङ्ग गुरू कङ्गबिन्द्राबन। बस मुक्ति मिलै सुखचैन बढ़ै और पाकरहै सारा तनमन॥ इनलोगोंकीगर२८ सुन तेहो यह काम सरासर बदतर२९ है। हैहाल यहां गुम रोही३० का कुश्तियार३१ रहो इस जाड़र है॥ इस काम में जल्दीलाजिम३२ है तजबीज वही अच्छी गर है जिनहार३३

व्यापक१ एक२ असथान३ उतपति४ बिबेक५ अहंई ब्रह्म७ वाक८ ज्ञान९ मन१० प्यारा११ प्रार्थना१२ मन१३ अड़ाटेनेवाला१४ बहुत१५ बुरा१६ दास१७ नरक१८ मुख१९ रक्षा२० भगवान२१ कहना२२ सुनना२३ गली२४प्राप्तव्य२५ अपना२६ दूसरा२७ जोर२८ बुरा२९ भूल३० सावधान३१ उचित३२ कमी३३

किसी की अब न सुनो जो दिल में समाई बिहतर १ है सब काम त्याग जप नाम बिश्वम्भर वाह गुरू कृष्ण बिन्द्राबन। बस मुक्ति मिलै सुख चैन बढ़ै और पाक रहै सारा तन मन॥ फ़रमाइश२ मना जो करते हैं है उनके दिल ३ बातिल४ में यही सब दुनिया तोहै इसतर५ में। सख़्ती बला७ मुश्किल में यही और क्यों कर हम यह तरकट करें॥ है अपने तो आवेर्ग़िल१० में यही। है बिर्ह ११तो अपने अबभी यही और धुन है अपने दिल में यही॥ सब काम त्याग जप नाम बिश्वंभर वाह गुरू कृष्ण बिन्द्राबन। बस मुक्ति मिलै सुख चैन बढ़ै और पाक रहै सारा तन मन॥ बेफ़ायदह नासह बका है सुनताहूं किसी की कब मैं भला। क्या जाने कोई इस लज्ज.त१२ को। जो कुछ कि उठाया दिखने मज़ा१३ किस तरह से मैं मुश्ताक़१४ न हूं। अफ़लाकसे१५ आती है यह सदा१६। मैं कानसे अपने सुनता हूं। फ़ुरमाता१७ है ख़ुद रब्ब१८ मेरा॥ सब काम त्याग जप नाम बिश्वंभर वाह गुरू कृष्ण बिन्द्राबन। बस मुक्ति मिलै सुख चैन बढ़ै और पाक रहै सारा तन मन॥

बहर१९ नासह कुछ दीवाना है क्या फायदा इन तदबीरें।२० से हमपंद२१ उसीको कहते हैं जोपंद हेापुर तासीरें।२२ से यहां अर्फ़२३ नहीं अपना ऐसा। जो बहस करैं२४ बेपीरें।२५ से। बिन्द्राबन नानक गुनगाओ क्या हासिल२६ इन तकरीरें।२७ से॥ सब काम त्याग जप नाम बिश्वंभर वाह गुरू कृष्ण बिन्द्राबन। बस मुक्ति मिलै सुख चैनबढ़ै और पाक रहै सारा तन मन॥ [इति वाहगुरू नामा]

मला१ उपदेश२ मन३ झूठे४ आनंद५ कठिन६ आपदा० त्यागव्यानी ९ मट्टी१०याद११ स्वाद१२ अनंद१३ प्रेमी१४ आकास१५ आवाज़१६ आज्ञा १७ भगवान१८ उपदेसकरनेवाला१९ जतन२० उपदेस२१ लाभ२२ मन२३ चरचा२४ तिगुरोस२५ लाभ२६ बतों२७

अथ बारह मासा लिख्यते ॥

असाढ़ मास बरखा रुती जियरा करत किलोल । सत गुर राम कृपाल ने दिया रतन अन मोल ॥ १ ॥ सावन सत चित भेद लख पायो आनन्द रूप पिया मिलन जब होइया भया भिखारी भूप ॥ २ ॥ भादों की काली घटा रैन अंधेरी देख । डरे जियरा पर लखा जल थल साहिब एक ॥ ३ ॥ कुआंर कुआंरी जो सखी सत संग बिमुख रही । काम क्रोध सखियां मिलीं बिपता बहुत सही ॥ ४ ॥ कातिक जो-तक जो लखा तका दृष्ट भर पूर । अपने घट में सायियां लखै सोई है सूर ॥ ५ ॥ अगहन अघ सब जरगयो सीतल भये सरीर । सुरत शब्द मेला भया मिटी कर्मकी पीर ॥ ६ ॥ पूस प्यास जाती रही सांतसरो वर बास । परमारथ के कारणे भायो प्रेमी दास ॥ ७ ॥ माघमास सरसों खिलीभयो बसंती धाम । निरख २ सोभा रुती पूरन होगये काम ॥ ८ ॥ फागुन फाग ऐसो रचो तनमन दियो भुलाय । बाजन बाजा बज-रहे सुन सुन जिआ हरषाय ॥ ९ ॥ चइत माह में चेतले संमत भयो नवीन ॥ जोतू अबकी चूकिया चौरासी गल दीन ॥ १० ॥ मास बैसाख आये सखो प्रेम भगत चित राख देस बिदेस घर घर बने पूरन तेरी साख ॥ ११ ॥ जेठ महीना दिन बड़ा सतसंग करो अघाय । सत गुर रामकोजा पकर बिन्द्रावन पद पाय ॥ १२ ॥ इति

होली——होली को साज कहोरी शब्द में सुतरंगोरी ॥

टेक—जग गोलाल गुलाल नहीं है कालने घेर घरोरी । नहीं प्रकाशति मर छायो है दीदोमें पानी भरोरी ॥ सखी अंधा धुंधमचोरी ॥ १ ॥ सतसंग दुर्लभ है मेरे भाई शब्द की डोर गहोरी । मन अपने में देख बिचारो बिन अभ्यास मरोरी शब्द न हाथ लगोरी ॥ २ ॥ बिषय भोग में मनको लगायो दूना जहर पियोरी । माया की धूर उड़ावन चाली

मायाने धोखा दियोरी ॥ फूल सिंगार फसोरी ॥ ३ ॥ विषरस भांगके घूंटपीये हैं आपन सुध बिसरोरी । संत कृपाल दया सतगुरकी बिन्द्राबन सत लखोरी ॥ भागसेफाग मिलोरी ॥

होली——पल पल में शब्दमें रच नारी मान येही धन अपनारी ॥

टेक—दूसर धन सब देह के संगी इन संगन चलनारी । देह गये तू नहीं बिनसै जीव अमर रहनारी ॥ आगे भोग है करनी ॥ १ ॥ जब लग जीव मुक्ति नहिं पावै छूटै न कर्म कलप नारी । असथूल गये सूक्षम रहै भाई दुखसे कभी नतर नारी ॥ अवा गवन में फिर नारी ॥ २ ॥ सत समै जहां आसा होवै वहां बासा मिलनारी । जो जगमाहिं सुतरही याकी आसा सतन धर नारी ॥ कपट जालमें पड़ नारी । ३ । सत संग में जो जीव रचैगा आसा हरि चर नारी । बिन्द्राबन पर पंच बिनासा सुख सागर मिल नारी ॥ हंसा होरह नारी ॥ ४ ॥

बसंत——जागो जागो सखीरी टुक उठबैठो आए बसंत सोहावनरी ॥

टेक—आस येही अब निश्चै मेा कोपिआमिलन मन भावनरी । सुख होइहै दुख जईहैरी सजनी चालोरी पिया को मनावनरी ॥ २ ॥ अनहद शब्द सुनो मेरी सजनी करब तीअंगल सावनरी । सेवा पीउ प्यारी बिन्द्राबन सुफल दरस गुरपावनरी ॥

बसंत——सन्त मिलन यह बसंत सखीरी ॥

टेक—प्रेम बिरह मन फूलै डालै रूप बिराट लखोरी १ ॥ सेवा सुमिरन ज्ञान ध्यान को रंग रंग फूल खिलोरी ॥ २ ॥ और लुभानै कोकल बोलै अनहद शब्द सुनोरी ॥ बिन्द्राबन यह बसंत सोहाबन आनन्द प्रेम चखोरी ॥

होली——सुमत क्यों न होतु कुमत मत मेरी ॥

टेक—यह जगमें कोउ काहू को नाहीं मत कर मेरी तेरी । अब क्या भूला फिरत अनेला अनहद शब्द सुनेरी १ ॥

एमत बौरी सुमत तू होजा पिउ प्यारे की चेरी । जीव अनेकन पिया के कारण देश बिदेस फिरेरी ॥ २ फिर नहिं पाया जनम गवांया उदै असत लैहेरी ॥ बंक नाल से चढ़ त्रिकुटी तक भवर गुफा जाय घेरी ॥ ३ ॥ अब क्या पूछौ ज्ञान की बातें अंत को एक भयेरी ॥ एमत बौरी गुहार लाय बिन्द्राबन घर हेरी ॥

शब्द—आग लगै होली जलवन जाय । पिया बिन होली सुझै न सुहाय । प्रेम बिरह में माती फिरत हूं ऐसो है कोई देइ बताय ॥ तड़फ २ लज्जित चकत हूं नहीं कोई होत सहाइ । पंच बैरी मिल छल बल राखो अंत चले अकुताय ॥ बिन्द्राबन वारी गुर पद पर सहजै दियो लखाय ॥

होली——होली होली होरही तू कहां पड़ो बावेरी ॥

टेक—सांई ने अपना भेख रचो है कैसा कैसा रंग मचो री । सबमें मिला है आप छिपा है सुफल जनम क्यों खोवैरी १ ॥ सहज निहारा प्रीतम प्यारा कर ले दर्शन नैन उघारा । चांद सुरज तारे उजियारे फिर कांको तू जोवैरी ॥ २ ॥ काम क्रोध लोभ को भख ले दया धर्म सन्तोष को चख ले प्रेम भगत की निश्चै करले मनकी मथानी बिलोवैरी ३ ॥ गावो प्यारे पद है साचा जले दोष लकड़ी जस आचा । नाम अलख बिन्द्राबन बाचा होनी होय सो होयेरी ॥

शेर ॥

तेरीही जात१ को बक़ा२ है सुदाम३ ।
होंगे फानी४ तमाम ख़ासो५ आम ॥
तेरेही रहमई से ठिकाना है ।
और जो कुछ कहूं फिसाना७ है ॥
क्यों न हाफ़िज़ट हो और तू मौजूद ।
अपने बन्दों के पास ऐसा बूदह ॥

सहूप१ असथिर२ सदां३ नास४ सब५ दया६ कहानी७ रखवाला८ भगवान९

तू ग़फ़ूर१ उल रहीम२ है यारब।
हम गुनहगार हैं सरासर सब॥
तुझको है शर्म पास है इसका।
नहन३ अक़र्ब जो तू ने फरमाया॥
जात तेरी में अर्ज़४ हस्ती५ है।
नेस्तई असले७ बलंदु८ पस्ती९ है॥
इल्म१० है औ सबूर११ वाफ़ी१२ है।
वहद१३ दहू१४ लाशरी को१५ काफ़ी है॥
अर्श१६ औहर१७ यह हरदो वाहिद१८ है।
बेखुदी१९ सिर्फ़ इसकी शाहिद२० है॥
यह जो कुछ दीखने में आता है।
बे खुदी में निशान पाता है॥
कौनसी शै२१ से तेरी हो तशरीह२२।
एक जंजीर दूसरी तसबीह २३॥
नाक़िसुल अक़्ल२४ मैं जो नापूं हूं।
तश्त२५ काग़ज़ में बहर२६ डालूं हूं॥
लेक फिरशान उसकी देखूं हूं।
दो में उस एक ही को पेखूं हूं॥
हैबका२७ औफ़ना२८ शुमार२९ में दो।
मतलब हर दो का एकही तो है॥
एक कहना भी दो करै क़ायम।
गो मगो३० छोड़ कुल्ल है दायम३१॥
कौन तुझ बिन है काबे में रौशन।
है तुही बस पनाह३२ बिन्द्राबन॥

क्षमाकरनेवाला१ दयाल२ पास३ स्वरूप४ असतो५ मिथ्या६ जड़७ आकास८ पृथ्वी९ ज्ञान१०आनंद११ पूरा१२एक१३ नही१४ सद्रित१५स्वरूप१६ गुन१७ एक१८ अहंकात्यागि१९ साखी२० चीज़२१ दृष्टान्त२२ माल.२३तुछवध२४ थाल२५ नदी२६ बिध२७ निखेध२८ गिनती२९ अन्यथीच३०सदा३१ रक्षा३२.

टीका ॥

व्यापक आदि वस्तु अर्थात् पुरुष का स्वरूप अस्ति आदिक है और ज्ञाता है सोई चराचर को प्रकाशक है और जोकि वह पूर्ण है उसका स्वरूप ऐसे आनन्द से भरा है कि दुख कालेश नाममात्र भीत कभी हुआ है नहै और न होगा और एक अद्वितीय अनन्त है सब संसार का वही एक उत्पन्न करने वाला है उसकी तरफसे सब मनुष्य और पशुओं को उत्पत्ति एकही तरह पर है और सबके अंग एकही सूरतपर हैं जो हर एक झुंड का उत्पन्न करने वाला पृथक २ होता तो यह नहीं होसक्ता था कि सब मनुष्यों की उत्पत्ति एक ही तरह पर होती हां पीछे २ मतों के आचार्जों की बुद्धि से बाजे २ काम और चलनों में अन्तर जरूर हुआ है हिन्दुओं का पहनावा और तरह का मुसल्मानों का और तरह का परन्तु ईश्वर की तरफ से कुछ अन्तर नहीं इसमें ईश्वर एकही है और सब देहों के तत्त्व भी एकही हैं और जो ईश्वर की आदि का खोज कीजिये तो हवा को मुट्ठी से नापना है और जो अन्त को ढूंढिये तो समुद्र को चुल्लू से खाली करना है जब कोई आदि नियत करोगे तो उससे पहिलेभी तो कुछ होगा जो कोई अन्त कहोगे तो उससे पीछे भीतो कुछ रहै गा इससे वह जात अर्थात् पुरुष अनादि अनन्त है हां संसारका मूल नाम निस्संदेह है और ईश्वर में रूप और गुण का कहना भी तब है जब मनुष्य को ऐसी दृष्टि है कि एक ईश्वर है और दूसरा संसार है परन्तु जब मनुष्य में से अनात्म अर्थात् अहं बुद्धि जाती रही तो रूप और गुण दोनो एकही हैं और यहसब तमाशा उसी समय तक दिखलाई देता है जब तक द्वैतता है जागने की दशा में एक दो दीखते हैं और जब मनुष्य सोता है तब एक है न दो है इसीतरह मूल अर्थात् अविद्या सहित अहं के नाश होने पर एक दोस भी का आभाव है ॥

दोहा ॥

अहंकार की वासना करो नाश तुम जोय ।
अहं बासना बीज है जन्म धरावे सोय ॥

और जोकि केवल पुरुष को नित्यता है इस्से कौनसी ऐसी दूसरी वस्तु है कि जिस्से उसको बोध कराने के लिये दृष्टान्त दें क्योंकि ईश्वर माया के स्थानापन्न है जिसके स्मरण करने से उद्धार होता है और जो कुछ कि उत्पन्न हुआ है वह जंजीर के स्थाना पन्न है उसको पैर में डालने से बन्धुवा होजाता है इस्से वह ईश्वर दृष्टांत के योग्य नहीं मैं अपनी मूर्खता पर बहुत लज्जित हूं कि तू यह क्या अपनी बुद्धिमानी छांटता है कहीं समुद्र भी काग़ज के थाल में समा सक्ता है परन्तु फिर जो विचार से देखता हूं तो मालूम होता है किजो कुछ कहा जायगा वह उससे खाली नहोगा ॥

और एक कहौ या दो असल में एकही है एक २ दोजग-ह हो कर दोहुआ इस्से दोमें वह एक ठीक ठीक मौजूद है जो नित्य कहा तो पुरुष ही है और जो अनित्य कहा तो अनित्यता संसार को है फिर भी केवल पुरुषही रहा ॥

दोहा ॥

आदि अन्त निरमल सदा पुरुष रूप है जोय ।
मध बिकार भाशत कछू अज्ञानी को सोय ॥

परन्तु एक कहना भी द्वैतता में दाखिल है क्योंकि एक कहने वाला दूसरा हुआ जाता है ॥

दोहा ॥

अहंकर कोधार के कछु बनता यह जोय ।
तब सब इसको आपदा आन परापत होय ॥

इस्से एक न दो जो कुछ है सो है सत्य तो यह है कि कावे में भी वही है और बिन्द्राबन भी उसीका है प्रगट वही

अप्रगट वही और आदि अन्त भी वही जो अनुराग है तो सब अनुरागियों का वही एक प्यारा है क्योंकि सब अनुरागियों का अनुराग मालिक की तरफ़ है और मालिक सब रूप में प्रगट होसक्ता है हां किस ने एकान्त में पाया और किसी ने चौड़े में किसी ने बिना वस्त्र और किसी ने वस्त्र समेत देखा किसी ने बोलते देखा और किसी ने चुप देखा झगड़ा केवल मतों की भिन्नता में है। मूलमें तो वह एक ही प्यारा है पर सच्चा प्रेम अवश्य है ॥

चौपाई ॥

प्रेम उठे जब उरके माही। नेमाचार रहै कुछ नाहीं ॥
नयनों से जल धार बहाई। निशि बासर दृह अग्नि जराई ॥
पिय बिछोहकीपीर सतावे। घर बन इतउतकछु नसुहावे ॥
हाय हाय करि रैन बिताई। बिना नीर जस मीन रहाई ॥
कबहूं जस बावर होजाई। छण रोवे छण करैं हसाई ॥
कबहूं रुदन करै दिन राती। कबहूं बैठि बज्र करकाती ॥
गुरु बिन प्यारा लगै न कोई। धन परिवार देख दुख होई ॥

दोहा ॥

बिरह प्रबल दल साजिकै घेरलियो मोहि आय।
नहिं मारै छाड़ै नहीं तड़फ़ तड़फ़ जिय जाय ॥

हां जिन्होंने देखा नहीं और देखने वालों के मुख से सुना है या कुछ अपनी बुद्धिमानी से गढ़त गढ़ी है तो और बात है परंतु यद्यपि ऐसा होजाय तो आश्चर्य भी नहीं। (झुठल खेले सच्चल होय)। अर्थात् संसारी झूठा प्रेम सच्चे प्रेम का प्रकाश करदे इतनी और विनय करता हूं किजो इस ग्रंथ के पदो में असुद्धता प्रतिष्टत अवलोकन करने वाले के दृष्टि पड़े तो परमार्थ पर दृष्टि करकै उसपर ध्यान न करैं क्योंकि पदों की रचना और बात है और परमार्थ का रंगअन्य बात हैं ॥ मेरा केवल यह अभिप्रायहैं कि अनु-

रागी लोग वहां पर आनंद और वहां पर मोक्ष प्राप्त कर हां अपनी सामर्थ भर सुगम और संक्षेप पद पदार्थ लिखे गये किंतु बहुधा दृष्टांतों में भी संक्षेप किया गयाहै और इच्छा करकै तो कोई कड़ा और दुर्वचन या किसी की निंदा या तोड़ फोड़ नहीं की और जो होय भी तो लाभ और प्रयोजन से रहित न होगी उसको ऐसा समझना चाहिये कि जैसे बाग में घास फूस और कांटे भी होते हैं ॥ परंतु वह घास घास नहीं और कांटा कांटा नहीं किन्तु बाजे असुक कठिन रोग के वास्ते वह घास और कांटा गुण कारी औषधी आनंद की देने वाली होती है ॥

शैरं ॥

नेकख़ू१ अदब नयाज२ आर३ ।
है वहख़ू४ रंग फूलख़ू५ बूदार६ ॥
नेकई ख़सलत हमेंः ख़ू७ दिलहै ।
बेतरह८ दर्ज अज़ीज़ हर दिल है ॥
औजई हस्ती१० काजोसरूर११ हैगा ।
वह मवद्दव१२ केयस हज़ूर१३ हैगा ॥
वेनयाज़ी१४ तो शान मौला१५ है ।
आदमी को नयाज़ औला है ॥
इन कलामेंपै गरतु आमिल१६ है ।
दीन दुनिया का ऐश हासिल है ॥

टीका ॥

जो मनुष्य सज्जन और नेक चलन है और अदब और आधीनताई रखता है वह असल में ऐसे फूल के समान है कि जिसमें रंग और सुगन्ध दोनो वर्त्तमान है ऐसा मनुष्य

सज्जन१दीनताई२ सूमावं३ अच्छारंग४ सूगंध५ अछासुभाव६ निस्संदेह७ प्यारा८ बड़ाई१० आनन्द११ सजन पारा१३ बेपरवाह१४ भगवान१५ वरतनेवाला१६

आपभी आनन्द में रहता है और दूसरों कोभी आनन्द का कारण होता है और सब को प्यारा लगता है और हर जगहउसका शिष्टाचार और मानहोता हैऔर जोकिउसका मन संसार के विषय से बचा रहता है उसको परमारथ में भी अवश्य पहुंच होजाती है तातपरज यह है कि ऐसे मनुष्य को दोनो हाथ लड्डू है ॥

दोहा ॥

सज्जन सबके मीत हैं ताको मतो अगाध ।
बिन्द्राबन जाके दरस छमा होहिं अपराध ॥

और

चाहिये तुमको बोलो मीठा बोल ।
खर्च कोड़ी न हो वले अन मोल ॥
जो तुझे और में बुरा दीखे ।
चाहिये तुझको तू न वह सीखे ॥
गुस्सा१ दबता है खुश२ जबानी से ।
आग बुझती है जैसे पानी से ॥
जो न इक़रार३ को निभाते हैं ।
बोलो तुम झूठ यह सिखाते हैं ॥
लाख दुश्मन४ का ख़ौफ़ तू मतकर ।
गर डरै तो खुशामदी से डर ॥

टीका

देखिये मीठा बोलना कैसा अच्छा है कि अपने को तो किसी प्रकार की हानि नहींऔर दूसरेको आनन्द प्राप्त हो इसके सिवाय मित्रता उत्पन्न करै निसंदेह मीठा बोलना कोयल के शब्द के समान है और कठोर बचन ऐसा है जैसे कव्वे की आवाज ॥

क्रोध१ मीठाबोल२ बचनबंधन३ शत्रु४ डर५

कहिये कोयल क्या दे देती है और कौवा क्या लेलेता है परंतु कोयल का शब्द सुन कर चित्त को आनन्द होता है और कौवे की आवाज बुरी लगती है इसी स्थानसे प्रगट है कि संसार में शरीर भाव करके तो मनुष्य एक है परंतु स्वभाव में एक दुष्ट और दूसरा सज्जन है और प्रसिद्ध है कि दूसरे का बुरा बोलना अत्यंतबुरा मालूम होता है इस्से आपको बुरा बोलने से बचना उचित हुआ और देखिये कि जो कोई दूसरा क्रोधमें है और तुम मीठा बोल बोलो तो निस्संदेह उसका क्रोध जाता रहेगा परंतु यह समझना अवश्य है कि मीठा बोलने से यह प्रयोजन नहीं है कि तुम झूठे बचन बंधन करदो या खुशामद के बचन कहो यह दोनों बातें तो अत्यंत ही बुरी है ॥

जो झूठा इकरार करता है वह दूसरे को सिखलाता है कि तुमभी मुझसे झूठे इकरार करो जबही पूरा पड़ैगा बाजे आदमियों का यह सुभाव होता है कि निःप्रयोजन कुछ न कुछ इकरार कर देते हैं और जिससे इकरार करते हैं उसको बहुधा दुःख और क्लेश होता है यथा किसी मनुष्य से तुमने इकरार किया कि मैं आज शाम को जरूर आऊंगा अब वह मनुष्य शाम को तुम्हारे आने की आसा में रहा किन्तु वह अपने कई हरज करके तुम्हारी राह देखता रहा और तुम गये नहीं कहिये क्या फल हुआ (आसा मरै निरासा जीवे) इसीको निरर्थक पापकहते हैं ॥

खुशामदी केवल जाहिर में तो खुश करदेता है परंतु असल में तो लोक परलोक दोनों का नहीं रखता किसीने खुशामद अर्थात् झूठी प्रसंसाकी तो खुशामद मिथ्या होती है इससे खुशामद जिसकी की और वह निर्बुद्ध हुआ तो उसकी बातें सुनकर चित्तमें अत्यंत प्रसन्नहुआ और समझ लिया कि निस्संदेह मैं ऐसाही हूं जैसा यह कहता है ॥

कहिये अब किधर के रहे जो कुछ अपने में कमी अर्थात् लघुता का ध्यान होता तो आगे दृढ़ करने को और परिवरत होते और अब परिश्रम करने और दुःख सहने की क्या आवश्यकता रही जब बातों ही बातों में आकाश में पहुंचे अब ध्यान कर लीजिये कि ऐसे मनुष्य किस काम के रहे ॥

गैरैं

जोजवानी१ में वारकश२ हेंगे।
वहज़ईफी३ में क्यौं न ख़ुश हेंगे॥
एक तक़सीर४ जोछिपाते हैं।
दो कसूर अपने सिरपै लाते हैं॥
जो किसुस्ती कीसवा५ फेरै हैं।
जानको उसके रोग घेरै हैं॥
जब मिलै चीज़ सुफ़तया ससती।
क्यौन उसपर तमारहैई६ हसती॥
दुश्मनी७ इल्लत८ से किसी को नहीं।
बेवक़ूफों का इसमें ज़िक्र९ नहीं॥

टीका

प्रसिद्ध है कि जिस आदमी ने अपनी जवानी में मेहनत की है उसने बुढ़ापे के वास्ते पूंजी पैदा की है अब बुढ़ापा सुगमता से व्यतीत होता है जवानी में एक दिन के परिश्रम से जो कारज होजाता है वह बुढ़ापे में एक महीने के परिश्रम से नहीं बनता और जो दुखकि तरुणाई में परिश्रम के कारण सेरभर मालूम होता है वह बुढ़ापे में मन भर से भी अधिक मालूम होता है ॥

तरुणई१ मेहनति२ बुढ़ापा३ अपराध४ माला५ लालच६ शत्रुता७ बिद्या८ चरचा९

अपराध का छिपाना अत्यंत बुराहै देखिये प्रथम तो यह कि जो अपराध को छिपाते हैं वह एक और दूसरा अपराध बढ़ाते हैं क्योंकि अपराध का छिपाना भीतो अपराध ही है दूसरे जब कोई अपराध छिपाया जाता है तो ऐसा विदित होता है कि कोई बहुत बड़ा अपराध होगा जो इसने छिपाया है इसलिये अपराध का अंगीकार ही करना उत्तम है ॥

सुस्त अर्थात् आलसी आदमी ऐसा है कि जैसे लूला लंगड़ा होता है किंतु लूले लंगड़े से भी बराबरी नहीं होसक्ती क्योंकि लंगड़े के तो पैर नहीं जो चलै परंतु उनके तो भगवान की दया से हाथ पैर भी मौजूद हैं परन्तु हिलाते नहीं ॥

एक दृष्टान्त है कि एक आलसी अर्थात् सुस्त कहीं एक वृक्ष के नीचे पड़ा था उसकी छाती पर उस वृक्ष से मेवा आपड़ा अब आप मेवा तो खाना चाहते हैं परंतु उठाने का आलकस है उस समय कोई ऊंट वाला जाता था आपने ऊंट वाले से कहा कि भाई एक काम हमारा करते जाओ ऊंट वालेने दया करके अपने ऊंट को ठहराया और उतर कर उनके पास आया आपने कहा कि यह मेवा मेरे मुंह में डाल दो ऊंट वालेने कहा कि वाह तुमसे यह भी काम नहीं हो सक्ता था तो आपने ऊंट वाले से कहा कि वाहजी तुम तो बड़े सुस्त हो इतने से काम में भीतकरार करते हो देखिये यह दशा सुस्त आदमियों की है ॥

जबकि मनुष्यकोकोई वस्तु मुफ्तयासस्ती मिलै तो बहुत सोच समझ कर लेनी चाहिये सोचले कि कुछ दालमें काला है लालच को दूर करै लालच ऐसे समय पर हंसै है कि मेरे जाल में आया ॥

विद्या केवल लिखनेही पढ़ने ही को नहीं कहते विद्या

का अर्थ है जानना इससे अच्छे बुरे का जानना भी विद्या ही है और इसके विपरीत जो निर्बुद्धिताई है उसको मूर्खता कहतेहैं क्योंकि विद्या विना रहना असावधानी है ॥

और

अच्छी पोशाक अपनी दुश्मन है ।
गर्चे दर्ज़ी का रोज़१ रोशन है ॥
चिड़िया पहिचानते हैं रंगोंसे ।
आदमी को कलाम२ ढंगो से ॥
बेवकूफ़ों कि दिल्लगी देखो ।
झूंठी उम्मेद३ का अग़ल पेखो ॥
बेवकूफ़ों क दिल जबां पर है ।
उनका हमराज़४ तोजियांपूपर है ॥
सौ किताबों का ढेर रक्खा है ।
वे पढ़े किस तरह से पक्का है ॥

टीका

जो मनुष्य कि धज की पोशाक के शौक़ीन हैं वह अपने साथ निस्संदेह शत्रुताईही करते हैं अगरचे दर्ज़ी का घर अवश्य भरते हैं देखिऐ प्रथम तो मजदूरी बख़्शत देनीपढ़तो है और जो ज़रा किसी प्रकार का खोट दर्ज़ी के सीनेमें हो गया या ज़रा ढीला कसा होगया तो अत्यन्त दुख उत्पन्न हुआ और कपड़े के फाड़ने का इरादा करके दरज़ी का सीना चाक किया चाहते हैं जो कुछ बुद्ध आगई तो ख़ैरनहीं तो गुस्से में कपड़े को फाड़ डाला अब दूसरा तैयार कराते हैं और जो उसी कपड़े को पहना तो प्रायः समय दिल तंग रहता है दूसरे सज धज के कारण हरसमय कपड़े की रक्षा करते हैं नज़ाकत से पांव उठाते हैं और एकढंग के साथ हाथ हिलाते हैं तात्पर्य यहहै कि दाम ख़रच करके

दिन१ बात२ आसा३ साथी४ हानि५

तन और मनके लत्ते और चीथड़े करडालते हैं ॥ मनुष्य की इज्ज़त सजधज और अच्छी सूरत पर सम्बन्धित नहीं है मनुष्य की चालढंग बारता लाप देखी जाती है हाँ पशु की प्रतिष्टारंग और खूबसूरतीही से होती है ॥

अज्ञानी मनुष्य अपने समय को वृथा खोते हैं और वृथाही दुख उठाते हैं काम तो उनसे कुछ होता नहीं झूंठी २ आशा और यतन बांधते हैं बहपूरे होते नहीं दूसरे दुखी होते हैं ॥

अज्ञानियों के चित में कुछ विचार नहीं होता जोदिल में आया बिना सोचे समझे कहडाला जो दूसरे ने कोई बात कही और उसको परतच्छ करना नथा परंतु अज्ञानी बिना पर्कट किये नहीं रहता किसवास्ते कि उस बात के रखने को उसके दिलमें जगह नहीं फिर कहां रक्खे मुखमें लाकर निकाल देता है ।

यहसब खराबी मूर्खताई के कारण होती है बाहर कीतो दोनो अंडासी खुली हैं पर भीतर की बंद इसीसे ऐसे मनुष्य बंदर के समान हैं ॥

शेर

बोलना सच उसे न भावे है ।
मग़ज़१ को जिसके भूत खावे है ॥
जोयमे२ रास्ती३ में न्हाते हैं ।
जान औतन दोनो जोर पाते हैं ॥
बेइमानों ने पाल रखा है चोर ।
बेइमानी खुवाबे लाख करोर ॥
बाज़ ग़फ़लत४ अगर्चे क्रोटी है ।
लेकि बुनियाद५ उसकोखोटी है ॥
जबकिग़ाफिलज़ आहे चौकीदार ।
करदिया उसने चोरको इख्तियार ॥

सिर१ नदी२ सचाई३ चूक४ जड़५

टीका

झूंठ बोलना या झूंठको पसन्द करना ये काम शैतान का है अब जिसको सच न भावै तो जानना चाहिये कि इसके कपालमें भूत प्रेत घुसे हुये हैं ॥

मनुष्य में बेईमानी ऐसे चोर के समान है कि अपना घर लूटके दूसरे के हवाले करदे मनुष्यता का धर्म ईमान्दारी अर्थात् सत्यता पर है सब काम नियत से होता है और जिसमें कि ईमान्दारी नहीं वह आदमी नहीं हुआ जबकि मनुष्यताई जाती रही तो सब कुछ जातारहा ॥

चौकीदारों की एक जरा ही ग़फलत हजारों रुपये की हानि करा सक्ती है जो देखिये तो चौकीदार ने कुछ ऐसा बुरा नहीं किया केवल सोगया परन्तु उसके सोने से द्रव्य उठगया ॥

अब जो चौकीदार न होता तो अच्छा था क्योंकि जहां चौकीदार रहता है वहां सन्देह होताहै कि कुछ तोहै जो चौकीदार खड़ा किया है ॥

शेर

गरकिसी को सलाह देनीहो ।
देखलो वह सलाह ऐसी हो ॥
सिर्फ ज़ाहिरमेंचिकनीचोपड़ीनहो ।
असल में फ़ायदा भी रखती हो ॥
बात तो थी बड़ी नसीहत की ।
परन्तु वह बड़ी फ़ज़ीहत की ॥
क्योंकि नादन उसको जाना न कह ।
चांद की जगह सिर बताया कह ॥
आजमायश बिदून जो है कलाम ।
रोटी बिन पेट कद भरैगा नाम ॥

टीका

किसी मनुष्य ने कहा कि चांद के दरशन से चित्त और दृष्ट में शीतलताई आती है किसी नादान ने चांद के अमृत्या ना पन्न सिरका शब्द कह दिया अब जिस मनुष्य ने सुना उसको सिरके देखने का शौक़ हुआ अब अपने सिरको तो देख नहीं सकता तो दूसरे के सिरको देखता है इसमें जो नुंई दृष्टि पड़ी उसको दिल्लगी के तौर पर पकड़ कर मार डाला देखिये कैसी भूल है कि पुन्न के बदले पाप का भागी हुआ ॥

इसलिये अज्ञानी के कहने पर अमल करना भी हानिका कारण है बाजे मनुष्य किस्सु कहानी दृष्टान्त सीख लेते हैं परन्तु अमल किसी कहने पर नहीं इस्सु परीक्षा मेंएक बात भी नहीं आई अब ऐसे सीखने से क्या हुआ कुछ प्रयोजन निकलता है पेट रोटी खानेसे भरता है केवल रोटी के नाम लेने से नहीं भरता॥

शेर

अमल१ में आदमी जोहै सच्चा ।
जाहरी को वह जानता कच्चा ॥
नेकख़ू२ आलिमे३ से बेहतर४ है ।
नेक चलनों का इल्म जौहर५ है ॥
वलेई अशराफ़७ पाक८ मसकन८ है ।
जैसे आईनह१० साफ़ रौशन११ है ॥
जिस्म१२ दिल जिसके दोने हैं माक़ूल१३ ।
देखिये रौशनी में रक्खा फूल ॥
साफ दिलका वतीरा१४ यह होता ।
और की बहतरी में जी खोता ॥

---

१ वास्तव २ सज्जन ३ पण्डित ४ अच्छा ५ सोभा ६ दिल ७ सज्जन ८ शुद्ध जगह ९ दरपन १० प्रकाशित ११ तन १२ ठीक १३ राह १४

टीका

जिस आदमी का चलन नेक है वह निस्संदेह पढ़े लिखे से अच्छा है जो चलन अच्छा न हुआ और विद्या बहुत भी पढ़ली वह ऐसा है जैसे झूंठा मोती खांजो विद्या भी होय और चलन भी अच्छा होतो क्या कहना है वह खुतन देशकी कस्तूरी है ॥

जिस मनुष्य के तनमन दोनों अच्छे हैं वह ऐसा है कि जैसे रोशनी में फूल रक्खा चमकता है ॥

जो शुद्ध चित्त मनुष्य हैं वह दूसरे की वृद्धि में प्रसन्न होते हैं उनको ईर्षा नहीं होती समझ लेते हैं कि उस मनुष्य की वृद्धि ईश्वर की इच्छा से हुई है और जो उसकी वृद्धि हुई है तो उससे कभी न कभी अपने को कुछ लाभही होगा ऐसे मनुष्य दूसरों की वृद्धि के लिये अपने तन धन को भी न्योछावर करदेते हैं ॥

और बाजे मनुष्य दूसरों की वृद्धि में दुखी औ उदास होते हैं किंतु हावका भरा करते हैं ॥

अब इस अज्ञानता को देखिये कि प्रथम तो काम ईश्वर की इच्छा से विरुद्ध हुआ कि जो ईश्वर ने किया उसके किये में अपने चित्त को उदास किया दूसरे जितना अपने को प्राप्त था और उससे प्रसन्नता प्राप्त थी उस आनन्द को अपने हाथ से खोया कहावत है कि (पराये अशुभ के वास्ते अपनी नाक कटाई) देखो तुमारे पास सौ रुपये की जमा थी तुम उसके बल से आनन्द में बैठे थे किसी ने आकर कहा कि फलाने के पास दोसै रुपये हैं जो तुमको यह बचन सुनकर डाह आई तो तुम्हारा आनन्द जो सौरुपये में पा रहे थे जाता रहा ॥

तीसरे डाह करने वाला नाम पाया अब इसरोग की क्या अच्छी औषधी है कि न दाम खर्च होवै और न कुछ पीसा

पाखी करनी पड़ै और अरोग्य अच्छे प्रकार से होजाय और सहज में जमा भी हाथ लग जाय ॥

चार मनुष्य बराबर के भागी होते हैं एक तो वह जो रुपया खर्च करके शुभ कर्म करै दूसरा जो इसमें तनधन से शरीक हो ॥

तीसरा वह जो खर्च करने वाले की हिम्मत बंधावै अर्थात् प्रसन्नता सहित उसकी बड़ाई करै चौथा वह जो ऐसे काम को देख कर चित्त में प्रसन्न हो इसी प्रकार पाप के कामों में भी जान लेना चाहिये कहिये अब इसमें क्या खर्च है जो चित्त में प्रसन्न होजाय और चौथाई का भागी बनै यहां भी सुख और वहां भी आराम ॥

शेर

जिनकोलिखनेका पुख्ता१ आयानढंग ।
वह दवातो कलम से करते हैं जंग२ ॥
कुफल३ जो बीच काम के रहता ।
जंग चढ़ने से वह बचा रहता ॥
बात जिसपर अमल न करना हो ।
फायदा सीखने से फिर क्या हो ॥
काम अपने को जिसने पहचाना ।
लोग कहते हैं उसको है दाना४ ॥
वक्त हर काम का मुकर्रर कर ।
वक्त पर काम हो ताकि बसर५ ॥

टीका

देखिये लिखना तो एक अक्षर भी नहीं आता परन्तु छुरी सम्हरन दिन हाथमें मौलूद लिखने के नाम तो कभी एक पत्र भी नहीं लिखते परन्तु दस पांच कलमकी खुरावी तो जरूर आजाती है और प्रति दिन दवात का

पुष्ट१ लड़ाई२ ताला३ बुद्धिवान४ गुजर५

सूफ़ और स्याही बदलाजाता है सच है (नाच न जाने आंग न टेढ़ा लिखे न पढ़े नाम मुहम्मद फाजिल) ॥

जब कि ताला काम में आता रहता है उस पर मोरचा लगने की नौबत नहीं आती है इस्से यह प्रयोजन है कि जो वस्तु काम में आती रहैगी वह बनी रहैगी और उस्से कुछ प्रयोजन भी निकल सक्ता है ॥

जिस राह को न चलना उसके कोस गिनना जिस काम को नहीं करना उसके सीखने में वृथा क्यों समय को व्यतीत करना मनुष्य को उचित है कि जो काम अपने जिम्मे का है उसमें यत्न करेगा तो लाभ उठावैगा देखिये टहलुआ जो सेवकाई में प्रवीण होगा तो उसकी बढोतरी संभव है और जो मालिक के कामोंमें दखल देगा और जो काम मालिक के हैं वह किया चहैगा तो खराबही होगा जैसे कौवा हंसा की चाल चला तो अपनी भी भूला और जो काम खिदमतगार के हैं वह मालिक से नहीं होसक्ते मालिक का एक घंटा दस पांच रुपये कि क़ीमत रखता है खिदमतगारका एकघंटा एकपैसे दोपैसेके बराबर होता है इस्से मालिक को एक घंटा अपने काममें लगाना उचित होगा मनुष्य को चाहिये कि अपने कामों के समय को विभाग करैं और जो समय जिस काम का नियत किया है उस समय उस काम को अवश्य करना चाहिये जो ऐसा नियत न होगा तो कभी समय पर काम न होगा और जब समय पर काम न हुआ तोवह काम कभी पूरा न होगा किंतु हौले २ उस काम का करना भी बन्द होजायगा इस निमित्त वृद्धों ने बहुधा नियम किया है क्योंकि बिना नियम के अज्ञानियों से कुछ भी न होसकैगा ॥

शेरें

यह ग़रूर१ एक तरह की घास है बस।
ज़हर२ रखती है जिसकी हर एक नस॥
कूड़े करकट में आप लहराबै।
बाग़ में ढूंढ़िये तो कब पाबै॥
बेमहल३ बोलना बुरा है।
सच है आब४ का पटकना है॥
गुफ्तगू५ उसकी सबके आवै पसंद।
वक्त ख़ामोशिई कहना करदे बंद॥
हो न ग़रमिन्दह बेतमीज़ी७ पर।
दौलत मन्दों से बहतो है बहतर॥

टीका

सचहै ग़रूर बहुत कठिन विष भरी घास है जिसी ओर ज़हर का खाना आदमी को संसारसे उठाता है परंतु इसका विष ऐसा बुरा है कि लोक परलोक दोनो से खोता है यहां धिक्कार खिलाता है वहां नर्क की आगमें जलाता है यहां नीचा दिखाता है वहां सूली पर चढ़ाता है यहां सज्जन पुरषों से अलग कराता है वहां जमदूतों से जा मिलाता है वास्तव्य में यह घास नीचों के हिरदै में जो कूड़े करकट के समान हैं उत्पन्न होती है सज्जनों का हृदय बाग़के बराबर है उसमें उसका पता भी नहीं यह अहंकार ही आदमी की ज़बान को ख़राब करता है आता तो कुछ नहीं परंतु घमण्ड का अन्त नहीं समय बोलने का है नहीं और बोल उठते हैं॥

वास्तव्य में ऐसे बोलनेसे अपनी आब खोनी है दूसरे समझ लेते हैं कि सूरत बहुत अच्छी परंतु सीरत के नाम ख़ैर आफ़ियत और जिस मनुष्य में अभिमान नहीं उसकी बात

अहंकार१ विष२ असमय३ पानी अर्थात शोभा४ कहना५ चुप६ मूरखता७

चीत बड़ुत अच्छी जब कि चुप रहने का समय आवै तो चुप होजाता है अपनी परशंसा नहीं करता जो कोई अस्तव्यस्त बात निकल जाय तो फिर लज्जित होता है इसके सौभाग्यता के चिन्ह मुखपर चमचमाते हैं और अज्ञानियों की यह दशा है कि अपराध भी करैं और लज्जा युक्त भी नहो चोरी और सीनाजोरी ॥

शेर

खर्च करने को जब बढ़ाओ हाथ।
अपनी पैमीसे पहिले करलो बात ॥
हरजे औ सत१ से जो गुजरते हैं।
साफ़२ नेकी से वह उतरते हैं ॥
जब कि देना ह जल्द तू दे दे।
चाहो जल्दी जवाब में उसके ॥
जिसने पाया है नेक खिदमत गार।
मिलगया मुफ्त सोहबती गमख़ार ॥
सच्चे नौकर की क़द्र३ क्या तोलो।
अपने घरकी फसील तुम बोलो ॥

टीका

पैमी से बात करने से यह अभिप्राय है कि मनुष्य अपने घर में देखले जितनी पूंजी वरतमान हो उसके अंदाज से खरच करे और जो अधिक खरच करैगा तो प्रकट है कि यातो उधार लाना पड़ैगा यांचो राना पड़ैगा ॥

ऐसे खर्च करने वाले को उदार नहीं कहा जाता इसका नाम वृथा खर्च करने वाला है उदार वह है जो कंजूस नहीं है अपने समर्थ के माफिक खर्च करता रहता है परंतु जो अपने अधिकार से गुजर जाता है वह बेशक नेकी से झगड़ा करताहै ॥ ऐसे मनुष्योंके पास नेकी

मुआफिक१ मलमनसई२ अधिकार३

नहीं ठहर सकती जबकि अधिक ख़र्च किया तो बेशक ईमान में फ़रक आवेगा बड़ी वृथा कहलाते हैं सच है कि जितनी चादर हो उतना पैर फैलाना चाहिये नहीं तो निस्संदेह चादर में नुक़सान आवेगा या पैर में गरमी सरदी असर करेगा इससे अधिक पैर फैलानेसे क्या मिला ॥ जो ख़िदमतगार नेक हैं वह बास्तव्य में ग़मख्वार दोस्त के बराबर हैं जैसे घर पनाह से घर की रक्षा होती है उसी तरह नेक ख़िदमतगार घरका रक्षक होता है सच है आदमी बहुत कम मिलता है

शेर

जबकि इनसान१ गुस्सह करता है।
बादहन२ आंख को झपकता है॥
जड़ तु गुस्से की जान नादनी३।
जाहिरा इसमें होती है हानी॥
है ग़लत जो हंसीको जाने दलील।
खिलखिलाना करैगाउसकोजलील॥
जो बचा चाहो हां कसूरों४ से।
करले परहेज वह फितूरों५ से॥
अपिया खाबची को आना है।
बलकि कुछ घर से उसके जाना है॥

टीका॥

प्रत्यक्ष है कि गुस्से वालेको दूर अंदेशी अर्थात् भविष्य विचार नहीं रहता जो चाहता है सो बक उठता है इससे दृष्ट बन्द हुई और मुंह खुला और जो गुस्से वाले की सूरत को देखिये तोभी ऐसीही दशा होजाती है कि मारे क्रोध के आँखें तो बन्द करलेता है और जीभ टर टर चली जाती

आदमी१ खुलामुहर२ अनजानता३ अपराध४ झूंठ५

है और गुस्सा केवल अन समझीसे उत्पन्न होता है और अपनी बज़ुत हानि करता है ॥

बाजे मनुष्य की ऐसी रीत होजाती है कि जब कोई उसको सच बात कहनी है तो कहने के बदले हंस देता है वह अपनी हंसी और खिल खिलाने को यह समझता है कि इससे विदित होजायगा कि मुझको स्वीकार हुआ परंतु यही मिथ्या है और एक निर्बुद्धता की रीति है उठने बैठने की एक मूरखताई देखिये कि अपराध करते हैं और प्रतिष्ठा चाहते हैं यथा देवदत्त यज्ञ दत्तकी मुलाक़ात करने गया अब यज्ञ दत्त अपने मकान में गद्दी तकिया लगाये बैठा है देवदत्त कि जिसका चित्त बज़ुत अहंकारी है यज्ञ दत्त के पास पहुंचा अभी सलाम बन्दगी भी पूरी नहीं हुई कि आप बराबर तकिये के जा बैठे और उम्मेदवार हैं कि यज्ञदत्त आपको सिष्टाचारी कुछ बढ़कर करै कहिये अब आपको सिर पर बैठावे या कड़ियोंसे टांगदे या खूंटी से लटका दे क्या करैं ॥

इसके सिवाय अब हुज़ूर अपने काम और चाला कियो की प्रशंसा करने लगे और आसा रखते हैं कि यज्ञदत्त बढ़ कर तारीफ़ करै ॥ देखिये अपने मुंह से हीरालाल बन गये अब क्या बाकी रहा हां अब यज्ञ दत्त को ईंट पत्थर कहने को अगर निश्चंदेह छोड़ी अब हुज़ूर पधारने लगे तो खड़े देखते हैं कि पहिले यज्ञदत्त सलामकर ले तो मैं सलाम करके चलूं यह अहंकार है या क्या चाहिये था कि जो यज्ञदत्त गद्दी पर बैठा था तो आप गद्दी से नीचे बैठाते तो यज्ञदत्त प्रतिष्ठा पूरवक अपनी गद्दी पर बैठाता तो देवदत्त की प्रतिष्ठा और यज्ञदत्त की प्रसन्नता होती जो देव दत्त अपनी परसंसा आप नहीं करता तो यज्ञदत्त करता अपूर्व ननन्द दोनों को मिलता ॥

शेर

जबतकभी दुख जरर१ का खौफ़२ आवै।
करै तु हिम्मत वह खौफ़ डर जावै॥
ज्यादह उस दुख से उसका डर मारै।
फिर वह दुख आप भी पकड़ हारै॥
जोसहारें हैं दुख को राजी से।
हैं हराते वह शेर बाजी से॥
हांसिदें३ कानकरतू फिकर४ ऐमरद।
वह हसद५ खु़दई बनावै उसको जरद६॥
हांसिदी बुरा८ कार कीना है।
जिस किसी का खाहर९ सीना१० है॥

टीका

बहुधा देखने में आयाहै कि बाजे आदमी मरने से पहले ही रोना पीटना मचा देते हैं और जिस बातका डर करते हैं वह देखने में नहीं आती इस से वृथा कुछ समय तक दुख सहते हैं यह बड़ी कहावत है कि पानी न देखा और मोजा उतारने लगे और जो दुख आगयातो अबदुख सताता है देखिये एक दुख दोबार उठाया जोहि म्मत करके उस समय डर को हटाया जाता तो डरके दुख से तो बच जाते और जो मनुष्य दुख को प्रसन्नता से सहते है वह बास-तव मे शेर को हरा देते हैं जब दुख आवै तो मनुष्य को समझना चाहिये कि जो सुखनरह तो दुख भी नहीं रहेगा

बास तव में डाह करने वालों की ओर का संदेह चित में लाना कुछ आवश्यक नहीं उनकी जान को वह डाह आप चरा करतीहै डाह करने वले को मृतक के समान समझना चाहिये डाह करने वाले पर पश्चाताप होता है

हानि१ डर२ डाह करनेहारे३ चिंता४ टाह५ आप६ पिला७ वैर८ काला९ हिरदा१०

कि आप दुख पाता है और दूसरोंका बुरा चाहता है उसकी यह इच्छा रहती है कि और भी मेरे समान होजाय किंतु यह कि जो किसी की प्रशंसा होती है तो वह चाहता है कि उसकी हंसी होय ॥

हां जो ऐसी डाह होय तो हानि भी नहीं कि मनुष्य ऐसा चाहै कि जैसा दूसरा है वैसा मैं भी होजाऊं क्योंकि इसमें दूसरे का बुरा तो न चाहा अपनेही घर में आग लगी रही और जो प्रारब्ध अच्छा हुआ तो अपने उदय केलिये शुभ कर्म में लग गये ऐसी ईरखा भली है ॥

शेरं

जागते जिसको सुपना देखना हो।
चौसरो गंजफे का खयाल१ करो ॥
जुऐ बाजी का जिसको शौक़ हुआ।
शरई पंज ऐब से वह मुआ ॥
पिहले लेता है चोर पाखाना।
बाद मिलता हराम का खाना ॥
फिर गधे कि सवारियां चढ़ते।
देखा बकतों को जूतियां पड़ते ॥
पैर में बेड़ी टोकरी धरते।
आक़बत२ में बनाके गुल३ झड़ते ॥

टीका

देखिये जिस समय मनुष्य चौपड़ और गंजफ़ा खेलता है जो बाज़ी जीता तो ऐसा होजाता है कि मानो उनके हाथ कुछ बड़ा पदारथ आया अत्यंत प्रसन्न फूले नहीं समाते परंतु प्रत्यक्ष में तो यही देखने में आया कि धरती में हाथ रगड़ने पड़े और आखें नीची करनी पड़ीं और जब उठे तब हाथ झाड़के उठे परंतु उनके चितसे पूछिये तो मानो

खेल१ परलोक२ फूल३

बादशाहत उनके हाथ लगी असल में तो काठके खिलौने या काग़ज के टुकड़े ही को बादशाह होना नाम रक्खा गया था परंतु खिलाड़ी ने वह बादशाहत अपने ही को मानी परंतु क्या हुआ कहीं जनम दरिद्री कभी पेटभरा है हां जागते हुये स्वपने में पड़ना है ॥

दोहा ॥

धरि सिरहाने ठीकरा सोय रहा कंगाल ।
स्वपनेमें राजा भया जागत वही हवाल ॥

कहो जो इतनी देर अपने स्वामी का अर्थात् अपने ईश्वर का भजन स्मरण करते या भक्त मारग की पुस्तकों को देखते या किसी औरही का काम कर देते या अपना ही कुछ संसारी काम करते तो क्या दरिद्रीही बने रहते नहीं संच्चे बादशाह होते ॥

और जिनके गले में हारका हार पड़गया उनकी ओर से तो हाथही धोबैठिये (काटो तो खोहू नहीं) ॥

एक बारा से दमभर के झूठे आनन्द केलिये ऐसे अमोल कदम खोकर बेदम हो बैठे और जो कुछ भी मनमें तरी रह गई तो नीची गरदन करके रोऊं रोऊ सूरत बना कर टप टप आंसू बहाये भले करम फूटे ॥

शेर

नशे वालों की राह मत भीखो ।
उनकी सुहबतको१ तरक२ करदीजो ॥
दमलगाना जिगर जलाना है ।
दम नहीं सुहपर दुम लगाना है ॥
नशह पीना खराब करता है ।
दिलको ग़मसे कबाब करता है ॥

संग१ त्याग२

सूंघना इत्र१ का अज़ाब नहीं ।
पर करैगा ख़राब तेरे तईं ॥
क्योंकि बुनियाद ख़र्च ऐश की है ।
पस जड़ मरज़२ की बिलाशक३ है ।

टीका ॥

जिस समय में यारने दम लगाया और घुए को ज़ोर से ऊपर को सुंड करके छोड़ा तो ऐसा मालूम हुआ कि मानो इनके पेटमें से सुंडकोराह दुम निकल खड़ी हुई अबडर लगा कि कहीं सींग भी न निकल आवै परंतु ॥

चौपाई ॥

समरथको नहिं दोष गुसांईं । रबि पावक सुरसरकीनांईं ॥

शेर

जिसने दौलत ज़मीन में दाबी ।
जीते जी आनगोर में ढांपी ॥
रीस करने की राह में पड़ना ।
अपने हाथों से आपही मरना ॥
अंधे लूनेपे जोकि हंसते हैं ।
हंसकेनाहक़४ बलामें फसते हैं ॥
बेवकूफ़ों का यह वतीराई है ।
माल खोना गोया जखीरा७ है ॥
देना दुनियां में सुरखुरू करता ।
गोया बैकुंठ का गिरौं धरना ॥

टीका

बिसदिन रात गढ़ेसेही में सूमकी चार पाई है जो चरते हैं तो वहां जो लीद करते हैं तो वहां मरने के पीछे चार पाई तो गईपर काली२ खरत और लम्बी२ दुमकरके सुकड़

सुगंध१ बीमारी२ निसस्संदेह३ निसप्रजो४ अपदा५ ढंग६ ढेर७

सुकड़ा कर वहाँहीं मौजूद हैं ऐसी औंधीमत भगवान किसी को नदे कि होते छवाते अपना काला मुंह और नीले हाथ पैर करावै ॥

अंधेलूले पर हंसना मानो ईश्वर पर हंसना है कहावत है कि (मिटिये दोष कि कुम्हारै दोष) जब ईश्वर पर हंसे तो नाहक हंसकर बड़े आफ़त में फंसे अब मृत्यु सामने खड़ी है नहीं असमर्थ की दया करके सहायता करैं उनके अच्छे होने की ईश्वर से प्रारथना करैं कि दोनों का लाभ है ॥

देखिये गजभर जमीन है उसपर कोई दूसरा भी दावा करता है अबआप कहते हैं कि साराघर फूंक दूंगा परंतु जमीन न दूंगा अब फ़ौजदारियां और कचहरियां होने लगी परंतु ऐसे लोग अपने बचन के बड़े सच्चे होते हैं वास्तवमें अपने हाथ से दिन दुपहरी अपने घरमें आगलगाते हैं अहर्दिन रात क़ानून क़ानून पुकारते हैं उसको दे इसको दे इसकी हथेली गरम कर उसकी हथेली गरम कर बंधुओं के समान कचहरियों में खड़े हैं सच पूछो तो घरही में आग नहीं लगाते किंतु अपने तन की झोपड़ी को भी फूंक देते हैं बाहरे पक्केपन क्यों नहो तन धन जाता रहै पर गजभर धरती न छोड़ी किसीने सच कहा है कि आंख के अंधे गांठके पूरे) ऐसेही होते हैं छटांक भरका तो नुक़सान सहना बुरा समझा और दो चार मन का बोझा बड़ुत ख़ुशी से उठाते वास्तव में निस्संदेह ऐसे मनुष्य लट्ठ हैं इससे ज़ियादा और मूरखता क्या है ॥

शेर

जोकि औरत पराई को देखैं ।
नाम वह और नरक को वह पेखैं ॥

बिच्छू छूने से डंक मारै है।
फ़ायदिसा१ की नज़र को जारै है॥
औरत और ग्रीबड़ दोनो२ खतरेमें।
छूना क्या भाप डाले झगड़ेमें॥
ऐबा३ दुनियाके गर किये हैं तरक४।
मिल गई है मिथ्तप५ छूटा नरक॥
गाली और मारना कहा है अनावई।
करदिया हाथ और जबाको खराब॥

टीका

व्यभचारणी स्त्रीसे बचो और नहीं तो बिच्छूने खाया॥

दोहा॥

नारी नाहीं नाइरी नख सिख सेती खाय।
जीते सोखे रुधिरको मुये नरक लै जाय॥

बाजे कहते हैं कि देखने में क्या हानि है हम कुछ उससे संग तोनहीं करते फिर येही समझके उससे बोलते भी हैं फिर कहते हैं कि बोलनेसे कुछ ऊआ जाता है॥

तात्पर्य यह है कि धोखे होले देखते भालते कुए में गड़प सड़प॥

उचित है कि कीचड़ से बचेही रहना अच्छा है इसी प्रकार नेक औरत को भी जोखम है कुसंगिये के पास न खड़ी हो जैसे भाप से द्रपण में झांई आ जाती है ऐसे ही स्त्री की इज्जत बातकी बातमें जाती रहती है गाली देना और मारना सब दशा में बुरा है और अपना बदला आपी लेना सब तरह अयोग्य है॥

शेर॥

जो सजन्मत७ सुने हैं औरों की।
कान में रखे खान भौरों की॥

इसचो१ जोखम२ विशेसख३ त्याग४ बेकुंठ५ पाप६ निंदा७

बद१ यगाने से नेक बेगाना।
आक़िलों२ ने उसे भला जाना॥
है दया और दिया यह दोनों एक।
जब दिया तब करी है दया अनेक॥
सब३ बाखे को रोज ज्याफत है।
उसका खाना बिदून आफत है॥
दमक करके भरोसा कौन बसे।
जबकि दम भर न ख़ुद है सब इसे॥

टीका

ज्याफत अच्छे भोजनको कहते हैं और अच्छा भोजन वह कि जिसमें चित्त प्रसन्न हो इसे संतोषी मनुष्य के आगे जो खाने को आया उसीमें धन्यवाद करता है कहिये ज्याफत हुई या नहीं॥

और जो असंतोषी हैं और चटोरे हैं वह खाते चले तो जाते हैं चित्त नहीं भरता देखिये कुत्ते को चाहे जितना पेट भर खिलादो पर नीचे दृष्टी में देखा भाली और सूंघा सांघी करता जायगा॥

मनुष्य को उचित है कि दूसरे की पत्तल को न देखे हां अपनीही पत्तल की मक्खियां उड़ावे नहीं तो न यह रहेगी और न वह सिलसिला ध्यान का स्थान है कि मनुष्य ऐसी निरमूल गढ़के ऊपर तोपें चढ़ा रहा है कि जिसके ठहरने का एकदम भरका भरोसा नहीं मनुष्य इस संसार के आनंद भोगमें ऐसे उन्मत्त होजाते हैं कि जिसका अन्त नहीं और मरने का तो नाम उनके चित्तसे अत्यंत विस्मर्ण होजाता है और यह नहीं जानते कि मौत दोनों कानों से अत्यंत बहरी है जब आवेगी तो कुछ न सुनैगी सारीहाय हाय धरीकी धरी जायगी॥

बुरा१ बुद्धिमान२ सन्तोष३

ध्यान कीजिये कि एक दिन जाना है इस चलने के मार्ग के समानकी चिन्ता क्योंनहीं होती और जबतक इसकी चिन्ता नहीं है तब तक अच्छा काम बन्ना कठिन है क्या हुआ जो बड़े आदमी होगये ऐसे हाथी से तो चींटीही भली ॥

शेर

जबकि हाकिम खिलाफ़१ अदल२ करै।
जुल्म३ का बोझा अपने सिर पै धरै॥
बखश४ दोसाफ साफ हो न क़ैद५।
बदले लेने की छोड़ दो तुम क़ैद॥
मत करो जल्दी यार रचने में।
हां करो जल्दी बदईसे बचने में॥
अच्छे कामों में असला७ देर नकर।
बद८ अमल तरक कर अबेर न कर॥
अन पढ़ा नेक खूब अच्छा है।
इल्म बाला कसैला कच्चा है॥

टीका

बास्तव में जो हाकिम की ओर से न्याव न हुआ तो उसने अपनेही साथ तो अनीति की क्योंकि यहां बद नाम हुआ और वहां ईश्वर का चोर हुआ एक दृष्टिसे तो यह सत्य है कि भलाई और के साथ और बुराई अपने साथ करनी चाहिये और दूसरी दृष्टिसे यह कि—(भलाई अपने साथ और बुराई दूसरों के साथ) देखिये पिछली कहने से यह तात्पर्य है कि ईश्वर ने मनुष्य को इस वास्ते बनाया है कि—भले काम और भक्ति करके बैकुंठ का सुख प्राप्त करैं॥

अब जो मनुष्य ने इसके विपरीत किया तो अपने साथ बुराई की या नहीं इसमें ऐसा चाहिये कि अपने साथ भ-

---

उलटा१ नीतर२ अनीत३ क्षमा४ सचुता५ बुरा६ कमी७ बुरा८

लाई करो जो स्वर्ग में पहुंचो और बुराई करो अपने मन के साथ अर्थात् जो मन चाहै वह न करो मन पर सवार रहना चाहिये मनको अपने ऊपर सवार न करना चाहिये यह चंचल मन और है और तुम इससे पृथक हो ॥

देखलो तुम कहते हो कि मेरा मन दुखी सुखी है तुम अपने को मन का स्वामी बनाते हो कि मन तुम्हारा है जो तुम से पृथक नहीं होता तो यों कहना था कि मैं मन दुखी सुखी हूं सो कोई नहीं कहता ॥

जो कोई अच्छा काम करना है तो उसकी नींव उसी समय डाल देनी चाहिये कि कदाचित भूल न जाय और जो किसी आवश्यकता से किसी बुरी बात में संयुक्त होना है तो टाल बाल अवश्य है कि कदाचित वह विलंब होने के कारण टल जाय ॥

जिस मनुष्य में विद्या है और चलन अच्छा नहीं रखता वह अनपढ़े नेकचलन से सब तरह से बुरा है ॥

शेर

जोबुजुरगों१केखिदमती२ होंगे ।
बेतरदुद३ वह जन्नती४होंगे ॥
जोकि रखते हैं इल्मप़ से बहरा ।
जानलो बसहुआ एही पहरा ॥
लोहातरता है काठकी हमराहई ।
नेकसुहब७तमें तरगएगुमराह८ ॥
हांजवा अपनी बसकरो तुमक़ैद ।
क़ैद तुमको कहीं करावै न जैद ॥
हाथ अपने को रोक कर रक्खो ।
बसमजा९ जिन्दगी कातुमचक्खो ॥

बड़ों१ सेवक२ निस्संदेह३ बैकुंठ४ विद्या५ साथ६ सतसंग७ भूलेहुए८ सुख९

टीका

हाथ रोकनेसे यह प्रयोजन है कि दूसरे के माल पर ध्यान न करो पराया अंस ऐसा है कि जैसे आस्तीन के भीतर सांप परंतु सुन्ने में ऐसा आया है कि घूमखाने वाले अपने को हलाल खोर समझते हैं और जो रिश्वत नहीं लेते उनको बदनाम करते हैं अज्ञानी और अभागे और तुच्छ कहते हैं और अपने को प्रारब्धवान और बुद्धिमान और प्रतिष्ठित समझते हैं उनका वर्णन है कि ईश्वर की इच्छा बिना कुछ भी मिल सक्ता है हमारा लेना है सो लेते हैं और कुछ सुफ्त भीतो नहीं लेते जिसका काम करते हैं उससे लेते हैं हमको बहुतसी युक्तियां करनी पड़ती हैं हाकिम को सूधी राह दिखलानी पड़ती है जब कुछ हाथ आता है कहिये यह हलाल खोरी है यानहीं। हां साहब निस्संदेह परन्तु वेदशास्त्र कुरान अंजील आदि यह तो रिश्वत लेने को ईश्वर की इच्छा के बिना ही निषेध करते होंगे क्योंकि कहते हैं कि सुध धान खाना चाहिये और न्याय करना चाहिये कि शेर और बकरी एक घाट पानी पीवैं हक्क पराया नाना का उस सूअर उस गाय परन्तु ईश्वर अपनी इच्छा को इन घूम खाने वालों के कान में कह जाते होंगे बाहरी प्रारब्ध कि ईश्वर भी मिलजाय और हराम का माल भी हाथ लग जाय और बाज़े २ हिंदुओं में से ऐसा भी कहते हैं कि हमने पहिले जन्म में दिया था सो अब पाते हैं उनसे यह प्रश्न है कि तुमने अगले जन्ममें कैसे दिया था पुण्य किया था या जिस मनुष्य से अब तुम लेते हो उस मनुष्य को उसी प्रकार दिया था प्रथम तो अपने किये पुण्य को फेरना बड़ाही अयोग्य है और इसके विशेष दान का बदला तो ईश्वर से प्रगट होकर मिला करता है अब जो लेने वाले ने जबर्दस्ती और छल करके लिया था सो

तुम बदले में जबरदस्ती और छल करके लेते हो तो आप हमको अब इतना समझा दीजिये कि यह क्योंकर निश्चय हो कि पहिले जन्ममें तुमसे उस मनुष्यने जबरदस्ती लिया था सो अब तुम लेते हो शायद ऐसा होकि तुम्ही अब जबरदस्ती लेते हो क्योंकि जबरदस्ती से लेना तुम्हारेही सुखसे साबित है मेरी बुद्धि से तो चोरी करना जुआ खेलना आदि इस रिश्वत लेने से बहुत अच्छा है ये रिश्वत लेने वाले लोग दिनदुपाहरी आंखमें धूलडालते हैं और सब से बढ़ के जो अपराध है सो यह कमाते हैं और जोकि इनकी कमाई भ्रष्ट होती है इस्से औरों को भी दुखदाई होती है और उनको तो जीते जी नरक मिल गया हराम का माल हराम में गया खूब अय्याशी अर्थात् भोग किया और अच्छी पोशाक पहनी पेचवान हुक्का लगाया धूम धाम से ब्याह किया और मकान बनाया सवारियों पर चढ़े दोचार हराम खोरों का पेट भरा कि जिस्से वे आशामी ढूंढ कर खावें परन्तु उनको यह नहीं मालूम कि ॥

दोहा ॥

कबीर दुर्बल कोइ नसतायये जाकी मोटी हाय।
बिना जीव की खाल से सार भसम हो जाय ॥

बाजे साहब कहते हैं कि क्या करें रिश्वत के बिना तो कामही नहीं चलता १०) रुपये महीनाके नौकर घर में दस आदमी किस प्रकार रोटी खांय और प्रतिष्ठा रक्खें उनसे पूछा जाय कि जिसको केवल ५) रुपये महीना मिलता है और १२ आदमी घरमें हैं उनका भरण पोषण कैसे होता है यह मनुष्यों पर अपूरब झलका परदा पड़ा हुआहै उस अपनी प्रतिष्ठा को जो १०) रुपयेके रखनेके योग्य थी उसको २०) रुपये वाले के बराबर रखना चाहते हैं क्या दश पांच रुपये में विवाह नहीं होसक्ता क्या नारियल

गुड़गुड़ी कली पीना हुक्का पीना नहीं है क्या पृथ्वी और बान की खटिया पर सोना नहीं है क्या सिंहासन पर मरना और क्या भूमिपर क्या दाल रोटीसे पेट नहीं भरता क्या मोटा कपड़ा फाड़े खाता है क्या छप्पर रहने को नाहीं करता है क्या पैरों चलना बीमार करता है बाह एक जरासी समझ की कसर है नहीं तो दिनरात इसीमें परम आनन्द से बितीत होसक्ता है और दिनरात की चिन्ता और काटा बनारी दूर होती है ॥

जिसका हिसाब साफ है उसको हिसाब देनेमें क्या भय है और घूस की सम्पति से धनवान हुआ चाहते हैं वह हजार रिश्वत लें और हजार सिर मारें एक न एक दिन ऐसी आपड़ती है कि सब कसर निकल जातीहै और कंगाल ही दीखते हैं और उनकी टोकरी में तिनके झाड़ दृष्टि पड़ते है (वरस दिनमें सखी सूमदोनों बराबर) होजाते हैं और देखिये क्या प्रतिठा मनुष्य की रक्खी रहती है हां वह बड़ा इज्जत वाला है जो अपने हक्क१ को अपने काममें लाता है वाजे कहते हैं कि हजारों घूस खाते हैं उनको कुछ भी नहीं होता उनके पेट तकमें शूल उठताही नहीं कोई एक दोकी शायद कभी खराबी आगई तो आगई नहीं तो खैर ऐसा हव यहांके हाकिमों को दखाना कमरे हीके भीतर कि वस्तु दीखती है और किसी को रिआयत२ भी होजाती है परंतु ईश्वरको तो सम्पूर्ण दीखता है ॥

एक दृष्टान्त है कि किसी उस्ताद३ने अपने दो शागिर्दों४ को दो कबूतर दिये और कहा कि जहां कोई न देखे वहां इनको मारलाओ एक शागिर्द तो कोठरी मे घुसकर मार लाया और उस्ताद के सन्मुख रखदिया और दूसरे शागिर्द ने इधर उधर फिरकर कबूतर जीता फेर लाकर उस्तादके

---

१ शुद्ध धान्य २ टालावाली ३ गुरु ४ चेला

आगे रखदिया उस्ताद ने पूछा कि क्यों नहीं मारा उसने उत्तर दिया कि आपने ऐसा कहा था कि जहां कोई न देखे वहां मारियो तथापि कोई स्थान मुझको ऐसा नहीं मिला क्योंकि ईश्वर सब स्थान पर देखने वाला है उस्ताद यह सुन कर उस से बहुत प्रसन्न हुए॥

अब देखिये कि जो रिश्वत लेने वाले की चोरी यहां के हाकिमों को नहीं मालूम हुई तो क्या हुआ परंतु ईश्वर से तो नहीं छिप सक्ती और बाज़े निर्लज्ज ऐसे भी कहते हैं कि खैर वहां का कुछ संदेह नहीं कौन जाने क्या होगा दूसरा तो न जानेगा अब तो आनन्द से गुज़रती है अब कहिये कि यह बोलीयां महा नीचों की हैं या नहीं और उनसे पूछिये कि वह मरकर कहां जांयगे यहांहीं तो रहैंगे क्या भ्रष्ट मोहरी में कीड़े नहीं रहते साहब उनको दूर जाने का दुख कदाचित न होगा घरके घरही में कुल बुलाया करैंगे बाज़े साहब कहते हैं कि हम जो रिश्वत लेते हैं वह पुण्य करदेते हैं देखिये इतने तो गले काटे और दोचार का पेट भरा भाई यह रिश्वत लेने वाले अपराधी गला नहीं काटते दोचार खून और भी करते हैं जिससे रिश्वत लेतेहैं उसको अधमरा कर डालतेहैं और बादशाहको कलंक लगाते हैं और अन्यदाता हाकिमों को गालियां दिलवाते हैं और जो वास्तव में रिश्वत नहीं लेते हैं उनको बदनाम करदेते हैं एक मछरी सारे जलको भ्रष्ट करै॥

ऐसा वृतान्त सुननेमें आया है कि एक मुखबिर ने किसी धर्मज्ञ तहसीलदार के विषयमें साहब कलक्टर से रिश्वत खानेकी इतलअ़ की साहिब कलक्टरने तहसीलदारको बुलवा कर कहा कि हमने सुना है कि तुम रिश्वत लेतेहो तहसीलदारने जवाब दियाकि हांज़ूर सचहै यह सुनकर साहब कलक्टर बहुत घबराये और संदेह में पड़ गये उस समय

तहसीलदार ने बिनय किया कि हजूर कुछ संदेह न करिये अभिप्राय उसका यह है कि जो मनुष्य वास्तव में रिश्वत लेते हैं उनको बुलाकर पूछिये सबका यही जवाब होगा कि कभी न लिया न लेते हैं जो मैं भी यही जवाब देता तो मैं भी उसीसमूहमें संयुक्त होताइस वास्ते मेरा कहनाउनसेविपरीत अवश्य हुआ साहब कलक्टर बहुत प्रसन्न हुए और रुखसत किया परंतु साहब जिनके मुखमें रुधिर लग गयाहै वह हजार कहो कब(सुनते हैं कहीं बूढ़े तोते भी कुरान पढ़ते हैं) जो नई पौद मेंइस समुद्र के पानी से सिंचाई होय तो निश्चय है कि फल मीठा हो और मुझ को तो यह सब लोग अत्यंत बुरा कहेंगे सो मैं आपही कहता हूं कि मैं दीवाना हूं संसार के आनन्द को दुख समझा है ॥

बली की कहावत है ॥

रेख़ता * ।

हमन से मत मिलो लोगो हमन खफ़ती दिवाने हैं ।
खुशी की राह छोड़ी है दुखी में आस माने हैं ॥
हमन दिन रैन रोते हैं सुगम से जान खोते हैं ।
सुली की सेज सोते हैं विरह के यह निमाने हैं ॥
तजी खिदमत वजीरी की पाई खिजमत फ़क़ीरी की ।
चढ़े किश्ती समुद्रो की फ़क़ीर के ये मकाने हैं ॥
मेरा हक़ यार औ जानी पिया हर नाम का पानी ।
कि अकसर होंयगे फ़ानी वही रामे समाने हैं ॥

शब्द——अरे रंग जोइ लागा सोइ लागा ॥

हंसा की गत हंसा जाने मरम न जाने कागा । १ ॥ घायल की गति वह क्या जानै जातन घाव न लागा ॥ २ ॥ बिरही की गत वह क्या जाने खाय सोय नहिं जागा । ३ ॥ हरश्याम जह रंग न जागा सो नर निपट अभागा ॥ ४ ॥

शेर

सबसे सूरत उन्हींको है बरहम१ ।
शौक़ शोबे से जिनको हैं हरदम ॥
जो न होवै बुरी तो क्यों देखैं ।
काले बालों का रंग क्यों पेखैं ॥
नेक सुहबत२ में चल के जो जावैं ।
आम का पेड़ पैर को गावैं ॥
दूसरों के दुख में जो होवै खुश ।
हैं क़साई कहांवैं मर्दुमकुश३ ॥
रहम४ करना बड़ीही न्यामत५ है ।
न करै जो उसी की शामत६ है ॥

टीका ॥

अच्छा साहब कहिए जो उन्हींकी सूरत में दोष नहीं है तो क्यों बार बार दर्पण में अपनी सूरत को देखते हैं पश्चाताप है कि वृथा समय खोते हैं क्या एक दोबार का देखना तमाम दिन में काफ़ी नहीं होसक्ता और इसमें यह बड़ी भारी हानि है कि जिनको शृंगार करने का शौक़ होजाता है फिर उनसे और कोई अच्छा काम नहीं होसक्ता उसीमें अपना बड़प्पन समझ कर प्रसन्न रहते हैं ॥

सत्संग में जाने वाले के चरण को आम का वृक्ष कहना चाहिए क्योंकि जब सज्जन और वृधों के सत्संग में गया तो उसमें निस्संदेह मिष्टफल उत्पन्न होगा ॥

जो दूसरा दुख में है और उसे अपने को प्रसन्नता हुई तो निस्संदेह निरदयता अर्थात् क़साई पन है चाहिए कि ऐसी युक्त करै कि उनके दुख में न्यूनता होय न कि उसके दुखकी वृद्धिकरै यद्यपि क़साई पशु को मारता है परंतु शीघही जीव निकाल डालता है पशु को अधिक समय तक दुख भोगना

अस्तव्यस्त१ सतसंग२ मनुष्यमारनेवाला३ दया४ पदार्थ५ अभाग्यता६

नहीं पड़ता परंतु ऐसे मनुष्य जो दूसरे के दुख को बढ़ाया चाहते हैं वह मनुष्य को अधिक मरा रखते हैं यह मार डालने से भी अत्यंत बुरा है ॥

दया करनेसे यह प्रयोजन नहीं है कि अपराधी को दंड न दो जो चोर को दंड न दिया जायगा तो न्याय न होगा और जब न्याय न हुआ तो अनीति हुई इससे दया का प्रयोजन यह है कि दया न्याय पूर्वक हो जैसे ईश्वर को दयालु और न्याय कर्त्ता कहते हैं मनुष्य को भी इन दोनों गुनों से संयुक्त होना चाहिये और यह बात उस समय प्राप्त होगी जब कि मनुष्यके चित में यह इच्छा होय कि संसार प्रसन्न रहै ऐसे आदमी से दया न्यायपूर्वक देखने में आवैगी जैसे समझ वाला मनुष्य अपने पुत्र पर दया न्याय सहित करे है ॥

शेरं

अगरचे बज़्त तलख़१ यह पंद२ है ।
पर अंजाम३ को फायदे मन्द है ॥
इसे ग़ोश४ दिल से सुनो ऐ मेरीजां ।
इसी से बशर५ को है अमनोई अमां ॥
अगरचे दवा तलख़ देवे हकीम ।
तो बीमार परहै वह बारे७ अज़ीमट ॥
शफ़ाए उस दवासे जो बीमार पाय ।
तोफिरवह हज़१० नक्योंकर उठाय ॥
यह बिन्द्राबन ऐ शाफिये११ हरमरज़१२ ।
हो नुक़्तसे में उसके असर अलगरज़ ॥

टीका

आशय इसका यह है कि साफ और कड़ा बचन यद्यपि बुरा लगता है परंतु लाभ कारक बज़्त है और लल्लोचप्पो

कड़ुई१ उपदेस२ अंत३ कान४ मनुष्य५ बचाव६ अहसान७ बड़ाई८ आराम९ आनंद१० अच्छा करने वाला११ रोग१२

की बात प्रत्यक्षमें तो प्यारी लगती है परंतु मूलमें तो अत्यंतही बुरी होती है जैसे इन्द्रायण का फल देखने में तो बहुत शोभायमान और स्वाद में अत्यंत कड़वा और साफ कहना मिश्री के समान है देखने में तो कड़ी और मुख में डालने से आपी आप घुल जाती है मुखभी मीठा है और अंतःकरण को भी गुण दायक है ॥

अब कुछ ग़ज़लें और रेख़ता और शब्द लिखे जाते हैं आशा रख प्रार्थना करूं हूं कि कृपा करके मेरी विनय पर ध्यान कीजिये कि अक्षय धन प्राप्त हो ॥

ग़ज़ल

गुरतेग़ बहादर ने बनाये हैं सभी काम। काटे हैं जगत फंदसखायाहै गुरू नाम ॥ १ ॥ है डाल भरेमें वो गुल१ याद सनम२से। झुक देतेहैं पत्थर कि ऐवज३ पिस्तो बादाम २ ॥ रहते हैं अलग हालत दरवेशी४ में मसरूफ५। दुनियां की ख़राबीसे हुए फ़ारिग६ मादाम७ ॥ ३ ॥ सोतेहैं जहां खाक अदमट साफ बिछा है। रहते हैं ग़बोट९ रोज़१०बड़े ऐशो११ आराम ४ ॥ काबेमें फिरैं सैरकरैं बिंद्राबनकी हस्ती१२ के सबक़ लेतेहैं अस्त से भरा जाम१३ ॥ ५ ॥

रेख़ता * ।

गुरकीटहल करता नहीं मन मत से तू डरता नहीं ॥
गुरकी रज़ा जानी नहीं सेवक हुआ तो क्या हुआ ॥ १
रागी अलापै राग को भरता सुरन और ग्राम को ॥
अनहद की धुनजानी नहीं रागी हुआ तो क्या हुआ ॥ २
ध्यानी जो धरता ध्यान है तन को किया जो ख़ाक है ॥
सोहं शब्द की ग़म नहीं ध्यानी हुआ तो क्या हुआ ॥ ३

फूल१ प्यारे२ बदलेे३ फ़कीरी४ लिप्त५ छुटगये६ सदा७ संसारका अभाव८ रात९ दिन१० आनंद११ सत्यता१२ प्याला१३

ज्ञानी जो करताहै ज्ञान है वैराग्य शमदम ना हुआ।
शुरती अंहंब्रह्म असमई कहता फिरा तो क्या हुआ ॥ ४
साधू जो पढ़ता पोथियां बाना जो रखता पंथ का।
तनमन न साधा आपना साधू हुआ तो क्या हुआ ॥ ५
गिरही जो रखता है गिरह दरको खुला रखतानहीं।
भूखा पियासा फिर गया गिरही हुआ तो क्याहुआ ॥ ६
बिरकत जो रमता देसमें इन्द्री का संग छोड़ा नहीं।
मालिकलखा नहीं आपमें भरमत फिरातो क्या हुआ ॥ ७
विरहीजो बन२ में फिरा और देश बिन्द्राबन फिरा।
देखा नहीं घट आपना विरही हुआ तो क्या हुआ ॥ ८

राग काफ़ी *।

तू चेला है तुझे यह आपा शूल। जाल काल में फांस लाखमें यही नर्कका मूल ॥ १ ॥ इसी जगत को इसी कुगत को देख रहा तू भूला। बार बार तुझको समझाया मत तू यामें फूल ॥ २ ॥ अब निज गहो सरन सतगुर की अब की रचो न धूल ॥ सुरत शब्द में राखके बिन्द्राबन घट झूल ॥ ३ ॥

ग़ज़ल *।

गौर कर ऐसा रतन१ अनमोल फेंका जायगा *।

क्या भला सुझके२ खुतनइसतोल तोला जायगा १ ॥ अकल सारी गुम हुई ऐसी समझ क्योंकर हुई। देख क्या तनजब३ को इस डौल नापा जायगा ॥ २ ॥ तानके चादर कड़ोड़ों इस जहां से चल दिये। याद रख यह लाख चौरासीही भोगा जायगा ॥ ३ ॥ यह दमों की डांक क्या बेनाम सुमिरन जायगी। हाय चेहरा सुरख काली जमसे छापा जायगा ४ ॥ तुमको जो कुछ न्याज़४ है या ढंग है आराम का। बाह गुरू कहने से तू बिन कुल सफा बच जायागा ५ ॥ तुझको नरतन

स्वास१ कसतूरी२ स्वंस३ दिनता४

मिसल बिन्द्राबन मिला बड़ी भागसे। क्याअबस१ दरसन बिना इसतौर छोड़ा जायगा ॥

रेख़ता *।

कहूं तजभोज क्या, इसकी कि अपना हाल भूला हूं *।

न त्तची शुद्र मैंहूंगा ब्राह्मण बैस मैंना हूं ॥ १ ॥ न लंका और भारथ खण्ड से न काबुल स्याम से मैंहूं ॥ न कश्मीरी न पंजाबी न ब्रहमा चीनसे मैं हूं ॥ २ ॥ न पूरब से न पश्चम से न उत्तर से न दक्षिण से। न देवत और लक्ष मीसे न बैकुंठी न स्वरगी हूं ॥ ३ ॥ बना घर हर जगह मेरा जहां आराम बहुतेरा। सेवा इक बाह गुर विन अब नहीं कुछ और जानूं हूं ॥ ४ ॥ न बिन्द्राबन न कावे२ से न हिंदू और मुसलमां हूं। न धरती आस्मां३ से हूं न दिनसे रात से मैं ॥ ५ ॥

शब्द—राग काफ़ी *।

सुन सुन मन तू अनहद सुन घट भीतर में हो रही धुन ॥ १ ॥

किंगरी बीन पखावज घंटा हो अखिर तू तामें गुन १
ओं सार के वारे पारे सुरली मधुर मधुर धुन सुन २
द्रिगदुर बीन पार पद परसत करम भरम सब जर भयभुन ३
बिन्द्राबन पूरण गुर दरसत मिटगये आवन जावन पुन ४

ग़ज़ल *।

दर्दभी देखा बेदरदी देखली उस यार की। शकल४ जोरबपूने देखाई देखली हरबार की। १। सिरके अंदर है सदा येई यार की बानाज़ु की। गोश७ को जब बन्द कर आवाज़ सुन खुश प्यारकी ॥ २ ॥ उसके दरपरट झांझ नक्कारे नफ़ीरी बाजते। साज सारे बांसुरी और बीन सारंग सारकी ॥ ३ ॥ दिलके अंदर नाम उसका रम रहा बाकर्रफर ९। बंदलब १० को जब किया सुमिरन की फेरा

व्यर्थ१ मुसलमानोंकातीर्थ२ आकाश३ दसा४ भगवान५ शब्द६ कान७ दरवाजा८ बहुतजोरसे९ होट१०

फारकी ॥ ४ ॥ हठ रहै दुनिया केलहबों१ लाचसे ऐवाग़दिल मान है यह खुशक२ कुआं बावली रहइ ख़ार४ की ॥ ५ ॥ झूठा आलमपू होगया सच्चा कहो क्यों करये क्या। चुटकी तूने डालदीं जादू सा अंधारई की ॥ ६ ॥ नग्र बिन्द्राबन के अंदर मांबरा प्यारा पिया। टुकनि गाहे७ ग़ौरसेट सूरत जो देख उसयार की ॥

तिल्लाना * ।

सुरति याथारे घर जाय लो * ।

घर बिछुरत रही भूल तनमन संग चित बुध और अहंकार मोह बस सुखी दुखी बहु होय लो ॥ १ ॥ झकिट झकिट कुटल नचेत नाम तालिड़लिड़ धालिड़लिड़ लिड़धा सिमिट सिमिट पगनूर फिर्कटी तक बाजाट तोम तूग़ाना गायलो ॥ २ ॥ आगे चल सुन जहां धुन रसाल सुन सुन मनमें हरष प्रात तारा गंगन बिचदर से चलत पवन सन ननासन ननानन । बिन्द्रावन जहं लेत धीर तहां सहज गइया पायलो ॥ राग सोरठा * ।

जाना जो थारो मेंमे मासे भूरो भूरो * ।

मानमनी की चादर ओढ़े तुससे ज़ुआ भय पूरो ॥ १ ॥ शील धरम तुम सबही त्यागे कैसी मत ज़ई मूढ़ौ ॥ २ ॥ परमारथ की बाट न हेरी लोगे सिर पर कूड़ो ॥ चल चल हर बिन्द्रावन ढूंढो नर तन जात है धूरो ॥ ४ ॥

ग़ज़ल देश * ।

कीजिये सब्र६ नहीं बात है घबराने की * ।

अब जरूरत ही बड़ी कल्ब१० को समझाने की ॥ १॥ सब की तलखी११ कोऐजानकड़वी हिनजानजबकि उम्मेद१२तुझे शीरीही१३ फलखाने की ॥२॥ है हक़ीकत१४ में यह दुखदरद

खेलकूद१ सुखा२ रास्ता३ काटा४ परपंच५ ठेर६ दृष्ट७ बिचार८ संतोख९ मन१० कड़वाहट११ आशा१२ मीठे१३ वास्तव१४

भला तुम को अज़ीम१ ॥ यह हिरासानी२ की माजून३ नहीं खानेकी ॥ ३ ॥ समझो बूझोगे ज़रा अस्लहक़ीकत इसकी। यह समझ होगी दवामुल्क अंमां४ पानेकी ॥ ४ ॥ बेरज़ा उसके कभी कुछ नहिं होता ऐदिल। फिर नहीं जाय वहां पैरके फैलानेकी ॥ ५ ॥ अपने अल्लाह५ को तुम आदिल६ मुन्सिफ समझो ॥ पस रज़ा उसकी सहीबक़ुनहीं मिटजाने की ।६ ॥ अपने मालिक को अगर हाज़िर नाज़िर७ जानो ॥ क्याज़रूरत है रही बिन्द्राबन जाने की ॥ ७ ॥

शब्द—राग काफ़ी * ।

तू मद माता रे माता प्यारे बाह गुरू नहिं गाता * ।

रैन दिवसइस तनके कारण नए नएरंग बनाता। क्षणक्षण मौत पड़ी सिर खेले ताको भय नहि खाता ॥ १ ॥ नित दुख सहै परम नहिं पावै मारैं यमकी खाता। मत भंग छई जा तरेतेरी ऐसीकौन पिलाता ॥ २ ॥ धनसंपत बादरकी छांही सोतू हिरस बढ़ाता। फल इसका कुछ और नहीं है नाहक़ जिगर जलाता ॥ ३ ॥ मनो राज का खेल बनाकर देख देख मुसकाता। एक क्षण बीते भयो कांगला यों आराम नपाता ॥ ४ ॥ बालू भीतरंगी बज़रंगसेबिन्द्राबनकहिगाता। गिरे अचानक बादहिं जावै अब क्या करै विधाता ५ ॥

राग काफ़ी * ।

चिंता बाघट बसियो री जो घट साधु द्रोही होवै * ।

देख साध को हाथ न जोड़ै देने को कुछ नाहीं री। ऐसे नर कूकर सम जानो हटियो मती हटाई १ ॥ कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी खावै नहीं खिलावै री। दिन में रात करी है घुघू हिलियो मती हिलाई ॥ २ ॥ भूखे को कुछ त्रास न लावे देखो बड़े क़साई री ॥ पानी में ज्यों आग लगी है बुझियो मती बुझाईदी ॥ ३ ॥ भजनसुनैंतो प्रीति नलावे बाह

बड़ा१ घबराहट२ औषध३ रक्षा४ भगवान५ नीतीबाला६ हद्द७

गुरू नहिं गावेरी। बिन्द्राबन ऐसे घट भीतर रहियो छिपी छिपाईरी ॥ ४ ॥

राग बिहाग * ॥

भजन बिनमाती होयया सखियाँ * ॥

रूप बनाया बनदा नाहीं चाम बिना क्या हडिया ॥ १ ॥
स्वास धुक धुक निसदिन खोया बाहगुरू नहिं जपियां ॥ २ ॥
अब पछतावे जब क्यों सोया लुटगई तेरी हटियाँ ॥ ३ ॥
सुरत बिसारी फलदा नाहीं मेवा झड़ झड़ परियां ॥ ४ ॥
स्वप्न नगर बिन्द्राबन पाया क्षण में सरवस छुटियां ॥ ५ ॥

तिल्लाना * ॥

सतसंग मनरंग फल पाई * ॥

मंज सुरत को पावे अनहद सुनत शब्द झनझन झनन १॥
पल पल पर पिया गुण सुन पागी छावार हीपद माहीं।
सुहर सुंहचंग शब्द सुन हरखत सारीम सारीम सन सन सनन ॥ २ ॥ उठत शोर घन घोर मधुरिया जीव पुरुष सब वाही मैल कर्म विन्द्रान छूटी कटत जाल हम हम हनन ॥३॥

शब्दराग—रामकली

निश दिन बाजे बजैं रसाल जप तप पूजा रहा न काल ॥

गंगा यसुना संगम नित्य अर्चा पूजा स्वार्थ हित्य। कर्म बढ़ावे वेड़ी डालैं इनको सुख नहि तीनों काल ॥ १ ॥ प्रेम अखाड़े में नहिं खेला नाम भक्त जी बड़ा सुहेला। छापा तिलक पिताम्बर धोती सिर पर राखें नाहक बाल ॥ २ ॥ घर छाड़ैं और बन में जावैं इच्छा अग्नि पड़ी भड़का वे। स्वांग दिखाकर बनफल खांवे क्यों त्यागी तुमरोटी दाल ३ ॥ काम क्रोध मोह नहिं त्यागी मूढ़ मुड़ाय भये बैरागी। चादर रंग के भेष बनाया पहरो धोईतन की खाल ॥ ४ ॥ भएगृहस्तीपाप कमावें भूखे कभी न टूकड़ पावें। भजन बंदगी नेक न जान कौड़ी कौड़ी जोड़ै माल ॥ ५ ॥ निशदिन चिन्ता

मनमें आनैं पैसे को भगवान बखानै। सुतदारा से नेह बड़ावें इनका नाम धरो बिकराल ॥ ६ ॥ तनको क्षण क्षण निरख निहारैं मरने की नहिं बात बिचारैं। तेल फुलेल सुगन्ध लगावें इनको कहिये समा सियाल ॥ ७ ॥ दुख सुख दोनों अन्तर व्यापै ब्रह्मज्ञानी नाम अलापैं। कर्त्ताको झूठा करगावें जगत बतावैं खावखुयाल ॥ ८ ॥ अन्तरदृष्टी क्षणनहि जोवें ब्रह्माकार कहो कस होवें। ऐसे ज्ञानी कलयुग मांहीं इनको कुछमत पूछो फाल ॥ ९ ॥ देख २ कलयुग को रीती गुरसे पल पल बिनती कीती। वाह गुरू धन धनहो नानक सब दुख सहज दिया है टाल ॥ १० ॥ इस तनको बिन्द्रावन जानो घट अन्तर दरशन पहचानो। सुख आरा म जो तुमको चहिये अपनी सुरत गंगन पर डाल ॥ ११ ॥

शब्द—रामकली *।

जकड़ सुरत गुइयां शब्द सुन। घघकत घटमें धुन रसालर हियांपर खैयां करतहै। १ ॥ जहां झांझ मजीरा बाजत है वही सुरत अड़ियां। नाद का स्वाद लहो तुम ठहरे वहियां तरतइयां तरतहै ॥ २ ॥ झलक जोति झिलमिल निहार दृग सुरय किरन गहियां। मधुर मधुर सुरली धुन होवे हर खयया फिर खैयां करत है ॥ ३ ॥ बिन्द्रावन घटमें निहार शब्द रस लहियां सुरतदो। सुनमें चढ़ाओ अरशयया ऐ शैयां करत है ॥ ४ ॥

प्रबन्ध

निरबारैं निज धामीनि रत निरनं *।

तैं आगाध धुन सिन्ध भवन सुन लख घर जाकर अनूप किरनं। धुरत किये कर्म दुख जायक। निज स्वरूप मत गुरफुर ज्ञानी जानीजवदध क्षानीरस अलगानी तबजानो सत सरनं तोड़ फंदं ॥ १ ॥ चित समात पदपंथ जोवन धन लहैं धुन नागर जरान मरनंलख सुनिये कर्म सहायक पगबिलोक

मन्दिर धुर धामी स्वामी निज मंच जानी हो अकामी ले अरामी कीन्ह हरखं बिन्द्राबन तुरत तरनं ॥ २ ॥

होली * ।

ऐसी होली खेल जामें सत संग रंग रंगोरी ॥ झन झन कार सुनो मेरी प्यारी सूरत संख गहोरी । ध्यान गुलाल मलो या तनमें तो शब्द के रंग छकोरी ॥ १ ॥ होत आवाज गगन तेरे में नाद को साज बनोरी । चित से चिंता नाघ सखोरी तो एक रस ठाठ ठटोरी २ ॥ नेती धोती जप तप पूजा कितनो भांति करोरो । मन ममता छूटन को नाहीं तो अनहद शब्द सुनोरी ॥ ३ ॥ खट शास्त्र विद्या बज्ज सीखी तो पंडित नाम धरोरी । मानमनी की चादर ओढी तो नाद को आद ढकोरी ॥ ४ ॥ वाचक ज्ञान को मान भयो जब बिन्द्राबन योंही जन्म बहोरी । सार शब्द गहि जकड़ो जतन से तो सतपद नाम मिलोरी ॥ ५ ॥

होली——फेर गगन मठ धावरी सूरत बन जाई * ।

कंज कमल को धार के अनहद बजाई । झिंगा शब्द झनकार की परखो धुन माही ॥ १ ॥ संख मृदंग धुन घोर सुन आगे चल जाई पूर्व बासा चांदके पश्चम नहिं भाई २ ॥ जोत स्वरूपी देख के सुरली सुन आई । इस मंदिर के पार से परमातम पाई ॥ ३ ॥ सोहं शब्द पहिचान के तहाँ सुरत लगाई । बिन्द्राबन घटजो लखें हंसा होजाई ॥ ४ ॥

एक ताला

मेरे अनहद की लाग दूसरी न कोई ॥

मनका संग भूल धार सुरत सार खोई २ ॥ अवराग जारे फैल रहीं सुक्त कौन भांति होई ॥ ३ ॥ जोत भान छवि निहार जों पार होई ॥ ४ ॥ बिन्द्राबन सोहं माहि सुरत नित समोई ५ ॥

तथा

सत् चित् आनंद नित् पार ब्रह्म होई ॥

अहंकार वपुको धार जीव मान खोई ॥ २ ॥ अहं मम के त्यागचीव भास नास होई ॥ ३ ॥ विध निषेध एक सार समझै सम सोई ४ ॥ बिन्द्राबन जगत भास कल्पत पुन होई ॥ ५

टप्पा

मेहे हाल रहं दियावे भर्म ज़ाल ॥

सत्संग की गल जब दरसावैं दूर भयो क्रम काल । १ । यह जग झूठ सत्य कर दीखै वे अन हुआ तंबू पाल । २ ॥ यह दुख मानूं सत्य दिखावै वे ज्यों लागी स्वपने भाल ॥ ३ ॥ बाह गुरू से नेह लगावे वेले आराम कमाल ॥ ४ ॥ बिन्द्राबन मनोराज दिखावें वे झूंठा इन्द्रजाल ॥ ५ ॥

कमोद * ।

लहोरे धुरपरन जतन अरे चित मीता * ।

काम क्रोध मद लोभ को मारोजारो अहंमोह की क्राना । धुनरसाल परखो झनकारा अमर भये रसपीता ॥ १ ॥ स्याम सेत दृग कमल मझारा रमता राम सबनते न्यारा ॥ बिन्द्राबन द्रस पुरस दरसानो हरख हरख हरखीता ॥ २ ॥

ठुमरी * ।

पल छण में तोरी चाकरियां बाह गुरू नित जपत रहूं * ।

मनसे कहो लगो साधन सों सम दम सरधा जाकड़ियां । भजन बंदगी सार यही है छुई लहर बहर की बादरीयां । १ ॥ तनसे करो टहल साधन की दया धर्म नहीं आकड़ियां ॥ छमा गरीबी हार सही है लई सबर की चादरियां ॥ २ ॥ धनसे भरो पेट भूषण को भजन करो निस वासरियां । काम क्रोधमद छोड़दियो है मिले गुरू तोही हाजरियां ॥ ३ ॥ मीठा बचन कहो या मुख से सुख होय सब की खातिरियां ॥

बिन्द्राबन यों मुक्तमिली है खुलगई दिल की आंखनियां ४ ॥

तिल्लाना खम्माच * ।

जो यह गुर सुमिरन वेला है * ।

कुछ कहो तो उसके ढंग ढाल क्या रंग रूप कुछ और पता देखा जो किम धारन से हां पांना बड़ा दुहेला है ॥ १ ॥ क्या जल थल बीज वृक्ष में या चांद सुरज कोइ तारेमें ॥ यासुन्न पताल पवनमें या पूरण देखा सारेमें । यानैन नासिका नाभीमें या हृदये गंगन में पाया है कर्म उपासन योगध्यान से किम मारग कहो सुहेला है ॥ २ ॥ वह एक अनेक छिपा है अयां कहि राम रहीम वह कहलाता ॥ कहिं सोता है कहि बैठाहै कहि खड़ा हाथ से देता है ॥ कोई सत् चित आनंद मानै है कोई सेत वह रंगी ठानै है कोई रंगन रूप बताता है जब आपहि आप अकेला है ॥ २ ॥ पेखाजो सब मारग से फेर फार खा आतेहैं ज्यौं पोस्तोमा जमाते हैं आखिर मारूप होजाते हैं । यह कर्म उपासन योग ध्यान न मन को निश्चलकर लावैगे । ज्यौं दरपन सन सुख रक्खा है जो आपहि दरसन मेला है ॥ ४ ॥ ज्यों बालक को समझाते हैं पढ़ अक्षर पंडित कहलाते हैं ॥ जल थल हृदय बीच दिखाया मन बुद्ध एकाग्र होजाते हैं ॥ अब कलयुग कर्म योग नहिं बनता सर्ब उपासन में सुख सुमिरन सुतता । नामी नाम अभेद चिन्हाया राम नाम का हेला है ॥ ५ ॥ एक सुमिरन होवै जिह्वाते दूजा स्वास से होता है । तीजे सुरत नाद से लागी यह शब्द ब्रह्म कहलाता है सामी पड़्या रस पावै है ज्यों ओला जल होजावै है बिन्द्राबन ओला है ना गोला है सारे एक रस पानी भयला है ॥ ६ ॥ एमन

धुनम्मता रस पीजिए ॥

जहां नहि स्थूल विसाल शब्द सुन पद प्रवीन इति आदि

फंद से भारी लाहा आपा हानी जाना रागा तालावे ॥ १ ॥
ध्यानी जानी जी भाखा पूरा जानीसूरावे खड़कत मजीरा
झननना धाधिरकट धाधिरकटधाधम धिर कट चेतना मला २ ॥
आ गई हाथ आगई हाथ ज्यों म्रग चक्क ज्यो म्रग चक्क म्रग
म्रग लारी रग रग पागा धुन अजब मुरली की नाद से
सुरत बिन्द्राबन धुर जाय दीजिए मन म्रतक जहां जम
म्रतक तस म्रतक भेद शामता ॥ ३ ॥

शब्द—राग भयरवी ॥

मन में राग गरियाले मैं पनि हारिन पिया की रे ॥

सत्संग धारा जात बही हैं लागै न डोल रसरिया रे । १ ॥
घाट बाट अति सुगम बने हैं घर सिर नाम इडलिया रे। २ ॥
जल भर लेगा तपन बुझैगो तू सच मुच होय अमनियां रें
॥ ३ ॥ तू नहिं बालक चालिस गिनावै मत खेला जन गरिया रें
॥ ४ ॥ झट पट घट तूसिर पर लेवै होवै जेठ बदरिया रे॥ ५ ॥
लै गुर कृपा नाम सें लागो यही है सूधी डगरिया रे ॥ ६ ॥
बिन्द्राबनमनकोसमझायाकर सीतलमेरीजिगरिया रे ॥ ७ ॥

एमन

दम चला गिरा कर गागरी * ।

भाई बंधु कुटम सब रोवें चल्यो मीत सब त्यागरी ॥ १ ॥
हाहा कार सबहि मन उपजा देह धरो जब आगरी ॥ २ ॥
जग चलता आंषों से देखे आपन चेत अभागरी ॥ ३ ॥
धन परवार कुटम और देही यह नहिं जावे साथरी ॥ ४ ॥
याद करो बिन्द्राबन जाना गुर चरनन सें लागरी ॥ ५ ॥

धुरपद

तेरे माहि शब्द सार जामें पैठ ले दोदार * ।

ताहि माहि सुरत गाढ़ जामेंजापो नाम को ॥ १ ॥ आपा
छोड़ मैंको तोड़सुरत मोड़ गुरसे जोड़ यही है सुपंथ चलो
जासे होवे काम को ॥ २ ॥ गंगा है नगर माहिं न्हाय म्रतको

संवारैं तेरी है नाम सों निस्तार देख निरख राम को ॥३॥ जाल तोड़ भरम छोड़ कर्म खोड़ मोड़ फोड़ बिन्द्रावन कर हिलोर पावेनिज धाम को ॥ ४ ॥

शब्द—ताल कहरवा।

दहां तिल वहाँ तिल दोनों एक होयरे *।

स्यामा तिलकी पावे ताकी जो तू सुरत लगायरे। उलटे नयनन निरखत रहियेा सेा तिल तुझै दिखायरे ॥ १ ॥ नाल बंककी खिड़की देखै झीना रस्ता अन्दर पेखै वहां तू पल २ सुरत जमैंयेा जब देखैगा जोतरें ॥ २ ॥ ऐसी बिधिसे सुरत चढ़ावे जेा चाहै सेा पायरे। जेा इच्छा सिद्धीकी होवे वह तुझको मिल जायरे ॥ ३ ॥ जेा तू चाहै मुक्ता होवन आगे सुरत बाढ़ावरे। बिन्द्रावन का पैड़ा न्यारा सत सत कहि दीगायरे ॥ ४ ॥

अड़िल्ल * ॥

गुर हे दीन दयाल लखावे अगम को * ॥

जाको इन्द्री मन नहिं पाय कहावै अगम सेा। गुर दे काट जाल काल के फंद को ॥ अरे हांरे बिन्द्रावन चौरासी येानि काल को फंद जो ॥ १ ॥ जो कोई पूंछै फिर गम कर्ता कौन है। संत बतावे सुरत जो चेतन्य रूप है ॥ यही वेदांत बखानै नाम को भेद है ॥ अरे हांरे बिन्द्रावन जो चेतन भास बुद्धि के मांह है ॥ २ ॥ जब वह चेतनअंस लखा निज रूप को। बुद्धी काजड़ अंग गयेा वह डूबजो। अब संका यह होय जो चेतन्य भूलता ॥ अरे हांरे बिन्द्रावन क्या ब्रह्म लगाई झूलता ॥ ३ ॥ बुद्धी के संयेाग भई यह भूल जो जब आपन पौलखा रहा नहिं भूल सेा ॥ बुद्धी में प्रकाश है चेतन अंस का ॥ अरे हांरे बिन्द्रावन है भूल धर्म जो बुद्धि का ॥ ४ ॥ भूल बुद्धि का धर्म कहा किस राह से। जड़ में धर्म अधर्म होता किस भांत से ॥ पेाथी जुआ होत

दीप प्रकाश ते ॥ अरे हांरे बिन्द्राबन दीप रहा निरलेप शुभा शुभ कर्म ते ॥ ५ ॥ इस चेतन्य प्रकाश जो बुद्धी भास है । है कर्ता पर लिपै न कर्तव फाँस है । आगे पूरण भेद नहीं पर साद है ॥ अरे हांरे बिन्द्राबन यह बन्दध और मोक्ष रजू में सर्प है ॥ ६ ॥

शब्द * ॥

मनसे देखो निरख निहार ॥

भर्म भुलाय जालमें फसियो बूझकरो जबहै निरबार १ ॥ बिना बीज वृक्षा कस उपजै बिन वृक्षा बीज न देखा ॥ कर्म बिना देह नहिं सिरजै बिन देही कर्म कस लेखा ॥ २ ॥ ज्ञान नहीं ज्ञाता बिन कहिये बिन ज्ञाता ज्ञानन होई ॥ ज्ञाता कहां ज्ञान बिन हुये अब मन मत अस होई ॥ ३ ॥ ध्यान सुन्य ध्याता बिन होगा बिन ध्याता ध्यान कस ठानो ॥ ध्याता नहीं ध्यान बिन हुए अब गुर मत कस जानो ॥ ४ ॥ घन नहि बना बिन निहाय के बिननिहाय घनकिमबनियां ॥ जब नही निहाय कहां घन दीखै सारभेद नहिं चीन्हयां ५ ॥ ईश्वर जगत की आद बखाना जगत त्याग मुक्त तुम जाना ॥ जब लग आद त्याग नहिं होई त्याग जगत कस माना ६ ॥ धन्य गुरू अस भेद बताया सबको कहि अनाद चिन्हाया ॥ सच्चा नहिं जिन ब्रह्म असत्य ठहराया बिन्द्राबन गुर पद दरशाया ॥ ७ ॥

होली भैरवी * ॥

सम्मत रतन सखी यह चलीरी * ॥

खांस गये नलमठ मशैरीते ढहे गढयकचण नलगीरी १ ॥ मात पिता बंधूसब रोवत अब यह सुंदर देह जलीरी॥ २ ॥ मर गये लोग सबै अस गावत कहो मर रहा गल फांस डलीरी ॥ ४ ॥ मर कर जाय सोई बड भागी जो मर रहा ओछे कर्म बलीरी ॥ ५ ॥

जीते सुरत शब्द में रखते वह बिंद्राबन गये गगनगंभीरी ई ॥

शब्द * ॥

जो नहिं राम नाम मयो चेरा ।

सोतुम जानो निपट अभागी जाय पड़े जम घेरा ॥ २ ॥
करि अस्नान नामके सागर पायो सीतारामन देरा । ३ ॥
धन लक्ष्मण धन भरत शत्रुघ्न धनसिया जिनराम घरहेरा । ४ ॥
धन्य अयोध्या है बिंद्राबन जिन में चरण राम ने फेरा । ५ ॥

शब्द ॥

गुरु कही भली एक बातरी १ ॥

बिपत पड़े पै जो तूरोबत सोचत नहिं बाकी आदिरी २ ॥
बज्रतन को यह कहन लुई है प्रालब्ध का ठाठरी ३ । जो तू
प्रालब्ध नहिं मानैतो उपजाया दुख आपरी । ४ । जोमालक
की मरजी गावै मान इसै तो न्यायरी ५ । जोंमालिक सुन
सिफ नहिं माना तासे कहा बसायरी ॥ ६ ॥ इनमें कोई
कारण तू ठानै रोने कोनहिं साखरी ७ । कोई गली बिंद्राबन
जावो करो सबर मत हायरी । ८ ॥

राग जयत्श्री ॥

काहे आपन पौ बिसरायो । १ ॥

जो जो भर्म किये बालक मम तिनसे आप डरायो ॥ २ ॥
धीरन धरै भर्मसो फसियो बज्रता रोग लगायो । ३ ॥ अन
ज्ञ आभय हृदय बिच धारन दूरकरन को चाहो ४ ॥ यतन
सहज सोचै मन अंदर जो खान छाय भौकायो । ५ ॥ लख
बिंद्राबन ज्ञान अंज नबिन नाहक धूम मचायो ॥ ६ ॥

राग गौरी ॥

प्यारे बिषयनमतलपठानो १ ॥

लोभ मोह बिसरो घर धनको मानो बिष ढुलकानो २ ॥
क्षेम कुसल आपनी तुम चाहो भजन करो भगवानो ॥ ३ ॥
भूख प्यास को सहै तू मीता जब तू सत्य पिछानो ॥ ४ ॥

निस दिन आठ पहर तुम जागो रहो शब्द लौलानो ॥ ५ ॥
बिन्द्राबन यह भेल दुर्लभ है कोई सूरा जानो ॥ ६ ॥

राग बसंत

लख परथम बचन कोकर बिचार *।

जब पावे सत्य सत्यसार ॥ १ ॥ कई भांत देखो रंग रंग कोई ज्ञान उपासन कर्म धर्म सब जीवनको भिनभिन सुमार बानी से काज सबको तू निहार ॥ २ ॥ एक पिता दो पुचको बुझात जस उमर बिद्या बुद्ध तस सुझात एक को कहत तू जा बजार दूजे से तू बाहर पगन धार ॥ ३ ॥ पहले की सीख दूजे दीन्हो काट पर देखो होत दोनो को लाभ अधिकारी प्रति बचन सार अबमत झगड़ों पिताकी साख ॥ ४ ॥ रोच क भयानक तीसर यथारथ माता की कहनमें तीनों आत इनको भेद जोले संहार बिन्द्राबन वह होवे जलद पार ५ ॥

रेख़ता *।

चढ़ूं किस भांत गगना पर गलेजंजीर जंडाली। है अगर कोई छुडा देवै सबाब उसको बड़ा होगा १॥ अरे प्यारेतुझसे मनसेतुझेमेंसैर दिखलाऊं ॥ ज़रा ऊपरको तू देखै तोमहलो बास सुख होगा ॥ २ ॥ नवे तक साथ पहुंचेगा वहीं उसका मरन होगा। तू दसवें द्वारमें जाके अधरसे पायगा चोगा ३ हजारों जाप पूजा हो यह पद मिलना कठिन होगा। वही दसवें में जब पहुंचे बड़ा आराम तब होगा ॥ ४ ॥ बुलाने को तेरे रागी जहां इक देश बिद्राबन खड़े होंगे। अजब धुनसे उन्हीं का संग तू लेगा ॥ ५ ॥ टप्पा

नाम रस पीजेरी अबमत भूलो राम।

भूलै भूल कुजात भयो है तेरी मत भई स्याम ॥ खासा खास तरंग उठावै यह बिधि आठो जाम ॥ मनकी गत इस रंग पिछानो जैसे गिरगिट चाम चिकुटी मध्ये बास जियो है जबपाया आराम घट अंदर सागरलहरावै जहबिंद्राबनधाम ॥

शब्द ताल कहरवा ॥

टहां कर वाहां कर टोनो एक होयरे ॥

झुक झुक गुरके मनमुख चालो सिर रखियेा झुकायरे। चरनोंमें जबसिर तू डालै मतलीको ऊठायरे। १। जब गुरकी आज्ञा तू पावै बैठा तू होजायरे। बैठा बैठा तकता रहियेा गुरसे नेह लगायरे। २। जब गुर तुझसे खेम कुशल पूछै कछु गुरु कृपासहायरे। जो गुर तुझपर दृष्टीडारै अबकछु जो तुझ भायरे। ३। आज्ञा लेकै जब तू लौटै चरणों शीश नवायारे बिंद्रावन पोछामत दीजो सीधाहीहटआवरे ॥ ४ ॥

शब्द ॥

स्याम सुन्दर छबि मोहि सुहाई

मुरली ललित मनोहर सुन्दर धारे अंधर बजाई। २। मोर मुकुट पीताम्बर सोहै लटक लटक दृगसैन बुझाई। देख रूप दृखभान दुलारी छके नयन तन सुधि बिसराई ॥ ४ ॥ करत किलोल कामबन माहीं बिंद्रावन घर बजत बधाई ॥ ५ ॥

लटका ॥

देखो एक नारी निहारी नजाय १ ॥

देखत देखत सूरत बदलत तासो सूरयछं लजाय ॥ २ ॥ आवत जावत दृष्टि न आवत चख सुन तक भर्माय ॥ ३ ॥ चलत फिरत ओसारे भरमत विषयन को धरखाय ॥ ४ ॥ छल बल करि वह रूपवनावत बिंद्रावन हरजन बचजाय ॥ ५ ॥

लटका * ॥

जालम ग़ज़ब जमाना बड़ों की छोटन माना ॥ १ ॥ अपनी अक्ल बड़ी कर मानै दोज़ख गये दिवाना ॥ २ ॥ लाज सरम को दूर कियेा है अपने मन की ठाना ॥ ३ ॥ गाफिल पड़े रहैं ग़फलत में सुध बुध सब बिसराना ॥ ४ ॥ नेकी से पर हेज करें हैं राह बुरी भल जाना ॥ ५ ॥ बिन्द्रावन बिषयन सुख चाहैं इन की मत बौराना ॥ ६ ॥

राग कल्याण * ॥

नाम रसपीजे जी पीजे जी पीजे ॥

मान सरोवर घाट बनो है झट झट गोता लीजै ॥ १ ॥
करि असनान अहं खोवैठे शीतल अंग करीजै ॥ २ ॥
अग्नि उजियार चक्षु दिम दीखै आनंद पल पल कीजै ॥ ३ ॥
शब्दकि ओर सुरतको राखो सुन्नमे शब्द सुनीजै ॥ ४ ॥
बाइ गुरू दरसो बिन्द्राबन अब अंतर इती कीजै ॥ ५ ॥

फसल पहली तमाम जपलो हर नाम । पुरा होवै काम कोड़ी लगे न दाम ॥

प्रथम भाग समाप्तः

इति



१ ओं सतिगुर परसादि ॥ * ॥

वाह गुरू सति गुरू राम अनाद ॥ * ॥

अथ दूसरा भाग

ग्रिन्थ बिहार बिन्द्रावन प्रांत बेद का ॥



इस भाग में खट शास्त्र और सन्त और बैष्णवमत और ईसाई और इस्लाम और सूफ़ी और नास्तिक और जैनका सिद्धाँत संसार की मुक्ति और उत्पत्ति के बिषय में ॥ * ॥



पूर्व मीमांसा के अनुसार ॥

१—प्रश्न

मुक्त होना क्या है और किस जतन से मुक्ति प्राप्त होती है ॥

उत्तर

स्वर्ग की प्राप्ति को मुक्त कहते हैं बेद में जो बचन बिधि का लिखा है उसके मानने से स्वर्ग होता है अज्ञा यह है कि मंत्र सहित यज्ञ और पूजन आदि करना और जो बेद ने निषेध किया है उससे अलग रहना यथा ब्राह्मण को न मारना और कलंज न खाना आदि और जिस बात को बेद ने न आज्ञा दी है और न निषेध किया है तो उसके करने से न अदृष्ट अर्थात् पुण्य है और न पाप है ॥

पूर्व मीमांसा का सिद्धांत है कि मुक्त होने को ज्ञान की आवश्यकता नहीं है क्योंकि निषेध और काम्य करम का

त्याग किया ॥ संचित कर्मों का नाश नित्य नैमित्य कर्मों से हुआ ॥ बस जन मन धरना पड़ा जन्म का न धरनाही मोक्ष है सोई स्वर्ग है इसी को स्वरूपावस्थिती कहते हैं और लोक रूप स्वर्ग पुराण का मत है ॥ नित्य कर्म संध्या तर्पण है नैमितक व्रत आदिक है । और जो प्रायश्चित कर्म है वह इस जनम के या पहिले निषेध कर्मों को दूर करते हैं सुख विशेष जो देहके बियोगसे प्राप्त होता है सोई स्वर्ग है ॥

२—प्रश्न

मैं क्या हूं और जत्न अपने आधीन है या प्रारब्ध के या ईश्वर के आधीन है ॥

उत्तर

तू जीवहै और चैतन्य और अचैतन्य है इन्द्रियोंके साथ मिल कर दुखी सुखी रहता है अदृष्ट के अनुसार और यह स्वरूप बासना के अनुसार हुआ इन्द्रियोंसे अलग करना और बेद के बाक्यों के अनुसार बिधि कर्ममें लगाना यह यत्न है सो तेरे और अदृष्ट के आधीन है जीव सब भिन्न हैं ब्यापक हैं ॥

३—प्रश्न ॥

सृष्ट का कर्ता कौन है और कहां है और क्या है और माया क्या है ॥

उत्तर

जगत का कर्ता जीव का अदृष्ट है और अदृष्ट जो अनादि रूप बासना सोई माया या प्रकृत कहलाती है सुखोप्ती से जाग कर कहता है मैं सुख से सोया यातें जीव चेतन्य-हैं और मैं कुछ न जानता भया याते जड़ है यह भट्टमीमांसक का मत है ॥

४—प्रश्न ॥

जगत कैसे और कहां से और कब उत्पन्न हुआ और

सत्य है या असत्य है स्वप्न सृष्ट और जगत में क्या भेद है किस को भासता है ॥

उत्तर

जगत अनादि और सत्य है और स्वप्न सृष्ट असत्य है दोनों जीव को भासते हैं पृथ्वी जल तेज आदि रूप जगत है ॥

५—प्रश्न ॥

दुख सुख किसे होता है और क्यों होता है और मरने के पीछे जीव कहां जाता है ॥

उत्तर

दुख सुख जीव को होता है अदृष्टके अनुसार और मरने के समय अदृष्ट के अनुसार वासना होती है और वासना के अनुसार दूसरी देह मिलती है ॥

६—प्रश्न

परलोक क्या है सत्य है या क्या ॥

उत्तर

स्वरग और नर्क सत्य है यह पुराणादिक मत है बहुत से मीमांसक स्वर्ग नर्क लोक रूप करके नहीं मानते सुखदुख की अवस्था को जो इस जगत में होवे उसीको स्वर्ग नर्क कहते हैं मीमांसक मूर्ति पूजा को साधारण कर्म समझें हैं ॥

७—प्रश्न

नाम क्या है और कौन नाम सरवोपरि है और नाम नामी अभेद है या क्या और शब्द क्या है और सबमें उत्तम कर्म कौन हैं ॥

उत्तर

सब नाम बराबर हैं वेद बाक मुख शब्द है और यज्ञ सब कर्मों से उत्तम कर्म है और पूरब मीमांसा का यह सिद्धांत है कि मंत्रही देव रूप है जो एक देवता का होना समझा जाय तो जब लाख आदमीने एकही समय स्वाहा

कहा तो एक देवता उसी समय सबके पास कैसे पहुँच सक्ता है और मंत्र सब के पास है इस सेमंत्रही देवता है और जीव सब अलग अलग है ईश्वर का अभाव है और जो बेद में देवतावों का होना और उनका बर्णन है सो रुचि बढ़ाने को कहानियों के समान है ॥

दोहा ॥

कर्म प्रधान मीमासा भाष्यो निज मत जोय ।
बिन्द्रावन सब देव को मान्यो मिथ्या सोय ॥

न्याय औ बैशेषिक शास्त्र के अनुसार ॥

१—प्रश्न

मुक्ति होना क्या है और किस जत्न से मुक्ति होती है ॥

उत्तर

२१ दुखों का अत्यंता भाव अर्थात् सदैव को नाम मुक्ति है और शरीर सम्बन्ध के अभावतें २१ दुख का नास होवे है ॥ २१ दुख ये हैं ॥ ६ इन्द्रियां घाणा १ रसना २ चक्षु ३ श्रोत्र ४ त्वचा ५ मन ६ और ६ इन्द्रियों के ६ ज्ञान और ६ विषय और सुख १ और दुख २ और शरीर ३ ये २१ दुख कहाते हैं और मोक्ष प्राप्त होने के वास्ते कर्म उपासना ज्ञान को हेतु और आत्मा को ७ या १६ पदार्थ का ज्ञान साक्षात् मोक्ष का हेतु गंगा स्नान यज्ञ आदि यह कर्म है प्रमातमा में मन लगाना उपासना है बैशेषिक और न्याय शास्त्र वाले नीचे लिखी हुई वस्तुओं को पदार्थ कहते हैं और लिखा है कि सारा प्रपंच इन ७ और १६ पदथ में है ॥

७ पदार्थ बर्णन ॥

द्रव्य १ गुण २ कर्म ३ सामान्य ४ बिशेष ५ समबाय ६ अभाव ७ पृथ्वी १ जल २ तेज ३ बायु ४ आकाश ५ काल ६ दशौदिसा ७ आत्मा ८ मन ९ ये नवो द्रव्य हैं रूपरस २

गंध ३ सप्रस ४ संख्या ५ प्रमाण ६ पृथकत्व ७ संयोग ८ विभाग ९ परत्व १० अपरत्व ११ गुरुत्व १२ द्रव्यत्व १३ स्नेह १४ शब्द १५ बुद्धि १६ सुख १७ दुख १८ इच्छा १९ द्वेष २० प्रयत्न २१ धर्म २२ अधर्म २३ संस्कार ये २४ गुणहैं ॥ २ ॥

उक्षपना १ नीचे गेरना २ खीचना ३ फैलाना ४ चलना ५ ये पांच कर्म हैं ॥ ३ ॥

पर १ अपर २ ये दो सामान्य है ॥ ४ ॥

प्रमाणु का भेदक विसेष है ५ नित्य संबंध समवाय है सो गुण गुणी जाती विक्रि क्रिया क्रियावान अवयव आवयवों मे रहैहै ६ अभाव चार प्रकार का है एक जो पहिले न रहा हो दूसरा जो अब न हो तीसरा जो त्रिकाल में नहो चोथा अन्योन्य अभाव जैसे घट का अभाव पट में और पट का अभाव घट में ७ ॥

१६ पदार्थ वर्णन प्रमाण १ प्रमेय २ संशय ३ प्रयोजन ४ दृष्टांत ५ सिद्धांत ६ अवयव ७ तर्क ८ निर्णय ९ वाद १० जल्प ११ वितण्डा १२ हेत्वाभास १३ छल १४ जाति १५ निग्रहस्थान १६ ॥

न्याय मत में भ्रांति ज्ञान आत्मा को संसार का हेतु है सो ज्ञान से दूर होवै है देह आदिक सर्व परपंच से आत्मा भिन्न है भ्रांति के दूर होनेसे रागद्वेष धर्म अधर्म और शरीर सम्बन्ध रूप जन्म का अभाव होवै है ॥

मन मोक्ष काल में भी बना रहै है पर अदृष्ट जो कि संसार का कारण है सो होता नहीं इससे मन आत्मा का संयोग नहीं होता पदार्थों के ज्ञान से जीवात्मा का भिन्न होना विदत होता है ॥

२—प्रश्न ॥

मैं क्या हूं और यत्न मेरे आधीन या ईश्वर के या प्रारब्ध के ॥

उत्तर

तू जीव आत्मा है और व्यापक है औ धर्म अधर्म वाला है बल ईश्वर के आधीन है नैयायक पृथ्वी अपु तेज वायु इन चारों तत्त्वों को नित्य अनित्य मानते हैं कारण रूप अर्थात् सूक्ष्म वीर्य रूप अनादि नित है और कारज रूप अर्थात् स्थूल रूप अनित्य है और आत्मा आकाश काल दिशा मन ये पांचौ नित्य हैं और आत्मा आकाश काल दिशा ये चारों व्यापक हैं मन एक देमी है जीव अनन्त है और अनादि है उनको किसीने उत्पन्न नहीं किया शंका होती है की एकही जगह में इतनी वस्तु सब कैसे व्यापक हो सक्ती हैं परन्तु देखो कि आकाश कालदिशा तीनों जाहिर व्यापक हैं जब तीन व्यापक हुये तब और की व्यापकता में क्या सन्देह है और देखिये कि एक घट में रूप रस गंध सारे व्यापक होते हैं और स्वरूप भिन्न २ हैं ॥

३—प्रश्न ॥

सृष्टि का करता कौन है और कहां है और कैसा है और माया क्या है ॥

उत्तर

करता ईश्वर है बिभु व्यापक है और ज्ञान उसके आश्रय है उसका स्वरूप ज्ञान नहीं है अणु की क्रिया माया है अणु में से सब पैदा हुए अणु उसको कहते हैं कि जो मकानों में धुयें के स्थानों के झरोखों में अत्यंत छोटे छोटे कण दीखा करते हैं उसका छठा भाग ॥

ईश्वर जीवों के कर्मों के अनुसार सृष्ट की उत्पत्ति और नास करता है कर्म को उत्पत्ति और नास करने की और फल देने की सामर्थ नहीं क्योंकि कर्म जड़ है और जड़को ज्ञान नहीं और बिना ज्ञान फल का देना नहीं होसक्ता ईश्वर जो ज्ञाता है वह जीवों को कर्म के अनु-

सार फल का दाता है जो उसकी इच्छा से सृष्ट कही जाय तो ईश्वर में दोष आवैगा कि उसको कुछ प्रयोजन होता है जब सृष्ट की उत्पत्ति और नाश करता है इस मे जीवों की उत्पति और नाश कर्म के अनुसार है और जो उत्पन्न होता है उसका नाश होता है स्थूल काज उत्पन्न होता है सो नाशवान है और जो बीरज रूप है वह अनादि है उसकी उत्पति नहीं कहसक्ते जो आत्मा को उत्पन्न हुआ कहा जाय तो नाशवान ठहरैगा और आतमा नाश वान नहीं है क्योंकि उसका कोई नाशक नहीं इसलिये आत्मा परम महत परमाणु है और परमाणु का अणु परिमाण है सो नित्य है और घट पट आदिकों का मध्यम परमाण है सो यह मध्यम परमाण वाले अनित्य हैं और आत्मा ज्ञान स्वरूप नहीं है ज्ञान आत्मा को होता है है और बुद्धि आत्माका गुण है ॥

४—प्रश्न ॥

जगत क्या है और कहांसे और कब पैदा हुआ सत्य है या असत्य है स्वपन सृष्टि और जगत में क्या भेद है और किसको भासता है ॥

उत्तर

अणु पर माणु जो हैं उसकी क्रिया पूर्व देशत्याग उत्तर देश संयोग यही जगत की उत्पति का कारण है सोई ईश्वर की इच्छासे जीवों के कर्मों के अनुसार जगत होता है जगत जीव को भासता है ॥

जीव आत्मामें १४ गुण हैं ॥

बुद्धि १ * सुख २ दुख ३ इच्छा ४ * द्वेषः यत्न ६ * संख्या ७* परिमाण ८ * पृथकत्व ९ * संयोग १०* विभाग ११* भावना १२ धर्म १३ अधर्म ॥ १४ ॥

और परमात्मा में ८ गुण हैं जिन पर ऐसा निशान है *

ईश्वर के इच्छा ज्ञान जत्न नित्य है और जीवके तीनों अनित्यहै पर जब ज्ञान गुण होवे तब तो जीव चैतन्यहै और जब ज्ञान गुण नहीं है तो जड़ है श्रवण मनन ज्ञान के साधन है मूरत पूजा साधारण कर्म है ॥

५—प्रश्न ॥

दुख सुख किसे होता है और क्यों होता है और मरने के पीछे जीव कहां जाता है ॥

उत्तर

दुख सुख अदृष्ट के अनुसार जीव को होता है जैसा अदृष्ट होताहै वैसाही शरीर पाताहै वैशेषिकमत समयकोप्राधान करताहै कि जब जिस बातका समय आताहै तबयह काम होजाताहै (समय एव करोति बलाबल) समय परजोर और कमजोर होना और सब बातें होती हैं जब समय आता हैं तब होता है यह न्याय शास्त्रका सिद्धांत नहीं है परंतु और बातोंमें न्याय शास्त्र और वैशेषिक मत मिलता है ॥

६—प्रश्न ॥

परलोक क्या है सत्य है या असत्य है ॥

उत्तर

परलोक अर्थात् नर्क स्वर्ग सत्य है ॥

७—प्रश्न ॥

नाम क्या है और कौन नाम सर्वोपरि है और नाम नामी अभेद है या क्या और शब्द क्या है और सबमें उत्तम कर्म कौन है ॥

उत्तर

ओंकारादिक नाम सर्वोपरि हैं परमेश्वर की शक्ति हैं नाम नामी भिन्न नामी वाच्य नाम वाचक गंगास्नान आदि उत्तमकर्म हैं (नित्य सुख आविर्भाव मुक्त) वैशेषिक मत ॥

दोहा ॥

न्याय बेशेषिक को मतो ईश्वर ब्यापक होय ।
बिन्द्राबन इक्कीस दुख नसे मुक्ति कही सोय ॥

——oo——

पातंजल और सांख्य शास्त्र के अनुसार ॥

१—प्रश्न ॥

मुक्ति होना क्या है और किस जल से मुक्ति प्रापत होती है ॥

उत्तर

प्रकृत और पुरखकी साम्य अर्थात् समाधि अवस्थामें हो जाना अर्थात जड़ कार्ज कालय होजाना अपने कारण में और चैतन्य का चैतन्य में यह मुक्त है चित में बन्ध मोक्ष है चित शुद्ध होय तो ज्ञानी होय और जब ज्ञानी हुआ तो मुक्त है अब चित का निरोध निकृष्ट अधिकारी की क्रिया है अर्थात् अष्टांग योग से होती है उत्तम अधिकारी को प्रथम बैराग्य उसके पीछे अभ्यास यत्न है अभ्यास उस को कहते हैं कि अपने को जड़ से असंग चितवन करता रहै अभ्यास दो परका है एक निजानंदी दूसरा परानंदी जब ऐसे अभ्यास किया कि मैं असंग चेतन्यहूं यह निजानंदी कह लाता है और जो इस परकार अभ्यास करै कि ईश्वर चैतन्य असंग है उसको परानंदी कहते हैं सो दोनों प्रकार से एक ही प्रयोजन निकलता है जाति भेद नहीं हैं किन्तु व्यक्ति भेद है क्योंकि ईश्वर चैतन्य से यह अपने को भिन्न नहीं समझता जिसने पहिले अष्टांग योग किया है और फिर बैराग्य हुआ है उससे अभ्यास बड़ी सुगमता से बनता है पातंजल और साख्यं शास्त्र कायह सिद्धांतहै कि पुरष और प्रकृति दोनों बने रहते हैं ज्ञान के होने पर भी प्रकृतिका नास नहीं होता परन्तु प्रकृति का ऐसे अभाव होजाता है

जैसे दो मनुष्य सोए एक को खबर दूसरे को नहीं होती इससे दोनों में से एक दूसरे की हानि नहीं करसक्ता इसी प्रकार मुक्त अवस्था है पुरुष आप को समाधी में रहा और प्रकृति आपको समाधि में रही प्रकृत उसे कहते हैं कि जिस दशा में सत्व रज तम समान रहते हैं प्रकृत जड़ द्रव्य रूप और पुरुष केवल चेतन्य रूप हैं पातंजल का सूत्र है (चित्तवृति निरोधा दृष्टः स्वरूपा वसथा नम् वृतिसा रूप मित्तचये) अष्ठ ांग योग और वैराग से प्रकृतिमें लय होता है चैतन्य में नहीं होता सांख्य का सूत्र है (वैराग्यात्प्रकृति लयः) जो प्रकृत में लय होता है उसको भी मुक्त कहते हैं परंतु बहुत काल पीछे प्रकृति से उत्थान होजाता है अर्थात् जन्म रखना पड़ता है इस वास्ते ज्ञान जो अभ्यास से उत्पन्न होता है उसको करके जो मुक्त होगा वह फिर जन्म ना धरैगा इस्से मुख्य मुक्त यही है अभ्यास करने वाला चाहे ईश्वर जवान न होय या न होय मुक्त में संदेह नहीं योग भासका सूत्र(ईश्वरोवा अनीश्वरोवा सर्वथा विमुच्यते) ॥

अष्टांग योग यह है ॥

यम १ नियम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रतिहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ ॥

पहिले पाँच वहिरंग कहलाते हैं और पिछले तीन अतरंग कहलाते हैं यम दया और सत्य बोलना ॥ नियम पवित्र रहना आसन सुख आसन प्राणायाम स्वास कोरोकना प्रत्याहार थोड़ाखाना और वृति को रोकना ॥

अन्तराय रहित अन्तःकरणकी वृतिकी स्थिति धारणा है अन्त राय सहित अद्वितीय वस्तु विषय अंतःकरण प्रवाह ध्यान है ॥ अंतः करणकी एकाग्रता रूप प्राणायाम समाधि है ये अतरंग साधन है ॥

चार साधन पाद है ॥

प्रथमसमाध पाद उत्तम अधिकारी के वास्ते अभ्यास और वैराग करके चित्त की वृती का निरोध करना ॥

दूसरा साधन पाद अर्थात् अष्टांग योग करना ॥

तीसरा विभूत पाद अर्थात सिद्धी दिखाना ॥

चौथा केवल पाद प्रति पादन स्वरूप का ॥

जिसकी ज्ञान करके मोक्ष होती है उसको फिर उत्थान नहीं होता क्योंकि ज्ञान रूपी अग्नि से प्रकृति दग्ध होगई उसमें फिर सामर्थ नहीं रही जैसे भूने चने में अंकुर जमने की सामर्थ नहीं रहती ॥

२—प्रश्न ॥

मै क्याहूं और जतन अपने आधीन है या ईश्वर के या प्रारब्ध के आधीन है ॥

उत्तर

तू ईश्वर निर्विकार है ब्यापक है यत्न अपने आधीन है और ईश्वर और प्रारब्ध के भी आधीन है यथाधिकार सांख्य और पातंजलि के सब सिद्धान्त मिलते हैं केवल इतना भेद है कि पातंजल ईश्वर को ठहरावैं है और सांख्य ईश्वर को नहीं ठहरावै है अर्थात् सांख्य निरीश्वर है परंतु पातंजल शास्त्र लिखता है कि सांख्य ने ईश्वर का अप्रतिपादन नहीं किया है केवल मुमुक्षू के बनाने के वास्ते ऐसा वर्णन किया है जिससे कि मुमुक्षू को ईश्वरज की इच्छा न होआवै ॥ जब ईश्वर का अभाव समझैगा तो ऐश्वरज की चाह न होगी और वैराग्य उत्पन्न होगा ॥

३—प्रश्न ॥

सृष्टिका कर्ता कौन है कहां है और कैसा है और माया क्या है ॥

उत्तर

पुरुष और प्रकृति का संयोग जगत का करता है माया और प्रकृति एकही है उसका स्वरूप रज तम सत्व है अनादि है उसका नाश कभी नहीं होता प्रकृति को पूर्व चेष्टा हुई रजोगुण की अधिक्यता प्रकृति का परिणाम है संयोग का कारण अविद्या है ॥

४—प्रश्न

जगत क्या है कहां से और कब पैदा हुआ सत्य है या असत्य है स्वपन सृष्ट और जगत में क्या भेद है और किस को भासता है ॥

उत्तर

जगत सत्य है पर अनित्य है और आतमाके साथ जगतका संग मिथ्या है चैतन्य और प्रकृति के संयोग से भाषता है अनादि है चित्यमें भाषता है जगत औ स्वपन सृष्ट में बहुत भेद नहीं क्योंकि स्वपन जिसका फल जाग्रत में होजावै वह स्वपन सत्य है पर अनित्य है जगत प्रलय काल में प्रकृति में ऐसे लय होता है जैसे वर्षाऋतु के पीछे मेंडुक पृथ्वी में लयहोता है ॥

५—प्रश्न ॥

दुखसुख किसे होता है और क्यों होता है और मरने पीछे जीव कहां जाता है

उत्तर

दुखसुख चित्त को होता है और अदृष्ट के वश वृति के अनुसार जन्म मर्ण होता है और वृति धर्मा धरमके अनुसार होती है और दुखसुख ज्ञानाज्ञान अन्तः करण का धर्म है और चैतन्य प्रकृति से भिन्न है प्रकृति पुरुष के भोग के लिये अनेक कर्म करती है यद्यपि प्रकृति जड़ है तथापि काम करने की सामर्थ रखती है जैसे दूध जड़ पदार्थ है

परंतु गाय के स्तनों में आपसे आप इकट्ठा होजाता है और उसका दही होजाता है इसी प्रकार प्रकृति जड़ है परंतु कार्य्य करने का सामर्थ है जगत का उपादान कारण प्रकृति है ज्ञान अज्ञान दुखसुख अन्तःकर्ण का धर्म्म है आत्मा के नहीं और अन्तःकर्ण प्रकृति जन्य है ॥

६—प्रश्न ॥

परलोक क्या है सत्य है या क्या ॥

उत्तर

परलोक स्वर्गादिक सत्य है पर अनित्य है ॥

७—प्रश्न ॥

नाम क्या है और कौन नाम सर्वोपरि है और नाम नामी अभेद है या क्या और शब्द क्याहै और सब में उत्तम कर्म कौन है ॥

उत्तर

ओंकारादिक नाम सर्वोपरि हैं नाम नामी अभेद भी है और भेद भी है अधिकार के अनुसार शब्द आकाश का गुण है ॥

दोहा ॥

साँख्य पातंजल अस कहो चैतन्य सदा असंग ।
बिन्द्राबन प्रकृति ने रच्यो यह सारा ढंग ॥



वेदांत शास्त्र के अनुसार ॥

१—प्रश्न ॥

मुक्त होना क्या है और किस यत्न से मुक्त प्राप्त होती है ॥

उत्तर

अपने स्वरूप में लय होना अर्थात् अपना जानाना मुक्त है कर्मऔर उपासनासे मन निरमल और निश्चल होताहै फिर वेदान्त का श्रवण मनन निध्यासन से ज्ञान होता है अर्थात्

अपने निज स्वरूप सच्चिदानन्द का प्रकाश होता है यही मुक्त है ॥

कर्म दो प्रकार के होते हैं एक सकाम दूसरा निःकाम सकाम वह है जिसमें फलकी इच्छा होवै सकाम कर्म से फलकी प्राप्ति होती है इसे मजदूरी कहतेहैं ॥ निःकाम कर्म वह है जिसमें फलकी इच्छा न होवै उससे मनकी शुद्धता होती है उपासना से मन निश्चल अर्थात् एकाग्र होता है जो कर्म उपासना से बैकुंठादिक की इच्छा रखते हैं उनको देव शरीर मिलता है पर देवता को मुक्त नहीं कहसक्ते क्योंकि देव शरीर में भी भय आदिक दुख बना रहता है बहुत पुण्यके फल से देव शरीर मिलता है सो नाश वान है तथाच क्षिन्ने पुन्ये मृत्युलोके वसंति ॥

२—प्रश्न

मैं क्या हूं और यत्न अपने आधीन या प्रारब्ध या ईश्वर के है ॥

उत्तर

सो सतचित् आनंद स्वरूप है निर्विकार है व्यापक है महा वाक्य वेद का तत्वमसी यत्न अपने आधीन है सूर्य प्रकास करता है परंतु जब अपनी आखैं खोलै तो दीखता है सत्य उसे कहते हैं जो तीन काल अर्थात् सदैव एक रस वर्त्तीमान और निश्चल रहै चित अर्थात् चैतन्य है जानने वाला है ज्ञान स्वरूप है आनंद रूप अर्थात् सदैव सुख सरूप है तत्व मसी इसका यह अर्थ है की तू वही है अर्थात् जीव ब्रह्म है जैसे वाध्य समानाधि करण लक्ष्य लक्षण और विशेष विशेषण करके बुद बुदे और समुद्रकी एकता है इसी परकार जीव ब्रह्मकी भी एकता है समुद्रमें जहाज चलता है बड़े २ मगर मच्छ रहतेहैं और मुक्ता पैदा होते हैं और बड़ा है और बुद बुदे में यह बातैं नहीं है परंतु

जहाज मगर मच्छ मोती आदि सागर का स्वरूप नहीं हैं सागर से अलग है इससे इन वस्तुओं का बाध्य करके देखा जाय तो बुद बुदा भी जल है और जो सागर के जल में लक्षण वही बुद बुदे में बरतमान हैं अर्थात् मधुरता शीतलता द्रवता और विशेष विशेषण यह है कि बुद बुदा सागर का है और फिर सागर होसक्ता है इसी प्रकार सत् चित् आनन्द रूप करके जीव ब्रह्म की एकत है ब्रह्म का रूप सत् चित् आनन्द है वह जीव मेंभी पाया जाता है जीव भी तीन काल सत्य है और चैतन्य होना परगट ही है और चैतन्य मात्र सदैव आनन्द स्वरूप है दुख अंतःकरण का धर्म है चैतन्य का नहीं इससे जीव आत्मा और ब्रह्म की ऐकता सिद्ध हुई * ॥

३—प्रश्न ॥

सृष्टिका कर्त्ता कौन है और कहां है और कैसा है और माया क्या है * ॥

उत्तर

जगत का करता ईश्वर है व्यापक है सच्चिदानन्द है और वही ईश्वर अकरता है जैसे सूर्य और चुम्बक पत्थर करता अकरता दोनो हैं वही चैतन्य ब्रह्म है और वही चैतन्य ईश्वर है और वही चैतन्य जीव है जैसे एकस्त्री पिताके घर बेटी कहलाती है और सुसराल में बहू और नाना के घर दुहिती कहलाती है परंतु है वह एक हां माया अनिर वचनी है सत्त असत्य से बिलक्षण है और बासतव में ब्रह्म की माया है सूर्य का प्रकाश सब कार्य करता है परंतु सूर्य में किसी कार्य का लेश मात्र भी नहीं होता माया को जो सत्य कहैं तो सत्य नहीं क्योंकि ज्ञान के होतेही नास होजाती है और जो असत्य कहैं तो दीखती है इसे सत्य असत्य दोनों कहना नहीं बन सक्ता इस हेतु से माया अनिर्व-

चनीयहै ब्रह्ममें माया औरमायामें ब्रह्मदोनों एकरसव्यापक है जैसे दिनमें रात व्यापक है जब दिन होता है तब राच का पता नहीं मिलता इससे दिन में राच व्यापक है जो दिनमें राच न होती तो दिन व्यतीत होतेही राच कहां से आजाती है कहीं गठरी बंधी रखीथी जो आगई और जब राच है तो दिनका पता नहीं इसी प्रकार जब ब्रह्म दृष्टी है तब माया का पता नहीं और जब माया करके उपहित दृष्टि है तो ब्रह्म दृष्टि नहीं पड़ता परंतु वरत-मान है ॥

४—प्रश्न ॥

जगत क्या है कहां से और कब उत्पन्न हुआ सत्य है या असत्य है स्वपन सृष्टि और जगत में क्या भेद है और किसको भासता है ॥

उत्तर

जगत अहंकार से उत्पन्न हुआ पर वाह रूप अनादि है असत्य है जगत और स्वपन सृष्टि में अल्प और दीर्घकाल का भेद कहने मात्र का है और अज्ञान करके बुद्धि को भासता है षः वस्तु अर्थात् ब्रह्म ईश्वर जीव और अविद्या और अविद्या का चैत्यन्य से सम्बन्ध और अनादि वस्तू का भेद यह षटा वस्तु सरूप से अनाद है अर्थात् सदेव से है ॥ जागरत जगत और स्वपन सृष्टि में ऐसा कुछ भेद नहीं है जैसे स्वपन में विना सामग्री देशकाल रचना होती है इसी प्रकार जाग्रत् जगत भी है ब्रह्म में देशकाल और सामग्री का लेश भी नहीं है जैसे स्वपन के समय स्वपन सृष्टि सत्य दीखती है और सत्य जानकर व्यवहार करता है इसी प्रकार अज्ञान काल में जगत भी सत्यसा विदित होता है परंतु जब स्वपन से पुरुष जागता है उस समय स्वपन सृष्ट का पता नहीं मिलता इसी प्रकार ज्ञान अवस्था

में जगत नहीं है इस्से स्वपन सृष्ट और जाग्रत जगत दोनों मिथ्या हैं अर्थात् असत्य हैं परंतु ऐसा कहाना खड्गके समान है जो अज्ञानी ने ऐसा वचन मुख से कहा तो साफ अपना गला काटा पहले खूब पटेबाजी हो ले तब तरवार पर हाथ लगावै ॥

५—प्रश्न

दुख सुख किसे होता है और क्यों होता है और मरने के पीछे जीव कहां जाता है ॥

उत्तर

दुख सुख अन्तःकरण का धर्म है चैत्यन्य ने संग देख करके अपनेमे माना है कर्म के अनुसार दुख सुख होता है और ज्ञानी का जीव गमन नहीं करता अर्थात् जहां का तहां स्थित है इस निमित्त कि उसकी वासना क्षय होगई और अज्ञानी का जीव आशा के अनुसार गमन करता है जो कुछ हांड़ी में होता है वही टपकता है) जहां आशा तहां वासा कर्मानुसारिणी बुद्धि) अर्थात् कर्म के अनुसार उसको आशा होती है उसके अनुसार गमन करता है मनचित बुद्ध अहंकारको अन्तःकर्ण कहते हैं सोजड़ है मन में चारों एकही है परंतु चार नाम हैं जब मनन किया तो मन नाम हुआ जब चिन्तवन किया तो चित् नाम हुआ और जब निश्चय किया तो बुद्धिनाम और जब आपा माना तो अहंकार नाम हुआ फारसी में उसका नाम खयाल गुमान यकीन खुदी कहते हैं जीव का यह रूप है कि अन्तःकरण और अन्तःकर्ण में कूटस्थ का आभास और कूटस्थ जीव कहलाता है कूटस्थ इसे कहते हैं कि जो चैतन्य का भाग अंतःकर्ण के समीप है और जिसका भास अंतःकर्ण में पड़े है और ज्ञानी के अंतःकर्ण का अभाव है इस्से आभास कूटस्थ मैलय हुआ जैसे दरपण में स्वरूप बनता है और

जब दर्पण मुखके सन्मुख से पृथक् हुआ तो वह प्रतिबिम्ब जो दर्पण में था असल स्वरूप में लय हुआ इस निमित्त कि दर्पण में वह परछाहीं फिर नहीं रहती और अज्ञानी की यह दशा है कि अज्ञानी के वासना रहती है इस कारण उसका जीव स्थित रहा और कर्म के अनुसार जीव ने गमन किया इसके विशेष अज्ञानी को संचित कर्म भी भोगने हैं और ज्ञानी के संचित कर्म सब भस्म होगये क्योंकि संचित कर्म अज्ञान के सहारे थे जब अज्ञान दूर हुआ तब संचित कर्म भी दूर हुए जैसे परछाहीं वृक्षके सहारे होती है जब वृक्ष न रहा तो परछाहीं भी जाती रही ज्ञानी के संचित कर्म ज्ञान के होतेही दूर हुए प्रारब्ध कर्म का भोग किया क्रियामान का अभिमान नहीं हुआ इसे अब वासना किस प्रकार रह सक्ती है ॥

६—प्रश्न

परलोक क्या है सत्य है या क्या ॥

उत्तर

वासतव में परलोक कुछ नहीं है अज्ञान में लोक परलोक दोनो सत्य हैं जैसे स्वप्न में स्वप्न सृष्टि परंतु ज्ञानमें न लोक है न परलोक है जो कोई कहै कि स्वप्न सृष्ट और यह जगत किस प्रकार बारबर होसक्ता है स्वप्न में जाग्रत की वस्तुओं का ध्यान आता है सो जगतकी वस्तु सबसत्य है और स्वप्न की असत्य ऐसा कहना अत्यन्त मिथ्या है इस निमित्त की स्वप्न में वस्तुओं का ध्यान नहीं होता परंतु सब वस्तु आप वरतमान होती है क्योंकि इस जगत के सदृश सब व्यहार सत्य समझकर करता है इसे जबकि वस्तु वरतमान हुई तो विदित हुआ कि वस्तु नवीन बनाई गई है क्योंकि जगत की वस्तु उस समय कोई भी न काम में आई और न जगत की वस्तुओं का ध्यान कह सक्ते हैं क्योंकि ध्यान के समय

जिस वस्तु का ध्यान होगा वह वस्तु कुछ समीप नहीं आजाती और भोगने छूने में नहीं आती अपने स्थान पर रहती है और स्वप्न में सब वस्तु भोगने में आती है हां स्वपना संसकार जन्य है जैसे संसकार मनमें हैं रहते वैसा स्वपना दीखता है सो माया कृत वस्तु बनी है और सच्ची दीखती है इस हेतु से जाग्रत जगत और स्वपन सृष्टि में भेद कदाचित् नहीं है वह दोनों बराबर वर्तमान हैं इसी प्रकार परलोक भी कल्पना मात्र है ॥

७—प्रश्न

नाम क्या है और कौन नाम सर्वोपरि है और नामनामी अभेद है या क्या है और शब्द क्या है और सब में उत्तम कर्म कौन है ॥

उत्तर

सत्चित् आनन्द येही नाम है नाम सापेक्षक है अर्थात् दूसरे की इच्छा सेहै माया की अपेक्षा से उसको सत्चित आनन्द कहां गया और जब जगत को असत्य कहा तो ब्रह्म को सत्य कहा और वास्तव में उसमें नाम कहां और शब्द आवाजहै और आकाश का गुणहै उपासनामें अपने २ इष्ट के अनुसार नाम का जप है पर राम नाम बहुत प्रसिद्ध है सबसे उत्तम कर्ममाधू संत और गुरूकी सेवा करनाहै शब्द चार परकार होता है परापश्यन्ती मध्यमा वैखरी पराशब्द नाभि में है जैसे ब्रह्म पश्यन्ती हृदय में जैसे सबल ब्रह्म मध्यमा गले में जैसे कार्य रूप वैखरी जो मुखसे निकली जैसे अस्थूल ॥

दोहा ॥

जीव ब्रह्म की येकता सिद्ध कियो वेदान्त।
बिन्द्राबन जग स्वपन सम मायालखो भरान्त ॥

सन्तों के मतके अनुसार ॥

१—प्रश्न ॥

मुक्त होना क्या है और किस यत्नसे मुक्त प्राप्तहोती है ॥

उत्तर

श्रुतिका सत्य शब्दके आगे होना अर्थात् ९ द्वारसे चढ़कर सत्यलोकमें पहुंचना मुक्ति है सत्य शब्द का मंडल परकाश सहित है और ऊपर है अनहद के श्रवण करने से सत्य शब्द की परापि होती है। जब मुक्त होता है हां प्रथम सन्तोने वाणी का पाठ नाम का समरण स्वामी की ओर प्रेम और प्रीति और भक्त और जगत से वैराग्य साधू गुरू की सेवा और फकीरों का सत्संग मालिक से प्रार्थना कहा है परंतु शब्द का ध्यान सबसे ऊपर है इसको कोई २ जानता है और उपासना का जो अंत है वही ब्रह्म ज्ञान की आदि प्रापति है गुरूनानक साहब और कबीर साहब और दादू साहब पलटूसाहब जगजीवन साहब दरिया साहब तुलसी दासजी चरणदासजी आदि इनसबसंत और महातमाओं ने यही मारग रक्खा है और नाद के ध्यानकी महिमा शिवजी ने अत्यंत की है कि जितने मारग मुक्त होने के हैं सबमें नादकी उपासना उत्तम मार्ग है और हंसनाद नाम उपनिषद में शिवजीने गौरासे इसको बहुत वर्णन किया है और मोक्ष की परापि कही है और दस प्रकार के अनहद शब्द कहे हैं पहिला चिन शब्द दूसरा चिन चिन भिंगा शब्द तीसरा घंटेका शब्द चौथा संख का शब्द पांचवां वीनका शब्द छठातालकाशब्द सातवांबांसुरीकाशब्द आठवांनदंकाशब्दनवानफीरीकाशब्द दसवांबादलकीसीगरज ॥

शब्द की पहचान ॥

पहिला शब्द सुनै तौ सब देहके रोमांच उठ खड़े होंं दूसरे शब्दसे देह में आलस आवे तीसरे में प्रेम की अधि-

कताहो चौथे के सुनने से ब्रह्मांड मेंसे सुगन्ध आवे पांचवें के सुनने से अमृत उतरने लगै छठा सुने तो गले से नीचे अमृत आवे सातवां सुने तो अंतरजामी होजाय आठवां सुने तो सम्पूरन भीतर बाहर के नाद सुन पड़े नवाँ सुने तो गुप्त होनेकीसामर्थ होजाय दसवां सुने तो सब वासना क्षय होकर परब्रह्म होजाय उसका नाम ओंकार है और अपने को ओंकार जाननाही परम मुक्त होजाना है संतों ने पांचशब्द कहे हैं इनमें ऊपर के दस शब्द आजाते हैं और दो शब्द से बाय कहे हैं ॥

२—प्रश्न

मैं क्या हूं और यत्न अपने या ईश्वर के या प्रारब्ध के आधीन है ॥

उत्तर

तू जीव है मन और सुरत मिला हुआ है नव द्वार से सहस्र दल कमल तक जो आकास का नाका है वहां तक मन है आगे केवल सुरत है सो गुरू शब्द जो घटमें होरहा है उसके आश्रय त्रिकुटी में चढ़ दसवें द्वारमें पहुंच कर शुन्य सरोवर अस्नान करके हंस दशाको प्राप्त होताहै सुरत चैतन्य रूप है श्याम कंजमें तेराबास है और तेरा प्रतिबिम्ब और भास सम्पूर्ण शरीर में है कर्तव्य संत गुरू के आधीन है फार्सी में नाद की उपासना को सुलतानुल अजकार कहते हैं ॥ दोहा ॥

तीन बन्द लगाय के अनहद सुने टकोर ।
नानक सुन्न समाध में नहीं सांझ नहिं भोर ॥

बैत

चश्म बन्दो गोश बन्दो खबबन्द । गरनयाबी सिर्र इक्र बरमन बिखन्द ॥ और सन्तों ने जो नाद का भेद पाया है वह ऊपर के दश शब्द में नहीं है उसका भेद भेदी ही

जानै और बिदून सन्त के या सन्त के दास के उसका प्रकास नहीं होसक्ता ॥

३—प्रश्न

सृष्टि का कर्त्ता कौन है और कहां है और कैसा है और माया क्या है ॥

उत्तर

शब्द सृष्टि का कर्त्ता है वही शब्द करता पुरुष है सिरजनहार है उसकी इच्छा कुदरत और माया है गुरुनानक शाह का बचन है ॥ शब्दो धरती शब्दो आकाश। शब्दो शब्द भया प्रकाश ॥ सगरी सृष्टि शब्द के पाछे । नानक शब्द घटे घट आछे ॥

४ प्रश्न ॥

जगत क्या है और कहां से और कब पैदा हुआ सत्य है या असत्य है स्वप्न सृष्टि और जगत में क्या भेद है और किसको भासता है ॥

उत्तर

सत्य पुरुषकी इच्छासे निरंजन उत्पन्न हुआ और निरंजन से जगत पैदा हुआ सत्यलोक की अपेक्षा से यह प्रपंच असत्य है और नौद्वार में जो सुरत है उसको भासता है स्वपन सृष्टि मनकी रची हुई है और यह जगत निरंजन का रचा हुआ है मनका सुभाव चंचल है और नादपर आशक्त है जैसे मृगनाद पर आशक्त होजाता है जब नाद को सुनता है तब अपने देहको भी भूलजाता है ऐसेहीमन भी नाद पर मोहित है जब नाद सुनता है तब वशी भूत होजाता है ॥ और मन किसी सहारे बिना ठहरता नहीं इससे और कोई सहारा ऐसा नहीं है जैसे शब्द का सुना इसमें मन लगजाता है और जगत को भूलकर मालिक को पाता है बजनशाह फ़क़ीर का क़ौवल है ॥

चौपाई ॥

खेखाबिन्दक्या कहि हैं न्यारे । मूंद देख तू दसौ दुआरें ॥
सुनि पड़िहै अनहदका बाजा । परजा से होजैहै राजा ॥

दोहा ॥

सबहि साज तन में बजे मचा है कैसा राग ।
बजहन जाको सुन पड़े बड़े हैं वाके भाग ॥

५—प्रश्न ॥

दुख सुख किसे होता है और क्यों होता है और मरने के पीछे जीव कहां जाता है ॥

उत्तर

दुख सुख उस जीवको जो नवद्वार में है उसको होता है कर्म के अनुसार और जीव का गमन आज्ञा के अनुसार होता है ॥

६—प्रश्न ॥

परलोक क्या है सत्य है या क्या है ॥

उत्तर

परलोक जहां सत्य शब्द है ऊपर है सत्यहै आनन्द का भरा हुआ है माया की हद से ऊपर है ॥

७—प्रश्न ॥

नाम क्या है और कौननाम सर्वोपरि है और नामनामी अभेद है या क्या और शब्द क्या है और सबमें उत्तम कर्म कौन है

उत्तर

सोहं सत्य नाम है और यही नाम सर्वोपरि है शब्द व्यापक है और एक अस्थानी भी है यथाधिकार और सब में उत्तम कर्म साध गुरू की सेवा और सत्संग और नाद की उपासना है देखिये प्रथम नाद है पीछे वेद है क्योंकि नाद से वेद की उत्पत्ति कही है अब कलियुग में कर्म नहीं

बन सक्ता इस निमित्त कि अब न तो ऐसी अवस्था है और न सामर्थी है परंतु कर्म और युगो में बन सकै था इस युग के लिये जो मार्ग संतों ने निकाला है अर्थात् साध गुरू की सेवा नाम का सुमिरन और नाद की उपासना सुगम है देखिये जैसे बादशाही सड़कैं सब बन्द हैं और अंगरेजी सड़कैं जारी हैं बादशाही सड़कों पर न खाने को मिलता है और न बसने को सराय है और न रक्षा है और अंगरेजी सड़कों पर सब कुछ वर्त्तमान है ॥ इससे बादशाही सड़कों पर जाना हानि कारक होता है और इसके विशेष चैतन्य की सेवा इतनी बढ़के है कि हजारों वर्ष की जड़की सेवा एक ओर और चैतन्य की सेवा एक दिन की बराबर है ॥

दोहा ॥

तीर्थ नहाये एक फल साध मिले फल चार ।
सत गुरु मिले अनेक फल कहैं कबीर बिचार ॥

शास्त्री ज्ञान विद्या के सदृश है अनहद शब्द का सुन्ना और नाम का सुमिरन अमल है अमल से बिना विद्या से क्या लाभ है जैसे बीजक तो पालिया परधन नहीं मिला तो बीजक से क्या लाभ हुआ खाली अनसमझे तीर्थ व्रत पूजा से सिर मारो परंतु कुछ हाथ थोड़े ही आता है बहुधा मनुष्य इसी को उपासना और भक्त समझते हैं परंतु भक्त औरही वस्तु है और भक्ति कई प्रकार की है जो भक्ति नेम सहित है वह निकृष्ट भक्ति है और जो प्रेम सहित है वह मध्यम है और जो ज्ञान सहित है वह पराभक्ति है अपने स्वामी को जलसमान सारे व्यापक देखै और अपने को जल में हिम समान देखै । वह ज्ञान सहित परा भक्त है दयादान भक्तके मित्र हैं भूखे को खिलाना महापुण्य है ॥

दोहा ॥

परा भक्ति जिनके अचल पायो पद निर्वान ।
ठसन योग हिमजल हुआ मिट गयोआवन जान ॥

चौपाई ॥

सांति सरोवर मंजन कीजै । जतकी धोती तन पै कीजै ॥
ज्ञान अंगौछा मैल न राखै । धर्म जनेऊ सत्य सुख भाखै ॥
मस्तक तिलक दया का दीजै । प्रेम भक्ति का अचवन कीजै ॥
जोजन ऐसी कार कमावै । माला कंठी सकल सोहावै ॥
गायत्री सो जोगणती खावै । तर्पण सो जोतमक न होवै ॥
संध्यासो जो संधि पहिचानै । मन पसेरे को घट में आनै ॥
ऐसी संध्यामेरेमनमानी । कहुनानक किनही गुरुसुखजानी ॥

दोहा ॥

सन्त मता सतनाम लख सहज मुक्ति को पाय ।
बिन्द्राबन जग तरण को सुरत शब्द मे लाय ॥

वैष्णव मत के अनुसार ॥

१—प्रश्न ॥

मुक्ति होना क्या है और किस यत्न से मुक्ति प्राप्त होती है ॥

उत्तर

ब्रह्मसा कार गुणातीत के समीप होना मोक्ष है और मोक्ष उनकी कृपा से होती है जब उनकी कृपा होती है तब यह पूजा जप तीर्थ आदि सुकर्म निष्काम करता है तब मोक्ष को प्राप्त होता है अर्थात् बैकुंठ में बास करता और आनन्द भोगताहै और दुख सब जाता रहताहै अथवा प्रकृत सम्बन्धत्याग पूर्वक शुद्धसत्य शरीर आविर्भाव मुक्तहै बैकुंठी शरीर प्रकृति सत्यसे भिन्न सत्य है क्योंकि अनित्य नहीं है ॥

२—प्रश्न ॥

मैं क्या हूं और यत्न मेरे या ईश्वर के या प्रारब्ध के आधीन है ॥

उत्तर

तू जीव है अणु है चैतन्य है इन्द्रियों के साथ मिलकर

दुखी सुखी रहता है और यह स्वरूप वासना के अनुसार हुआ इन्द्रियों से पृथक करना और परमात्मा में नवधा भक्ति आदिक से मन लगाना यह कर्तव्य है सो तेरे और परमात्मा की कृपा के आधीन है जीवका ज्ञान गुण शरीर प्रमाण संकोच विकाश वाला ॥

नवधा भक्ति के अंग ॥

कीर्तन १ श्रवण २ अर्चन ३ वन्दन४ समरण ५ पादसेवन ६ दास्य ७ सखिभाव ८ आत्मनि वेदन ९ ॥

३—प्रश्न ॥

सृष्टि का कर्ता कौन है कहां है और कैसा है और माया क्या है ॥

उत्तर

सृष्टि का कर्ता ईश्वर है व्यापक है और साकार रूप वैकुंठ में भी है माया ईश्वर की इच्छा है अविद्या जीव की अविद्या है ॥

४—प्रश्न

जगत क्या है कहां से और कब पैदा हुआ सत्य है या असत्य है स्वपन सृष्टि और जगत में क्या भेद है और किस को भासता है ॥

उत्तर

जगत ईश्वर की इच्छा से पैदा हुआ है तत्व सूक्ष्म रूप माया में रहे स्थूल तत्व अनित्य है सूक्ष्म तत्व सत्य है जगत स्वप्न सृष्टि दोनो सत्य हैं पर अनित्य हैं और दोनो का रचने वाला ईश्वर है मनके पाप पुण्य का भोग स्वपन में होता है ॥

५—प्रश्न ॥

दुखसुख किसे होता है और क्यों होता है और मरने के पीछे जीव कहां जाता है ॥

उत्तर

दुखसुख जीव को होता है देह के साथ प्रीत करने से और वासना के अनुसार जीव का गमन होता है (या मति-स्सागतिर्भवेत् ॥

६—प्रश्न ॥

परलोक क्या है सत्य है या क्या ॥

उत्तर

वैकुंठ परलोक है प्रकृति मंडल के ऊपर है अनेक प्रकार का है अनादि सिद्ध है और सत्य है नित्य है प्रकृति मंडल के अन्दर जो जगत है सो अनित्य है ॥

७—प्रश्न ॥

नाम क्या है और कौन नाम सर्वोपरि है और नाम नामी अभेद है या क्या और शब्द क्या है और सबमें उत्तम कर्म कौन है ॥

उत्तर

विष्णु भगवान के सम्पूर्ण मुख्य नाम सर्वोपरि हैं नाम से नामी का लक्ष होता है और नाम नामी अभेद साही है जब ऐसा नाम कहा कि दूध है तो नाम लेने से दूध काही ज्ञान होता है पत्थर का नहीं होता वेद ने और बहुत से महात्माओं ने राम नाम की बड़ी महिमा की है राम नाम प्रथम तो बोलने में सुगम है राम नाममें ईश्वर और माया दोनोंका जपहै (रा) और (मा) केअनन्त गुण है राम नाम जन्म मृत दोनों समय कहाजाताहै और हजारों लाभ है रामायण में कहा है ॥

चौपाई

मेरे मत बड़ नाम दुहू तें । किये योग जेहि निज बस बूते ॥

[गुरु नानकशाह का बचन है ॥]

सिमरोसुमिर २ सुखपाओ । कलिकलेशतनमाहिमिटाओ॥

सुमिरोजासबिस्वभर एकी। नाम जपत अगणत अनेकी॥
वेदपुराणस्मृतिगुह्य आखर। कीन्हे राम नाम इकआखर॥
किनकाएकजिसजीववसावै। ताको महिमा गनी न आवै॥
कांखींएकैहि दरसतिहारो। नानक उन संगमोहि उधारो॥
सुखमनी सुखअमृतप्रभुनाम। भक्त जनाके मन विसराम॥
जाप ताप ज्ञान सब ध्यान। षट शास्त्र सुमिरत विख्यान॥
योग अभ्यास कर्म धर्म क्रया। सकल त्यागवनमध्ये फिरिया॥
अने प्रकार किये बहु यत्ना। पुण्य दान हे.मैं बहु रत्ना॥
अरोंर कटाय होमैकरराती। बर्त नेम किये बहु भाती॥
नहीं तुल्यराम नाम विचार। नानक गुरसुखनामजपिये एक बार॥ गुर मुख होकर एक बारी भी नाम का कहना बहुत है और जो गुर मुख नहीं है तो खैर आफियत बुद्धिवानी से तो हाथ धोबठ परंतु तोते किसी टेंटे दानेके लालच है अब आनन्द कहां हां राम नाम कहने वाला तोता उस तोते से अच्छा है जो कुछ नहीं बोलता काम काना काज का ढ़ाई सेर नाज का भला पहिले ने दाना तो बीना गुरमुख वह है जो मन मुख नहीं है इस समय में ऐसा मनुष्य कहां हैं॥

चौपाई॥

ना कुछ जन्मे ना कुछ मरै। आपन चरित आपही करै॥
जो जो होय सोई सुख माने। भला काहे फिरै अयाने॥
कौन वस्तु आई तेरे संग। लिपटरह्यो तिहलोभीपतंग॥
राम नाम जप हृदय माहि। नानक पत सेती घरजायहि॥

दोहा॥

नेमा भक्ती आदि जो करै पूर्णचित लाय।
बिन्द्राबन बैकुंठ में मेगै सुख अधिकाय॥

खांस वालों के मत के अनुसार ॥

१—प्रश्न ॥

मुक्तिहोना क्या है और किस यत्नसे मुक्त प्राप्त होती है ॥

उत्तर

अपने को जानना मुक्त है ज्ञान से जाना जाता है ॥

२—प्रश्न ॥

मैं क्या हूं और यत्न अपने या ईश्वर के या प्रारब्ध के आधीन है ॥

उत्तर

तू खांस है ब्रह्म समुद्र की लहर है प्राण तू नहीं है खास और प्राण में बहुत भेद है जतन तेरे और गुरू के आधीन है। खास का हंस आवे और जाय है सतगुरु पूरा मिलै तब भेद लखाय है ॥

३—प्रश्न ॥

सृष्टि का कर्त्ता कौन है और कहांहै और कैसाहै और माया क्या है ॥

उत्तर

ब्रह्मही कर्त्ता है और अकरता भी है जैसे चुम्बक पत्थर उसकी शक्ति माया है ब्रह्म भी खास का स्वरूप रखता है सब अस्थानों पर पवन के समान व्यापक है परंतु पवन नहीं है क्योंकि पवन उसको कहते हैं जो चलती है और जो आकाश में चेष्टा करने से विदित हो वह ब्रह्म है ॥

४—प्रश्न ॥

जगत कैसे और कहां से कब उत्पन्न हुआ है सत्य है या असत्य है स्वपन सृष्टि और जगत में क्या भेद है और किसको भासता है ॥

उत्तर

जगत कुछ हुआ नहीं है भर्म है और भर्महीं को भासता है जगत और स्वपन सृष्टि बराबर है ॥

५—प्रश्न ॥

दुखसुख किसे होता है और क्यों होता है और मरने के पीछे जीव कहां जाता है ॥

उत्तर

अज्ञान से दुखसुख है मरने के पीछे आशा के अनुसार देह रखता है ॥

६—प्रश्न ॥

परलोक कहां है सत्य है या क्या है ॥

उत्तर

परलोक कलपना मात्र है ॥

७—प्रश्न ॥

नाम क्या है और कौन नाम सर्वोपरि है और नामनामी अभेद है या क्या और शब्द क्या है और सब में उत्तम कर्म कौन है ॥

उत्तर

रामनाम सर्वोपरि है साध गुरूकी सेवा उत्तम कर्म है ॥

दोहा ॥

स्वास मते का भेद यह अजपा जाप करै ।
बिन्द्राबन जग भरम जो सहजे आप टरै ॥

मुसल्मानों में बेदान्ती खूफी मत के अनुसार ॥

१—प्रश्न ॥

मैं क्या हूं और यत्न अपने आधीन या ईश्वर के या प्रारब्ध के है ॥

उत्तर

तू कुछ नहीं है और अपने असत्य अपनपौ को दूर करना येही करतव्य है ऐसा जानना कि ईश्वर के सिवाय और कुछ नहीं है और इस प्रकार भी कहा जा सक्ता है कि मेरे सिवाय और कुछ नहीं है सब कुछ मैंही हूं और यत्न अपने स्वाधीन है और मूल यत्न केवल यह है कि अनात्म अहंगता को दूर करना मसजिद तैयार कराना बादशाहों का काम है रोजा और निमाज रखना अपराधियों का काम है हज्ज करना अर्थात् तीर्थ रटन करना देशाटवी मनुष्यों का काम है रोटी खिलाना दर्दमन्दों का काम है ॥ परहेज करना रोगियों का काम है और स्नान करना अपवित्र लोगों का काम है। इबादत करना बन्दों का काम है एकान्त में रहना क़ैदियों का काम है। भय भीत रहना लड़कों का काम है। प्रेम करना प्रेमी का काम है ॥ सेवा करना सेवक लोगों का काम है। जीवत्व का त्याग मरदों का काम है बुद्धिमान को एकइशारही बसहै परंतु स्मरण रहै कि यह साधारण काम नहीं ॥

ग़ज़ल

वेखुदी१तूने यह चाशनी२ पहिले चखाई। किसी आरजू३ के दिलमें नहीं अबरही समाई १ ॥ नज़र४ है नख्त५ है नरिसाई६ है नदुआ७ है। नखयाल बन्दगी८ है नतमन्नाय९ खुदाई१० ॥ २ ॥ नमुक़ाम गुफ्तगू११ है नमकूल नूलज़१२ है ॥ न वहांहवास पहुंचै न खिरद१३ कोहै रसाई१४ ॥ ३ ॥ न मकां है न मकीं है न जमां है नज़मीं१५ है। दिल वेनवाने मेरे वहां छावनीहीं छाई ॥ ४ ॥ न विसाल१६

अपनपौकात्याग१ मिसटान२ कामना३ डर४ संदेह५ आसाद अशीरबाद७ सेवकताई८ आसाद ईश्वरता१० कहनासुनना११ ढूंढना१२ बुध१३ पहुंच१४ परपंच१५ मिलाप१६

है न हिज्र१ है न सफ़र२ है न ग़म३ है जिसे कहते हैं ख़ाब४ ग़फ़लत वह नींद मुझको आई ॥ ५ ॥

२—प्रश्न

मुक्त होना क्या है और किस यत्न से मुक्ति प्राप्त होती है ॥

उत्तर

सब को एक समझना और द्वैतता को भूलना येही मुक्ति है द्वैतता दूर करनी यही यत्न है ॥

ग़ज़ल

जिधर देखता हूं जहां देखता हूं ख़ुदाईपू का जलवाई मियां देखता हूं ॥ १ ॥ नतन७ देखता हूं नजां८ देखता हूं तुझी को निहां९ और अयां१० देखता हूं ॥ २ ॥ यह जो कुछ किपैदा है सब ऐन११ हक़१२ है । किएक बक़्र१३ हस्ती१४ रवां१५ देखता हूं ॥ ३ ॥ अगर कोई जाने जहां१६ गैर१७ हक़१८ हैं । सो मैं उसको धोखा गुमां देखता हूं ॥ ४ ॥ कहूं किस्से राजे१९ हकीक़त२० नयाज़ । यह आलम२१ सरापा२२ गुमां२३ देखता हूं ॥ ५ ॥

जबकिऐसाकहाकि (वहदहू२४ लाशरीकु२५ लाइलाह२६ इल्लिल्लाहु२७) इसे अब दूसरी चीज़ किस तरह कहीजावै इसे (ला इलाह इल्लिल्लाहु) तक बेखुदी और आलम माक़ूल है आगे (मुहम्मदि र्रसूलिल्लाहु दुई और आलम मनकूल है लाइलाहइल्लल्लाह के ये अर्थ हैं कि नहीं है कुछ सिवाय ख़ुदा के यह अद्वैत ज्ञान है और आगे मुहम्मद अब द्वैत सिद्ध हुई ॥

३—प्रश्न ॥

सृष्टि का कर्त्ता कौन है कहां है और कैसा है और माया क्या है ॥

बियोग१ आनंद२ दुख३ सुखोप्र४ ईश्वरता५ प्रकाश६ शरीर७ प्राण८ गुप्त९ प्रगट१० यथार्थ११ सत्य१२ नदी१३ होना१४ वाह१५ परपंच१६ भिन्न१७ सत्य१८ मेट१९ ज्ञान२० परपंच२१ नखसिखपर्यंत२२ मिथ्य२३ एक२४ अद्वैत२५ नहीं२६ सिवाईश्वरके२७

उत्तर

उत्पन्न करने वाला और उत्पत्ति एक है जैसे रोशनाई जब तक दवात में है तबतक स्याही कहलती है और वही जब काग़ज़ परलिखने में आई तो कोई उसको स्याही नहीं कहता उसका नाम लेख होगया परंतु वासतव में जोलेख है वह सब स्याही ही है इससे सब एकही वस्तु है वह उत्पन्न करने वाला है वही उत्पत्ति माया अर्थात ईश्वरता भीवही है अच्छा बुरा भी वही है ॥

शेर

इसेब्रह्मण और उसे शेख मानै ।
यहआपुसकाझगड़ायहां देखताहूं ॥

ग़ज़ल

यार को हमने जा बजा देखा । कहिं ज़ाहर कहिं छिपा देखा ॥ कहिं मुंमकिन हुआ कहिं वाजिब । कहिं फ़ानी कहीं बक़ादेखा ॥ कहिं बोलावले वहकहिके अलस्तु । कहिं बन्दा कहीं ख़ुदा देखा ॥ कहिंबेगा नह बस नज़र आया । कहिंहूरतसे आशना देखा ॥ कहिं है बादशाह तख़्त नशीं । कहिंकासा लिये गदा देखा ॥ कहिं रक़ास और कहीं मुतरिब । कहिंवह साज बाजतादेखा ॥ कहिंवह दरलिबास माशूक़ां । बरसरे नाज़ और अदा देखा ॥ कहिं आशिक नया चाकी सूरत । मीन: विरियां वदिश जला देखा ॥

४—प्रश्न

जगत कैसे और कहां से और कब उत्पन्न हुआ सत्य है वा असत्य है स्वप्न सृष्टि और जगत में क्या भेद है और किसको भासता है ॥

उत्तर

सब एकही है ॥

५—प्रश्न

दुख सुख किसे होता है और क्यों होता है और मरने के पीछे जीव कहां जाता है ॥

उत्तर

जो है वही है अपने कर्मों के अनुसारस्वरूप रखता है ॥

६—प्रश्न

परलोक कहां है सत्य है या क्या ॥

उत्तर

स्वर्ग और नर्क हैतता के भर्म में सत्य है ॥

७—प्रश्न

नाम क्या है और कौन नाम सर्वोपरि है और नाम नामी अभेद है या क्या और शब्द क्या है और सब में उत्तम कर्म कौन है ॥

उत्तर

दो समझने में ईश्वर का नाम बड़ा है संत महात्माओं की सेवा उत्तम कर्म है ॥

दोहा ॥

मत सूफीका तुम लखो निरगुन सर गुण एक ।
बिन्द्रावन मत बेदांत को जीव ब्रह्म दोउ एक ॥

ईसा और मुसल्मानी मत के अनुसार ॥

१—प्रश्न ॥

मुक्त होना क्या है और किस यत्नसे मुक्ति प्राप्त होती है ॥

उत्तर

सदैव की प्रसन्नताही मुक्ति है परंतु उसका ठीक ठीक वर्णन नहीं होसक्ता कि वह प्रसन्नता किस प्रकार की है परंतु प्रसन्नता है और ईश्वर की आज्ञा प्रतिपालन करना जो इंजील में लिखी है और ईसामसीह पर विश्वास लाना

कि वह हमारा अपराध क्षमा कराने वाला है जिसने हमारे अपराधों के बदले में सूली पर मनुष्यों के सदृश दुख सहा ईसाई मत वालों को प्रथम इंजील पर विश्वास लाना बहुत योग्य है कि इंजील ईश्वर के बचन हैं प्रलय के दिन सूर अर्थात् बांसुरी बजाई जायगी कि सब कबरोंसे उठ कर ईश्वर के सम्मुख जांयगे जिन्होंने उत्तम कर्म किये हैं यथा भूखे प्यासे को दिया है या पड़ोसी की सहायता की है या पराई इस्त्री गमन या चोरी या बहुत शराब नहीं पीहै और ईश्वर की प्रार्थना की है और ईसा पर निश्चय लाये हैं वह स्वर्गमें सदैव के रहने को भेजे जांयगे वह मुक्त हुये जिन्हों ने इसके विपरीत काम किया है वह सदैव के लिये नर्क को भेजे जांयगे परंतु हम यह प्रणकरके नहीं कह सक्ते कि स्वर्ग और नर्क और जीव सदैव बने रहैंगे ईश्वर को सामर्थ है जब चाहै सबको नास करदे चाहै सदाको बना रक्खै अगले अपराध जो ईश्वरकी आज्ञा भंग मनुष्य ने किये उसको ईसामसीह ने सूली के दुख पाने के बदले क्षमा कराये हैं सो किसी और दूसरे ने ऐसा नहीं किया है सो और मतवालोंके गुनाह पहिले नक्षमा होंगे न मुक्त होंगे मुस लमानोंके जवाब ईसाईमत के सदृश हैं केवल इतना अन्तर है कि वह पैगम्बर को खुदाका भेजा हुआ कहते हैं और पैगम्बर खुदा के रोबरू क़यामत के दिन अपनी उम्मतको बख्शवेंगे इस हेतसे पृथक जवाब नहीं लिखे और इंजील के स्थान पर कलामुल्लाह और हदीस के हुक्म की तामील को कहते हैं और शराब पीना इनके मतमें अत्यंत निषेध है ॥

२—प्रश्न

मैं क्या हूं और यत्न अपने आधीन या प्रारब्ध या ईश्वर के है ॥

उत्तर

तुम देह और जीव अर्थात् रूह मिले हुए हो और जीव और देह दोनों ईश्वर के उत्पन्न किये हुए हैं ईश्वर के अंस नहीं हो परंतु यह नहीं कह सक्ते कि जीव किस प्रकार उत्पन्न हुआ है और कैसा है परंतु सत्य और असत्य की विवेचना जीव कर सक्ता है और यत्न तुम्हारे आधीन है और ईश्वर की अनुग्रह भीचाहिये। जैसे बाजे शास्त्रों से पाया जाता है कि हर वस्तु का तत्व बीज रूप होकर अनादि है परंतु ईसाई मतमें यह बात नहीं परमाणिक है किन्तु यह बात कि किसी तत्वके बिना ईश्वरने अपनी सामर्थ से सब वस्तु उत्पन्न की है कुछ उपादान कारण की ईश्वर की शक्तिके आगे अवश्यकता नहीं है ॥

३—प्रश्न ।

सृष्टिका कर्ता कौन है कहां है और कैसा है और माया क्या है ॥

उत्तर

ईश्वर ने सृष्टि उत्पन्न की है और वह सारे है। इससे अधिक कुछ नहीं कह सक्ते माया ईश्वर की सामर्थ है पहले ईश्वरने आकाश और पृथ्वीको उत्पन्न किया फिर आज्ञा हुई कि प्रकाश उत्पन्नहो प्रकाश हुआ अन्धकार और प्रकाश में अन्तर हुआ और पशु पक्षी जीव उत्पन्न हुए और ईश्वर ने कहा कि मनुष्य हमारे स्वरूप का उत्पन्न हो औ जलचर और जंगली और वायवी जीवों पर हुकूमत हो तब आदम और स्त्री हव्वा उत्पन्न हुई ईश्वर ने एक बाग़ अदन स्थान में तयार किया और उनको आज्ञादी कि सब वृक्षों के फल खाना पर एक गेहूं का वृक्ष जिसके खाने से अच्छे बुरे का ज्ञान होता है उसको मत खाना परन्तु एक सर्प ने हव्वा को बहकाकर उस वृक्ष का फल खिलाया और हव्वा

ने आदम अपने पतिको खिलाया एक दिन खुदा बाग़ में आये और इस अन्ना भंगता पर आदम और हव्वा को बाग़ मेंसे निकाल कर आप दिया कि स्त्री को सन्तति होने का क्लेश और आदमी को परिश्रम करना होगा तब पेट भरेगा (मुसलमान यह नहीं कहते कि खुदा बाग़ में आये और आदमी खुदा की सूरत का है) ॥

४—प्रश्न ॥

जगत कैसे और कहां से और कब पैदा हुआ सत्य है या असत्य है स्वपन सृष्टि और जगत में क्या भेद है और किसको भासता है ॥

उत्तर

ईश्वर की रचना में हमको क्या गम्य है उसके गुप्त भेद को हम किस प्रकार पासक्ते हैं हम अपराधी हैं थोड़ी बुद्धिपाई है। तुमको यह जगत भासता है और सत्य है संसार का सब कारखाना ईश्वर की आज्ञा से छः दिन म तयार हुआ है। ईश्वर देखता भी है बोलता भी है पापी पर क्रोध भी करता है और आप भी देता है ॥

५—प्रश्न

दुख सुख किसे होता है और क्यों होता है और मरने के पीछे जीव कहां जाता है ॥

उत्तर

दुख सुख तुमको होता है और ईश्वर की इच्छा येही है उसमें हमको क्या गम है हमको उससे केवल दया और क्षमा मांगनी चाहिये और मरने के पीछे जीव नींद में रहता है प्रलय के दिन किसी प्रकार की देह तयार होंगी और जीव देह मिलकर कर्म के अनुसार दण्डपावेंगे परंतु यह बात केवल ईसाई मतवालोंके लिये हैं और मत के विषय में नहीं कहि सक्ते कि किस प्रकार न्याय होगा परंतु मुसल-

मान लोग इसको नहीं मानते वह प्रलय के दिन सब का न्याय एक तरह होना कहते हैं और ईसाई और मुसल्मानी मत में आवा गवन नहीं मानते प्रतिदिन नवीन जीव दुनियां में भेजे जाते हैं और जैसी ईश्वर की इच्छा होती है वहां वह जीव आकर उत्पन्न होता है और ईश्वर की इच्छा अनुसार दुख सुख पाता है और जीव की सामर्थ नहीं है इसका ठीक ठीक विचार करले किसी २ को दुख और किसी को सुख कैसे दिया इस भेद को ईश्वरही जाने ॥

६—प्रश्न

परलोक कहां है सत्य है या क्या है ॥

उत्तर

स्वर्ग और नर्क है और सत्य है परंतु स्थान नहीं बतासक्ते ॥

७—प्रश्न ॥

नाम क्या है और कौन नाम सर्वोपरि है और नाम नामी अभेद है या क्या और शब्द क्या है और सब में उत्तम कर्म कौन है ॥

उत्तर

ईसा मसीह और खुदा का नाम बड़ा है और मुसल्मानी मतमे सबसे बड़ा नाम अल्लाह का है और सब से उत्तम कर्म निष्काम बन्दगी है ॥

दोहा ॥

ईसाई और मुहमदी आवा गवन न ठान।
बिन्द्रावन यह असकह्यो सबजीवन येपहचान ॥

नास्तिक मत वाले जो कर्ता नहीं मानते उनके मत के अनुसार ॥

१—प्रश्न ॥

मुक्त होना क्या है और किस यत्न से मुक्ति प्राप्त होती है ॥

उत्तर

बन्धन से छूटने को मुक्ति कहते हैं बन्धन केवल यह बात है कि अनेक प्रकार के बचनों में फसा रहना जब श्रेष्ट गुरू मिलै तब उसको बचन रूपी बन्धन से छूटे जब मुक्ति होय अवगुरु मत का पाना यत्न है वह गुरमत जब आवै जब मन मति छोड़ै मनमति क्या है कि ब्रह्म जीव ईश्वर जगत मनसे उत्पन्न होता है शास्त्र कहता है कि ब्रह्म जगत का बीज है तो बीज का त्यागना करोगे तो वृक्ष कैसे अलग होसक्ता है इस कारण ब्रह्म और ईश्वर जगत दोनों का त्याग करो और शास्त्र ईश्वर को प्रेरक कहता है सो ईश्वर दीखता नहीं और असल प्रेरकको समझता नहींकि कौन है असल प्रेरक बचन को कहते हैं बचन सुन कर ईश्वर को खोजता है और ईश्वर कुछ है नहीं इससे बचन ही प्रेरक है जब बचन का बन्धन टूटै तब मुक्त होय ॥

२—प्रश्न

मैं क्या हूं और यत्न अपने आधीन याप्रारब्ध के या ईश्वर के है ॥

उत्तर

तुम जीव और रूप हो और जबी और रूप एक है जैसे सूरज और सुरय का किरण और यत्न तुम्हारे आधीन है जीव आप कुछ भिन्न वस्तु नहीं है चार तत्व के मिलने से एक स्वरूप बनजाता है वह जीव है सो जीव तत्व भिन्न २ हुए पर जाता रहा जैसे तेल बती दिया अग्नि मिलता है जब किसी चीज का बियोग हुआ प्रकाश जाता रहा ॥

३—प्रश्न

सृष्टि का कर्त्ता कौन है और कहां है और कैसा है और माया क्या है ॥

उत्तर

सृष्टि का कर्ता कोई नहीं है आप अनादि काल से एकही चली आती है तूने ऐसा सुना है कि कोई कर्ता है परंतु कर्त्ता कोई मिला नहीं माया कुछ नहीं है ॥

४—प्रश्न ॥

जगत कैसे और कहांसे और कब पैदा हुआ सत्य है या असत्य है और स्वपन सृष्टि और जगत में क्या भेद है और किसको भासता है ॥

उत्तर

जगत आपही अनादि कालसे चला आता है जलसे जल मिट्टी से मिट्टी और इसी प्रकार सब उत्पन्न होते रहते हैं और नास होजाते हैं उपजना नाश होना इसी का नाम जगत है ॥

५—प्रश्न

दुख सुख किसे होता है और क्यों होता है और मरने के पीछे जीव कहां जाता है ॥

उत्तर

जगतही दुख सुख है और जीव ऐसेही मरते और उत्पन्न होते रहते हैं आवा गवन नहीं होता ॥

६—प्रश्न ॥

परलोक कहां है सत्य है या क्या ॥

उत्तर

परलोक कुछ नहीं है ॥

७—प्रश्न

नाम क्या है और कौन नाम सर्वोपरि है नाम नामी अभेद है या क्या और सब में उत्तम कर्म कौन है ॥

उत्तर

सब नाम जगतके हैं गुरमत सबमें बड़ी है और गुरूकी सेवा सब कर्मो से उत्तम कर्म है ॥

दोहा ॥

नहि कर्ता कोई जगत को सिर जो बिन से आप ।
बिन्द्राबन यह नास्ती कह्यो पुच विन बाप ॥

जैनधर्म के अनुसार ॥

१—प्रश्न

मुक्तहोना क्या है और किस यत्नसे मुक्ति प्राप्तहोती है ॥

उत्तर

कर्म के बन्धन से छूटना मुक्ति है परंतु मुक्ति उस समय होगी जिस समय काल ईश्वर प्रारब्ध स्वभाव आतमा का परिणाम संयुक्त होकर वरतमान होंगे अब पंचम काल है इस समय मुक्ति नही होसक्ती यत्न यह है कि कुदेव और कु गुरू कुधर्म का त्याग उसको मिथ्यात्व कहते हैं जीव का मारना झूठ बोलना चोरी करना इत्यादिक का त्याग इस को अव्रति कहते हैं क्रोध मान माया लोभ इनका त्याग कषाय कहते हैं मन बचन काया का निरोध करना इसको योग कहते हैं इन त्यागोंका अभिप्राय यह है कि राग द्वेष का अत्यंत अभाव होजाय सप्त भंगमत जैनका है जब आठ प्रकार का कर्म केवल ज्ञान से नास होय जब जीव ऊपर चढ़ कर मोक्ष शिला पर जाय है यह मुक्ति है ॥

२—प्रश्न

मैं क्या हूं और यत्न अपने आधीन या प्रारब्ध के या ईश्वरके है ॥

उत्तर

तू अज अमर संयोगी वियेगी यत्न तेरे और प्रार ब्धके आधीन है जीव असंख्यात परदेस वाला है ॥

३—प्रश्न ॥

सृष्टिका कर्ता कौन है और कहां है और कैसा है और माया क्या है ॥

उत्तर

सृष्टि चार प्रकार की है अनादि अनन्त अर्थात् आदि अन्त करके रहित है ॥ १ ॥ आदि है और अन्त नहीं है ॥ २ ॥ आदि नहीं अंत है ॥ ३ ॥ आदि भी है और अंत भी है ॥ ४ ॥

सृष्टि और कर्ता की मान न अधिकारी प्रति है चार परमाणु से जगत होता है नियाय कों कोरीति के अनुसार सृष्टि की उत्पती ईश्वर की इच्छा से कही है ॥

४—प्रश्न ॥

जगत कैसे और कहां से और कब उत्पन्न हुआ सत्य है या असत्य है स्वपन सृष्टि और जगत में क्या भेद है और किस को भासता है ॥

उत्तर

सत्य भी है और असत्य भी है अधिकारी प्रति और संयोगी जीव को भासता है ॥

५—प्रश्न ॥

दुख सुख किसे होता है और क्यों होता है और मरने के पीछे जीव कहां जाता है ॥

उत्तर

अज्ञानी को संसार में शुभ अशुभ कर्म के अनुसार जन्म होगा और जो पूरा ज्ञानी नहीं है कुछ अज्ञान रह गया उसको बैकुंठ मिलैगा ॥

६—प्रश्न ॥

परलोक कहां है सत्य है या क्या ॥

उत्तर

परलोक सत्यभी है और असत्यभीहै अधिकारी प्रति ॥

७—प्रश्न

नाम क्या है और कौन नाम सर्वोपरि है और नाम नामी अभेद है या क्या और सबमें उत्तम कर्म कौन है ॥

उत्तर

सबसे उत्तम कर्म दया दान धर्म और पारसनाथ की पूजा है आत्मा देह से भिन्न है पर देह के बराबर है जो बड़े शरीर का जीव छोटे शरीर में आया तो उतना जीव घट गया अर्थात् संकोच होगया जैसे गर्म पाहन पर बूंद संकोच होजाती है और ठंढे पर फैल जाती है ॥

दोहा ॥

जैन धर्म अस चीन्हीआ कलियुग मुक्त न होय।
बिन्द्राबन जीवन दया कहां धर्म मुख सोय ॥

प्रटक होकि ॥

वेदांत की चर्चा में भी कहीं २ बाजे मतों का वर्णन आया है कर्म उपासना और ज्ञान की गति भली प्रकार वहां विदित होगी ॥

दोहा ॥

बहुत पंथ और मतन के लिखे जवाब सवाल।
बिन्द्राबन चितसों पढ़ै मिले मुक्ति तत्काल ॥



अथ ग्रिन्थ कर्त्ता का सिद्धांत

छंद ॥

बिन रूप रेखा सार पद जिसको कहा पूरन सभी।
यह बूझि जिनको मिलगई पाना था सो पाया अभी ॥
उस एक में धुन जो रही सूक्षम सरूपी लेखिये।
मन चित सभी अस्थूल उत्पति रूप अब जो देखिये ॥

अस्थूल सूक्षम रूप पुन सबको अनादी जानिये।
नित्य उत्पति जरू मनुष्य को जगत ऐसे मानिये॥
शब्द के अभ्यास से वृती ऐकागर कीजिये।
चार साधन जो कहे सो तुम सुगम से लीजिये॥
देखो जो वृत्ती साध के फिर अन्त में परकाश है।
जब लगन यह थिरोय गी पावै नहीं अवकाश है॥
सतसंग सेवा साधकी अरू नाम का जप जाप है।
बुद्व निर्मल और निश्चल देखिये सभ आप है॥
ज्ञान के उपरान्त भी जीवन मुक्ति सुख कारने।
वृत्ती एकागर नाद से सुख सभ लिया है साधने॥
हंसनाद जोहै उपनिषद महिमा शब्द की गारही।
संतों का यह सिद्वांत है बिन्द्राबन सत्य सत्य कही॥

अलिफ नामा॥

अलिफ एक है सांई मेरा। सबके भीतर करै बसेरा॥
सानी१ उसका जुआ नहोवै। मिलै उसे जो आपको खोवै॥ १॥
बेबुनियाद२ दुई३ तुमजानो। गदा४ शाह५ में दोनहिठानो॥
हर एक नफ़्स६ है जिकर७ उसीका। बिन्द्राबननहिं और किसीका॥ २॥ पेपकड़ो तुमपैर पियाके। है क्या सुमकिनट८ वसफट९ जाके॥ पन्द१० पीर्की रासिख़ ११प्यारे। बिन्द्राबन कुल१२ कार१३ सवारे ३॥ तेतेरा है मुरशद१४ कामिल१५। उसके हुकम पर होतू आमिल१६॥ भरै१७ बताई तुमको रासिख़। तरक कराये कारये नासिख़१८॥ ४॥ सेसावित१९रहो कदम२० कदमपर। ख़याल तू रखले अपने दम पर। आजम२१ इसम२२ इसी को जानो॥ सुनो कानदे पूरा मानो॥ ५॥ जोमजहां चाहै वह हाजिर२३। पैदा२४

सजातियेटूसर१ जड़२ द्वैतता३ फकीर४बादशाह५ दम६ ध्यानचरचा७ होंना८उसतनि९उपदेस१० सति११ सब१२ काम१३ गुरू१४ पुरा१५ अज्ञाकारी-करनेवाला१६उपदेस१७बुरे१८ पक्के १९इश२०बड़ा२१ नाम२२ मौजूद२३परकट२४

पिन्हां१ मख़फ़ी२ माहिर३ ॥ बिन्द्राबन और काबा४ उसीका। सही५ जान नहिं दावा किसीका ॥ ६ ॥ चेचून६ चरासे न्यारा लेखा। दानाहीं दोनों बिचदेखा ॥ बजुज़७ ख़मोशीट नहिं कुछ कहना। रज़ाए जो उसकी उसीपै रहना ॥ ७ ॥ हेहदीस१० पर क़ादिर११ हेरे। हसब सुनासिब१२ मनसब१३ तोरे ॥ सुखन१४ जो बोलोहेा वहसच्चा। छोड़ो कलमा१५ सख़त१६ और कच्चा ॥ ८ ॥ ख़ेख़राब१७ यह दुनियां दूं१८है। मक्कार१९ है पुर२० अफ़सूं२१ हैं ॥ दाम२२ में इसके गर्दू२३ आवै। फ़सकमंज़िल२४ दोज़ख़२५ जावै ॥ ९ ॥ दालदिला२६ दम२७ उसका भरिये। कम२८ जहां तक हेासके करिये ॥ इल्मे बेहतर२९ और नहीं है बिन्द्राबनयह चसमा३० कहीं है १० ॥ जालजलील३१ कराय जहालत३२। बनी हुई सबखेाय असालत३३ ॥ इनकीसोहबत३४से तूबचरे। जिन्हें नहीं मालूमअलफबे ११ रेरईस३५ कैसर३६ सुलताना३७। जोरावर३८ अक़लीम३९ सिताना४० आख़िर४१ कार उसीसे मतलब। होगे एक दममें सब ग़ायब४२ ॥ १२ ॥ जोज़रफ४३ निगाह४४उन्हींकी होगी मादूद४५ इबादत४६ मेहैं जोगी ॥ ज़ाहर में गरदुनिया दार खुदा करेगा बेड़ापार ॥ १३ ॥ जोजवाल४७ हरग़ैमें४८ होगा। गाफिल४९ मस्त५० मै५१ मेंहोगा ॥ १३ ॥ खोवैगा

छिपा१ ढकाहुआ२ खुलाहुआ३तीर्थमुसलमानी४सतका५ मायाद्वसिवाय७ चुप८ हुकुममौज९ पुरानआदिक१० बलवान११ वाजबी१२ अधिकार१३ बात१४ कहना१५ कड़ा१६ बुरी१७ ओछी१८ झूठी१९ भरी२० जादू२१ जाल२२ जो२३ अस्थान२४ नरक२५ मेरेमन२६ भरोसा२७ दया२८ भला२९ सोतातलाब३० तुच्छ३१ अज्ञान३२ पहलासरूप३३ संग३४ चौधरी-अमीर३५ बादशाह३६ बादशाह३७ बलवान३८ टेसखण्ड३९ जीतना४० अन्तको४१ नाश४२ गहरी४३ दृष्टि४४ बन्दुगीवाले४५ बन्दुगी४६ नाश४७ पदार्थ४८ भूलाहुआ४९ मतवार५० मदरा५१

तू मिली हुई को। पछतावै फिर रहा न यक दो ॥१४॥ सीन ग़रीर१ सलतनत२ शाही। ऐश३ सरूर४ मरातब-माही५ ॥ औजई करामत७ जाहे७ हश्मत७। मिलैतुझै जो राखै किसमत८ ॥ १४ ॥ सीन सुरूर९ पर कलमा रबका१० ।इस्मे कामज़ आहैसबका ॥ बेख़ुद११ कौंहे जारा तो सोचो। येही वक़्तहै तुमकुछबोदो॥ १५ ॥ खाद सनम१२ से चाहो मिलना। रज़ाय सुरग़द से नहीं हिलना ॥ किसी अमर१३ में इजाजत१४ देवै। बजा१५ लाओ वो जो कुछ कहवैं ॥ १६ ॥ ज्वाद ज़मीर१६ उसीसे लो तुम। दिल अपना दिलदार१७ को दो तुम ॥ मरतबा१८ अज़हद१९ अफ़ज़ूं२० हो। बूक़लमू२१ और गूनागूं२१ हो ॥ १७ ॥ तो ताहिर२२ है ज़ात२३ख़ुदा की ॥ सकल एक से एक जुदा की ॥ सूरत सीरत२४ उसकी वा२५ है ॥ आख़िर कार तो वोही ख़ुदा है ॥ १८ ॥ जो ज़ाहिर और बातिन२६ इकसां२७। चलतूराहख़ुदापर तरसां२८ ॥ गर तू ऐसाआपकोरक्खै ॥ मज़ा२९ जीस्त३० का तूहीचक्खै १९ ॥ ऐन ऐब३१ तफ़ाज़ुल३२ मत कर। सरज़द३३ होय सभी से अकसर ॥ मतलब येही यार की यारी ॥ ईश४ नुक़ते३५ दर दिल३६ ख़ुददारी३७ ॥ २० ॥ ग़ैनग़रूर३८ नकर तू प्यारे ॥ सुअल्लिम३९ उल मलकूत से रहो तुम न्यारे ॥ [illegible] २० मलामत४१ खानत पाया ॥ किब्र४२ का कलमा [illegible] पाया ।२१। फ़ेफ़ितना४३ और फ़िसाद४४ किसूसे।

भाई२ भोग३ आनंद४ राजाईकेनिसान५ बड़ाई६ ईश्वरजता७
र१० भूलाहुआ११ प्यारा१२ काम१३ आज्ञा१४ करो१५
ार१८ बेअन्त१९ अधिक२० भांतिभाँति२१ शुद्ध२२
न्तर२६अभेद२७ भेसहित२८ स्वाद२९ जीना३०
म्बार३३ यह३४ बात३५ अपने दिलमें३६
ख़ुराई४१ मलेछता४२झगड़ा४३ लड़ाई४४

ह.
करनेवाला.

बचा रहै तू जंग औ जूसे ॥ जवा नग़ीरी१ से तुमबोलो। चाहै फौज२ को बालसे खोलो। २२। क़ाफ़ क़रार जो करते बेहतर। अदा३ करो तुम सुनसफ़४ होकर ॥ मदद ग़यब५ से पावो प्यारे ॥ दुसमन६ दूर होंयगे सारे ॥ २३ ॥ काफ़ करामत अज़मत७ लीजै। रियाज़त८ और सखावत९ कीजै। मोहताजों१० को चाहिये देना। तुझै चाहिये नाम का लेना। २४। गाफ़ गिला और शिकवा करना बेहूदा बेफ़ायदे बकना ॥ रीवत११ चुगली१२ औरनम्मामी१३ कर परहेज़१४ ये है बदनामी ॥ २५ ॥ लाम लावें१५ पर नाम इलाही१६। दिल कीदूर होय सबस्याही१७ ॥ मीम१८ अयन१९ से सुनो वा देखो। कैसी दिलबर२० सदा२१ है पेखो। २६। मीमसुसतकल२२ राह खुदापर ॥ रहो खुदा रा खुदा है रहवर ॥ पावोगे तुम इलहांग़ैबी२३ । बज़ुत खूब लैग़ायेरैबी। २७। नून निगहवां२४ खालक़२५ सब का। हरकोई राखे आसरा रबका। क्योंनहि ढूंढो उसको प्यारे। बिन्द्राबन दश बार पुकारे ॥ २८ ॥ वाव वहो२६ नाजिल२७ है उनको। हुकम खुदा है मुक़द्दम जिनको। ऐसे शख़्स२८ मुकर्रिब२९ बारी३०। हुये अज़ीज३१ जखुश३२ करदारी ॥ २९ ॥ हे हेग्रकरो तो ध्यानमें आवै। दुई जाय फिर वही रहावै। बिन्द्राबन की अरज यही है। जो कुछ है सो वही वही है ॥ ३० ॥ लाम अलफ़ लाइल्लह३३ वोहै। बहर३४ कैफ मालिक हरदो है। ये दुनिया दोरोज़ की मानो। क़ायम एक खुदाही जानो ॥ ३१ ॥ हमज़ा हमरा है

मीठी१ हाथी२ पुराकरो३ नीतसहित४परलोक५ बैरी६ बड़ाई७ सिमरन८ दयादान९ कंगाल१० बुरियाई११ पीठपीछे१२ चुगली१३ बचाउ१४ होट१५ ईश्वर१६ कलेँश१७कान१८मति१९प्यार२० अवाज२१ एकके२२ आकाशवानी२३ रक्षक२४ ईश्वरकीआज्ञा२५ डतरे२६बढ़कर२७ मनुष्य२८ निकटवरती२९ ईश्वर३० प्यारा३१ सुकर्म३२ नहींकुछसेवाईश्वरके३३ सबभांतसे३४

कुछ नाहीं है उसका जो सबकेमाहीं। मेरातेरा ये दुख दाई विन समझे सुख कबहुं न पाई ॥ ३२ ॥ ये याद इबतदा१ कीजै। क़तरा२ आव३ ये हां सुन लीजै। आखिर कारइंत-हा४ आई। बिनायाद दुरु५ आवई गवांई ॥ ३३ ॥ बड़ीये यही याद है दिलमें। तेरा नाम है आबो७ गिलटमें बिन्द्रावन जो पड़ै अलफ बे खालकर८ उसको रहम१० अतादे ॥

शब्द—होली ॥

होली आई मोको भाई राम दोहाई पिया मिले हैं। मनो कामना पूरन होई सांई जीसे जी मिल हैं ॥ हसहूं खेलहूं करहूं ठठोली बालम पिआरे जीमिल हैं ॥ दरसन से भरम मै नहीं मुझको सतगुर रामजी पूरन मिलेहैं। बिन्द्रावन बलि हारी पिआ की आपसे आप आपी मिल हैं ॥

होली।

बिन्द्रावन ऐसी होरी खेल जासे होवे पिया संग पुरामेल ॥

टेक—लगन लगी जैसे तिबा तेल सुरत शब्द मिल करत केल ॥ १ ॥ अस मिल होय दोनो एक रंग येही राह रहे सदासंग ॥ २॥ लख जोजन सुख इन्द्रसे बढ़के कामधेन कलप-वृक्षसे बढ़के। चिन्ता मण से अधिक अमोला सांच बचन बिन्द्रावन बोला ॥ ३ ॥

शब्द—रागकाफी ॥

सतगुर राम कहो मेरे प्यारे रहो सबमें और सबसे न्यारे। पाप कटै भर्म दोख मिटै उतरै सिरसे भारे ॥ होय सुनो जस फूल सोहावन हो जन जन के दुलारे। आनन्द बूंद अमीरस बरसै देखो नयन उघारे ॥ बिन्द्रावन जो सतगुर प्यारे सतगुर राम अधारे ॥

पहली१ बून्द२ पानी३ अन्त४ मोती५ झलक६ पानी० माटी८ ईश्वर९ दयाकरे१०

शब्द—सत गुर राम जपै मेरा जीया ॥

टेक—बलिहारी बलिजांउ चरण पर जिन यह परगट कीआ। सतगुर मेरे सबबिध पूरण नीकी दान दिया ॥ तन मन धन गुरही पर वारों प्रभु रस प्रेम पिया। बिन्द्राबन गुर चरण जो छाड़ा अट लन नाम लिआ ॥ शब्द

मुझको कहां कहां ढूंढै मैंतो तेरे पासहूं। ना बैकुंठ धाम है मेराना वासी कैलास हूं ॥ ब्रह्म लोक तेही बिलगा सबमें मिला पास हूं। जो देखा वोही देखा पूरण ज्यों आकाश हूं। बिन्द्राबन बिचार कहै उसीका मैं खास हूं ॥

शब्द—हिंडोला ॥

हिंडोला झूलै सतगुर राम प्रेम की डोरी प्रीतसो बटके लटकाई निज धाम ॥ १ ॥ अनहद नादकी पेंग बढ़त है लख लख गावत नाम साधसंग अस झूला झूखै होवे पूरण काम बरखा रित झनकार शब्दकी बिन्द्राबन कहां धाम ॥

शब्द—हिंडोला ॥

हिंडोला झूलत लेत नई नई तान। गावत संत मिल्ल साधिक साध होत निर बान ॥ १ ॥ तान तना नन झन झन झन कत सुन सुन पुलकत प्रान ॥ २ ॥ सब उजिआरा गगन उजिआरा उदै चन्द्र और भान ३ ॥ बिन्द्राबन लख रूप अपारा लाभ रहा गई ज्ञान ॥ ४ ॥

शब्द—प्यारे मन ढूंढ़ सांई अपना ॥

टेक—जाग्रत जगत माया कंचन धनये सब है खपना ॥ १ नेती धोती क्रिया पूजा पंच अगिन में तपना ॥ २ ॥ चलत फिरत करत तीरथ व्रत अंत माटीमें खपना ॥ ३ ॥ ढूंढ़त फिरत फेर नहिं पाया सीधा रस्ता अपना ॥ ४ ॥ जुबा गई और वृद्ध भयेा है अंग अंग भयेा कपना। अबहूं चेत मत फिरै बावरे घट अपने को मथना ॥ ५ ॥ गुर कृपा बिन्द्राबन पाया अलख अलख लख जपना ॥

रेखता—समझलेा बूझलेा प्यारे रहोनहिं नाम मे न्यारे ॥

टेक—भरोसा देह मत राखेा अमीरस नाम का चाखेा ॥ सनेही शब्द सुरत कीजै प्याला प्रेम का पीजै। भजनबिन बहुत पछतावेा बिते दिन फेर ना पावेा। न मानेागे मेरा कहना यह जानेा नित्त दुख सहना। ज्यौंगागर जलभरी फूटै पात जिवडारसे टूटै। नहेा वैसाकि था जैसा भरमआवैछूटा कैसा। इसीसे मैंकहेां तुझ से। यह सुन बानी भली मुझसे ॥ अभी सेाचात भी सेाचा। गहेा सत नाम दुख मेाचा। समझ में आगया मेरे सुनाया दूर है नेरे। यह सतगुररामबिंद्रा-बन करै है नित्तहरि दरसन ॥ ५ ॥

शब्द—मेरामन मुझै नचाय रहा। जीअनेाखी धूम उठाय रहा ॥

टेक—मेरे मनाए मानत नाहीं। नाहक्क को बिषखाइ रहा। कहना किसी का सुनता नाहीं। अपनीहीं ये गाय रहा। समझाया यह समझै नाहीं। गुजरी उमर पछताय रहा। चाहै है सेा होता नाहीं। अन्तको हार खजाय रहा। हां सन्तोष की धारन करले। भूखाभी अघाय रहा। ज्ञानी बूझ बिचार से भाई सब दुख सहजै ढायरहा। सतगुर राम सनेही प्यारा सन्त मरोवर नहाय रहा। बिन्द्राबन यह अकथ कथा है आगि से जल बरसाय रहा ॥

भक्ति ज्ञान सम्वाद ॥

दोहा ॥

भक्ति बिहून जो पुरुष हैं प्रेम स्वाद नहिं पाहिं।
बिना प्रेम रीझैं नहीं जहं के तहं रहि जाहिं ॥

चौपाई ॥

भगती कहै सुनो जी ज्ञाना। तुम छाड़ो अब अपनी बाना ॥
बिन भगती सब डूबै जाई। कहना मान मेरा तू भाई ॥
सन्त वेद भगती को गाया। बिन भक्ति जावे नहिं माया ॥
नाम भेद तुम चीन्हा नाहीं। सत्य सरूप बसैं जा माँहीं ॥

भगती कर बैकुंठ सिधारो । तो तुमको मिलहै सुखभारो ॥
अलख अगमके पार ठिकाना । सबसे ऊपर हमरा थाना ॥
अद्वैत ज्ञान है काल सरूपा । भगती करै रंक को भूपा ॥
अहंब्रह्मकहि अहंकारी हूये । भक्तिज्ञान सब दिये बिगोये ॥
ज्ञान किया पर लोक अभाऊ । भगती सत्य लोक पहुंचाऊ ॥
प्रकृत मंडलसे परे लखाया । सो बैकुंठ है सत्य अमाया ॥
ब्रह्म लोक और गो लोका । यह माया रचि दीनो धोका ॥
जो मायाइन लोकों माहीं । सहज बैकुंठ ताकी गम नाहीं ॥
सत्य पुरष का जहां निवासा । भगती वहां करावै बसा ॥
लोक माहिंजिवथिरता लावै । पुरष दरस कर आनन्द पावै ॥
असंख सूरज अरबांउजियारा । हीरा लाल जड़े दरवारा ॥
देवन को वहां सभा सोहावै । देख देख चित बहु हरखावै ॥
महा संख जोजन बिस्तारा । एक पलकमें सभी निहारा ॥
भगती के गुण ये हैं भाई । विरोधी ऊपर क्रोध न लाई ॥
आपन माने दासन दासा । मित्रतक तुल्य करै जोवासा ॥
हरि अज्ञामेंरहै दिनराती । उलंघत पाय हरखनहिं मांती ॥
दरसन जिनके मांगै देवा । भगती का है अमकर भेवा ॥
पांच इन्द्रीको बसमें राखै । नाम रसायन निस दिन चाखै ॥
कामआदिकभगतीसेजावें । बिनइन गये मुक्त कस पावें ॥
कामअपरबलसबकोभूरा । रिखमुनिशिवआदिककियेधूरा ॥
जहांतकब्रह्मज्ञानतुमगाई । वहां तक पहुंच काल अन्याई ॥

दोहा ॥

हरगुर की भगती बिना रंचक भी सुख नाहि ।
बिन्द्राबन बड़भाग जिस मोगुर भक्ति कमाहि ॥
सुन्दर रूप जो आपना भगती कियो बखान ।
मोह आसकी काटलख ज्ञान निरबिरती ठान ॥

चौपाई ॥

बोले ज्ञान सुनो जी दासी । तुम सेवत जिवमुक्ति निवासी ॥

कर्म दास जो तुमरे भाई । तुम दोनों हो जीव सहाई ॥
मोटे पाप कर्म से जाई । झीने कोलो तुम धर खाई ॥
निषकाम कर्म पुनभगती दोऊ । मनकी मल चंचलता खोऊ ॥
पीछे जीव ज्ञान हो पावे । रूप अपन में थिर हो जावे ॥
दूसर रूप सकाम जो होई । ताका फल तुम सुन लो लोई ॥
तासे जीव परभुता पाई । जगके मांहि राज मिलजाई ॥
और अनेक न सुख बड़पावे । बिषय भोगमें निसदिन धावे ॥
बहुत हुआ बैकुंठै पाया । भोग भाग चौरासी धाया ॥
सुरग बैकुंठ और सबलोका । सम्पत स्वपन अन्त है धोका ॥

दोहा ॥

दास दासी का काम सो तुमसिर पर धरतहो ।
यामें संसय नाहिं जीव मुद्ध तुम करत हो ॥
भक्ति सकाम जो रूप तुम बिषय हेत सुखदेत ।
यह तो मुक्ती है नहीं फेर फार जग लेत ॥

चौपाई ॥

अब तुम सुनो हमारी बाता । माया लागै तुमरी माता ॥
जोजो जीव चलै तुम राही । उनके माया गले लगाई ॥
ब्रह्म अकर्त्ता सबसे न्यारा । सो है देस प्रदेस हमारा ॥
जिनके है नहीं ज्ञान सुभाऊ । उनको आवागवन सोहाऊ ॥
निरगुन भगतीका फल ज्ञाना । असभगती कोइबिरलै जाना ॥
भगत्य निष्काम भांतदोमानो । निरगुणसरगुणसोतुमजानो ॥
निरगुणभक्तिउपासजो माना । याका निरगुण नाम कहाना ॥
निरगुणउपासकाभेदबताऊं । ताकी दासी माया जताऊं ॥
निरगुणउपासकी भगतीजोई । ताकाफल निश्चलता होई ॥
सरगुन रूप उपास की सेवा । सो भगती देलोक कीमेवा ॥
नामभेदतुमकुछ नहिंचीन्हा । सत्यसरूप बोधनहिंलीन्हा ॥
सत्यविचारजिन पायानामा । सत्य पुरष है उनका धामा ॥
सत्य कहों मैं उसको भाई । ना वह जन्मै ना मरजाई ॥

सोचे तनहीं सत्य कहाया। ताको ज्ञानी सहजै पाया॥
रूप वरन से है वह न्यारा। भर्म रूप माया विस्तारा॥
यासे निरगुण नाम पुकारा। केवल है आनन्द की धारा॥
सुखप्न में सबहीं सुख पावै। जब मन नहीं कहीं को धावै॥
तुम बैकुंठ का रूप बखाना। मन विषई का छुआ पयाना॥
सोई मन भोगैगा लोका। भोग भाग फिरखावै धोका॥
लोक भोगहां उत्तम भाई। पर यह विषई मनन नसाई॥

दोहा॥

जबलग मन यह बना है तबलग फन्द न जाय।
निज सरूप नहि पावहीं बिन्द्राबन कहि गाय॥
भोग अवस्था के विषय दुख सुख दोनो जान।
जहां द्वैतका लेश है निरमल सुख नहिं मान॥

चौपाई॥

मनके बिना भोग नहिं भाई। मन जब नहीं भोग खोजाई॥
भोग गये सुख निरमल पाया। सत्य सरूप इसी को गाया॥
रोचकबचनबहुत कहिगाया। जामें जीव रहे उरझाया॥
भयानक कहिके भय उपजावा। सत्य बचनका लेश न पावा॥
मनसे कल्पदेश बहु कहिया। जाकी आसजीव उरझैया॥
पढ़पढ़ बचनमगन जीवहोवै। कल्पितसुखबसजनमखोवै॥
नाकोइ जाय आपही देखा। सेवक को समझावैं लेखा॥
सिखअबपच्छत्यागनहिकरई। होय क्रोधी सब से लड़ई॥
नाक कटाय मिलै हैं रामा। अब उनरहायेही सुखकामा॥
मूरख भेद वेद नहिं जाना। जासे कुछकाकुछ लियामाना॥

दोहा॥

जब मन विषियो सेवचे और एकागर होय।
बिन्द्राबन जब लख परै दुबिधा रहै न कोय॥
मन अस्थिर के कारने अनहद शब्द लखाय।
याकर मनथिर होय है अंगमलीन नसाया॥

देखो जाय अक्षरावती तामें कहा कबीर।
सत्तलोक बिन रूप है माया का नहिसीर॥
रूप न रेख न रंग कुछ त्रिगुन तें प्रभु भिन्न।
गुरनानक की साख है जिन दूर किया है चिन्न॥
देखो गीता के विषय पुरष अव्यक्त कहाय।
व्यक्त वान सब भर्म है ताको देव वहाय॥

चौपाई॥

ज्ञानी गुर जाको मिल जावै। उनकी ताप सभीमिटजावै॥
बिषई गुरू रूप को थापैं। जाका सिष कभी नहिधापैं॥
सरगुन भगती का जो भेदा। बिनगुरज्ञानीहोय न छेदा॥
हेहासो सुन्दर तुम होई। यामें संसय नाहीं कोई॥
जीव सिंगार तुमी से होई। ज्ञान बिबेक तुमपै नहीं लोई॥
रज तम सत ये माया रूपा। तम सरूप लै डारै कूपा॥
रजकरजीव बिषयसुखपावै। पुत सतोगुण लोक पठ्ठंचावै॥

दोहा॥

करनी का फल भोग कर फरत लोक पुनि आय।
यासे देखो जीवको आवागवन न जाय॥
कर भगती निषकाम तू जो जिव होवे शुद्ध।
उनको सत्य प्रापती जोतज गये मन और बुद्ध॥

चौपाई॥

अस जीव रूप अपन पौपाया। भरम नास रहबै नहिं आया॥
जन्म मरन का बीजन साना। द्वैत अभाव अद्वैत रहाना॥
असकह्यौतुलसींदासगुसाईं। पराधीन सुपन्यौ सुख नाईं॥
जबलग सरगुन भक्ति रहाई। तबलग आसडोर गलमाही॥
आसा छोड़ निरासा रहिया। आवन जान सभीमिटगयया॥
गुर सेवा बड़ भाड़ी पावे। पाप मैल सबही कटजावे॥
शब्द ध्यान सुमिरनजो करई। निश्चलताका सुखचितधरई॥
थिरता पाय आस भई दूरा। आपन रूप लखा जब पूरा॥

दोहा

अंध पिंगुल का न्याइ है बूझै पुरष सुजान।
बिनाज्ञान संतुष्ट नहीं बिन्द्राबन सतमान॥

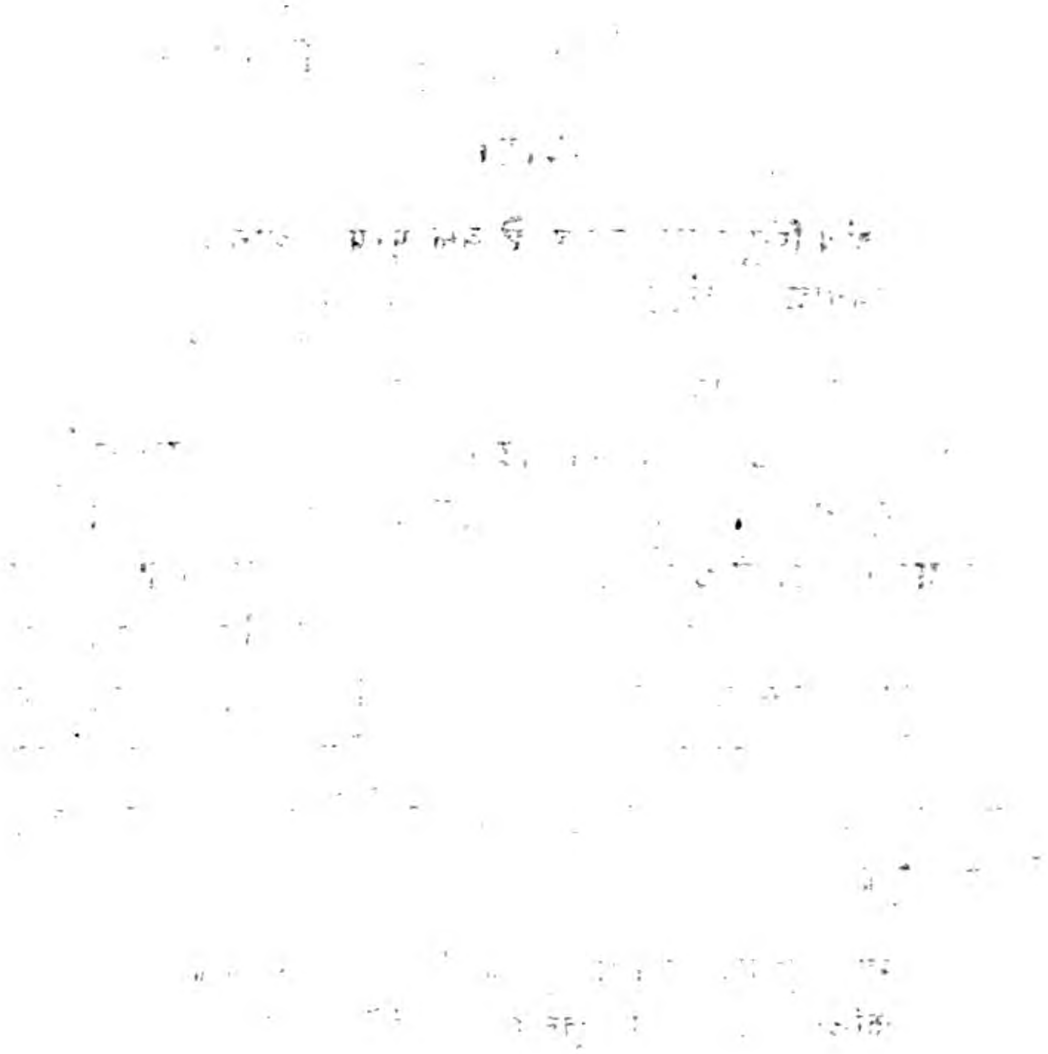
शब्द—सब तो कही ऐसी क्यो न कही॥

टेक—अट पट बाटा औघट घाटा धारा अगम बही। बूढ़त रहूं दया निधि स्वामी झपटि कै बांह गही॥ १॥ गुर क्रपाल दया बड़ कीन्ही उन को असही चहीं॥ मैं मत हीन भर्म सो रचिया नख सिख भूल रही॥ २॥ पांच बिहार निहार शब्द सुन अलख लखत हौं सही। दोख भर्म जंजाल बिनासाये कहियेकअही॥ ३॥ स्वामी मिलन जगजाल छनन जिनके हैं आस येही। बिन्द्राबन परभू नेरे देखावत फूलन पंथ लही॥

भाग दूसरा तमाम गुलाबबड़ी इसका नाम॥
कांटेसे बचनाहै काम चुनोफूल नहिंहोती साम॥

द्वितीय भाग समाप्त:

इति



१ ओं सतिगुर प्रसाद ॥ * ॥

वाह गुरु सतिगुरु राम अनाद ॥ * ॥

सत्य नाम सत्य गुरु समरथ दीनदयाल ॥

अथ तीसरा भाग ॥

ग्रिन्थ विहार बिन्द्रावन सांत वेद का ॥

ग्रिन्थ कर्त्ता का सिद्धांत उन बिरोधों के बिषय में जो शास्त्र और अन्य मतों में बर्तमान हैं और सत्संग के गुण और काम क्रोध लोभ मोह अहंकार के अवगुण और दया धर्म शील सन्तोष उदारता वैराग्य आदि के लाभ ॥ * ॥

जोकि बहुधा मतों का सिद्धांत ऊपर के प्रश्नोत्तरों से बिदित होता है परंतु सच्चू को यह संदेह और दुबिधा खड़ी होगी कि कौन सिद्धांत उत्तम और सत्य है कि जिसके सिद्ध करने में उद्योग करूं सब अपनी २ कहते हैं कोई कर्म को दृढ़ाता है कोई उपासना को कोई ज्ञान को कोई योग को कोई जगत् को सत्य कहता है कोई असत्य कहता है कोई ईश्वर को मानता है कोई ईश्वर का अभाव करता है ॥

दोहा ॥

अस बिबाद को देख कर मन में संशय होय ।
बिन्द्रावन इस जाल से बिरला बाचे कोय ॥

तथा

सब अपने सिद्धांत को सही कहत हैं सार।
बिन्द्रा बन वह ओर को भूला जाने वार॥

कोई यत्न अपने आधीन कहता है कोई ईश्वर के कोई दोनो के आधीन कहता है कोई प्रारब्ध को कोई यत्न को मुख्य कहता है इसके विशेष एकही मत वाला दस प्रकार के बचन कहता है॥

एक स्थान पर जगत् और ईश्वर की सत्यता दिखाता है दूसरे स्थान पर असत्य कह देता है कहीं जपतप पूजा कर्म तीर्थ व्रतमूर्तियो की पूजा नाम का स्मरण ठहरता है कहीं इन सबका अनिश्चय कराता है परस्पर में शास्त्रों का विवाद दीखता है यही दशा पुराणों की भी है और फिर सब वेद को प्रमाण अर्थात् साखी करके अपने कहने को अर्थात् सिद्धांत को निश्चय कराते है कोई किसी देवता की महिमा करता है किसी दूसरे की निन्दा करता है। विष्णु पुराण में विष्णु की महिमा की है। शिव पुराण में शिवजी की महिमा है और देवी पुराण में देवी को मुख्य कहा है सूरज पुराण में सूरज को सबसे बड़ा बताया है गणेशपुराण में गणेश जीको सब से बड़ा अधिकार कहा है॥

दोहा॥

पंच देव की मुख्यता पुराणो माह दिखाहि।
बिन्द्राबन जो जहि भजे बड़ा कहतहे ताहि॥

पंच देव उपासिक बिवाद॥

विष्णु उपासिक कहे हैं कि विष्णु आदि करता है और सब देव उनके दास हैं शिव आदि देव की बारम्बार रचा की है। और कैसे है सतोगुण स्वरूप हैं॥ जिनके दर्शन ही से तन मन सीतल होजाय और मोक्षके दाता हैं। शक्ति जिनकी स्त्री है और शिव सदा है जिनके दर्शनही से कलेस

हो वैसापौं और खोपड़ियों की तो माला पहने हैं ॥ सैवी कहै हैं कि शिव आदि करता है और समदरसी है उनको ही यह सामर्थ है जो फूलों और सांपोंको समान समझैं हैं और विष्णु की बारम्बार सहायता की है और शिव कल्यान रूप हैं बिना उनकी कृपा किसी का कल्याण नहीं होसक्ता और विष्णु तो इस्त्री समान हैं रूप बनाना इस्त्रियों का काम है शाक्ति कहै हैं कि बिना शक्ति देह असंगल होती है सो शक्ति ने इन सब देवों को अपनी शक्ति दीहै जब यह देव कारज करने जोग हुए। गणेस उपासिक कहैं है कि सबसे पहिले गणेश जी मनाए जाते हैं बिना उनके कोई कारज सिद्ध नहीं होता। सो गणेश आदि देव हैं। सूरज उपासिक कहैं हैं कि बिना प्रकास किसी से कोई कारज नहीं होता सो सूरज के प्रकास तें सब कारज करने जोग हुए हैं सो सूरज देव सबसे बड़े हैं। अब कोई इन पांचोंको उड़ा देता है वह ईश्वर को निरगुण कहता है तातपर्ज यह है कि ऐसे ऐसे संदेह और चिन्ता बहुधा मनुष्यों को सताते हैं। किंतु सत्संग और परमारथ से रहित करदेते हैं परंतु ऐसे संदेह चितमें लाके प्रमारथ न करना या दूसरोंकी निन्दा करना अपनी अलपग्यता से हैं जो मनुष्य बाणी के भेद और अपने अधिकार से बिदित हो और बाद का पक्छ छोड़दे तो एक संदेह भी पास न फटकै और सब अच्छै दीखैं ॥

दोहा ॥

जिस के चितसे उठगयो संसे रूपी रोग।
बिन्द्राबन आनन्द भयो सहजे पूरण जोग ॥
यह दसा तब होयगी निश्चय मानो बेन।
बिन्द्राबन पछपातकी जातरहे जब कहेन ॥

जोअपने अधिकार को समझलेहु तुम मीत ।
तबज्ञानी और देवकी मिलेसुगम तोहिरीत ॥
निन्दा अस्तुति त्यागके खोजकरे दृढसंग ।
बिन्द्राबन सो पद लखे जाके सांचा रंग ॥

अब एक मोटा और प्रसिद्ध दृष्टांत सुनिये कि एक मनुष्य के चार लड़के हैं चारोंकी अवस्था बुद्धिरुचि चालचलन और देह में परसपर अंतर है और पिता को अभिष्ट यह है कि चारों जीवका करैं घर सभालै नेक चलन होंं और प्रसन्न रहैं और दूसरों को प्रसन्न रक्खैं अब जो पिता एक ही सी सबको सीख करता है तो काम नहीं चलता क्योंकि सबकी अवस्था और बुद्धमें अन्त है। अब उसको जोग हुआ कि हर एक को उसकी जोगता के सदृश प्रथक २ शिक्षा करै जो लड़का सबसे बड़ा पढ़ा लिखा होशियार है उसकी अवस्था २५ वर्ष की है आरोग है और बिवाह आदि होगया है उसको अब पिता नौकरी की सिक्षा करता है और नौकरी की रीति और उसके लाभों को भी बतलाता है जो वह लड़का सौदागरी जिमीदारी अदि के सुखों की प्रशंसा करता है तो उसका पिता उसमें बहुत से दूषण देता है हानि दिखलाता है और नौकरी को सब प्रकार उपकारी बतलाता है कि देखो नौकरी में प्रतिष्टा बड़ी है १० दस रुपए के सुमह्रीकी प्रतिष्टा लख पतीसे अधिक होती है दो तीन पहर नौकरी की फिर छुट्टी है प्रतिष्टा वान लोगों का सतसंग प्राप्त होता है और बुद्धि की वृद्धि होती रहती है हुकूमत होती है और नाम प्रकाशित होता है और हजारों का काम निकलता है। बड़ी आवा गच्छ होती रहती है और सौदागरी आदि में क्या है खैर पेट भरलेना है न विद्या प्राप्त होती है और न कुछ ऐसी प्रतिष्टा है घर २ फिरना पड़ता है और असामी डूब जाती

है दिन रात लेने देनेका संदेह रहता है मिथ्या बहुत बोलनापड़ताहै। जोकि लड़का पढ़ने लिखनेमेंसदासे रहाथा इस्से उसको पिताकी सिखावनसे नौकरीही करना अच्छा मालूम हुआ॥ तब खोज में चल खड़ा हुआ नौकरी पाई उसका प्रयोजन सिद्ध हुआ। दूसरा लड़का जिसकी अवस्था २० बर्ष की है और कुछ थोड़ा बहुत पढ़ा है उसकी बुद्ध भी बहुत अच्छी नहीं है रोगीसा भी बना रहता है बारतालाभ करने में भी अभ्यास समानि है। उस लड़के को पिता सौदागरी और दूकानदारी की शिक्षा करता है जो लड़का नौकरी करने को कहता है तो पिता नौकरी में हजारों अवगुण दिखला कर कहता है कि नौकरी गुलामी है प्रति समय हाकिमका भय रहता है देश घर छूट जाता है अन्यों के साथ काम पड़ता है। सब संदेह अपने ऊपर आते हैं और गिनी कौड़ियां हाथ आती हैं नौकरी में कोई सुख नहीं। कहावत है (पराधीन सुपनेउ सुख नाहीं) और सौदागरी में यह सब बातें प्रापत होती हैं घरकी बादशाहत है किसी का हुक्म सहना नहीं पड़ता है। रोटी करी कराई मिलती है रात को घर में सोना मिलता है समय पर जोर रहता है जब चाहा काम किया जब चहा न काम किया कुछ बहुत सी विद्या नहीं चाहिये और देखो ऐसे काम वाले कैसे प्रसन्न हैं बड़े २ मकान तैयार कराते हैं हजारों रुपये पास होते हैं किसीके आधीन नहीं रहते। लड़के ने अपनी दसा देखकर और पिता की शिक्षा सुनकर नौकरी से हाथ उठाया सौदागरी करने लगा पिता पुत्र दोनों का अभीष्ट सिद्ध हुआ तीसरे लड़के की अवस्था १२ बर्ष की है उसको विद्या सीखने के वास्ते शिक्षा करता है और विद्या के लाभों को सुनाकर कहता है कि जो लिखे पढ़े हैं वह घोड़े पर चढ़ते हैं और ऐश

करते हैं और खेल कूद के नुक़सान दिखा कर कहता है कि जो खेल में रहते हैं वह दुरजन होजाते हैं रोटी खाने को नहीं मिलती मदरसे जाने का अनुराग कराता है जहूतर पर भय दिखलाकर कहता है कि निकाल दूंगा और तुझको खाने को न दूंगा रातभर कोठरी में बन्द रक्खूंगा जो कहने से नहीं समझता तो मारता भी है और किसी अस्थान पर दम दिलासा भी देने लगता है प्यार भी करता है और खेल भी खिलाता है जो लड़का घरसे बाहर जाने में डरता है तो उसको ढाढ़स बन्धाता है। और कहता है कि बाहर जाने बिना विद्या कैसे आवेगी और घरके रहने से लड़के बिगड़ भी जाते हैं और दूसरें लड़के तेरा नाम डरपोकना रख देंगे और बाहर जाने में तो बड़ी सैरें दीखने में आती है। और देख तुझसे भी छोटे छोटे लड़के दिन रात फिरा करते हैं अब देख लीजिये कि इस लड़के से नौकरी और सौदागरी का कुछ हानि लाभ वरणन नहीं करता और जिसबात से प्रयोजन है उसीकी बहुत सी प्रशंसा करता है। अब चौथा लड़का ५ बर्ष की अवस्था का है इस लड़के के लिये पिता खेलका सामान बनाया करता है। लाड़ प्यार से खिला पिला के उसके साथ हंसा करता है उसकी बेअदबियों को लाड़ समझता है। और रात दिन उससे झूठी २ बातें किया करता है। और जो वस्तु वास्तव में भी नहीं है उसके होने का भी करार कर देता है जो लड़का बाहर जाने को करता है तो उसको बाहर जाने से निषेध करता है। और कहता है कि बाहर जाना अच्छा नहीं होता चोर पकड़ लेजायगा और जो कोई चाहेगा वह तुझे मार लेगा बाहर कभी मत जाइयो घरसे बाहर पांव रखना बहुत बुरा है भय के मारे लड़का बाहर नहीं जाता घरमें खेलता है लड़के को भी

अच्छा औ पिता भी राजी इस लड़के से लिखने पढ़ने को नहीं कहता नौकरी सौदागरी और विद्या के लाभ नहीं सुनाता। अब जरा ध्यान करने का अस्थान है कि पिता की पृथक् २ सीख जोग है या नहीं प्रकट है कि बज़ुत ठीक है इस निमित्त कि चारों लड़कों का काम बनता है और देखिये कि इस मनुष्य ने प्रथम नौकरी की प्रशंसा करी। और दुकानदारी की निंदा और दूसरे अस्थान पर नौकरी की निंदा और सौदागरी के लाभ एक और अस्थान पर बाहर जाने के लाभ और घर रहने में हानि और एक अस्थान पर घर रहने में लाभ और बाहर जाने में हानि कहो। बाजी २ बातें सत्य कहीं और बाजी भयंकरी और कितनी लालच की। किसी अस्थान पर अच्छी बात को बुरी कहा और बुरी को अच्छी कहा परंतु कोई उस मनुष्य को अपराधी और झूंठा नहीं कहता है किंतु बुद्धिमान कहलाता है अब जो लड़के पिता को साखी कर २ अपनी २ बातको सिद्ध करैं। और एक दूसरे को परस्पर में खण्डन करैं तो उपाधि के सिवाय और क्या लाभ होगा और समझने वाला इन लड़कों को अज्ञानी ही समझैगा अब देखिये कि जिस लड़के को बाहर जाने के वास्ते निखेद किया है अब उसको कुछ दिन बीते बाहर जाने की शिक्षा देकर घर में रहना बुरा कहेगा अब जो लड़का लड़कपनमें घर में रहेगा वह निस्संदेह प्रसन्नरहेगा और अवस्थाके पहुंचनेपर आपबाहर जाइगा। और बाहरके लाभमालूम करैगा और जो पिताके कहने पर लड़कपनमें अमल करैगा और बाहर जानेमें कोई लाभ भी होगा तो फिर अक्लको खराबही होगा परंतु जब एक बात में पक्का होय जायगा तो दूसरे में आप लगजायगा और लाभ भी प्राप्त करैगा। बाहर भी जायगा और सौदागरी नौकरी भी करैगा और लड़कपन में घरमें रखने

से पिता का भी येही अभिप्राय है कि अन्तको नौकरी ही करैं और देखो बाजें। को किस प्रकार समझाना पड़ता है को किसी राजा का लड़का था वह कुछ भी नहीं पढ़ता था और कबूतर खेलने का सौक रखता था बहुत से उस्ताद नियत हुए परंतु किसी से न पढ़ा राजा ने हार के पढ़ाना छोड़ दिया इतने में एक मनुष्य ने आकर कहा कि मैं पढ़ाऊंगा खैर उसको नौकर रक्खा उस मनुष ने प्रथम राजा के लड़के से असनेह उत्पन्न किया और जो सो कबूतर थे तौ सौ और मोल लेकर रखवाये और आप भी उसके साथ मिलकर कबूतर उड़ाया करै और यह मनुष राजाके लड़केसे आज्ञा किया करै कि फलाना कबूतर ला कभी २ वह और का और ले आया करै अब उसताद ने कहा कि देखजबतक कबूतरोंके नाम न रक्खेजांयगे औरतुमको ठीक २ पहचान न होगी तबतक पक्के कबूतर बाज न कहलाओगे राजाकेलड़केने कहासत है उस्तादनेअक्षर आ, ई, ऊ, आदि कबूतरों के नाम रक्खे और उस लड़केको यह अक्षर याद करवाए परंतु अबभी खूब पहचान नहीं है बहुधा पहचानने में भूल जाता था अब वह आप उस्ताद से कहने लगा। कि मुझे इस प्रकारसे हरएक कबूतर का नामयाद नहीं रहता उस्ताद ने कहा कि अक्षरों का लिखना सीखलो फिर सब कबूतरों पर अक्षरों का चिन्ह कर दिया जायगा तुम सुगमता से पहचान लिया करोगे अबलड़केको अक्षर लिखनेका शौक उत्पन्नहुआ अब वह लड़का लिखता भी है और पढ़ताभी है इसी प्रकार उसको लिखना पड़ना आनेलगा थोड़े समय में कबूतरबाजी तो छोड़दी और विद्या संपादन करनेलगा। देखिये किस जतन से पढ़ाया और जो लोभ दिखाया था उसकीसिद्धता से उस्तादका प्रयोजन नथा परंतु उसके छुड़ाने में अर्थ था इसी प्रकार इस जगत में भी बहुतसे ऐसे जीव हैं

कि किसी प्रकार परमारथमें नहीं लगतेउनको इसी प्रकार जब शिक्षा होइ तो परमारथ की इच्छा उत्पन्न होतीहै और देखो एकही बीमारी प्रबैद दस रोगीयों को प्रथक् २ औखधी बताता है वह गुणकारी होती है जो एकही औखधि बतादे तो सबको अवगुणकारी है। जो रोगी परस्पर में लड़ैं कि मेरी औखधी अच्छी है और तेरी बुरी है तो क्या लाभ है एक रोगी को दो पैसेका सुमखा लिखा और एकको दो रुपये का एकको खिचड़ी खाने को बताई और दूसरे को निखेध किया एक को रोटी बताई और दूसरे को दाल बताई। अब देख लीजिये कि जैसा रोगी वैसी औखधी और वैसाही खाना और वैसाही पथ अब जो रोगी अपनी २ औषधी करै और बैदके कहनेके अनुसार और औषधी खांय तो आराम होना संभव है। जिस रोगी को रोटी खाना निखेध किया था जब उसका रोग दूर होगा तब बैद आप रोटी खानेको बतावेगा किंतु खिचड़ी खानेको अवगुण कहैगा और यह भी बात है कि जब रोगीका रोग दूर होजायगा वह आप रोटीकी इच्छा करैगा कुछ किसी के बताने की अवश्यकता न होगी परंतु जब तक उसके रोग बना हुआ है तब तक जो कोई रोटी खानेको कहै उसे शत्रु जानिये। खीर खाना अच्छा है परंतु निरोग को तलवार चलाना उसको जोग है जिसको चलाने की जुगत आती है और जिस मनुष्य ने कभी लकड़ी नहीं फेंकी जो वह तलवार चलावे तो एक दिन अपनाही गला काट मरेगा। अब जो मनुष्य इन दृष्टांतोंको अच्छे प्रकार समझलेगा उसको कोई संदेह परमारथ के सिद्ध करने में न उत्पन्न होगा समझैगा कि वेद सास्त्र महातमाओं का कहना अधिकारी प्रति है। रोंचक ब्यानक जथार्थ तीन प्रकार की बानी है देखो भागवत में श्रीकृष्ण महाराज ने आप करम उपासना को कितना दृढ़ किया है।

और कितनी महिमा की है जिसका अंत नहीं और कहीं कहीं ज्ञान के बचन भी कहे हैं जब ऊद्धव जी सब धरम सुन चुके तब पूछा कि महाराज सबसे उत्तम श्रेष्ट मत कौनसा है तब महाराज ने कहा ॥

एकादशका—श्लोक ॥

अयंहिसर्वकल्यानां सधीचीनोमतोमम् ॥
मद्भावस्सर्वभूतेषु मनोबाक्कायवृत्तिभिः ॥ १ ॥

इसका अर्थ यह है कि सब मतों में बड़ा मत यह है कि मन बाणी काया करके सर्व भूतों में मुझको व्यापक देखै फिर ऊधौ जीने कहा कि महाराज आपने कहीं देह कर्म स्वरग नरक को सत्त कहा है और कहीं असत्यसा कहा है फिर महाराज ने कहा ॥

एकादश का—श्लोक ॥

छायाप्रत्याह्वयाभासा ह्यसतोप्यर्थकारिणः ॥
एवंदेहादयोभावा पच्छनत्याऽमृत्युतोभयं ॥ २ ॥

इसका अर्थयह है कि जैसे छाया और कुएं और गुम्मज का सब्द झूठा होता है परंतु उससे कारज निकलता है इसी प्रकार देह भी असत्य है परंतु स्वर्ग आदि के निमित्त कारज निकलता है महाराज ने बर्णन किया है ॥

श्लोक ॥

परोक्षवादोबेदोयं बालानामनुशासनं ॥
कर्ममोक्षायकर्माणी बिद्धितेह्यगदंयथा ॥ ३ ॥

इसका अर्थ यह है कि जैसे बालक को लालच दिखाया जाता है ऐसेही करम छुड़ाने के लिये कर्म कराये जाते हैं जैसे रोग दूर करने के लिये औषधी दी जाती है और कुछ फल नहीं और जो किसी शास्त्र महात्मा की बाणी में दूसरे की निन्दा है वह वास्तव में निन्दा नहीं है परंतु अधिकारी की दृढ़ता के लिये ऐसी कही है और जब

करम की महिमा की है तो करमही को बज़त बड़ा दिखाया है जो बड़ा न दिखावें तो करम में रुचि नहो इसी प्रकार उपासना आदि के विषय में समझना चाहिये और जो अपने २ इष्ट और देवता को बड़ा ठहराते हैं यह भी उसी प्रकार सत्य है। देखो जिस समय काम पैरों से निकलता है तो पैरों ही की प्रशंसा होती है नाक कान आंख वाणी यद्यपि पैरों से ऊपर हैं अधिक प्रयोजन के भी हैं परंतु इनकी प्रसंसा नहीं करता यद्यपि आंख नाक कान को फोड़ नहीं डालता परंतु दूसरे के समझाने को पैर की प्रसंसा में आंख नाक कान की तुछता कर जाता है उसका अभिप्राय यह होता है कि एक और का निश्चय पूरा होजाय और निन्दा करने से एक यह भी दूसरा प्रयोजन निकलता है कि जब कोई अपने इष्ट की निन्दा सुनता है तो वह चित्त से उसकी पकावट के वास्ते अपने इष्ट की ओर अच्छी तरह लगता है और नवीन २ बातें सीखता है जिसने अपने इष्ट की पकावट की और अपने इष्ट में पक्का हुआ उसका चित्त सुद्ध हुआ अब ऊपर की ओर उसकी वृत्ति चलती है वह उसको आप राह दिखलाती है जैसे बहता पानी आप अपनी राह ढूंढ़ कर नदी में जामिलाता है अब निन्दा उस तत की एक बात और सुनो देखो कबूतर खेलना भांग पीना बुरा है और निन्दित है परंतु जो लड़का चोरी जुआ खेलने मदरा पीने में लगा हो। और उसको इन कठोर अपराधों से बचाना हो तो वह बिना किसी लालच और दिल्लगी के उनको नहीं छोड़ सक्ता तो उस लड़के से कबूतर खेलने और भांग पीने की प्रशंसा की जाती है कबूतर खेलना बज़त अच्छा है उसमें मन की प्रसन्नता होती है और धन भी प्राप्त होता है। भांग बड़ी उत्तम वस्तु है शिवजी ने अंगीकार की है अब

उस लड़के ने ऐसी बातैं सुनकर चोरी जुवा मदिरा पीना छोड़ दिया कबूतरों से खेलने लगा भाँग पीने लगा अब उस को विद्या के लाभ सुनाये वह लिखने पढ़ने लगा थोड़े दिनों में सब खेल छोड़ कर विद्यार्थी होगया ऐसे शास्त्र महात्माओं की भी कहेन है देखो कोई अपने सच् की हानि चाहता है वह दिनरात बुरे २ यत्न करै है शास्त्र ने कहा कि जो अमुकअमुक मंच जपो पूजाकरो तो सच्कीहानि होगी अब वह पूजा करने लगा देखो कुकर्म से हटकर सुकर्मकी ओर जालगा तो पहिलेसे तो अच्छारहा और जो कुछ सुकर्म के बल सूझ होगई तो वह सच को मिच जानेगा अब देखो जिसने कबूतर खेलना भंग पीना अच्छा कहा तो एक प्रयोजन से कहा अब जो कोई ऐसे २ भेदों को समझ लेगा तो उसको सब सच्चे दीखेंगे और संसै रूपी रोग दूर होजांयगे और सतसंग का फल पावैगा और जो अपने उपासि की महिमा करैं हैं और दूसरे के उपासिकों को तुछ कहते हैं सो वह अपने उपासकों को निरगुण रूप सरब व्यापी ठहरा कर और दूसरों के उपासिकों केवल सगुणही ठहरा कर निन्दा करता है सो निरगुण रूप के बिचार में तो सबका उपासिय एकही है सरगुण में झगड़ा है पर वह भी निरगुण से बाहर नहीं इसी प्रकार शास्त्र और देवता आदि सब एकही के अंग हैं किसको झूठा या बुरा कहनायोग्य है अपनी देह में से कौन सी वस्तु का दूर करना अच्छा होगा अपने २ समय पर हाथ पैर आंख नाक कान आदि सबही काम देते हैं पर समय तो कान से काम लेने का है। और वह कामना कसेलोगे तो निस्चै देह ऐसा यतन वृथा होगा ॥ दोहा ॥

नदिया उतरो नाव से का ले करै जहाज।
जो जाको स्वारथ करै सो ताको महराज ॥

और प्रकट है कि एक मनुष्य २) रुपये दूसरा १०) रुपये तीसरा १००) चौथा १०००) पैदा करता है सब ही का नाम तो कमाऊ है और जो २) रुपये का पैदा करने वाला है वह कभी हजार भी पैदा कर सक्ता है परंतु जो कुछ भी नहीं कमाता है उससे क्या भरोसा है और जो थोड़ा भी किसी मत के अनुसार किसी तरह ईश्वर का ध्यान करता है वह परमारथही है ॥

दोहा ॥

सबही मारग साइयां आगे एक मुकाम ।
जोही सन्मुख होरहा ताही सेती काम ॥

सब को बड़ा समझना चाहिये परंतु जिससे आपको काम पड़ा है उसको मुख्य कर के बड़ा समझना येही तो बहुत उत्तम होगा ॥ एक दृष्टान्त है कि कोई मनुष्य षट दर्शन अर्थात् सब पंथ के साधुओं की सेवा किया करता था उसने एक बार साधुओं का भण्डारा किया और सब भेष के साधू इकट्ठे हुए सबको बहुत अच्छे प्रकार के एक से भोजन करवाये जब सब साधू भोजन कर चुके तब उसने अपने गुरू की पत्तल में से प्रसादी ली और में से नहीं ली किसी साधुने कहा कि क्यों भाई यह अंतर क्यों किया सब की पत्तल में से प्रसादी लेनी थी उसने उत्तर दिया कि महाराज सुनिये जब लड़की का विवाह होता है और जिस समय बरात आती है तब बरातियों की दूलहसे अधिक सिष्टाचारी होती है परंतु लड़की का हाथ लड़के ही को पकड़ाया जाता है सो महाराज आप सब बराती हैं और गुरू दूलह के समान होते हैं इस निमित्त इतना अंतर किया साधु चुप होगये अब देखो कोई पूजा करता है और कोई जप करता है और कोई तीरथ असनान करता है कोई दान देता है कोई ध्यान करता है कोई ज्ञान कहता

है सब परमारथीही तो हैं इससे किसी को बुरा कहते नहीं बनता अब यह शंका होगी कि जो जिसमें लगा है वह उसी में लगा रहेगा तो आगे किस प्रकार बढ़ैगा जो सच्ची मुक्ति पावे इसको इस प्रकार समझना चाहिये कि जब किसी मारग में पक्का होलेगा तब आपसे आप उसको तलाश उत्पन्न होगी और ईश्वर भी दया करके किसी सत पुरुष को मिला देगा। देखिये पहिले लड़के महादेव की पूजा करते हैं तो केवल फूल पत्ती चढ़ाना जानते हैं या घंटा बजाना परंतु जब दूसरे को आरती करते सुनते हैं तो आरती की अभिलाष होती है पण्डित के पास आरती सीखते हैं जब आरती से ऐसा मालूम हुआ कि महादेव कैलास बासी हैं तो अब कैलास के वृत्तान्त जानने की इच्छा हुई सो कथा वारता सुनने लगा उसमें रुचि हुई सुनते २ उपासना में प्रवेश हुआ और साधु सेवा करने लगा अब ज्ञान के वचन भी सुनने में आने लगे उनको सुनकर उनके अर्थ को समझने लगा तात्पर्य्य यह है कि होले होले ठिकाने परजा पहुंचा देखिये केवल फूल पत्ती चढ़ाना और घंटा बजाना ही तो मुक्ति का दाता हुआ हाँ जो फूल पत्ती और ठन २ ही में रहे तो खैर। (जैसे कंधा घर रहे बैसे रहे बिदेस) परंतु उनसे तौभी अच्छे हैं जो कभी मंदिर में नहीं आते जाते उनसे और मुक्तिसे क्या प्रयोजन है किसी परमारथ के मारग में किसी प्रकार लगे हैं वह परमारथी ही हैं होले २ ऊपर के दरजे परभी पहुंच जांयगे जैसे नाला नदीमें पहुंच कर समुद्र में पहुंच जाता है ऊंघते को जो जगाओगे तो अबेर सबेर जागही उठैगा परंतु मृतक जाग नहीं सक्ता और जो परमारथ बक्ता बेद शास्त्र संत साधू देवता हैं और आचारज अन्यमतों के सबहीबड़े हैं और सबका प्रयोजन जीव के कल्याण के वास्ते है देखो करोड़पती लखपती

हजारपती सबही तो साहूकार हैं जिन मनुष्यों को दस बीस सौ दोसौ रुपये के लेन देन का काम पड़ता है उनका काम हजारपती साहूकार से बखूबी निकलता है और हजार पतीही तो उनके लिये अच्छा और बड़का साहूकार है परंतु जब हजारों लाखों का काम पड़ता है तब लखपती साहूकार सेही प्रयोजन सिद्ध होता है तात्पर्य्य यह है कि जब जिससे प्रयोजन निकले वही साहूकार है चाहो लखपती या करोड़पती या हजारपतीहो। हां यह निस्संदेह है कि किसी मतमें कोई २ बातें ऐसी हैं कि वह दूसरे मतसे अत्यन्त प्रतिकूल हैं और जिस मतमें कि वह उचित हैं उनकी उस मत में बड़ी प्रशंसा है और जिस मतके विपरीत हैं उस मतमें उन बातों की बड़ी निन्दा है किंतु यहां तक कि वह ठीक २ नरक की मूल हैं अब ऐसा उचित मालूम होता है कि जिन बातों को जिस मतमें बुरा कहा है उस मत वाले को उसे सब प्रकार से अलग रहना योग्य है और जिस मत में वही बात योग्य कही है और उस मत वाले उसके अनुसार अमल करते हैं उनके विषय में यह बात है कि जो जिस मतमें है वह उस मत को ईश्वरही की ओरसे जानता है जो वास्तव में ईश्वरही की ओर से है तो वह बात जिसको तुम बुरी समझते हो ईश्वर ने उस समूह के वास्ते वही उचित समझा होगा ईश्वर की इच्छा और ईश्वरता में किसी को दखल नहीं बुरे को भला करै और भले को बुरा करै (गौआदेंदा घास मसीदा कुतिआं जाग दियां ले दाखोई देदां सुतियां जो कोर हदा तेरी आस क्यों जादा भूख मर हरना सब जीदा कौन कहै साहब नू तू यों नहिं यों कर)॥ दूसरे यह कि जो वह आज्ञा ईश्वर की तरफ से नहीं है उस मतके आचार्य ने कह दी है और वास्तव में वह बुरीहै तो अपराध उस आचारज परहै क्योंकि जो लोग

उन बातों पर अमल करते हैं वह अपने आचारज के कहने के अनुसार अमल करते हैं और उसको ईश्वर की ओर से समझते हैं उन लोगों को अपराध का बदला न देना होगा परंतु जो अच्छी बातें उस मत के अनुसार की हैं उसका पुण्य प्राप्त होगा इससे जो मनुष्य भक्ती की ओर किसी मतके अनुसार प्रवृत्ति हुआ है वह अच्छा ही है क्योंकि दरजे दरजे पहुंच कर अन्तको एकही अस्थान पर पहुं-चैगा और जिस मनुष्य ने कुछभी इधर को ध्यान नहीं दिया वह तलाव के जलके सदृश है तालाव का पानी कभी समुद्र में नहीं पहुंचैगा और बहता पानी टेढ़े सीधे मारग में होकर अच्छे बुरे अस्थानों पर फिरता हुआ समुद्र ही में जा पहुंचैगा । कर्म उपासना से मुक्ति है पर निज मुक्ति ज्ञान से है सो कर्म उपासना के बक्ता बहुत मत हैं और कर्म उपासना मेंही मतों का भेद है सो भेद कभी न मिटैगा कर्म उपासना के सब मतों में विवाद हीं बना रहेगा जिन मतवालों की सिद्धता ज्ञान पर है उन सबोंका एक मत है और सब मतों को साधन में अच्छा समझा जाता है अपनी २ जगह हां निरगुण निष्काम उपासना में भी इतना विवाद नहीं है क्योंकि निरगुण एक पुरुष ही है सब निरगुण उपासिक एक के उपासक ठहरे और सरगुण रूप अनेक हैं यद्यपि एक निरगुणही से उनकी उत्पत्ति है परंतु अनेक होनेके कारण उनमें विवाद है सो विवाद तीनकाल न मिटैगा निरगुण रूप व्यापक है उनकी उपासना में पूजा पची की आवश्यक्ता नहीं है उसकी उपासना में अराधना प्रार्थना ध्यान चाहिये और जो मनुष्य मत को बदल डालते हैं उनकी यह दशा है कि आपको अपने बाप दादे की जमा की तो खबर नहीं है कि कितने करोड़ खज़ाने रक्खे हैं और दूसरेकी ओर निसचा

जाये कि यह बड़ा जमावाला है तो अपने खाविन्द को छोड़ दूसरा खाविन्द कर लिया हाँ जो भली प्रकार अपने या दूसरे के मतको देख कर निश्चय बदलें तो ठीक है और देखिये यह दस्तूर है कि जब एक मतवाला दूसरे मत की निंदा करता है तो जो बातें कि उस मतमें छोटे लड़के के लिये कही है उनको सुनाकर और अपने यहां की बड़ी बड़ी बातें कहकर फुसलालेते हैं अपनेघरकी रसोईका वर्णन करते हैं और दूसरे के घरकी जाजरूर को तकते हैं इससे भूखा रोटी के लालच फस बैठता है परंतु जो कि निश्चय का बदलाना भी उचित है इससे जिसने मत बदला या उसने कुछ अपराध नहीं किया और जिसने मत बदला उसको अपराधी नहीं कहसक्ते क्योंकि इस मत के अनुसार मुक्ति में प्रवृत हुआ हां इतनी बात है कि अपने घर की पवित्र रसोई छोड़ कर दूसरे के घर की झूठन जा खाई सोभी उस दशा में जब कि कुछ वहां वास्तव में वर्तमान हुआ और आप परिश्रम भी किया नहीं तो इधर के हुए न उधर के (धोबी का कुत्ता घरका न घाट का) चमार को स्वर्ग में भी बेगार और जो ऐसे मनुष्य हैं कि जिन्होंने अभी न कुछ करम किया है और न उपासना न साधूसेवा न दान न वैराग्य न विवेक परंतु ज्ञान के वचन सुनकर ज्ञान गाते हैं उनका निस्संदेह कहीं ठिकाना नहीं यह लोग अभिमानी होजाते हैं इससे वेदान्त का श्रवण बिना अधिकार के वास्तव में निषेद्ध है और ऐसे लोग नाम की इच्छा रखते हैं देखि ये दोनों मूल कैसे बुरे हैं अभिमानी मालिक से विमुख होता है और नामकी इच्छा रखता है इससे अपना समय वृथा खोता है किसी अज्ञानी ने उनकी प्रशंसा करदी तो फूल गये इससे वह अपने जरासे सुखके वास्ते दीन और दुनियां दोनों बिगाड़ते हैं वह लोग ऐसा निश्चय कर लेते

हैं कि ऐसेही ज्ञानी होते हैं और सबने नाम ही की इच्छा की है मूरख ऐसा नहीं समझते कि ज्ञानी होना बहुत कठिन है और यह नहीं समझते कि नाम की कितनी प्रतिष्ठा है और नाम और नेक नामी क्या है वास्तवमें देखिये तो नाम होने का कितना फल नाम देहका होता है सो जड़ है उसका अन्त होजाता है देहको नाम होने से क्या फल मिला जीवको दया सुनिये कि जो ज्ञानी हैं तो उसको जगत का आभाव है उसको नाम किस प्रकार सुखदे सकता है और जो ज्ञानी नहीं हैं परंतु शुभकर्मी हैं या उपासक हैं जो उन्होने देह पाई तो पहले देहकी याद नहीं होती फिर नाम से उनको क्या फल और जो स्वर्ग को गये तो फिर वह अपना नाम सुनने को नहीं आते और जो अज्ञानी है वह नरक को गये या नीच योनि पाई तो कहो नाम उनको क्या सुखदाई होगा हां नेकनामी का इतना फल है कि उसकी इच्छासे शुभकर्म बनता है। इससेमहात्माओं ने कहीं २ नेकनामी की प्रशंसा की है परंतु अबलोग नेक-नामी तो प्राप्त किया चाहते हैं और कुकर्म करने लगते हैं कहो नेकनामी कैसे होगी और जो ऐसा कहो कि महात्मा भी अपने नाक को पचै हैं यह कहना अशुद्ध है महात्माओं की बात अत्यन्त पृथक् है वह जो कर्म करते हैं वह दूसरों के कर्म सुधारने के वास्ते हैं जबोजीने भी कृष्ण महाराज से पूछा कि आपको और ज्ञानी को कर्म का बंधन नहीं है फिर नहाना धोना सेवा पूजा कर्म किस वास्ते करते हो महाराज का बचन है ॥

एकादश का—श्लोक ॥

शौचमाचमनंस्नानं नतुचोदनयाचरेत् ।
अनयात्मनिरमानजोगी यथाहंलीलयेश्वरः ॥

इसका अर्थ यह है की स्नान आदि का करना कर्म है

और सुभै और ज्ञानी को कुतूहलवत हैं और एक अस्थान पर ऐसा भी कहा है कि जोमैंन करूंगा तो जगत भ्रष्ट होजायगा महात्मा लोग यद्यपि जगत का व्यौहार करते हैं परंतु उनको जगत का बन्धन नहीं होता ॥

दोहा ॥

जैसे जलमें कमनिरा लम मुग्गाबीनी साने।
सुरतशब्द भवसागर तरिये नानक नाम बखाने ॥ १ ॥

कमल जलसे उत्पन्न होता है और जलही में रहता है परंतु जलसे निराला है मुरगाबी जानवर पानी में गोता खेता है परंतु जब निकलता है तब सूखा का सूखा ही निकलता है ऐसा चिकना होता है कि पानी उसकी देह में भिदता नहीं इसी प्रकार महात्माओं का हिसाब है जगत में आते हैं और कर्म भी सब करतेहैं तथा लिप्त नहीं होते इस प्रकार एक और भी दृष्टांत है कि एक गोपी के पुत्र नहीं होता था सो श्रीकृष्ण महाराज ने कहा कि तू दुर्वासा ऋषि के पास जा और उनसे अपनी प्रार्थना कर गोपीने कहा कि दुर्वासा ऋषि यमुना पार है मैं पार कैसे जांउ श्रीकृष्ण जीने कहा कि यमुना से यौं कहि दीजियो कि जो श्रीकृष्ण ने कभी स्त्री प्रसंग किया हो तो मारग मत दे और जो न किया होतो दे गोपी यह बात सुनकर आश्चर्य युक्ति हुई कि यह महाराज ने क्या कहा कि सब से अधिक तो विषय किया करतेहैं और यह कहतेहैं कि जो कभी विषयकियाहो तो मारग मतदे परंतु वह गोपीचलखड़ी हुई उसने जाकर यमुनाजीसे येही बात कहीतो यमुनाने मारग दे दिया गोपीने पार जाकर दुरबासा ऋषि के पास जाकर उनके आगे भोजन रक्खा और अपना मनोरथ कहा दुरबासा ऋषिने भोजन करके गोपी को आशीरबाद दिया गोपीने कहाकि महाराज यमुनासे कैसे पार उतरोंगी दुरबासाजी

ने कहा कि तू यमुनाजीसे कहियो कि जो दुरवासा जीने कभी अन्न भोजन किया होतो मारग मत दे और जो कभी न खाया होतो मारग दे गोपी सुनकर अत्यंत आश्चर्य युक्त हुई कि अभी मेरेही सामने सब मेरा लाया हुआ भोजन खागए और यह कहते हैं कि जो कभी भोजन खाया हो तो मारग मत दे। परंतु सोच विचार करती हुई गोपी वहां से चल दी यही बात जमुना से आकर कही जमुना ने मारग दिया गोपी ने पार आकर यह सब वृत्तांत श्री कृष्णजी से कहकर फिर यह प्रश्न किया कि महाराज मुझको इन बातों का भेद बता दीजिये श्रीकृष्ण महाराज ने कहा कि सुन गोपी यह कोई विषय अपने चितकी इच्छा से नहीं करें हैं और न उसका सुख हमको आनन्द देता है परंतु दूसरे की इच्छा केवल से उसकी प्रसन्नता के निमित्त भोग करते हैं इसी प्रकार दुरवासा ऋषिका भोजन है अब देखिये इतनी सामर्थ अपने में तो है नहीं फिर महातमाओं के कृत कर्मो को और अपने कर्मो को कैसे समान समझै परंतु अज्ञानियों का येही सुभाव है कि जिस बातमें कुछ सुख दृष्ट पड़ा और सुगम हुआ तो गुरू की रीस करने लगे और जो अपने से कुछ बुरा काम होगया या जिस बात में दुख हुआ या पर क्रमकावे हैं अथवा कठिन है तो अलग होजाते हैं। एक दृष्टांत है की किसी मनुष्यने हिंसाको थो तथाच हत्या उसके पास आई कि मुझै स्वीकार कर उस मनुष्य ने हत्या से कहा कि तू मेरे पास क्यों आई है इन्द्रके पासजा क्योंकि हाथोसे हत्या हुई थी और हाथोंका देवता इन्द्र है वह तुझै स्वीकार करैगा हत्याने इन्द्रके पास जाकर सब वृत्तांत कहा इन्द्र यह सुन कर मनुष्य का रूप धारण कर उस मनुष्य के पास आया वह उस समय अपने बागमें तालाब के किनारे खड़ा था

इन्द्रने बहुत से वृक्षों की बहुत प्रशंसा की और पूछा कि यह तालाब किसने बनाया और वृक्ष किसने लगाये हैं उसने कहा कि इन हाथोंने और अपने हाथों की ओर इंगित किया इन्द्र बोला कि हत्या तो मेरे शिर और ये पेड़ तेरे हाथों ने लगाये । अब देखिये कि इस मनुष्य की कैसी भारी भूलथी कि दुखकी बातमें तो आप अलग होगया और सुखको बात में अपना अभिमान किया एक ऐसा ही प्रसंग और सुनिये कि एक गुरू और एक चेला दोनों कहीं साथ जाते थे गुरू एक कलार की दूकान पर मदिरा पीने लगे चेले ने कहा जब गुरूही पीते हैं तो तुझे क्या हुआ आपभी पीने लगा इसी प्रकार कई बातें जो सुख पूर्वक और सुगम थीं गुरूको रीसकर के चेलेने भी किया आगे कहीं तेलका कड़ाह गरम होरहा था गुरू उस तेलके कड़ाह में जा कूदे अब चेलेजी खड़े देखते हैं गुरूने कहा कि अब क्यों नहीं आता मदिरा पीनाही जानता था सचहै कि (गुरू कहै सो कीजिये औ करैसो करिये नाइ) देखो ऐसी बातों के भेद सतसंगके बिना नहीं खुलते इससे मनुष्यको उचित हुआ कि मुक्ति प्राप्त करने के लिये सत्संग करे जो बात कि सक्ति है वह सतसंग ही से प्राप्त होती है सतसंग की महिमा वेद शास्त्र और पुराण और सब संत महातमाओं ने की है इस प्रकार एक दृष्टांत है कि कोई चोर था उस ने मरती समय अपने लड़कों को सिक्षा की कि तुम कभी सतसंग में मत जाना नहीं तो भूखे मर जाओगे उसके लड़के अपने बाप की सिक्षा पर इहांतक चलतेथे कि फकीर और पण्डितों की बात नहीं सुनते थे किसी स्थान पर जहां उसका एक लड़का जाया करता था कथा हुआ करती थी जब वह उस स्थान के पास जाया करता तो अपने कानों में अंगुली दे लिया करता था एक दिन उसी स्थान के पास उसके पैर में

कांटा लग गया उसके निकालने को कानसे उंगली निकाली उस समय कथा में यह प्रसंग हो रहा था कि देवता के परछांही नहीं होती इतना उसको सुनाई दे गया दो चार दिन पीछे कहीं उसने चोरी की किसी मनुष्यने उसके पकड़ा देने का इक़रार किया तथा देवीका रूप बनाकर रात्रके समय उन चोरों के मकान पर गया और यह कहने लगा कि तुमने अब तक चोरीके माल में से मेरी कड़ाही नहीं दी अर्थात् मेरा हिस्सा मुझको नहीं पहुंचाया मैं तुमको मार डालूंगी तथाच चोरों ने बाहर निकल कर पहले उसको बहुत दीनता से दण्डवत् की और जैसे वह अपना वृत्तान्त कहा चाहते थे कि इतने में उस चोर ने जिसने ऐसा सुना था कि देवता के परछाहीं नहीं होती दीपक लाकर देखा तो देवी की परछाहीं पड़ी उसको निश्चय हुआ कि देवी नहीं है उसका छल समझ कर खूब उसको मारा और निकाल दिया अब इसका अभिप्राय यह है कि उस चोरने केवल एक बचन कथा का एक दिन सुनाथा उसके बदले से उसने दसबीस जानें बचाईं और नहीं तो सब चोर मारे जाते दूसरे उसको कथा पर अत्यंत विश्वास हुआ आपसे आप कथा वारता में जाने लगा और अन्य चोरोंको भी लेजाने लगा धीरे धीरे वह सब चोर भगत होगये यह महिमा सतसंग की है साधू फक़ीरों का सत्संग ऐसा उत्तम है कि पारस पत्थर से भी अधिक गुण रखता है पारस लोहे को सुवर्ण बनाता परंतु पारस नहीं कर लेता और अच्छे मनुष्य अपने समान करलेते हैं जैसे भृंगी अन्य कीट को भृंगीही बनाता है एक दृष्टांत है कि एक पहुंचे हुए फक़ीर किसी नांव पर बैठे थे दैवजोग से उनके पास एक दुष्ट जन्तु आ बैठा उसने अपने सुभाव के अनुसार विना कारण उनफक़ीर साहब को बहुत तंगकिया यहांतक कि

उनको ऐसा मारा कि रुधिर बह निकला उस समय आकाश वाणी हुई कि इस नावको डुबोदूं तब फकीर साहब ने कहा कि मैं ऐसा पापी मनुष्य इसनाव में बैठा कि जो नावके डुबानेकी अवश्यकता हुई फिर आकाश वाणी हुई कि यह मनुष्य जिसने दुख दिया है डूबजाय फिर फकीरसाहब ने विनय की किमैं ऐसा पापी बुरा मनुष्य हूं कि जो मेरे पास आकर बैठा वह डुबोयाजाइ फिर तीसरी बार आकास वाणी हुई कि न्याव तो होगा उस समय फकीरसाहब ने विनय की कि जो दुष्ट सुभावता इस मनुष्य में है वह डुबा दीजाय उसी समय वह दुष्ट सुभाव शुद्ध चित्त होगया। अब देखा चाहिये कि फकीरसाहब ने ऐसेनीच को अपने बराबर पराफकीर बना लिया देखो जो सज्जन हैं वह नेकीही करते हैं क्योंकि वह ऐसा समझते हैं कि जो बुरे नेबुराई नछोड़ी तो हम भलाई क्यों छोड़ें और यह कि बिच्छू कुछ विचार कर किसी परडंक नहीं चलाता उसका डंक चलाना स्वभावही है ऐसे नेकों को नेकी का करना उनका स्वभावही है इस अस्थान पर यह प्रगट करना उचित मालूम होता है कि बाजे २ अज्ञानी मनुष यह कहने लगेंगे कि साधु फकरतो सब प्रकार नेकी ही करते हैं इससे सतसंग करके क्या करै चलो उनको तंगही न करें देखिये यह अत्यंत अज्ञानता है एक दृष्टांत है कि एक मनुष्य एक रुपया अपने घरसे लेकर चला मारग में वह रुपया कहीं गिर पड़ा अब वह मनुष्य अत्यंत पश्चाताप करने लगा किसी मनुष्य ने उससे उसके दुखका वृत्तांत पूछा उसने कहा कि मेरा रुपया गिर पड़ा उसने कहा चलो संतोष करो जानहार था सो गया अब शोच क्यों करते हो उसने उत्तर दिया कि मुझे रुपये का शोच तो नहीं है परंतु मेरे घर साधू फकीर का नौता है और वह दोचार घड़ी में आवेंगे और मेरे पास और रुपया

नहीं है उनको क्या खिलाऊंगा वह मनुष्य सज्जन और धनाढ्य था अपने पास से एक अशरफी निकाल कर देने लगा उस मनुष ने कहा कि मेरी अशरफी नहीं गई है और न मुझको अशरफी की आवश्यकता है मैं अशरफी लेकर क्या करूं अशरफी नहीं ली उस मनुष ने उस समय एक रुपया निकाल कर उसको दिया उसने ले लिया और यह कहा कि जो मुझको ईश्वर इस योग्य करैगा तो मैं व्याज समेत दूंगा नहीं तो आज नौता तुम्हारो ही ओर से हुआ उस मनुष्य ने जबर दस्ती अशरफी भी उसको दी लाचार उसने लेली अब यह मनुष रूपया और अशरफी लेकर रवाने हुआ दैवजोग से इस दृतांत को कोई तीसरा मनुष खड़ादेखता था उसने अपने चित्त में बिचार किया कि वाह यह मनुष खूब है चलो तुमभी इससे अशरफी लो यह तीसरा मनुष थोड़ी दूर आगे जाकर एक अस्थान पर बैठ कर रोने लगा कि मेरा रुपया गिरपड़ा उस मनुष ने जिसने अशरफी दीथी इससे भी दृतांत निश्चय किया परंतु साफ विदित होगया कि यह झूठा है उसके फरेब के बदले उसको दण्ड दिया गया अब देखिये कि छल छिद्र से काम नहीं निकलता और जो कोई बात छल से हो भी जाती है तो नियत नहीं रहती ईश्वर के घरसे दण्ड पावैगा और जो दृष्टांत कि फकीर साहब और दुष्ट मनुष का लिखा गया है उससे केवल फ़कीरी की समता की महिमा दिखलाई है अब और भी सत्संग की महिमा सुनो कि एक चोर चोरी करके भागा परंतु उसको किसी रीति से ऐसा संदेह हुआ कि मैं पकड़ा जाऊंगा उसने उस थैली को छिपा कर एक मंदिर में जाकर महंत जीसे बिनय की कि मैं फकीर हुआ चाहता हूं महंत जीने बैलाकर लिया और वह साधु बन बैठा खोजियोंने चोर का पता मंदिर में लगाया उसकी

खबर राजा को पहुंची जो कि संदेह चोरी का साधू पर हुआ था इससे राजा ने खोजियों से कहा कि जो साधू चोर न निकलेगा तो तुम सब मरवा डाले जावोगे खोजियों ने इस बात को खी कार करके कहा कि मंदिर में चोर है और उस समय चोर साहूकार की परीक्षा इस प्रकार होती थी कि एक लोहे का गोला गरम करके हाथ पर रक्खा जाया करता था जो हाथ जलगया तो चोरी साबित हो गई इसी रीति के अनुसार तपत गोला उस साधू के हाथ पर रक्खा गया साधू ने गोला लेती समय यह कहा कि जो मैंने इस जन्म में चोरी की होतो मेरा हाथ जलजाय गोला उसके हाथ पर रक्खा गया और उसका हाथ न जला तब राजा ने खोजियों के मारने की तजवीज की उस समय उस साधू ने कहा कि महाराज इनका कुछ अपराध नहीं है मैं ही चोर हूं राजा ने कहा कि तुम्हारा हाथ क्यों न जला साधू ने उत्तर दिया कि मैंने यह कहा था कि इस जन्म में चोरी की होतो मेरा हाथ जलजाय जबसे मैं साधु हुआ तब से दूसरा जन्म होगया इस हेतुसे मेरा हाथ नजला राजा चुप होरहा अभिप्राय इसका यह हुआ कि जो कुलसेभी सतसंग में लगगये हैं वह सिद्ध हो गयेहैं देखो चोरने अपनेको भी बचायाऔर दया करके उन खोजियों को भी बचाया और माल मालिक के हवाले किया इससे जो मनुष्य चित से और विचार पूर्वक सतसंग करगे उनकी मुक्त होने में क्या संदेह है परंतु यह बात मुख्य है कि सतसंग की तलाश वह करैगा जो इस संसार को दुख रूप समझैगा और अपने को [illegible] कीचाह होगी ॥

[illegible] चेतावनी ॥

[illegible] ॥

नानक दुखिया सब संसारा। जो सुखिया सो नाम अ[illegible]

किसी ने यह खोज किया कि कोई इस संसार में सुखिया

भी है जहां देखा वहाँ कुछ न कुछ पुकार ही सुनी एक मनुष को प्रत्यक्ष में सब प्रकार सुखी पाया परंतु निश्चय करने पर उस मनुष ने कहा कि जितना मैं दुखी हूं उतना इस संसार में कोई दुखिया नहीं अपना वृतान्त वर्णन किया कि मुझको अपनी इस्त्री से बड़ा स्नेह था एक वार वह ऐसी रोग ग्रसत हुई कि जीवने की आशा न रही इस्त्री ने पश्चाताप करके कहा कि अब तुम दूसरा विवाह करोगे तथाच मुझको सनेह के कारण यह विदित करना अवश्य हुआ कि मैं विवाह न करूंगा उस समय मैंने अपने को नपुंसक कर डाला ॥ अब इस्त्री निरोग्य घर में वर्तमान है रात दिन अत्यन्त दुखी हूं इससे संसार में सुख नहीं है भूल से तृष्णा में फसता है जो मनुष ध्यान से देखै तो वास्तव में सुख पाने के लिये अपने समय को वृथा खोता है और स्वामी से विमुख होता है इस पर एक दृष्टान्त है की किसी बादशाह ने अपने वजीर को इनाम में दुशाला दिया वजीर प्रतिष्ठा पूरवक दुशाला लेकर बाहर आया उस समय उसको नाक वह निकली तो उसने जल्दी में अपनी नाक को दुशाले से पोंछलीआ किसी मनुष ने बादशाह से चुगली खाई की आपने तो वजीर को इनाम दिया उसने उसकी अत्यन्त तुच्छता की बादशाह ने उसी समय वजीर को बुलाकर देखा तो सुखविर का कहना सच्चा हुआ बादशाहने क्रोधित होकर उसीसमय वजीरसे दुशाला छीन लिया और उसको अधिकार रहित करके बड़ी अप्रतिष्टा से निकलवा दिया दैवजोग से यह वृतान्त एक फकीर भी बाहर खड़ा देखता रहा था उस समय उसने पश्चाताप खाकर कहा कि बादशाह ने केवल ऐसे छोटे अपराध पर ऐसा दण्ड दिया हम लोगो को ईश्वर के यहां से क्या दण्ड होगा कि जो इनाम अर्थात् मनुष देह हमको दिया है इस-

उसको अत्यन्त भ्रष्ट किये डालते हैं हम ईश्वर को क्या मुख दिखलावेंगे ॥ उसी समय से फकीर अपने ध्यान में लग गया अब मनुष को चाहिये कि जिस प्रकार इस संसार के सामान के लिये दौड़ता है जो थोड़े काल के लिये हैं किंतु एक क्षणमात्र की स्थिरता नहीं उसी प्रकार परलोक किंतु उससे अधिक परलोक की चिन्ता क्यों नहीं करता यह प्रकट है की जीव नित बना रहता है और देह मरती है जो जीव बना नरहता तो वेदशास्त्र किसवास्ते अच्छे कर्मोंकी शिक्षा करते हैं और मरने के पीछे क्रिया कर्म कराते हैं कि जिसे जीव सुख पावैं इससे देखो कि अत्यन्त बड़ी अवस्था हुई तो साठ सत्तर वर्ष की और तदनंतर सदैव रहना है कि जिसकी कुछ गणती नहीं फिर साठ सत्तर वर्ष किस गिनती में हैं और इस मनुष्य देह में ईश्वर का स्मरण होसक्ता है और देह में नहीं होसक्ता इससे इसको अपना समय संसार के खेल कूद और विषय में खोना कैसा बुरा है और एक दिन का भरोसा नहीं फिर भी नहीं समझता एक स्थान पर किसी मनुष्य ने एक फकीर से पूछा कि महाराज बस्ती का रस्ता कहां है साधू ने मरघट का रस्ता बता दिया वह मनुष्य पते के अनुसार उस स्थान पर पहुंचा वहां मर घट देखता है बहुत आश्चर्जित हुआ और कहने लगा कि साध फकीर भी झूठ बोलते हैं वहां से लौट कर फिर साधू के पास आया और कहा कि महाराज आपने मुझे बहका दिया साधू बोले कि तूने बस्ती का मारग पूछा था सो भाई बस्ती की राह तो वही है क्योंकि यह बस्ती नहीं है इसको उजाड़ कहना चाहिये कि यहां से सब चले जाते हैं एक और दृष्टांत है कि कोई सेवक अपने गुरू की सेवा किया करता था अच्छे २ भोजन और कपड़े ले जाया करता परंतु गुरू जी निषेध किया करते वह सेवक कहा

करता कि महाराज अच्छे खाने पहरने में क्या दोष है इस अंतर में दैवयोग से सेवक को किसी साहूकार की लड़की दृष्ट पड़ी वह अत्यंत स्वरूपवती थी सेवक उस पर आसक्त होगया अब उसके मिलने के सोच में सूखता जाता है फकीर साहब उसके दुखका हेतु निश्चय करते हैं परंतु वह लज्जा के मारे वरणन नहीं करता एक दिन फकीर साहबने जिद्द करके पूछा तब उसने सब वृतान्त वर्णन किया फकीर साहब ने कहा की यह बात कौन कठिन है अभी हम उस लड़की को बुलवा देते हैं जो की फकीर साहब बड़े अच्छे पुरुष थे उनके हुक्म को कोई टाल नहीं सक्ता था फकीर साहब ने सायंकाल को साहूकार से कहला भेजा कि अपनी लड़की को भेज दो उसने लड़की को उसी समय भेज दिया फ़कीर साहब ने सेवक से कहा कि लड़की तेरे साथ है परंतु तेरी मृतु पांच पहर पीछे अर्थात् पहर दिन चढ़े आवैगी उस समय तो सेवक बहुत प्रसन्नता से उस स्त्री को साथ लेगया परंतु जब मारग में उसको मृतु का स्मरण हुआ तो उसके होश उड़ गए उस स्त्री से बात करने की भी सामर्थ न रही मृतु का सोच सिरपर सवार होगया प्रातः काल वह स्त्री अपने घर गई यह सोच में पड़ा रहा जब पहर दिन व्यतीत होगया और मृत्यु उसकी न आई तब उसने कहा कि फकीर साहब भी मिथ्या बोलते हैं उठ कर फकीर साहब के पास गया और कहा कि मृत मुझको तो अब तक नहीं आई फकीर साहब ने पूछा कि तू ने उस स्त्री से अच्छे प्रकार से भोग किया उसने सत् सत् सब अपना वृत्तांत कह दिया उस समय फकीर साहब ने कहा कि देख वह चीज कि जिसके वास्ते तू जान देता था तुझ को प्राप्ति हुई और मृतु के आने में पांच पहर की देरथी इससे वह वस्तु तुझसे भोगी न गई हम कि अपनी मौत हम

हम यह समझते हैं और निश्चय नहीं की दूसरा दस आवै वा न आवै कहै। अच्छे अच्छे भोजन और वस्त्र जिनको हम तुच्छ समझते हैं वह किस प्रकार भोगे जांय और देखो कि जैसे दर्पण चिकनाई लगने से मैला होजाता है और सूखा आटा मलने से साफ़ होजाता है ऐसे विषय भोग आदि के जो चिकनाई के सदृश हैं और अन्तःकरण जो दर्पण के समान है उसको मैला कर देते हैं और वैराग्य विवेक आदिक जो सूखे आटे के समान है वह अन्तःकरण को प्रकाशित और शुद्ध कर देते हैं सो आशय इसका यह है की एक दम का भरोसा नहीं है इसे मनुष्य सोच समझ कर जगत के विषय से बचकर अपने परलोक की चिन्ता करैं संसारमें थोड़ा जीवन है और अवधि क्षण क्षण में व्यतीत होती जाती है और मरने के पीछे जीव नित्य है और सदैव रहना है परंतु अज्ञानी इस जीवन को ऐसा समझता है कि अभी अन्त न होगा और येही समझ कर इसी संसार के आनन्द के सामान किया करता है और उसको यह स्मरण नहीं कि कभी मृत्यु भी आवैगी और ऐसा समझै तो पाप्य अर्थात् नेमा बांधै और मूरख और आलसी लोग अपनी अवस्था सोच विचार ही में खोते हैं और कोई काम नहीं करते एक और दृष्टांत है कि कोई मनुष्य किसी फ़कीर साहब के पास अच्छी पोशाक ले गया फ़कीर साहब ने लेने से निषेध किया इस मनुष्य ने कहा कि आप क्यों नहीं लेते हैं फ़कीर साहब ने कहा कि इससे बहुत नुकसान होता है और ईश्वर की अप्रसन्नता होती है हमको भक्ति का धारण करना ही उत्तम पोशाक है उस मनुष्य ने कहा कि ईश्वर कहां है और किसने देखा है आप पहिरिये और आनन्द कीजिये फ़कीर साहब ने कहा कि भला जो ईश्वर होय तो क्या मत होगी वह मनुष्य

निकलकर हुआ आशय इसका यह है कि मनुष्य को धोखा में क्यों पड़ना जो कदाचित् ईश्वर हुआ तो अपराधी हुआ और जो ईश्वर नहीं है तो भोग विलास न पाने में किसी की क्या हानि है तात्पर्य यह है कि संसार के आनन्द और सुख से बचना चाहिये अन्त को येही आनन्द बड़ा दुःख देंगे परंतु बाजे बुद्धिवान ऐसा कहते हैं कि दोसही मनुष्यों से समरथ कब होसक्ता है दो घोड़े की सवारी नहीं हो सक्ती देखिये यह कहना कैसा अशुद्ध है हो घोड़े की सवारी हो सक्ती है एक बग्घी या रथ में दो घोड़े जोत के वह सवारी दो घोड़ों ही की तो कहलाती है एक दृष्टान्त है कि कोई मुसल्मान निमाज पढ़ता था और उसके पास चूहा था रक्खा था इसने को देखकर बिल्ली आई निमाजी हैरान हुआ कि जो बिल्ली को मारता हूं तो नमाज जाती है और जो नहीं मारता हूं तो खाना जाता है और खाने बिना दूसरे समय निमाज नहीं हो सकेगी उस समय निमाजी ने बिचार करके (अल्हम्दुल्लाहि रब्बिल आलमीन) बड़ी जोर से पढ़ा बिल्ली भाग गई इसलिये कि रब्बिल आलमीन में बिल्ली निकलता है बिल्ली ने समझा कि मुझे धमकाया इस हेतु से बिल्ली भाग गई अब देखो कि युगति से निमाज भी होगई और खाना भी बचा इससे मनुष्य सतसंग में जाइ तो ऐसी जुगति उसके हाथ आजायगी कि दीन दुनियां होसिधर जायगे अब ये प्रश्न है कि ऐसे तुच्छ जीवन के वास्ते क्या जगतही का सुख भोगना श्रेष्ठ होगा कि जिसका ठिकाना न एक दिन न एक घड़ी न एक पलका है और सदैव के लिये दुख में पड़ना या यह कि इस जीवन में दुख उठा लेना और आगे सदैव का प्रसन्न रहना देखो थोड़े दिन का दुख सहना और सदैव को आनन्द रहना येही काम है अब मनुष्य को चाहिये कि मृत्यु को इस समय स्मरण रक्खे इस निश्चय

कि जो धर्मध्यान नहीं रखते उनको परलोक की चिंता नहीं होती वह आत्मज्ञानही मरजाते हैं उनको शोक भी बहुत होता है और जो समरण रखता है उसको मृत्यु सुगम होजाती है और सब प्रकार उसको परलोक की चिंता होतीहै परंतु देखो मृत्यु से डरना न चाहिये किंतु उसका समरण बहुत अवश्य है और जो ऐसा कहते हैं कि हम को तो समय नहीं मिलता जो सत्संग करैं यह भी भूल है कोड़ी ही देर सही थोड़े २ काम बनजायगा ॥

दोहा ॥

करत करत अभ्यास के जड़मत होत सुजान ।
रसरी आवत जात है सिलपर करत निशान ॥

देखो रस्सी कैसी मृदु वस्तु है और पत्थर कैसा कठोर है परंतु थोड़े २ कुयें की सिल में रस्सी से व्रत होजाता है मनुष्य परिश्रम नहीं किया चाहता नहीं तो जो चाहै सो होसक्ता है परंतु मनुष्य ऐसी इच्छा रखते हैं कि दुख तो किंचित नहो और काम पूरा होजाय सो ऐसी ही दशा प्रकट देखने में आती है अब बाजे बुद्धिमानों ने केवल इतनेही को मुक्ति समझ रक्खी है कि सवापैसे की मिठाई और दो चार पैसे किसी साधू ब्राह्मण के आगे रखके गुरु-दीक्षा लेली बस अब जन्म भर की छुट्टी हुई जो उनसे कोई कहता है कि भाई सतसंग करो तो आपका जवाब है कि हमतो गुरुदीक्षा ले चुके अब गुरमुख होगये तो और क्या करना रहा अब ऐसे मूर्खों को क्या समझावै जो सवापैसे में गुरमुख बनजाते हैं देखो गुरमुख होना बहुत कठिन है गुरमुख उसको कहते हैं जो गुरु और भगवानकी आज्ञामें चलै और जो कुछ भलाबुरा होय सबमें प्रसन्न रहै और किसी बात में दखल न दे और अपनी बुद्धिको बड़ी न समझै कहिये यह बात कैसी कठिन है अब जो देखते हैं

तो उनका कुछ अपराध नहीं है क्योंकि इस समय के गुरु भी
भी दोचार पैसे ही पर राजी होजाते हैं और समझ लेते
हैं कि एक चेला ही बड़ा उनको उसकी मुक्ति से क्या काम
सिद्धी अपना प्रयोजन तो खूब बनगया यद्यपि श्रेष्ठ होना
और की है परंतु वास्तव में चेले ही की मूर्खता है जो
यह नहीं समझा कि अपना काम बिना अपने परिश्रम के
नहीं बन सक्ता परंतु परलोक का सोच किसको है संसार
ही में आनंद समझ रक्खा है और यह मनुष्य की अत्यंत
भूल है कि जो संसारी वस्तुओं में सुख समझ रक्खा है
संसार का सामान कितनाही होइ परंतु दुख दूर नहीं होता
जब मनुष्य के दस रुपए होंवह सौ रुपए वालों की ईरखा
करता है और कहता है कि जो मेरे पास सौ रुपए होजांय
तो कुछ दुख न रहैगा सब सुख होजांयगे परंतु जब सौ
रुपए मिल गए तब उसकी दृष्ट हजार वालों पर पड़ी अब
उनके समान को देख कर उसी प्रकार जैसा दस रुपए की
दशा में दुखी था दुखी रहता है अब कदाचित् हजार
मिलैगा तो लाख की इच्छा होगी इच्छा का अन्त किसी
प्रकार नहीं होसक्ता इससे सुख प्राप्त करने की यह रीति
नहीं है अब देखिये सुख मनुष्य के चितमें है कुछ संसारी
पदार्थों में नहीं इसलिये कि जो चित में कोई संदेह आ
जाय तो सब समान न होने पर भी आनन्द नहीं होता
आनन्द केवल समझ में है देखिये पहले तो संसार की
तृष्णा दूर नहीं होती जो किसी हेतु से पूरी भी होजाय तो
चित और भी बिगड़ जाय परलोक का तो कुछ भी सोच
न रहै इस निमित्त कि जो बात दुखिया को अच्छी मालूम
होती है वह आसक्तों को अरुचिदायक होती है क्योंकि
ऐसे के नशे में वह परलोक को क्या जानते हैं और जो ऐसा
ध्यान करते हैं कि बहुत से सामान से सुख होता है वह

अत्यन्त भूल है एक दृष्टांत है कि कहीं किसी बादशाह की सवारी बाजार में जाती थी एक फकीर साहब मार्ग में लोट रहे थे लोगोंने आकर कहा कि फकीर साहब मार्ग छोड़ दो सवारी आती है फकीर साहब ने पूछा कि किस की सवारी आती है उन मनुष्यों ने कहा कि बादशाह की सवारी है फकीर साहब ने कहा कि हम शाहनशाह हैं बादशाह हमारा अदब करके एक तरफ होकर चला जाय यह फकीर साहब का कहना बादशाह तक पहुंचा बादशाह सवारी से उतर कर फकीर साहब के पास आया और कहा कि जो आप शाहनशाह हैं तो शाहनशाही का सामान अर्थात् फौज खजाना मुझसे अधिक दिखाइये फकीर साहब ने पूछा कि फौज किस काम आती है बादशाह ने जवाब दिया कि शत्रु के मारने को फकीर साहब ने कहा कि हमारा कोई शत्रु नहीं है इससे फौज रखकर क्या करें यह खबरदारी और फिकर तेरे लिये है बादशाह ने खजाने के बारेमें पूछा फकीर साहबने कहा कि हमारे खरच नहीं यह होशियारी और लूट जाने का भय तेरे जिम्मे है यही हेतुओं से हम शाहनशाह हैं अर्थात् बादशाहों के बादशाह हैं कि कोई संशय नहीं रखते बादशाह निरुत्तर हुआ अब देखो कि संसार के सामान की अधिकता से सोच फिकर की अधिकता है और आनन्द नहीं इसके विशेष संसार का सामान मनुष्य को सुमार्ग से रोक देता है इस निमित्त कि उसके चित्त का विनोदक होजाता है इसके विशेष खुशामदियों से प्रशंसा पाता है इसीमें प्रसन्न होजाता है उसको मूल पदार्थ के सिद्ध करनेकी इच्छा नहीं होती परंतु जो संसारी सुख को नहीं चाहते वह सदैव सुमार्ग के खोजमें रहते हैं संसारमें धनउतनाही अच्छा है कि जिसमें कालक्षेप होजाय इससे विशेष निष्प्रयोजन किंतु बोझा समझना चाहिये ॥

साहब इतना मीजिये जामे कुटुम्ब समाय। मैं भी भूखा ना रहूं साधु न भूखा जाय॥

और उस वस्तु से कभी आनन्द न समझे जिसके खोने से दूसरे को दुख पहुंचे धन से सुख कभी नहीं है परंतु जो उससे सुकर्म करै तो लाभकारी है मनुष्य को दूसरे की ओर न देखना चाहिये जो अपने को प्राप्त हो उसीमें संतोष करै वह हजार धनी लोगों से बड़ा है इस हेतुसे कि वह प्रसन्न रहता है धनी लोग डाह में जलते हैं इससे ऐसी धनाढ्यता किस अर्थ की अब मनुष्य को उचित उचा कि संसार की ओर से चित्त उठाकर सच्चे मनसे सतसंग करै सतसंग से काम क्रोध लोभ मोह अहंकार उसका दूर होगा जब ईश्वर की ओर प्रेम और भक्ति बढ़ैगी तब ईश्वर दयाल होगा और मुक्ति पावैगा अब यह कहना भी अवश्य है कि सतसंग बड़े प्रारब्ध से प्राप्त होता है और सतसंग का असल रंग लगना बहुत कठिन है इस निमित्त कि मनुष्य कहते हैं कि सतसंग करते हैं परंतु काम क्रोध लोभ आदि के वसी भूत रहते हैं और समय पर चूक जाते हैं इसका कारण यह है कि ऐसे मनुष्य सतसंग नहीं करते बहमन मती रहते हैं उनका काम क्रोध आदि नहीं जाता आगे के दृष्टांतों से ऐसे आदमियों का हाल विदित होगा इसलिये चाहिये कि सतसंग मोक्ष के लिये करैं तो काम आदि जो ऐसे बली हैं सब दूर हों अब लोभी का वृत्तांत सुनो कि (लालच बुरी बलाय) एक विदेसी फकीर के पास तीन रोटियां थी परंतु उसके पास बांधने के लिये कुछ कपड़ा नथा और एक और विदेसी था अपनेको सतसंगी कहा था उसके पास खाने को न था परंतु कपड़ा था फकीर ने उस विदेसी से कहा कि तुम रोटी बांधलो तो तुमको एक

रोटी हुई थी एक विदेशी ने रोटी न पाई परंतु फकीर से चुराकर एक विदेशी ने एक रोटी निकाल कर खाली जब फकीर ने रोटी गिनी तो दो रोटी कम थीं फकीर ने कहा कि तीन रोटियों विदेशी ने खाई मैं क्या जानूं जो दीनी थी सो वर्तमान है इसमें तकरार हुई परंतु विदेशी सत्य न बोला फकीर ने कहा कि इससे सत्य कहलाना चाहिये फकीर साहब ने दो चार चमत्कार किये परंतु विदेशी ने सत्य न कहा अंतको फकीर ने एक मिट्टी के ढेर को सुवर्ण बना दिया और चार भाग किये एक अपना और एक विदेशी का और दो भागों के विषय में कहा कि जिसने रोटी खाई है यह उसके हैं विदेशी ने झटपट कहा कि रोटी मैंने खाई है फकीर का प्रयोजन सिद्ध हुआ सब सुवर्ण विदेशी को देकर आप वहीं को चल दिया। वह सुवर्ण इतना था कि एक मनुष्य से नहीं चलता था उसने नौ मजदूर करके एक एक मटरी उनके सिर पर रक्खी और चौथी आपली एक ग्राम पर जहां उस माल वाले विदेशी का निवास था उसके पास पहुंचकर चारैं चतरे उन मजदूरों में से दो मनुष्य खाना खाने को बाजार गये और दो वहीं ठहरे रहे जो बाजार को गये उन्होंने परस्पर में सलाह की कि उन दोनों मनुष्यों को जो खाने को ठहरे हैं मारडालो तो यह सुवर्ण हम तुम बांट लें तथा यह सलाह के अनुसार मिठाई में विष मिला कर ले आये वह दोनों मनुष्य जो वहां पर बैठे थे उन्होंने यह सलाह की कि इन दोनों मनुष्यों को जो बाजार गये हैं मारडालना चाहिये क्योंकि कुछ सुवर्ण उनको भी देना पड़ेगा इससे दो तलवार देतमें हवा रक्खीं जिस समय दोनों मनुष्य बाजार से आये और खानेको बैठ रहनेलगे उसीसमय एकदमसे दोनों ओरसे उन पड़ी और उनदोनोंने मिठाई खाई जोकि विष की

में विरक्त मिला या इससे यह भी मरणे में अच्छा है देखिये कि जीव ऐसा बुरा है एक और दृष्टांत है कि एक मनुष्य सत्संग में जाया करता था कुछदिन पीछे उसको यह अभिलाख उत्पन्न हुआ कि मैं किस प्रकार स्वर्ग को देखूं किसी साधु ने कहा कि जो फलाने दिन फलाने समय फलाने प्रकार से तू अपने को जलादे तो वैकुंठ पहुंच जायगा उसने स्वीकार किया नियत दिवसको जलनेके वास्ते रवाना हुआ मध्यमें कोई चोर किसी की थैली चुराकर भागा आता था और चोर को यह विदित हुआ कि मेरे पीछे आदमी भागे आते हैं उसको अपने पकड़े जानेका भय था उसने उस मनुष्य से जो जलने को जाता था पूछा कि तुम कहां जाते हो उसने कहा कि भाई वैकुंठ को जाता हूं चोर ने पूछा कि भाई वैकुंठ किस प्रकार से जाओगे उसने सब वृत्तांत कह दिया उस समय चोर ने थैली निकाल कर कहा कि मित्र जो सुख वैकुंठ में है वह रुपये से यहां भी वर्तमान है लीजये यह थैली आपको वहांही वैकुंठ मिला इस मनुष्य को रुपया देखकर लालच आगया थैली लेली चोर चलागया पीछे से आदमी भागे चले आते थे उन्हों ने उस मनुष्य के पास थैली देख कर छीनली और बहुत सा मारा अब देखिये लोभ ऐसा बुरा है कि वैकुंठ सभी फेर गया ऐसाही दंभ मोह की है एक दृष्टांत है कि कोई मनुष्य वैकुंठ जाने वाला था उसके लिये देवता विमान लाये जब वह विमान पर चढ़ने लगा तो उसको मोह आया कि अपने जोरू लड़का का भी ले चलूं परंतु देवता ने कहा कि आत्मा केवल मोक्ष निमित्त है और किसी को हम विमान पर न चढ़ावेंगे उस मनुष्य ने कहा कि जो हम विमान के पाये से लटक चलें तो कुछ निषेध नहीं है इस बात को देवताओं ने स्वीकार किया तबउस मनुष्य ने विमान का पाया पकड़ उसकी स्त्री ने

उसका पैर पकड़ा लड़के ने माका पैर पकड़ा जब बिमान उड़ा तो लड़का मारे भय के रोने लगा पिता ने कहा कि बेटा रोवै मत मैं तुझै लड्डू दूंगा परंतु लड़का चुप न हुआ किंतु और भी अधिक रोने लगा उस समय उसके पिता को घबराहटमें सुधि न रही और इस विचार में हाथ से पाया छोड़ दिया कि लड़के को दिखलाऊं कि तुझै इतना बड़ा लड्डू दूगा जों पाया कि छोड़ा तो सब के सब पृथ्वीपर गद से गिरपड़े देखो मोह भी बैकुण्ठ से फेर लाया काम ऐसा बलीहै कि शृंगीऋषि तकको भरमा दिया औ संपूर्ण संसार को खाये चला जाता है जो मनुष्य काम के बस हो रहा है वह पशुसे भी निषिद्ध है क्योंकि यह काम मनुष्यों को बेशरम बेअदब बेईमान बनाता है और जैसे घोड़ा बेलगाम होता है येही दशा कामी पुरुष की है और कामी वह है जो अपनी स्त्री के विशेष दूसरी से अनुरागी होता है विशेष काम के विषय में आगे लिखा जायगा अब क्रोध का वृत्तांत सुनो कि एक फ़कीर अपनी कुटी में बैठे थे किसी मनुष्य ने उनको परीक्षा लेना चाहा कि ये क्रोध बस हैं या नहीं उस मनुष्य ने फ़कीर साहबसे कहा कि मुझै थोड़ी सी आग दीजिये फ़कीर साहब ने कहा कि भाई आग मेरी कुटी में नहीं है और वास्तव में अग्नि नहीं थी परंतु इस मनुष्य ने फिर कहा कि महाराज थोड़ी सी दीजिये तब फ़कीर साहब ने अप्रसन्न होकर कहा कि यहां अग्नि नहीं इस मनुष्य ने फिर कहा कि महाराज दबीसीतो जान पड़ती है अब फ़कीर साहब ने अधिक क्रोधित होकर कहाकि चला जा कैसा आदमी है हम कहते हैं कि अग्नि नहीं है और मांगेही चला जाताहै इस मनुष्य ने फिर कहा कि महाराज धूआं तो उठता है कुछ थोड़ासी दे दीजिये फ़कीर साहब को अत्यंत क्रोध हुआ और मारनेको दौड़े तब इस मनुष्य

ने कहा कि अब तो आग बलने लगी अब प्रयोजन इसका यह हुआ कि जो फ़कीर को क्रोध हुआ वही आग बलने लगी इससे क्रोध ऐसा बुरा है कि बड़ों २ को आ दबाता है और देखिये क्रोध प्रथम तो अपनेही को जलाता है तदनन्तर दूसरे को जलाता है इस निमित्त क्रोध अग्नि है जब चित्त से उत्पन्न हुआ मुखसे निकला इससे उस अग्नि ने प्रथम अपने चित्तको जलाया तब दूसरे को जलाती है इससे क्रोध बुरा है जो कभी बहुत आवश्यकता क्रोध करने की आन पड़ै तो उसकी यह रीति है कि एकसर्प किसी स्थान पर लोगों को बहुत दुखदाई होता था किंतु काट २ खाता था एक दिन कोई फ़कीर वहाँ आ निकले सर्पने उनपर भी चोट किया फ़कीर ने सर्प से कहा कि ऐसे बुरे काम किस वास्ते करता है सीलवान होजा फ़कीर के कहने से उस को ऐसा असर हुआ कि सर्प उसी समय से अत्यंत गरीब होगया अब यह दशा हुई कि लड़के उस सर्प को घसीटे घसीटे फिरते हैं थोड़े काल पीछे फ़कीर साहब फिर आये सर्प से पूछा कि कहो अब क्या दशा है सर्प ने कहा कि देखलो जैसी दशा है फ़कीर साहब ने कहा को हमारा यह प्रयोजन नहीं था कि तू अपनी दुरगत करावै तुझको उचित था कि अपनी फोंकार नहीं छोड़ता उस समय सर्पने फुंकार मारना प्रारम्भ किया अब आप भी बला और दूसरे को भी नहीं काटता ऐसे ढंग से जो क्रोध होय तो कुछ डरभी नहीं अब सुनिये अहंकार सबसे बुरा है देखो दुख और अपमान का सहना सुगम है परंतु सुख और बड़ाई का सहना कठिन है सुखमें सब भूल जाता है और अभिमानी होजाता है जो सुखको संभालै तो पुरुष है और दुखको तो सभी सहते हैं सुखमें अपने मित्रों से इस प्रकार झुकते जैसे पहिले दरिद्रतामें निबाहता था यद्यपि

काम क्रोध लोभ मोह अहंकार ऐसेही जबर दस्त अर्थात बली हैं परंतु सच्चे चितसे सतसंग करने से मूल सहित दूर होसक्ते हैं एक दृष्टांत है कि किसी साधू ने बहुत सतसंग किया था इस कारण अत्यंत सीलवान होगया किसी मनुष्य ने उनकी परीक्षा लेना चाहा एकदिन उनको खानेके वास्ते नौता दे आये और अपने मकान पर आदमियों से कहदिया कि जब वह फकीर आवे तो एक आदमी उसको धक्का देकर निकाल दे और दूसरा बुलाले इसी प्रकार सात बार करना अब प्रातःकाल के समय जो साधू आए तब आदमियों ने उसीके अनुसार किया परंतु फकीर साहब ने कुछ भी न कहा जब बुलाया तब चले आये और जब धक्का दिया तब निकल गये उस समय वह मनुष्य जिसने नौता दिया था चरणों में आ गिरा कि मेरा अपराध क्षमा होय आप बड़े सीलवान हैं फकीर साहबने कहा कि इसमें मेरी क्या बड़ाई है यह तो कुत्ते का सुभाव है कि जब लकड़ी दिखाई तब चला जाय और बुलाओ तब चला आवै अब देखिये कि कैसी सीलता इस साधु में थी यह सब सत संग का असर था जो मनुष्य सच्चे मन से साधु गुरूके बचनपर बिस्वास करै तो निस्संदेह उसको सतसंग का फल होय एक दृष्टांत है कि एक गंवार था उसको यह सूझी कि किसीको गुरूकर के भगवान से मिलना चाहिये इतने में एक फकीर आगये उसने प्रार्थना की फकीर साहब ने उसको गंवार समझ कर एक पत्थर का टुकड़ा उठा दिया और कहा कि यही भगवान है इसकीपूजा कियाकर जोइससे कोई और जबरदस्त मिलै तो उसे पूजियो यह गंवार उसपत्थर को पूजने लगा सदैव बड़े प्रीति से आंख बन्द करके उसको भोग लगाया करता इससे चूहे खाने को देखकर लेजाया करते जब यह मनुष्य आंख खोलकर देखता तो समझा कि महाराज

ठाकुरजी ने भोजन कर लिये एक दिन दैवयोग से उसने चूहों को देख लिया कि चूहे भोजन खारहेहैं उसने अपनेमन में विचार किया कि अब पूजा चूहे की करनी चाहिये कि चूहे ठाकुर जी से जबरदस्त हैं अब वह पूजा चूहे की करने लगा एक दिन उसने देखा कि बिल्ली आकर चूहेको पकड़ ले गई तब उसने बिल्लीको जबरदस्त देखा फिर उस बिल्ली को पूजने लगा एक दिन कुत्ते ने बिल्लीको मारा अब वह कुत्ते को पूजने लगा एक दिन उसकी स्त्रीने कुत्ते को मारा अब वह अपनी स्त्री को पूजने लगा परंतु एक दिन दैव जोग से उसको अपनी स्त्री पर क्रोध हुआ और उसको मारा अब उसने अपने को जबरदस्त समझा अपनी पूजा करने लगा तात्पर्य यह है कि अब घटकी पूजा होने लगी थोड़ेही समय में पूरा सिद्ध होगया अब देखिये कि निश्चय से क्या फल मिलता है अब मनुष्य प्रथम निश्चय नहीं लाते और जो निश्चय भी करते हैं संसार के प्रयोजन के वास्ते और जो कोई उनको वैराग्य की बात बताता है तो आप उत्तर देते हैं कि हम तो संसार के त्यागने में बहुत राजी हैं परंतु हमको संसारही नहीं छोड़ता धन्य उन लोगों के कहने को यह वही कहावत है कि कोईमनुष्य अपने गुरू से कह रहाथा कि संसार ने पकड़ रक्खा है क्या करूं कुछ बस नहीं चलता गुरूजी उठकर एक वृक्ष से जालपटे और कहने लगे कि मुझै वृक्ष ने पकड़ लिया है छोड़ता नहीं वह मनुष देखकर आश्चर्यित हुआ कि आप गुरूजी ने वृक्षको पकड़ा है वह आप गुरूजी को शिक्षा करने लगे कि महाराज वृक्षने तो आपको नहीं पकड़ा है आपही ने वृक्ष को पकड़ा है गुरू जी बोले अरे अज्ञानी अब समझले कि संसार को तैने पकड़ रक्खा है और जगत ने तुझको नहीं पकड़ा तेरा कहना अत्यंत वृथा है कि मुझै संसार नहीं

छोड़ना देख तूही संसार को नहीं छोड़ता। इससे और चमत्कार की बात सुनो कि देवता की पूजा करने जाते हैं और दमड़ी के फूल चढ़ाते हैं और अपने को बड़ा पुजारी समझते हैं और बेटा और धन मांगते हैं और थोड़े दिन पीछे कहते हैं कि हमने तो किसी देवता में शक्ति नहीं देखी॥

दोहा

अन्तर मैल जो तीरथ नहावे तिस बैकुंठ न जाना।
लोक पतीणे कछू न होवे नाही राम अयाना॥

कहिए ऐसे मनुष्यों को भगवान मिलसक्तेहैं बड़ी कठिनता यह है कि यही लोग असल प्रयोजन को नहीं समझते और एक लीक पीटते हैं किंतु इसमें अपनी हानि करते हैं परंतु उनके चित्त की शुद्धता किंचित्त भी नहीं हुई इसलिये बाजे महत्माओं ने तीरथ व्रत की निंदा भी की है और लोग उसको निंदाही समझते हैं परंतु उनका असल अभिप्राय निंदा का नहीं है किंतु यहां के लोग अब तीरथ व्रत से जैसा फल चहीये वैसा नहीं प्रापत करते उनको तीरथ वरत से कुछ अभाव हो जाय और सत संगमे आवै और वहां असल अभिप्राय को समझै तो तीरथ व्रत भी सुफल हो देखिये कि ठकुर के दर्सन और पूजा से प्रयोजन यह था कि मनुष्य का चित्त एकाग्र और निश्चल हो उचित था कि मूरत के दर्शन करके हृदय मे धार्ण करते और हर समय दर्शन करते रहते कि मन एक ओर अस्थिर रहता परंतु अब यह बात तो करते नहीं किंतु पूजा और दर्शन को एक आपति सी टाल देते हैं हाथ में तो माला हैं जबान से राम नाम कह रहे हैं परंतु मनोराम और ही खोंदा खादी में लग रहे हैं किंतु जहां तक बने वहां तक इतना भी न करने के लिये बहाना ढूंढ़ा करते

है जिस दिन कोई संसारी काम आजाय तो और जो काम अपने तनके या संसार के हैं वह तो सब करें और जो घड़ी दो घड़ी पूजा करते थे या दर्शन को जाते थे उसको उस दिन छोड़ दें और जो कोई पूछै कि यह क्या तो उत्तर दें कि आज काम बहुत आगया इससे पूजा न कर सके देखिये सब दिन रात में केवल घड़ी दो घड़ी पूजा करते थे और वही समय कुछ फलदायक था सो उसमें ही कसर निकाली और कोई काम न छोड़ा और एक पूजा की विधि देखिये कि जिस दिन अच्छे २ शृंगार करैं उस दिन कहैं कि आज तो साक्षात महाराज आप विराजे हैं कहिये यह कैसी मूर्खताई है कि शृंगार अच्छा देखा तो महाराज उस दिन आप विराजें देखिये लोगों की दृष्टि केवल पदार्थों पर है कुछ उनको मालिक का भाव नहीं है अब तीरथ की दशा सुनिये कि तीरथ असनान करने से यह प्रयोजन था कि तीरथ पर जाने से मनुष्य कुछ दान करै और साधू महात्माओं के दर्शन करैं कथा वारता सुनै और तीर्थ गमन का श्रम करै घरकी हाथ २ और मोह से छूटै भजन करै ऐसे तीरथ करने से मन शुद्ध होगा फिर जो सतसंग होगा तो मुक्त पावैगा अब लोग यह करते हैं कि तीरथ पर जाकर माल खाते हैं सैर करते हैं और घरको और दृष्ट मित्रों को अच्छी २ चीजें खरीद के ले आते हैं बड़े समाज से विद्वेष करते हैं साधू घरिडन को लालची पाखंडी कहते हैं पैसा पुण्य करते नहीं और भूखे को खिलावते नहीं भजन और कथा सुनने का कहीं लवलेस नहीं जो सरमा सरमी तीरथ असनान का यत्न करते हैं तो दस पांच साध ब्राह्मणों को पूरी तरकारी और बड़ी शिकार मारी तो थोड़ी बहुत साधारण मिठाई खिलादी और दृष्ट मित्र

भाई बन्धु सौ पचास बुलाये उनकी जियाफत करतेहैं अच्छी मिठाई मुरब्बा अचार चटनी पापड़ आदि वस्तु खिलाते हैं और यह अभिमान है की हम तीरथ कर आये हैं और ऐसा भारी यत्न किया कहैं यह यत्न हुआ या उनका सिर हुआ ॥

दोहा ॥

साला तीरथ सुसरा तीरथ तीरथ छोटी साली।
मात पिता की लाज न कीजे तीरथ है घरवाली ॥

अब व्रत का हाल सुनिये व्रत से यह प्रयोजन था कि प्रथम तो उसे भूखे रहने का दुख मालूम होजाय कि दूसरे भूखे पर दया करै इस पर एक दृष्टान्त है कि किसी उस्ताद ने बादशाह के लड़के को शिष्य करके विद्या और नीति सब सिखलादी बादशाह का लड़का विद्या में निपुण होगया उस्ताद ने बादशाह से विनय की कि जो अपराध क्षमा होय तो एक बात इस लड़के को और सिखलाऊं बादशाह ने आज्ञादी उस्ताद ने एक दिन उस लड़के को बे अपराधबज़त मारा बादशाहने उसका कारण निश्चय किया उस्तादने कहा कि इसको बादशाहत करनी है इस वास्ते इसको दया अवश्य चाहिये जो यह आपमार खाने का दुख नहीं जानता तो उसको दूसरे के मारने से कभी दया नहीं होती इससे अन्याय होता इस कारण मैंने इसको मारा है अब तात्पर्य यह है कि जो आप भूखा रहेगा तो दूसरे भूखे का उसको दर्द आवैगा दूसरे भूख प्यास को सह सके तीसरे अपने खाने के बदले कुछ पुण्य करै और कन्दमूल फल का थोड़ा आहार करै जिससे कि आलस न हो तो भजन करै अब लोग क्या करते हैं कि रोज तो बिचारों को दाल रोटी भी कठिनता से प्राप्त होती है व्रत के दिन दूध मलाई पेड़ा बरफी खातेहैं हररोज घर और दुकान आदिके कामो

से सावकाश नहीं मिलता व्रतके दिन बागोमें सैर करते हैं और सतरंज गंजीफा खेलते हैं या सो रहते हैं अब देखिये कि जब पड़े बरफी आप खाये तो पुण्य कहांसे करै और जब बहुतसा पेट भरा तो भजन कहां से होय सतरंज गंजीफा खेले या सो रहे सो और भी पापकमाये और अहंकार यह है कि हम व्रती है और जो कोई भूखा पिआसा आया तो जवाब है कि आज देनाही है भला ऐसे लोगों को किस प्रकार मालिक का दर्शन प्राप्त होगा परंतु व्रतीसाहब से पूछिये तो उनका यह उत्तर है कि हमारी मुक्ति में क्या संदेह है जो वेद शास्त्र सच्चे हैं तो मैंभी सच्चा हूं ऐसा लिखा है कि एकादशी के व्रतसे मुक्त होती हैसो मैंने व्रतकिया मेरीमुक्त होगी वाह साहब क्या अच्छा व्रत किया है और संजम आदि तो भाड़में पड़े और मुक्त तो आपके दरवाजेही पर खड़ी है अब ऐसे व्रतियों को नरक गामी कहैं तो क्या अनुचित है कि वेद शास्त्र को दोष लगावते हैं उनसे पहिले यह पूछिये कि जो एक एकादशी के दिन भूखे मरने से औ माल खाने से मुक्त होती है तो और व्रत क्यों करते हैं तीरथ जाचाके लिये क्यों मारे मारे फिरते हैं और कथा पुराण क्यों सुनते हैं समझ कर अज्ञानी बनना बड़ी कहावत कि (फलानी ने खसम किया बुराकिया नहीं उसने करके छोड़ दिया बहुत ही बुरा किया) अब ध्यान कीजिये कि शास्त्र ने जो एकादशी के व्रत से मुक्त कही है सो सत्य है मिथ्या नहीं जो विधि पूर्वक व्रत एकादशी का करै तो निस्संदेह व्रत भजन दान पुण्य करते करते मुक्ति पावेगा बहुधा लोग लड़कों से कहा करते हैं कि जहां अलफ बे ते पढ़ी तहां काबिल हुए कहिये केवल अलिफ बे ते पढ़ने से काबिल होजायगा परंतु हां बिना अलिफ बे ते पढ़े काबिल नहीं होसक्ता इसी प्रकार व्रत आदि करमों

की महिमा है और व्रतका यह अर्थ है कि निराजल निराहार रहै और देखिये प्रथम तो कोई कथा वारता में जाताही नहीं और जो जाता है तो ऊंघ कर सो रहता है एक दृष्टांत है कि कहीं कथा होरही थी एक मनुष्य कथा सुनते सुनते सो रहा बड़ांही किसी एक कुत्ते ने उन के मुंह पर मूत दिया जब यह कुलबुलाया तो कुत्ता भाग गया जब कथा होचुकी उस समय और लोगों ने कहा कि वाह आज कथामें क्या अमृतकी वर्षाभई वह मनुष्य जो सो रहा था बोला कि वास्तव में अमृत बरसा मेरे मुंह में भी अमृत की बूंदें आईं परंतु कुछ खारी खारीसी थी अब देखिये ऐसे लोगों को परमारथ में कब प्रतीति हुई जो पेमाष को अमृत समझै परंतु हां यह सब जिनका ऊपर वर्णन हुआ है उनसे बहुत अच्छे हैं जो कुछभी नहीं करते भला इन्होंने गंगा असनान तो किया खैर भाई बंधूकोही खिलाया कथा में गये जो सुना सोई सही व्रत करके दिन भर भूखे तो रहे एक दृष्टांत है कि कोई मनुष्य खाटके ऊपर माला जप रहा था किसी ने आन कर पूछा तुम क्या कर रहे हो उसने उत्तर दिया माला जपता हूं उसने कहा कोई राम राम खाट पर भी जपता है जपने वाले ने पूछा कि अरे भाई तू कहां जपता है उत्तर दिया कि मैंतो कहीं नहीं जपता तब उसने कहा खैर तुमसे तो अच्छा हूं अब जो मनुष्य विधि पूर्वक तीरथ व्रत पूजा करते हैं और कथा सुनतेहैं उनका क्या कहना देखो वह मनुष्य जिन्होंने किसी वासना के विना चित्तसे कथा सुनी उनको वास्तव में अमृत प्राप्त हुआ कि उनका चित्त प्रसन्न और शुद्ध हुआ ईश्वरकी ओर प्रेमप्रीत अधिकहुई ऐसे सतसंगके बलसे काम आदिक छूट कर सील संतोष दया धर्म्म सत्य बोलना दीनता उदारता जगत से वैराग्य प्राप्त हुआ मोक्ष का अधिकारी हुआ

अब सीलका गुण सुनिये कि जिसको सील प्राप्त है वह ईश्वर के वचन को मानता है और आप सुख भोग कर दूसरे को भी सुखदाई होता है देखिये एक मनुष्य ने किसी सीलवान को गालीदी वह सीलवान चुप होरहा जो उसने उसके बदले में गालीदी तो अपना न्याव आप किया इससे मालिक को अपने सिर पर न समझा दूसरे अपने को दुख में डाला तीसरे गाली देने वाले को अधिक खतंच किया क्योंकि जिसने गालीदी उसने अपने को बलवान समझा था वह गाली खाकर चुप न रहैगा जो कुछ प्राकरमी होगा तो मार बैठेगा नहीं तो गालियां ही और देगा अब उस के जीम्में और अपराध बढ़ा और अपनी भी हानि बहुत हुई अब बहुतोंको खबरहुई उपद्रव बढ़ा और जो एकगाली खाकर चुप होरहा तोएक गालीही रही और गाली देने वाला आप लज्जित होगा और क्षमाचाहेगा क्योंकि क्षमावाले की दुरजन हानिकभी नहीं करसका एक दृष्टांतहै कि जहां घास फूस नहीं है वहां जो आग गिरी तो क्या जलावेगी दूसरे उपाधि न बढ़ी और न दूसरे ने जाना औ मालिक प्रसन्न रहा स्वामी की आज्ञा का प्रति पालन हुआ ॥

दोहा ॥

सील क्षमा जाघट बसे सोनर प्यारा होय ।
बिन्द्रावन उस दास परदया करे सब कोय ॥

अब संतोष का वृत्तांत सुनिये यद्यपि संतोष से धन नहीं उत्पन्न होता परंतु जो बातधन से प्राप्त होती वही संतोष से प्राप्त होती है अर्थात् आनन्द जो संतोष से दुख अत्यंत दूर नहीं होता परंतु दुख सहजाने की सामर्थ होजाती है वह समझता है कि सब प्रारब्ध और ईश्वर की इच्छा से होता है और ईश्वर की इच्छा अनुसार चलना योग्य है इससे क्यों रोवे और देखिये जो प्रारब्ध को नहीं मानते

तो आपही दुख उत्पन्न किया होगा फिर रोना किस लिये जो स्वामीके यहां अन्याय समझते हो तो भी रोना नहीं बन सक्ता क्योंकि जो जबरदस्त की इच्छा के विरुध किया तो यह और भी दुख देगा जो तुम स्वामी को नहीं समझते और ऐसा ध्यानहै कि जो होता है वह आपसे आप होता है फिर रोनेसे क्या होगा इससे सब प्रकारसे संतोष करना उचित है संतोष प्राप्त करने के लिये ऐसा समझना चाहिये कि मेरे पास कितना आवश्यकता से अधिक है और मुझसे अधिक दुखी कितने और हैं कोई सन्तोषी घोड़े परसे गिर पड़ा उसका हाथ टूट गया वह ईश्वर का धन्यवाद करता है कि बड़ी कृपा हुई जो गर्दन नहीं टूटी नहीं तो जानसे मरजाता किसी संतोषी का घर जल गया परंतु उसके दो घर और भी थे किसी मनुष्य ने संसारी रीत व्यवहार से आन कर उससे कहा कि बड़ा पश्चाताप है कि आप का घर जल गया संतोषी ने कहा कि मुझै आपकी ओर का बड़ा पश्चाताप है कि आपके एक ही घर है मेरे तो अब भी दो घर वर्तमान हैं वास्तव में संतोष बड़ीवस्तु है जिन मनुष्यों ने संतोष के बलसे अपनी इच्छा इस संसार में दबाई है परलोक में ईश्वर उनकी इच्छा को सुगमता से पूरी करैगा तात्पर्य्य यह है कि यहां भी आनन्द और वहां भी आनन्द ॥

दोहा ॥

मनके हारे हार है मन के जीते जीत।
पारब्रह्म को पाइये मनही की परतीत ॥

जिन्होंने संतोष करके मन मारा है उन्हों ने संपूर्ण ब्रह्मांड को जीता है ॥

दोहा ॥

गोधन गज धन बाज धन और रतन धन खान।
जब आवे संतोष धन सब धन धूर समान ॥

दृष्टांत है कि किसी राजा ने संपूर्ण जगत को जीता और अपना नाम सर्वजीत रक्खा सब उसको सर्वजीत कहते थे परंतु उसकी मा उसको सर्वजीत नहीं कहती थी राजा ने अपनी माता से पूछा कि तू मुझै सर्वजीत क्यों नहीं कहती उसकी माता ने उत्तर दीया कि मैं तुझको सर्वजीत जब कहूं जब तू फ़साने फ़क़ीर को अमुक अस्थान पर है जीत आवै राजा अत्यंत हैरान हुआ कि माता क्या कहती है बड़े २ राजा महाराजा मैंने जीत लिये फ़क़ीर जीतना क्या है परंतु राजा फ़क़ीर की ओर रवाने हुआ वहां क्या देखता है कि एक दुरबल फ़क़ीर बुरी सूरत बनाये बैठा है कि वहां राजा जा खड़ा हुआ और सोचता है कि इस को क्या जीतूं मेरा एक आदमी इसको उठाले जा सक्ता है फ़क़ीर ने राजा से पूछा कि तेरा यहां आनेसे क्या प्रयोजन है राजा ने सब वृत्तान्त वर्णन किया फ़क़ीर ने कहा कि वास्तव में मुझको जीत सक्ता है परंतु तूने अभी तक अपने घर के शत्रु को नहीं जीता जो उसको जीतले तो तेरी माता भी तुझको सर्वजीत कहै राजा ने शत्रु का वृत्तान्त पूछा तब फ़क़ीर साहब ने कहा कि तेरा मन तेरा शत्रु है जो तुझको खराब कर रहा है जो तू एक मनको जीतै तोइस प्रकार तृष्णा करके बैठंगा क्यों मारा फिरै उस समय राजा को ज्ञान हुआ और घरको लौट आया उसकी माने पूछा कि फ़क़ीर को जीता उसने जवाब दिया कि अबतो मैंने अपने को जीता है उसकी माता ने उसी समय सर्वजीत कहा अब देखिये कि मनके जीतने से सर्वजीत हुआ वाहरे संतोष तुझमें न कुछ रगड़ा है न झगड़ा है और सर्वजीत करादे ता है सत्य है मन जीता तो जगजीता ॥

दोहा ॥

साईं सत संतोष दे भाव भगत विश्वास ।
सिदक सबूरी सांचदे मांगे दादू दास ॥
जीवत माटी होरहो साईं सनमुख होय ।
दादू पहले मर रहे पाछे मरै सब कोय ॥
संतोषी सब नरनतें सुखी रहत सबकाल ।
बिन्द्रावन संतोष सम दूजा धन नहिमाल ॥

अब दया का चमत्कार सुनिये जो दया करता है वह मालक का पियारा होता है आप भी सुखी रहता है और दूसरे को भी सुख पहुंचाता है ॥

दोहा ॥

दया धर्म का मूल है नर्कमूल अभिमान ।
तुलसी दया न छोड़िये जब लग घट में प्रान ॥

चित्तको वसीभूत करना हजारों तीर्थ से उत्तम है चाहै अपना मन वस करै चाहै औरों का मन आनन्द देकर बस करै दया उसको कहते हैं कि यथा शक्ति अपने दुख को न समझ कर दूसरे को सुखदे जो उसकी देह से दूसरे का दुख दूर हो सक्ता होतो आप कष्ट सहै जो अपना सर्वस्व जाय तौभी निषेद न करै दयावान साधू हैं निरदई कसाई जो धन से दूसरे का काम होय तो धन से सहायता करै जो जबान से कलम से आशीर्वाद से दूसरे का काम बनै उसमें न्यूनता न करै जीव की रक्षा सब दया से उत्तम है (अहिंसा परमो धरम) यद्यपि इस बचन में किसी मतमें निषेध नहीं होसक्ता परंतु बाजे बाजे मत में जीवका मारना खाने के वास्ते उचित है यद्यपि इसके खंडन में हजारों शंका होसक्ती पर अपने को कुछ झगड़े से काम नहीं है परंतु किसी मतमें मांस का खाना कुछ पुन्य नहीं है और न योग्यही है बहुधा मतों में निषेध है इससे हर

प्रकार से मांस खाने से परहेज करना चाहिये क्योंकि खाने में लोभ के स्वाद के सिवाय कुछ लाभ नहीं और वास्तव में प्रथम तो यह वस्तु अशुद्ध है दूसरे मनुष्य के चित्त को निरदई कर देती है यह बात प्रकट है कि जो मांसखाते हैं उनको जीव मारने में दया नहीं होती है निष्प्रयोजन भी चितके आनन्द के लिये जीव हत्या करते हैं और बदला निस्संदेह देना पड़ता है किसी को दुख देना सब प्रकार बुरा है इस हेतु से मांस खाने को त्याग करनाही अवश्य है जब मनुष्य में दया होगी तो सब सुकर्म बन सक्ते हैं नहीं तो कोई नहीं बन सकता इससे दयाको सबसे पहिले धारना चाहिये ॥

दोहा ॥

दया धर्मसे है बड़ी सकल मतन के माहिं ।
दया हीन जो पुरुष है बिन्द्राबन नर नाहिं ॥

अब धर्म का वृत्तान्त सुनिये कि राजा हरीचंद्र अयोध्या का राजा था उसके राज्य में सब बर्तता था एक बार अन्नका दाना बोया जाय तो सातबार फल दे आधा दूध गायके बच्चे को मिलता था १२ वर्ष से पहले लड़कों का विवाह होता था प्रजा पर अन्याव न था और सब प्रसन्न थे दुख और दरिद्रका लेश भी न था एक समय उस राजा को यज्ञ करने की इच्छा हुई विश्वामित्रने कहा कि यज्ञ मैं करव ऊंगा और यह कह कर विश्वामित्र स्वर्ग को चले गये राजा ने बहुत काल तक राह देखकर यज्ञ प्रारम्भ करा दिया विश्वामित्र को खबर हुई कि राज का यज्ञ प्रारंभ होगया तब उनको बहुत क्रोध हुआ और जो कि इन्द्रादिक अन्य देवताओं को भय था कि हरिश्चन्द्र राजा बड़ा सत्यवक्ता है यह कभी न कभी हमारा राज्य लेगा सबने विश्वामित्र को यह बहकाया कि आप जाकर हरिश्चन्द्र का

सत्त डिगावें विश्वामित्रने एक कुत्ते का रूपधर के उसके बागमें पहुंच कर उसबाग को उजाड़ दिया राजाको खबर हुई राजा ने अपने साथियों को लेकर आया उनके आतेही कुत्ता भाग निकला राजा और उसके साथियों ने पीछा किया परंतु कुत्ता हाथ में न आया साथी सब हार कर थक रहे राजा अकेला कुत्ते के पीछे चला गया आगे एक नदी आई विश्वामित्र ने कुत्ते का रूप छोड़ कर ब्राह्मण का रूप बना लिया और एक लड़का और लड़की भी रच कर राजा के पास आया राजाने दण्डवत की इन्होंने आशीरवाद दी तब इन्होंने राजा से कहा कि राजा यह कन्या बारावरस की होगई है और लड़का भी वर्तमान है अभी इसका विवाह कर दे राजाने अपने मनमें विचार किया कि यहां कैसे कर दूं परंतु ब्राह्मण की हठ देखकर वहीं उसका विवाह करके लड़की से कहा कि तू जो चाहै सो मांगले राजासे लड़की ने प्रथम देनेका इकरार अपनी इच्छा के अनुसार करवालिया फिर राजा से कहा कि अपना सर्वस्व औ राज दे अब राजा घबराया कि जो नहीं देता हूं तो सत जाता है राजा ने संकल्प कर दिया तदनंतर ब्राह्मण बोला कि महाराज मुझै भी कुछदो यह तो आपने इस कन्याको दिया अब राजा घबराया कि अब देनेको क्या रहा और ब्राह्मण ने सवा मन सुवर्ण मांगा राजा ने कहा कि मुझै बेच ले अपना भी संकल्प कर दिया अब राजा घरआया और वह ब्राह्मण के साथ जाने लगा राजा की रानी और लड़का भी उसके साथ हुआ मारग में सूरज की ऐसी गरमी हुई कि जीव जंतु और वृक्ष जले जाते थे और ये तीनों राजा रानी और लड़का अत्यंत पियास से पीड़ित थे ब्राह्मण ने पानी लाकर रानी के आगे रक्खा और कहा कि जल पीलो जिस में देह रहै रानी ने कहा कि पतिके विना पिये पहले मेरे

पीने से मेरा सत जाता रहेगा पानी न पिया ब्राह्मण ने लड़के से पानी पीने को कहा उसने भी उत्तर दिया कि जब तक माता पिता जल न पियें तब तक मेरा धर्म नहीं राजा के पास पानी ले गया राजा ने कहा कि जब तक संकल्प पूरा न होगा तब तक मैं पानी नहीं पीसक्ता तात्पर्य्य यह है कि किसी ने जल नहीं पिया ब्राह्मणने बनारसमें राजा और रानी और लड़के को बेचने के वास्ते खड़ाकर दिया पहिले एक बेस्या आई और उसने रानी को मोल लेना चाहा किंतु अधौन भर सुवर्ण देने को राजी होगई उस समय रानीने बेस्या से पूछा कि तू कौनहै उसने उत्तर दिया कि मैं बेस्या हूं सबका चित्त मोहलिया करती हूं अपने शरीरका बहुत सासिंगार करके सदा सुहागन बनी रहती हूं यह सुनकर रानी को बहुत कलेश हुआ और प्रार्थना की कि हे ईश्वर इससे मुझे बचाले उस समय एक बन्दर ने आकर उस बेस्या को इतना हैरान किया कि वह भाग गई फिर एक ब्राह्मण इस रानी और लड़के को मोल ले गया और हरि श्चन्द्र को एक स्वपच मोल ले गया और मोल में सवामन सोना मिला वह राजा ने उस ब्राह्मण को दिया स्वपच ने राजा को दो नौकरियां बतादी एक तो मरघट पर जो मृतक आवे उसके घर वालों से सवा रुपिया और एक बलिस्त कपड़ा उसके कफन मेंसे ले लिया करै राजा इसी प्रकार से करने लगा तब भी विश्वामित्र को संतोष न आया फिर राजा के सत्त डिगाने की औ युक्त की अब सर्प बनकर राजा के लड़के को जो बाग में ब्राह्मण के लिये पूजा के फूल लेने जाया करता था उसको काटा लड़का मरगया रानी लड़के को मरघट पर लेगई हरिचन्द्र ने सवा रुपया और कपड़ा मांगा रानी ने कहा कि पुत्र तुम्हारा ही है राजा ने कहा मैं यह नहीं सुनूंगा अपने मालिक की आज्ञा भंगन

करूंगा रानीके पास रुपया न था राजाने रानी की चादर लेली जब लड़के को मरघट पर रखने दिया खैर रानी लड़के को बहाकर उसके शोक में किसी अस्थान पर पड़ रही विश्वामित्र ने उसी देश के राजा के घर में चोरी करके एक मोतियों का हार लाकर उसरानी के गले में डाल दिया रानीसोक में पड़ी थी उसको कुछदेहानुसंधान भी नथा और वहां विश्वामित्र ने राजा से कहा कि तुम्हारा चोर पकड़ा है उसके मनुष्यों को भेजाकर रानी के गले में हार पड़ा हुआ दिखला दिया अब रानी पर मार पड़ने लगी कोई पूछता नहीं राजा ने हुक्म दिया कि इसको स्वपच की मार-फत वृक्ष से लटका कर मार डालो और यह रानी उस स्वपच के पास भेजी गई कि जिसका नौकर राजा हरिश्चन्द्र था उस स्वपच ने हरिश्चन्द्र से कहा कि इसको मार डालो हरिश्चन्द्र ने रानी को वृक्ष से लटका दिया उस समय एक मेला था हजारों को रानी का स्वरूप देख कर दया आती थी और विलाप करते थे हरिश्चन्द्र को मारने से रोकने लगे रानीने कहा कि राजा अब विलंब मत कर ऐसा समय न मिलैगा कि गंगा के तटपर तेरे हाथ से मेरी मृत्यु होय राजा ने तलवार उठाई ज्योंहीं मारने को चाहा था त्योंहीं भगवान प्रकट हुए हाथ रोक कर रानी को वृक्ष से उतर वाया उसके लड़के को गंगाजी ने लाकर खड़ाकर दिया विश्वामित्र अत्यन्त लज्जित हुए और अपने किये का फल पाया ॥

दोहा ॥

जो तोकू काटे बोवे ताको बो तू फूल ।
तोको फूल के फूल है वाको है त्रिशूल ॥

जयदेव ब्राह्मण की कथा भी इस दोहे की पुष्टता करती है जयदेव ब्राह्मण ने किसी सेवक के यहां से कुछ रुपया

पाया उसे लेकर चले मारग में चार चोर मिले उन्होंने परस्पर में सलाह की कि इस ब्राह्मण को क्या करना चाहिये किसी ने कहा कि इसको मारडालो किसी ने कहा कि छोड़ दो किसी ने कुछ कहा किसी ने कुछ अन्त को यह सलाह ठहरी कि इसके हाथ पैर काटकर एक गढ़े में डाल चलो तात्पर्य्य यह है कि ऐसा ही करके सब माल ले गये दैवयोग्य से एक दिन पीछे उस ओर राजा की सवारी निकली लोगों को उस गरतमें से एक प्रकार का प्रकाश मालूम हुआ तब लोगों ने जाकर जो देखा तो क्या देखते हैं कि एक मनुष्य के हाथ पैर तो कटे हुए हैं परंतु शेष देह चमक रहा है यह सुनकर राजा आप वहां गया कि दर्शन कर जयदेव को वहां से उठा कर अपने घर लाया जयदेव ने राजा को उपदेश किया कि साधु सेवाकर राजा करने लगा जो साधु आवै उसको सेवा खूब होय जो छल कर कोई साधु का रूप रखकर आवै उसकी भी यथोचित सेवा होय चोर भी जिन्होंने जयदेव के हाथ पैर काटे थे वह इस राजा का वृत्तांत सुनकर साधू का भेष बना कर राजा के यहां आये जयदेव ने इनको पहचाना और राजा से कहा कि इनकी सेवा बहुत अच्छे प्रकार से कर राजा ने खूब सेवा की और चोरों को विदा करती समय जयदेव के कहने के माफिक दो बहिंगी रुपयों की उन चोरों के साथ करदी मारग में एक बहिंगी वाले ने चोरों से पूछा कि महाराज राजा ने तुम्हारी सेवा और साधुओं से बहुत अधिक की इसका क्या हेतु था उन चोरों ने कहा कि हमने एक समय जयदेव की जान बचाई थी इतना कहतेही पृथ्वी फट गई और चारों चोर खड़े के खड़े उसमें समा गये वह कहार धन समेत लौट कर आये और जय देव और राजा से वृत्तांत कहा जयदेव जी सोच से कटे

हाथ पटक ने लगे उसी समय उनके हाथ पांव दुरुस्त होगये अब सत्य बोलनेका महातम सुनो सत्य बोलन महा पुण्य कहा है परंतु अत्यंत कठिन है एक दृष्टांत है कि कोई अमीर अपनी विलायत से अपने बादशाह की आज्ञा अनुसार दूसरी विलायत में गया जिस दिन उस विलायत में पहुंचे उस दिन पहुंचने से पहले वायु अत्यन्त तीव्र चली कि जहाज के डूब जाने का भय था परंतु निर्विघ्न पहुंचा उस विलायत के बाजे अमीर लोग उसकी अग्र गामिता को आए और कहने लगे कि आज आपको अत्यन्त खेद हुआ होगा हमको पश्चात्ताप है और अत्यंत सोच होरहा था यह अमीर इन बातों को सुनकर अपने चित्त में कहने लगा कि यह लोग मिथ्या बोलते हैं इनको मेरा क्या सोच है उस विलायत के अमीरों ने इसको एक मकान में उतारा इस अमीर ने मकान का किराया पूछा तब उस विलायत के अमीरों ने सिष्टाचारी दिखा कर यह कहा कि मकान आपही का है इसका क्या किराया होगा यह अमीर चुप होरहा दूसरे दिन उस अमीर ने अपने आराम के लिये दो एक दी वारैं उस मकान की गिरादीं जब कि मकान के मालिक को खबर पहुंची कि अमीर ने दीवारैं गिरा दीं आन कर अमीर से कारण पूछा और कहा कि मकान आपको रहने को दिया था या गिराने को अमीर ने जवाब दिया कि तुमने कल कहा था कि मकान आपही का है हमने अपना समझ कर अपने आनन्द के वास्ते तुड़वाया हम यह नहीं जानते थे कि तुम झूठ बोले ऐसी ही कई एक बातैं सिष्टाचारी की और हुईं कि जिनको इस अमीर ने झूठा पाया उस अमीर ने अपने बादशाह को अरजी लिखी कि ईश्वर के लिये मुझको जल्द यहां से बुलालो यहां के आदमी बहुत झूठे हैं चित्त में कुछ और मुंह में कुछ और फिर अपने को सच्चा समझते हैं

और हम जो कि चित्त में होता है वही मुंह पर लाते हैं तो हमको जंगली और निर्बुद्धी कहते हैं अब देखिये कि सच बोलना कैसा कठिन है चाहिये तो ऐसाही बोले जो ऐसा न बन पड़े तो इतना अवश्य है कि वह बात न कहै जिसमें दूसरे का नुक़सान होय यद्यपि बहुधा सिष्टाचारी में मिथ्या शब्द भी निकलते हैं और दूसरे का चित्त प्रसंन्न होजाता है परंतु अधिकता उसकी भी अच्छी नहीं क्योंकि (अति सर्बत्र वर्जंत) फिर मिथ्या बोलने का अभ्यास हो जायगा और मति बोलने के अस्थानापन्न झूठी प्रसंसा हो जायगी इसी कारण बहुत मुलाकात करना भी निखेद है सिष्टाचारी में वृथा झूठ बोलना पड़ता है किसी की निंदा करनी पड़ती है किसी की वृथा प्रशंसा करनी पड़ती है झूठे २ इक़रार करने पड़ते हैं और मिथ्या बोलना महा पाप है इससे सत बोलना सब से उत्तम है सत्य बोल नाहीं ईश्वर की प्रसन्नता का कारण है सीधे मारग में कोई नहीं भूलता ॥

दोहा ॥

साच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप ।
जिनके हिरदे साच है तिनके हिरदे आप ॥

अब दीनता का वृत्तांत सुनिये दीनता ईश्वरको भी पसंद अर्थात् अभीष्ट और मनुष को भी रुचती है किसी भक्त की पुस्तक में ऐसा लिखा है कि जबराइल खुदा के फिरिश्ते जब खुदा के पास जाते थे मारग में सैतान मिला उसने पूछा कि हजरत कहां जाते हो जबराइल ने कहा कि खुदा के पास जाता हूं शैतान ने कहा कि तुम खुदा के लिये क्या नजर लिये जाते हो जबराइल ने कहा कि खुदा सब का मालिक है और सब वस्तु उसकी उत्पन्न की हुई है भला मैं कौन वस्तु ले जाऊं शैतान ने कहा कि खाली हाथ भी

तो जाना उचित नहीं है तब जबराइल ने कहा कि तुम बताओ क्या लेजाऊं शैतान ने कहा कि न्याज अर्थात् दीनता लेजाओ न्याज खुदा के पास नहीं है इसलिये तो फ़ाके तौर पर होगी क्योंकि वह बेन्याज कहा जाता है यह न्याज अर्थात दीनता उसको नवीन वस्तु होगी जबराइल यह सुनकर चलने लगे शैतान ने कहा कि एक काम मेरा भी करते आना खुदा से मुझे मुक्त करालाना जबराइल ने कहा कि बहुत अच्छा कहूंगा जबराइल खुदा के पास गये खुदा ने कहा कि प्यारे मेरे वास्ते क्या लाया जबराइल ने कहा कि न्याज लाया हूं खुदा बहुत खुश हुए अब देखिये दुनियां में भी दीनता से सब प्रसन्न होते हैं और ईश्वर भी प्रसन्न होता है इससे दीनता ऐसी अच्छी वस्तु है कि दोनों जहान में प्यारी है ॥

दोहा ॥

नानक नन्हा हो रहो जैसो नन्ही दूब।
बड़ी घास जल जाइगी दूब खूब की खूब ॥
हरिजन तो हारा भला जीतन दे संसार।
हारा तो हरि से मिले जीता जम के द्वार ॥
कबीर जगमें बैरी को नहीं जेमन शीतल होइ।
यह आपा तू डाल दे दया करै सब कोइ ॥

और अभिमान करना शैतान का काम है जबराईल ने शैतान की दरखास्त खुदा से की हुकुम हुआ कि शैतान से कहो कि उसने आदम का कसूर किया है इससे उनीसे माफ़ करावे उसकी मोक्ष होगी यह हुकुम जबराईल ने शैतान से आकर कहा शैतान बोला कि वाह वाह जो यही मुझको करना होतातो खुदासे क्या मोक्ष मांगता देखिये ऐ शैतान से दीनता न हुई इससे जिसमें दीनता है वह मनुष्य खुदा और आदमी दोनों का प्यारा अब उदारता के गुण सुनिये

(चिराग़े रोशनी जगमें झकल है ॥ दिएकी रोसनी मह सर तल कहै) एक कहावत है कि कोई फकीर किसी दाता के घर पर गया और वहां जाकर आवाज दी है सूम कुछ दिला जोकि वह मनुष्य सबको देता था उस फकीर को भी दिया फकीर ने लेने के बाद आशीरवाद दिया कि सूम तेरा भला हो और फिर वही फकीर किसी कृपण के मकान पर गया वह किसी को कुछ नहीं देता था फकीर ने सवाल किया कि दाता कुछ दिला उसने दोचार गालीदी फकीर ने कहा कि दाता तेरा भला हो कोई दूसरा मनुष्य यह दशा देखकर आश्चर्यित हुआ कि फकीर ने दाताको सूम और सूमको दाता कहा उसने फकीर से जिह्न करके इस बात का भेद पूछा फकीर ने कहा कि जिसको तुम दाता देखतेहो वह वास्तव में सूम है कि अपनी जमा अंधा धुंध बढ़ाता है एक गुना देगा हजार गुना पावेगा जिसको तुम सूम कहते हो वह असल में दाता है इस वास्ते कि जो कुछ उसके पास है वह यहीं छोड़ जावेगा और वहां उसको कुछ न मिलैगा देखिये देना कैसा अच्छा पदार्थ है कि जिस से दीन और दुनिया दोनों सुधरते हैं ॥

दोहा

दाता आगे लक्ष्मी ठाढी रहे हजूर।
जैसे गारा राज को भर भर देत मजूर॥

देखि लीजिये गऊ का दूध बाटिका का फल कूप का जल और विद्या देनेही से बढ़तीहै ऐसेही धन का भी लेखा है जो दान करने में हानि भी हो तौ भी देना न बंद करै (पुन्य करते हेहू भी हानि तौ भी न छाड़ै पुन्य की बानि) परंतु विचार सहित देना बहुत फल दायकहै और बाजे देने में अपनी और दूसरेकी भी हान होतीहै सराबी के देने में प्रत्यक्ष में तो हानि ही दृष्टि पड़ती है और जोकि अपने

भाईबंध रिश्तेदारों को अपनी नामवरी के वास्ते देते हैं वह भी देना देना नहीं है परंतु तौ भी नेक काम है एक दृष्टांत है कि कोई मनुष्य अपने भाई बंधुओं को देता रहा उसको परलोक में उसके बदले कुछ न मिला उसने भगवान से कहा कि मैंने तो बहुत दिया है मुझको यहां उस पुण्य के बदले किस वास्ते नहीं मिलता वहां से उसको जवाब मिला कि तूने मेरे भाई बंध अर्थात साधू ब्राह्मण को नहीं दिया जो तुझे बदला मिले तूने अपने भाई बंधूओं को अपनी नामवरी के लिये दिया सो नामवरी का सुख तूने अपने जीतेही भोग लिया और जो तूने उनका हक़ दीया तो अब बदला कैसा जो तू मेरी राह पर उनसे भी सलूक करता तो बदला मिलता परंतु अब भी तूने हजारों से अच्छा किया किसीका हक़ न रक्खा भाईयोंके हक़से हलका हुआ भाई बन्धुओं की सेवा करने के पुन्य से तू मेरे पास तक पहुंचा अब देखिये जो विचार सहित दे और नाम की इच्छा नहो और अभिमान न हो तो इसका कितना बड़ा फल होगा देना इसको कहते हैं कि एक दाता था वह सदैव सदा बरत दिया करता था परंतु जब देता तो नैन नीचे कर लेता था किसी फ़क़ीरने यह देखकर कहा ॥

दोहा ॥

ऊंचे चंगुल देत हो नीचे करके नैन ।
कासो सीखी सीखना ऐसी बिधि से दैन ॥

उस दाता ने जवाब दिया ॥

दोहा ॥

देनहार सामर्थ है सो देहे दिन रैन ।
लोग नाम मेरा कहें तासे नीचे नैन ॥

परंतु अब लोगों की यह दशा है कि किसी के पुरखे कंगाल थे उस कंगाली में साधू ब्राह्मण को अपनी सामर्थ भर दिया

करते थे उनके लड़के बहुत बड़े आदमी होगये परंतु साधु ब्राह्मण को उतनाही जितना उनके पुरुषे देते थे दिया करते थे और अभिमान इतना कि जिसका अंत नहीं किसी मनुष्य ने कहा कि तुमको ऐसा योग्य नहीं है तुम बड़े आदमी हो अपनी सामर्थ्य के माफिक दिया करो उसने जवाब दिया कि पुरुषों की रीति नहीं काट सकते उस मनुष्य ने कहा कि हां जी सत्य है देने में तो पुरुषों की रीत और पैदा करने में अपनी रीत ठीक है अपने उपजन में तो रीत तोड़ दी परंतु देने में कभी न तोड़ियेगा नहीं तो बड़े अपराधी होगे ॥

दोहा ॥

लीक लीक गाड़ी चले लीकै चलैं कपूत ।
तीन चीज बेलीक की सायर सिंघ सपूत ॥

अब उनसे भी बड़े असामी का वृत्तांत सुनिये एक साहूकार बड़ा सूम था एक दिन वह बही लिख रहा था उस समय किसी ने आकर कुछ मांगा साहूकार ने कहा कि पहिले दिया था सो तो अब बहियां पोटनी पड़ी है और रात दिन रुपये की रक्षा करनी पड़ती है अब दूं तो न मालूम और क्या करना पड़ै उस मनुष्य ने जवाब दिया कि हे बुधि के स्याहजी जो तुम्हारा है इ तो दो तुम तो निःसुं देह मजदूरे हैा तुम कैसे पराया माल दे सक्ते हैा अब देखिये कि ऐसे मनुष्यों की क्या दशा होगी प्रथम तो सुकर्म नहीं करते और फिर दलीलों से अपने दिल को बिना कौड़ी पैसा खरचे समझा लेते हैं बड़े उस्ताद हैं और वास्तव में ऐसेही मनुष्य आंख के अंधे गांठ के पूरे नाम नैनसुख कहलाते हैं और दाता भी इन्हीं को समझना चाहिये कि जो कुछ पाया है वह सब छोड़ कर खाली हाथ चले जांयगे अब तुम ऐसों के मुंह पर धूल डालो और

एक गरीब घसियारे का हाल सुना कि एक राजा तीरथ पर गया और बहुत सा पुन्य किया उस घसियारे ने चित में कहा कि राजा ने तो बहुत पुन्य दान किया तुमको भी कुछ पुन्य करना चाहिये घसियारे के पास कुछ धन तो मौजूद न था परंतु जाली और खुरपा बेच कर पुन्य कर दिया जब राजा तीरथ से लौटा तो उस दिन धूप की अत्यन्त उष्णता थी साथ के सब आदमी घबराये जाते थे परंतु उस घसियारे के सिर पर एक टुकड़ा बदली का चला आता था उसको धूप नहीं मालूम होती थी इसकी खबर राजा तक पहुंची राजाने घसियारे को बुला कर सब बात निश्चय किया परंतु राजा के समझ में न आया किसी पण्डित ने राजा से कहा कि महाराज इस घसियारे ने तीरथ पर बहुत पुन्य किया है इस कारण बदली इसके सिर पर रहती है राजा को आश्चर्य हुआ कि यह घसियारा मैं राजा मैंने इतना दान किया है इस बेचारे घसियारे ने क्या पुन्य किया होगा पण्डित ने कहा कि महाराज उसने केवल खुरपा जाली पुन्य किया है परंतु देखिये कि उसके खुरपा जाली ही सर्वस्व धन था उसने तो सर्वस्व दान कर दिया और आपने यद्यपि लाख रुपए पुन्य किये हैं परंतु आपके पास अब भी करोड़ों का धन है राजा चुप होगया अब देखो घसियारे ने अपनी योग्यता से बाहर काम किया परंतु ऐसा देना बहुत कम होता है यह बड़ी हिम्मत वालों का काम है अथवा जो मनुष्य संसार से अत्यंत प्रयोजन न रखना चाहे उससे बन सक्ता है और जो संसारमे भी प्रयोजन रखना चाहै उसको इस बात पर अमल करना चाहिये (आरा रुज बस्तन और बरमा मत हे) आरे का यह सुभाव है कि जब लकड़ी चीरता है तो बुरादा दोनों ओर डालता है संसारी लोगों को आरे के समान रहना चाहिये अपना भी काम चलावें

और पुन्य भी करैं और साधू फ़कीर को बरमे के समान होना चाहिये प्रथम तो फकीर को मांगना न चाहिये और जो ले तो रखना न चाहिये और जो इसके बिपरीत अमल करते हैं वह फ़कीर नहीं होसक्ता परंतु सूरत फ़कीर की है फकीर साधूसे यह प्रयोजन नहीं है कि बाणी जानताहो और बाना रखता हो नहीं जिसका मन साधू हुआ हो हां जो मकान धारी है उनको लेना और रखना इस तरह पर कि कोई दरवाजे परसे भूखा न जाय और साधुओंकी टहल होती रहै योग है वह पर उपकारी होते हैं और जिसका अमल इसके बिपरीत है उनको चित्तही में समझ लीजिए जैसे हैं तैसे हैं देना ऐसा चाहिये कि दूसरा न जानै किंतु यह कि दाहिने हाथसे दे और बांयां हाथ न जानै इससमय में देना कठिन है धन लड़के से भी प्यारा है जो धन देते हैं वह बड़े सूरमा हैं ॥

दोहा ॥

तन मन से सब कोई मिलै धनसे मिलै न कोइ ।
जो कोई धनसे मिलै सो कलि बिरला होइ ॥

गुप्त दान महादान कहा है क्योंकि उससे यह लाभ है एक तो दानी को अभिमान नहीं होसक्ता दूसरे नामवरी से बचा तीसरे दान लेने वाले की प्रतिष्ठा ना भंग हुई दानीको अन्त में संपूर्णदान का फल मिलैगा परंतु कंजूस को बड़ा बहाना मिला जो उनसे दान को कहो तो कहते हैं कि हम गुप्त देते हैं पर सत्य है कि दान के बदले गालियां देते हैं रोटी देनेके बदले घरके किवाड़ देते हैं अन्त को अपनी जान जमराज की फांसी में फसाते हैं और धन माल यारों को खरचने को छोड़जाते हैं हां जो गुप्त दान करै तो ठीक है पर अधिकारी प्रति है जिनके अभिमान वस है नामवरी का सुख तुच्छ जाना है और अन्तके लिये

कोई कामना नहीं उसको प्रत्यक्ष दान देना हानि नहीं कर सक्ता किंतु और पुरुषों को उपदेश देने वाला है और गुप्त दानी से सबका प्रयोजन नहीं निकल सक्ता है क्योंकि उसको सब जानते नहीं और देखो सदावर्त यज्ञ आदि गुप्त नहीं होसक्ते एक कंजूस को और बहाना होता है कि दान पात्र को देना चाहिये अब कोई न कोई खोट मंगता में लगादी देनेसे छुट्टी पाई और जो दूसरा समझावे तो क्रोध करते हैं और चरचा की यह रीति है कि अपने वचन का पक्ष न करै जो दूसरा सत्य कहै तो ऐसा समझ कर मानले कि एक बातही सीखी देखिये जब एक हाथ गंदा होजाय तो दूसरा हाथ उसको शुद्ध करताहै परंतु आप भी और सफाहोजाता है दूसरी प्रकार चरचा होनी चाहिये और जब तक चरचा में सहृदता रहती है उस समय तक दूसरे का कहना समझ में आता है और मनुष्यों को यह भी समझना अवश्य है कि छोटी २ बातों पर विद्वान की परीक्षा नकरै एक दृष्टांत है कि एक बादशाह बहुत हुशियार था किसी दूसरे बादशाह ने उसकी हुशियारी की परीक्षा लेनी चाही उसने अपना वकील भेजा और इस सवाल का जवाब पूछा कि अमुक सूबेके अमुक इलाके के अमुक कसबेके अमुक जमीदार के जोता है उसके कौबिस्वे और कहां पर है वकीलने यह सवाल किया कि बादशाह ने जवाब दिया कि यह मेरी अन्त की डेवढ़ी पर जो दफ़्तर है उसके दरवाजे पर जो सुहर्रिर है उससे पूछलो वकील अत्यंत लज्जित हुआ अब देखिये कि बादशाह की होशि-यारी और विज्ञता क्या ऐसी छोटी और तुच्छ बातों पर है संबंधित होती है अब प्रयोजन इसका यह है कि बाजे मूर्ख एक दो बातें सुनकर सवाल करते फिरते हैं और प्रत्यक्ष में अपने को बुद्धिमान बतलाते हैं तोऐसे मनुष्य

सतसंगी की बराबरी नहीं कर सक्ते चाहै। सतसंगी से उस मूर्ख का जवाब दिया जाय या न दिया जाय चाहै। सतसंगी में छोटा मोटा अवगुन भी होइ तौ भी मूर्ख उसके समान नहीं होसक्ता है यथा एक पहलवान हैं दैवयोग से एक चिड़िया उनके बराबर होकर फुर्र से निकल जाय और वह पहलवान चौंकजाय तौ क्या उसकी पहलवानी जाती रहतीहै और जो सतसंगीहै उनको सब रहन सोभा देतो है चाहै। माला कंठी पहरै या न पहरै बाजे मूर्ख यह भी कहा करते हैं कि वृद्ध अवस्था में ईश्वर का स्मरण करलेंगे अब देखिये क्या अज्ञानताहै प्रथम तो वचन झूठा क्योंकि भरोसा नहीं कि बुढ़ापा आवेगा या नहीं दूसरे जो तरुणता में सावकाश है और हाथ पैर चलते हैं और ज्ञान अस्थिर रहै उस समय को तो संसार में लगाते हैं और वृद्ध अवस्था जब कि हिला चला भी न जायगा उस समय में ईश्वर के स्मरण का विचार करते हैं अच्छा समय तो अपने काम में लाते हैं और बुरा समय ईश्वर के अर्पण किया चाहते हैं कहिये ऐसे मूर्खों की मुक्ति होनी है और बाजे मूर्ख ऐसाभी कहा करते हैं कि सतसंग तो बहुत किया परंतु कुछप्राप्त नहीं हुआ यह उनका कहना अत्यंतमिथ्याहै सच्चे दिलसे सतसंग नहीकिया नहीं तो महा आनन्द प्राप्त होता इसमें अपराध उसीका है एक दृष्टांत है किकिसी चेलेने अपने गुरूसे कहा कि महाराज मुझकोटहल करते इतना काल बितीत हुआ परंतु कुछ सिद्ध नहीं हुआ गुरूजी ने कहा कि जा वह लोहे डिबिया सिजमें पारस रक्खा है उठा ला चेला हैरान हुआ कि जो पारस है तो डिब्बा लोहे का कैसे बना रहा डिब्बा सोने का होना चाहिये था जब वह डिब्बा लाया गुरू ने डिब्बा खोल कर दिखलाया उसके भीतर पारस था परंतु पारसअरु डिब्बे के

बीच में एक कपड़े की तहथी गुरूजी ने कहा कि इसी प्रकार कपट की तह तेरे भी चित्त में रही है तुझको प्राप्त किस तरह से होय और देखिये कि बहुधा लोग यह भी कहते हैं कि क्या सत्संग करें साधों का काम क्रोध लोभ मोह गया ही नहीं हमारा क्या खो वैंगे दश बीस का नाम गिना दिया क्या खूब जरासी ही बात में अपना पीछा छुटा इसको अज्ञानता के सिवाइ क्या कहैं हां माना परंतु पांचों उंगली एकसी तो नहीं होतीं दूसरे साधू कैसा ही होय तुमको सब प्रकार से शिक्षा ही करेगा तेरे मतलब में संदेह नहीं है ॥

दोहा ॥

नील कंठ कीड़ा भखे मुखे बिराजे राम ।
हमको अवगुण से कहा पड़ी गुणही से काम ॥

और हम पूछते हैं कि फ़कीरों का सत्संग तो इस प्रकार छोड़ा फिर आपने किसका सत्संग स्वीकार किया यही उत्तर देंगे कि संसारी लोगों का वह फ़कीर संसारी आसक्त मनुष्यों से भी गये बीते हैं यह नहीं सुना है कि (लटा हाथी बटेरे बरोबर) अब ऐसी अज्ञानता जब निकलै जब उनके ऊपर बचनों की मार पड़ै (मारके आगे भूत भागै) इस कहावत का असिद्ध वृत्तान्त यह है कि कोई मनुष्य विवाह करने को गया उसकी इस्त्री ने पहिले यह बचन बन्धकाकर लिया था कि वह पति के शिरमें सौजूतियां प्रति दिन मारैगी जो जूते खाने होंय तो विवाह होय जो कि यह मनुष्य काम बस था जूता खाना अंगीकार कर लिया और बहुत दिनो तक जूते खाता रहा जब बहुत लाचार हुआ और जूते लगने बुरे मालूम होने लगे तो उसने रोजगार के बहाने बाहर के जाने का इरादा किया जोरूने कहा कि जूते कौन खायगा उसके घरमें किसी वृत्त

का कोई ठूठ था उसके पतिने कहा कि जब तक मैं लौट कर आऊं तब तक तू इस ठूठ को मारा कर उसकी इस्त्री ने मान लिया और उसका पति रवाना हुआ और इसने ठूठ पर जूते मारने प्रारम्भ कर दिये उस ठूठ में एक भूत रहता था जब जूते पड़े तो भूत घबराया उसने कहा कि यह बड़ी आपत लगी चलो किसी तरह इसके पति को लाना चाहिये उसके पति के पास पहुंचा और कहा कि मैं तुझको बहुत सा रुपया दिलाऊं तू अपने घर लौट जा उसने स्वीकार किया और चित्त में कहा कि फिर जूते खाने पड़ेंगे परंतु रुपया तो मिलेगा भूत ने कहा कि मैं फलाने राजा के सिर पर चढ़ता हूं जब तू इलाज करेगा तो मैं चला जाऊंगा तुझको राजा से बहुत सा रुपया मिल जायगा तथा ऐसा ही हुआ अब बड़ा मनुष्य रुपया लेकर घर आया देखिये इस कहावत में दो बातें निकलती हैं एक तो यह कि मार के आगे भूत भागै दूसरे यह कि लोग काम के ऐसे बसी भूत हो जाते हैं कि धन और इस्त्री के पीछे जूते खाने स्वीकार करते हैं और यहां पर इस कहावत से यह प्रयोजन है कि जब ऐसे मूर्खों पर वचन रूपी बानों की वर्षा होय तब उनका भूत भाग और देखिये बाजे मनुष्य कैसे जौहरी बन कर कहते हैं कि हमको तो कोई साधु दीखता नहीं किसका सतसंग करैं यह उनकी अत्यंत भूल है उनकी दृष्ट में अन्तर है उनको सिद्ध साधु की पहचान नहीं और जब तक कोई दिन सतसंग न करेंगे तब तक उनको सिद्ध साधु मिलना कठिन है एक दृष्टांत है किसी राजाने चाहा कि हंस को देखूं किसी बुद्धिवान ने युक्ति बताई कि तू जानवरों को दाना डाला कर कभी हंस भी आजायगा राजा ने येही किया जब सब ओर से चिड़ियां आने लगीं उस समय किसी हंस ने देखा उसने भी विचार किया कि

जहां यह चिड़िया जाती हैं वहां एक बार मैं भी चल अपनी सजाती समझ कर हंस भी उनके साथ आया परंतु दाना न चुगा पृथकही बैठा रहा राजा को खबर हुई कि सब चिड़ियां तो चुनती हैं परंतु आज एक जानवर ऐसा आया है कि वह दाना नहीं खाता है राजा ने हुक्म दिया कि मोती डाल दो जब मोती डाले तब हंस उतर कर चुगने लगा राजा का मनोर्थ सिद्ध हुआ अब देखिये जब बहुत काल तक हजारें चिड़ियां खिलाईं तब वह हंस दृष्टि गोचर हुआ इसी प्रकार मनुष्य को चाहिये कि फ़कीरों की सेवा करता रहै तो कभी न कभी कोई महा पुरुष भी मिल जायगे सूपं अर्थात छाज कीसी बुद्धि रखनी चाहिये सूप असल २ माल तो अपने में रखता है और कूड़ा अलग कर देता है मनुष्य को चाहिये कि फ़कीर के गुणों को देखै और अवगुण को न देखै परंतु आज कल बहुधा लोगों की मत चलनी कीसी हैं माल माल नीचे डाले हैं और भूमी अपने में रक्खै है इसीसे सत्संग अच्छा नहीं लगता पाप अपना और कलंक और पर मूर्ख यह नहीं समझते कि महा पुरुष को तुमसे मिलने से क्या प्रयोजन है वह संसारी लोगों को जानवर समझते हैं एक दृष्टांत है कि कोई बादशाह किसी फकीर के मुलाकात को गया फकीर साहब ने बादशाह के पहुंचने से पहिले दरवाजे पर एक मनुष्य बैठा दिया और उससे कहि दिया कि बादशाह जब दरवाजे पर आवै तब तू उसको रोंक दीजो और कहियो कि मैं फकीर साहब का हुक्म ले आऊं तात्पर्य यह है कि इसी प्रकार हुआ बादशाह को फ़कीर साहब के दरवाजे पर रुकना बहुतही अमत्व हुआ जब फकीर साहब के पास गए तो कहा कि फकीर को दरवान न चाहिये कि फ़कीर ने जवाब दिया कि संसारी कुत्तों को रोकने की आवश्यकता पड़ती है और एक दृष्टांत

है कि किसी राजे की लड़की बड़ी अवस्था होने पर भी कपड़े नहीं पहिरा करती थी राजा ने बहुतसी युगतियां कीं परंतु कोई गुणदायक न होई एक दिन दैवयोग से एक फ़कीर साहब राजा की मुलाकात को आये लड़की ने फ़कीर साहब को देखतेही कपड़े पहिन लिये राजा को बड़ा आनन्द हुआ और आश्चर्य्य हुआ कि आज इसने फ़कीर साहब के दर्शन करतेही आपसे आप कपड़े पहिर लिये राजा ने इस बात को उस लड़की से पूछा लड़की ने जवाब दिया कि स्त्री परदा पुरुष से करती है जानवरों से नहीं करती इस समय पूरण अवस्था भरमें एक फ़कीर साहब दिखलाई दिए हैं उनसे मुझको परदा करना अवश्य हुआ देखिये फ़कीर की पहिचान बिन दृष्ट कैसे होसक्ती है हीरा जौहरी के सिवाय कौन परख सक्ता है एक दृष्टांत है कि एक फ़कीर साहब ने अपने चेले को बारह बरस के पीछे कुछ जप बतलाया वह बहुत प्रेम से उसको जपता रहा एक दिन उसने वही जप एक और फ़कीर के मुंह सुना और वह फ़कीर वास्तव में कंगाल भिखमंगा था उस चेले ने कहा कि गुरू जीने मुझको बारह बरस के पीछे यह जप बतलाया जिसको कंगाल भिखारी भी जानते हैं चेले ने यह सब वृत्तांत गुरू जीसे कहा गुरू जीने एक हीरा उठा कर चेले जीको दिया कि जाकर इसको बेंच लाओ वह चेला किसी तरकारी वाले के पास ले गया उसने हीरे की चमक देख कर अपने चित्त में कहा कि यद्यपि पत्थर है परंतु यह लड़के के लिये खिलवना होगा मुठी भर साग बदले में देने लगा चेले ने कहा कि मैं अपने गुरूसे पूछआऊं तब साग लूंगा चेले ने आकर यह वृत्तांत बर्णन किया फ़कीर साहब ने कहा कि किसी और दुकान पर लेजा फिर वह एक दुकानदार के पास लेगया उसने एक पैसा मोल कहा

इसी प्रकार दोचार दुकानों पर लेगया ऐसे २ मोल होता रहा अन्त को गुरूजो ने कहा कि फलाने जौहरी के पास लेजा जब हीरा उस जौहरी के पास पहुंचा तब उसके लाखों रुपये देने लगा अब देखिये हीरे की परख बिना जौहरीके नहीं हुई उस समय चेला समझा यह मंच हीरे के सदृश है परंतु बिना परख कौड़ी के समान है और जिसको इसकी परख है तो मोल की संख्या नहीं इसी प्रकार मनुष्य में अभी परख तो आई नहीं हीरा कैसे परख लेगा जब जौहरी लोगों का सतसंग करता रहै तो परख आवे एक दृष्टांत है कि कोई फ़कीर पहुंचे हुएथे एक दिन कोई राजा उनके दर्शन को गये फ़कीर साहब अपने ध्यान में थे देर तक राजा खड़ा रहा जब फ़कीर साहब ने नेत्र खोले तो क्या है कि उनके सामने राजा खड़ा है राजा को बैठाय उस समय राजा ने फ़कीर साहब से कहा कि जो ध्यान आप करते हो मुझे भी बतला दीजै जिससे स्वामी के दर्शन हुआ करैं फ़कीर साहब ने राजा से कहा कि एक थैली रुपयों की मगाओ और एक सराफ को बुलाओ उसी समय थैली और सराफ पहुंचा फ़कीर साहब ने उसथैली में एक खोटा रुपया मिला दिया और सराफ से कहा कि इन रुपये को परखदे उसने परख कर खोटा रुपया अलग कर दिया फ़कीर साहब ने कहा कि तुझको रुपया परखने की दृष्ट कितने दिन में आई है उसने जवाब दिया कि दश पाँच वर्ष तक सराफों की दुकान पर बैठ कर रुपया परखा जब यह दृष्ट प्राप्त हुई फ़कीर साहब ने राजा से कहा कि देख एक रुपये की परख तो दश पांच वर्ष में आती है ईश्वर की पहिचान एक छिन भर में होसक्ती है राजा ने लज्जित होकर कहा कि मुझसे भूल होगई निस्सन्देह प्रथम सतसंग आवश्य इसकाल में बहुत मनुष्य के धन और अवस्था का

अभिमान सतसंग से रोकता है धनवान निर्धन के पास बैठने में लज्जा करै है बड़ी अवस्था वाले छोटी अवस्था वाले के पास जाने और उस की सीख सुनने में अपनी हानि मानै हैं कहो कैसी निरबुद्धता है क्या धन की कमीसे परमारथ की लघुता होती है धन तो और परमारथ का विरोधी है कौड़ी पैसे वाला धनी नहीं होसक्ता जिसका चित्त उदार है वह धनी कहलाता है और वास्तव में धनी वही है जो परमारथ की राह बतावै और बड़ापन क्या अवस्था से होता है नहीं जिसकी बुद्धी बड़ी वह बड़ा है इन फांसों से एक बढ़ कर फांसी गले में पड़ीहै वह यह है अर्थात् जात और कुल का इतना अभिमान होता है कि जिसका अन्त नहीं यह अभिमान सतसंग करने को अत्यन्त रोक देता है यह नहीं समझते कि सतसंग और चीज है और जात कुल धन और वस्तु है ॥

दोहा ॥

जात न पूछो साधकी पूछ लीजिये ज्ञान ।
मोल करो तलवार का पड़ा रहन दो म्यान ॥

चौपाई ॥

हरिका भजै सो हरिका होई । जात पात पूछै ना कोई ॥

देखिये राजा जनक मंची थे और व्यास भगवान ब्राह्मण थे उन्होंने शुकदेव जी को राजा जनक के पास ज्ञान सीखने को भेजा और वहां से शुकदेव जीको ज्ञान प्राप्त हुआ नारद जीने बहेलीया को गुरुकिया राजा युधिष्टर के यज्ञ में घंटा नहीं बजता था सुपच भगत के आनेपर बजा रामचन्द्र जीने बहेलनी के जूठेबेर खाये और ब्राह्मणत्व इस पर भी संबध नहीं है कि जो ब्राह्मण और ब्राह्मणी के पेट से उत्पन्न हुआ उसीको ब्राह्मण कहैं क्योंकि अचलमुनि हथनी से पैदा हुए और अगस्त मुनि अगस्त के फूल से और द्रोणाचार्य दोनासे

और इसी तरह विश्वामित्र पर ये सब ब्राह्मण कहलाते थे अब देखिये जात बड़ी या प्रेम भक्त और सतसंग बड़ा ध्यान करने का अस्थान है कि ब्रह्मणत्व क्षत्रीत्व देह से संबंधित है या गुण पर जो देह पर संबंधित होता तो रामचंद्र कभी बहेलनी के जूठे बेर न खाते और अन्नमें सुपच की कभी गमन होती और राजा जनक के पास शुखदेव जीको कभी न भेजते और वह मुनीन कहलाते जिनका ऊपर नाम लिखा है और न पूजे जाते और देखो नारद मुनि भी अन्य जात से पैदा हुये और ब्राह्मण होगये इससे ब्राह्मण वह है जो ब्रह्मको जानै यह गुण से संबंध रखता है अब इस समय में बहुत ब्राह्मणोंने ब्रह्मका जानना तो यह समझा है कि एक दो श्लोक यादकर लिये या मौन मेख मकर सीख लिया धन की रासगाई महाश्रेष्ट ब्राह्मण और पण्डित बन गये और हजारों को तो टकाही ब्रह्म है जिसमें हंडिया खद बद हो कोई मरै या जीये उनको टका लेने से काम कहिये अब जो कोई ऐसे ब्रह्मणों पर दया करके मिलता से समझावे या औगुण दिखावे तो क्या अपराध किया परंतु महाराज विराज समझाने के असथाना पन गालियां देते हैं परंतु बुद्धिमान तौ भी यह समझता है कि ब्राह्मणों की गालियां गाली नहीं होती है आशीरवाद है उष्णता अधिक हुई और मेह बरसा इधर आपको ठंढक मिली उधर बादर मेंसे विकार दूर होगया और स्वच्छ आकाश हुआ और इस बात से फिरना कि ब्राह्मण को दण्डवत न करना या ब्राह्मण को गालियां देना या दान न देना अपने धर्मसे फिरना है जो मूरत के पूजने से मुक्ति होती है तो क्या ब्राह्मण जो चेतन्य है उसके पूजने से नरक होगा जो देवता का वास मूरत में है सो भागवन के अनुसार है॥ तो क्या ब्राह्मण जो कैसाही बराहै उसमेंनहीं होसक्ता इसके विशेष जो ऐसी रीतिहो कि

जिसके बाहर भीतर कोई हानि न दिखाई दे तो उसको प्रत्यक्ष में निबाहनाही उत्तम होगा छोटे और बड़े का देह एकही है परंतु छोटे को अदब करना ही उचित है इससे क्षत्री वैश्य शूद्र को ब्राह्मण का अदब अवश्य है परंतु ब्राह्मण को भी इतना सोचना अवश्य चाहिये कि दूसरे की अज्ञान बिगाड़ै और जातकाही अभिमानी न होजाय अपने कर्मों की ओर भी देखै दान लेना जब उचित है जो अपने समयको ईश्वरकी तरफलगावे औरोंकोसतमारगका उपदेस बतावे शुभ इच्छा से करम करावे नहीं यह दान खाना बड़े बड़े दांत उपजावेगा जोयह कहिना असत्य हो तो अपराध को क्षमा करना अब इस समय के लोगों का वृत्तांत सुनिये कि बाजे बाजे मूर्ख यह भी कहि देते हैं कि सतसंगियों को तो दुखमें फसा देखते हैं और जो कुसंगी और कुचाल हैं वह ऐस करते हैं यह उनका कहना अत्यंत मिथ्या है क्यों कि संसारमें किसी को भी सुख नहीं है प्रथम ऐसाआनंद को कहते हैं सो संसारी ऐशमें आनन्द कहा कि क्षण भरका आनन्द और पहरों दिनों बरसों लकका दुख पाते हैं और सतसंगी देहसे यद्यपि दुखी भी हैं तो चित्तमें प्रसन्न रहते हैं और आगे तो सदैव कोही आनन्द में रहैं गे ॥

दोहा ॥

मनमें तो आनंद रहे तन बौरा सब अंग ।
ना काहूके संग है नानक ना कोउ संग ॥
मनतें तनतें बचन तें सदा रहे निष्पाप ।
सब घट देखे आतमाबिन जिह्वा हरिजाप ॥

सतसंगियों के बराबर कुसंगियोंका कभी दुख नहीं व्यापता है देखिये जो मनुष्य चार मनकी गठरी सिरपर रक्खे तो नहीं चल सक्ता और जो लेजाता है तो अत्यंत दुख भोगता है और गरदन टूट जाती है और जो मनुष्य और एक

दससेर की गठरी बना कर चार मनका बोझा अपनी गरदन पर उठाता है तो सुगमता से ले जाता है क्योंकि वह संपूर्ण बोझा देह पर और आधा ठेकी पर जो पीठ और गरदन पर धरी हुई है इसी प्रकार सतसंगी और कुसंगी को समझना चाहिये एक आपति सतसंगी पर आई और अपनी बुद्धि के ज्ञान से वह आपति आपतसी नहीं गिनता और जिसको सतसंग नहीं है वह निश्चै देह मरेजाते हैं ॥

दोहा ॥

बिपति भली हरिनाम सों काया कसौटी दुख ।
राम बिना किस कामके दादू संपति सुख ॥

और सतसंगी की आपति टलभी जाती है एक दृष्टांत है कि दो मनुष्य कहीं को चले एक ने कथा दूसरा बद था राहमें नेक मनुष्य के तो कांटा लगा और बद आदमी को एक हजार रुपयों की थैली मिली प्रत्यक्ष में तो बिदित हुआ कि अन्याय है किसी फकीर ने इसका भेद खोला कि नेक मरद को तो आज सूली थी उसके नेक चलन के कारण सूलीके बदले कांटा रह गया और बद आदमी को बादशाहत होनी थी उसके बद चलनी से हजार रुपये की थैली रह गई अब ध्यान करके देखिये कि सतसंग कैसी उपकारी वस्तु है कि पहिले तो नेक चलन प्राप्त होता है फिर मुक्त होती है परंतु संसारी मनुष्य धन स्त्री कुटुम्ब को बहुत बड़ा समझते हैं धनकी हानि लाभका वर्णन ऊपर भी हो चुका है अब इतना और भी सुन लीजिये ॥

दोहा ॥

मठिआरी और लछमी दोनों एकहि जात ।
आवत तो आदर करैं जात न पूछैं बात ॥

इस धन दौलत के दो लत हैं एक तो यह कि निश्चै देह नरक को लेजाती है दूसरी ऐसी है जो स्वर्ग को लेजाती

है अब अख़्त्यार है कि चाहो आगमें पैर रक्खो चाहो पानी में एक दृष्टांत है कि कोई साहूकार था वह दिनरात अपना व्यवहार किया करता था कभी कथा वारता सुनने नहीं जाता था परंतु सौ पचास साधुओं को अपने मकान पर उतारकर सब प्रकार से टहल किया करता था किसीने पूछा कि तुम जो दिनरात व्यौहारही में रहतेहो इससे भजन क्यों नहीं करते हैं जो मुक्त पाओ उसने उत्तर दिया कि जो भजन करूंगा तो अकेले मेरीही मुक्त होगी जैसे मगना नंद मौनी आप निस्संदेह मुक्त हैं परंतु दूसरे को कुछ नहीं क्योंकि मुख बन्द है और अब सौ पचास साधू भजन करते हैं कहो अब एक मेरा भजन करना अच्छा या सौ पचास का जोड़न होय तो ऐसाही होय नहीं तो जो ऊंचा उठता है वह फुवारेंके सदृश नीचेको होता है यह वह लतहै जो नरक को लेजाती है अब स्त्री का वृत्तान्त सुनिये कि एक मट्टीका लूदा है या एकढेरहड्डी रुधिरऔर चमड़ेकाहै उसके ऊपर अपनी जानदेना यागुलामी करना और सतसंग छोड़ाना कैसी बुरी बात है एक दृष्टांत है कि किसी राजाका लड़के को प्रधानकी लड़की किसी संयोग से दृष्टपड़ी औरयह उसपर आसक्त होगया अब हरसमयउसी चक्कर में फिरता रहता है और चिन्ता और शोकमें सूखा जाताथाकिसीसे कहता नहीं बड़ी कठिनतासे उसका वृत्तान्त विदित हुआ राजा को खबर हुई तो राजा अत्यंत सोच ग्रसित हुआ किये कैसे होसक्ती है प्रधान की जात और मेरी जात एक नहीं जो बिवाह होसकै और लड़के की यह दशा हुई जाती है राजा हर समय सोच में रहै प्रधान ने राजा का वृत्तांत पूछा कि महाराजा आपको ऐसी कौन चिन्ता व्यापी है अहरनिश सोच ग्रसत रहतेहो राजा ने मंत्री को बहुतसा टाला परंतु मंत्रीने न माना तब राजा

ने सब वृत्तांत कहि दिया भंचोने सुनकर अत्यंत अधोर होकर खाना पीना सब छोड़ दिया इधर देखता है तो कुआ उधर देखता है तो खाई होले होले इस बात की खबर उस लड़की को भी पहुंची लड़की ने अपने पितासे कहा कि आपने थोड़ी सी बातके पीछे इतना सोच वृथा किया आप क्यों घबराते हो बात की बात रहजाय और मतलब का मतलब सहजे में होजाय (सांप मरै न लाठी टूटै) लड़कीने बापसे कहा कि आप राजाके लड़के से येखबर करदो कि वह लड़की बीमार होगई है जब अच्छी होगी तब ब्याह होजायगा उसी समय उसलड़कीने एकनाई को बुला कर सब अपनेबाल मुड़ाडाले और जमालगोटेका जुलाब लिया उसमें सौदस्त आये लड़की का स्वरूप महा कुरूप होगया और सब देह में हड्डी २ दीखने लगी अब लड़की ने पिता से कहा कि अब तुम राजे के लड़के को बुलवाओ राजा के लड़के को खबर की गई कि लड़की अब अच्छी होगईहै चलो हारले आवो राजा का लड़का अत्यन्त प्रसन्न होकरबहुत उत्तम २ वस्त्र भूषण पहनकर बड़े उत्साह से उसके पास चला और लड़की ने एक युक्ति और भी कर रक्खी थी कि जिस मकान में बैठी थी वहां एक ओर बालों का ढेर और एक तरफ बिष्टा की नदी दुरगन्धित रक्खी थी और संपूर्ण मकान को गंदा करररक्खा था जो राजा का लडका उस लड़की के सन्मुख पहुंचा उसका सरूप देखकर अत्यन्त घृणा की किंतु एक दमभर भी न ठहरा अपने घर लौट आया अब उस लड़की का नाम भी नहीं लेता अब देखिये इस दृष्टांत से क्या प्रयोजन निकला लड़की ने दिखाया कि सिर पर तो बालों का ढेर है और भीतर हड्डी और बिष्टा भरी है इससे ऐसी वस्तु पर अपनी इज्जत और जान देनी कैसा बुरा काम है ॥

दोहा ॥

नारी कहूं की नाहरी तूं मत राचो दास ।
मंजारी जो बोल के काढ़ कलेजे खात ॥
नारी नाही नाहरी करै नैन की चोट ।
कोई साधू ऊबरै राम नाम की ओट ।

परंतु ऐसा होतो और बात है ॥

दोहा

नारि पुरष दोउ एक मत भक्त साध बिन होय ।
कलह कलपना मिट गई सत पद रहेस मोय ॥
छोटी बड़ी सरकार का मता हुआ है एक ।
सुरत शब्द की एकता काटे फन्द अनेक ।

अब कुटंब की दशा सुनिये कि एक लुटेरा था वह विदेसियों को लूट २ कर उनका धन घरमें लाता था उसके सब घरके लोग खाया करते एक दिन एक फ़कीर चले जाते थे यह लुटेरा उनको भी लूटने गया तब फ़कीर साहब ने कहा कि भाई एक बात मेरी भी सुनले पीछे तुझे अखतियार है लूटि लीजीयो उसने कहा कि कहो फ़कीर साहब ने कहा कि तू क्यों लूटा करता है उसने उत्तर दिया कि कुटुम्ब पालने को फ़कीर साहब ने कहा कि अच्छा अब तू उन खाने वालों से पूछ कि जिस समय भगवान के यहां से इस लूटने का दण्ड मिलैगा उस समय तुम सब मिल कर उस दुखको बांट लोगे या नहीं यह मनुष्य अपने घर गया और वहां अपने लड़के और इस्त्री से पूछा सबने कान पर हाथ रख कर कहा कि हम क्या लूटने को कहते हैं हम इसका क्यों दण्ड भोगैंगे यह मनुष्य सुन कर फ़कीरसाहब के पास आया और उत्तर सुना दिया फ़कीर साहब ने कहा कि हे मूरख तू देख खानेको सब मौजूद मारखाने को तुहीअकेला रहा फ़कीर साहबका कहना उसमनुष्यके दिल

में चुभ गया सोचा कि यह सब अन्याय मेरेही गले पररहा उसी दिनसे लूटना छोड़ दिया तात्पर्य्य इस कहने से यह है की सब अपने २ सुखके साथी हैं दुख में कोई पास भी नहीं खड़ा होता और प्रत्यक्ष में देख लीजिये कि जन्म भर इस कुटम्ब के लिये पाप भी कमाये और इसी उद्योग के परिश्रम में भजनभी छोड़ा जब बुढ़ापा आया तो बुरे लगने लगे कोई बात भी नहीं करता और कोई उद्यत भी हुआ तो पहिले कहता है कि तुमने तो बड़ी जानमारी कहो क्या कहतेहै। अब थोड़ी बहुत सुनकर चलेगये और कहते चले जाते हैं कि बूड्ढे की तो बुद्धि सठिआय गई है और महा दुख देरक्खा है घरमें से दूसरे बोले कि क्या कहूं इस बुड्ढे के मारे तो नाक में दम है अपनी तो दिन भर बक रहा है और की कुछ नहीं सुनता न समझता है न मालूम इस को क्या होगया तीसरे बोले भाई अभी क्या दुख है इनके मरने पर खबर पड़ैगी जब इनके क्रियाकर्म और तेरही को रुपया चाहियेगा इसको तुम बड़ी हत्या समझो चौथा बोल उठा खैर जो होगा सो होगा अब यह मरै तो रात दिन की बक बक तो मिटै इसका जीना तो महादुख और पाप का मूल है कहां तक इसकी खांय खांय और भांय भांय सुनै और बूड्ढा हाथ मल मलके कहताहै कि हाय सारी अवस्था वृथाहीगई इसकुटम्बसे कुछ सुख नपाया देखो जब यह लड़के थे तो मैं रात दिन इनके भरण पोषन की चिन्ता में रहता सब प्रकार इनकी टहलैं और लाड़ पियार करता रहा आप न खाया इनको खिलाया आप न पहिना इनके पहिनाया आप न सोया इनको सुलाया इनके साथ मुझको भी अज्ञानी बनजाना पड़ता था इसके जी बहलाने के लिये अलब्यल्ल बका करताथा जो इनको जरासा भी दुख होताथा तो मुझको अपनी जान तक का स्मरण इनकी चिंता में

नहीं रहता था कुछ सावधान हुए तो सिक्षा करता रहा हजारों सुख दुख पाप पुन्न कमाकर इनके विवाह आदी किये फिर यह सोच रहा की इन लड़कों से कोई कुकर्म न बनजाय जो कुल डूबजाय अब जो किसी लायक हुए और मैं वृद्ध हुआ तब यह दशा करते हैं हाय अब तो मरजानाही उत्तम है क्या मौत के दफ़तर से भी नाम कट गया जो अब तक भी मौत नहीं आती और यह दोहा सुम रन कर २ शोक करता है ॥

दोहा ॥

सुत दारा अरु लक्ष्मी पापी के भी होय।
साधु समागम हरि भजन तुलसी दुर्लभ दोय ॥
सोच करै सो सूरमा कर सोचै सो कूर।
कर सोचिया मुखस्याम है सोच करामुख नूर ॥
दीन गवाँया दुनिया संग दुनी न चलिहै साथ।
पैर कुल्हाड़ा मारिया गाफिल अपने हाथ ॥

देखिये जिन्दगी में यह सुख कुटंब के उठाये और जो मूरख यह कह देते हैं खैर यहां के दुख सुख का क्या है पीछा तो सुधर जायगा बाहरी समझ आगे तो यह धूल उड़ाई अब पीछे का वृत्तांत सुन लीजिये खैर कुछ दिन पीछे बुड्ढा चल बसा अब सलाह होने लगी कहो अबक्या करैं एक बोला कि भाई जो कुछ करो सो समझ कर करो आजाही का दिन नहीं है कि क्रिया कर्म तेरही भी पड़ी है दूसरा बोला कि भाई आज दसपांच रुपये में कर करादो तीसरा बोला कि इसमें तो नक कटी है तातपर्य्य यहहै कि परसपरमे रदबदल अर्थात् ठांई २ होकर जैसे तैसेउस हत्या को मरघट तक पहुंचाया अब क्रिया कर्म में ब्रह्मणों से झगड़ा चला जाता है तेरहीं के दिन दश पांच ब्रह्मण को तरकारी पूरी खिलाई एक एक टका दक्षिणा दिया चलो

निपटे हां तर्पण करने को सुफत का पानी उलचने को खुसी से तैयार हैं उनके निमित्त श्राध आदिक करने में तो ऋतु आती है अपने नाम करने की सलाह ठहरी तो बिरादरी और यार दोस्तों को बहुत अच्छे माल खिलाये और खुश होते हैं कि हमने बड़ा नाम किया कहो इसमें उनके बाबाजी को क्या मिला शायद बाबाजी के हिस्से में दोचार आने आय जाय इससे चने चाब कर भी मारग पूरा ना होगा बाहरी सेवा संपूर्ण उमर भर तो हजारों रुपये पैदा करके खिलाये और ऐसे दुख भोगे अब मिले तो क्या दो चार आने अब उनकी गया का वृत्तांत सुनिये कि लड़का गया को गया और गया करके लौट आया किसी ने पूछा कि गयामें तो तुम्हारा बड़ा रुपया खर्च हुआ होगा हां भाई क्या कहैं जोजानता है हजार रुपया लग गया अत्यंत खाली खोखल होगये और आप दश बीस रुपया में गया कर आये सोभी ब्रह्मण को तो दश बीस टके ही में टाला होग वहां तो बूढ़े जी नरक में सुख लूटते हैं यहां बेटेजीने मिथ्या बोलनेकी दश बीस सेरकी गठरी सिरपर और रक्खी और जो नाक वाले हुए और कुछ नामवरी का शौक हुआ तो भाई बंधयार दोस्तोंकी बड़ी धूमधामसे जियाफतकी अब ध्यान और न्याय करने का अस्थान है कि इस मनुष्यको जिसकी गया हुई है, क्या पल्ले पड़ा सत्त है कि बिना अपने मरे स्वर्ग नहीं दीखता है और जो पुत्र सपुत्र हुए तो हां अलबत्ता जो मेंहनत पहिले की है उसकी मंजूरी चाहे मिलजाय सो उसमें भी संदेह है कि माशलची कोस भर पीछे और आप आगे जो कोई कहै कि इसमें तो शास्त्र खंडन होता है नहीं शास्त्र तो मिथ्या नहीं होता परंतु उनकी आंखों पर परदा पड़ा जाता है शास्त्र लोक परलोक दोनों को गाता है जो पिता को बेटेका लाभ न

दिखावे तो उनसे प्रीति कबहैं। और नीच लोग कब पास से कौड़ी खरचै और जो प्रीत और दान नहीं है तो संसार का प्रबन्ध बिगड़ जाता है अब मनुष केवल संसारी लोगों का ध्यान करते हैं और जो शास्त्र औ महात्माओं का सिद्धांत है उससे आंख छिपाते हैं इस कारण ऐसे मनुष्य की दीन दुनियां दोनो खराब होती हैं जो मनुष्य अपने परलोक की चिंता करै और शुभ कर्म और मालिक की भगत करै तो संसार और पर लोक दोनों में सुखी होय ॥

दोहा ॥

बिषय जगत के अगन सम जल समान सत्संग ।
बिन्द्राबन तट जमन के सीतल भयो सब अंग ॥
सर्व जीव आनंद चहैं बिषय भोग संसार ।
मृग तृष्णा की भूम में जल बल होय खुवार ॥

चौपाई ॥

नरतन उनकोजानो अमोला । लगेनहींजिन कासभकोला ॥
जो नहिं सुध परमारथराखैं । उनको वेद पशू करिभाखैं ॥
करि बिवेक जो देखो भाई । पशुतन में सुख है अधिकाई ॥
पशु भरि पेट चराई कीन्हा । अब अचिंतदुखनिकटनचीन्हा ॥
मनुष पेट भर सब कुछ खावा । उसी समय चिंता मनलावा ॥
कहैंतृपित पशुतनको जानै । या इस बुद्धि भ्रष्टीको मानै ॥
चिन्ता चिता एक सम भाई । सुन भेद दोउ बीच रहाई ॥
सुन्न भेद सूना नहिं जानौ । काम निकृष्ट सुन्नको मानौ ॥
चिता जलावै तन निरजीवा । चिंता जारै मन सर जीवा ॥
मन राजा मंत्री यह नैना । मिलकर दोऊ चला तब सैना ॥
सूचक मंत्री मूरख राजा । अंधा धुन्ध सभी इन काजा ॥
देखभाल यह चुगली खावै । राजा नगरी आग लगावै ॥
जलैं आप सब नगर जलावैं । फिररोवैसुहिहंसीदिखावै ॥
लोचन मंत्री जल भरि लावै । रोय रोय पानी ढुलकावै ॥

इन मूरख का कौनहि सावा । फूक फाकफिरजलवरसावा ॥
कामादिक रागन घट घेरो । पांच भूत मठ कियो बसेरो ॥
मतिभ्रमहोय नहींकुछ सूझै । विषयस्वाद में सारन बूझै ॥
जग तिष्णा इच्छा अधिकाई । निशिदिनचिंता चितै जनाई ॥

दोहा ॥

जबलग ये पांचो बने तब लग दुखी निदान ।
ऐसे नरसे पशु भले जिनके लोभ न मान ॥

चौपाई ॥

तजतू मोह विषय को मीता । चेत परम पद तो जगजीता ॥
फल नर तनको असतू पावै । सुफलजनमहरिजनकहिलावै॥
जस कूकर हड्डी को चावै । इसविधिकासुखमनुषकमावै ॥
ऐसी भूल भई दुखदाई । जन्म जन्म दुख भुगतत भाई ॥
गरदभ जस बस काम रहाई । सुखपर लातखाय पुनिजाई ॥
इस बिधि मूरख माया हेरै । खाय थाप फिरसिरनहिफेरै ॥
गरदभ जस धोबी का जानौं । जापर बहुबिध भारलदानें ॥
घर पहुंचे लादी उत राई । रात समय वह जाड़ा खाई ॥
अस मूरख धन ढेर बटोरै । चलती वार सबी पुन छेड़ै ॥
गरदभसुखचंदन नहीं मानै । राख धूल बहु नीकी जानै ॥
सूकर प्रीति पुरीख से राखै । अस्त भोजन वह नहिंचाखै ॥
असजगजीवविषय रसराजी । आंखमीच कर हारत बाजी ॥

दोहा ॥

घूघू को दिन रात है रात समय दिनभास ।
ऐसे मूरख जीवको बिषय राग कियो नास ॥

सवैया ॥

खान मिला अरु पान मिला बहु मान मिला धन धाम रहाई ।
कुल मोट मिला गढ़ तोप मिला पृथ्वीराज मिला सेना बहु पाई ॥
पुच मिला अरु पौच मिला बहु मिच मिला दिन दिन अधिकाई ।
बिन्द्राबन हरिनाम बिना सबही सुख धूर समान कहाई ॥

चौपाई ॥

जीवन जग को स्वपना होई । सम्पत धन सब जाय बिगोई ॥
यह माया सबजग भरमावा । दुखकोसुखसागरदिखलावा ॥
चाहिचाहि नर राहन पावा । तिरगुण में फस भटका खावा ॥
रजतमकी रहै बहुअधिकाई । सतगुण से नहिं नेह बढ़ाई ॥

दोहा ॥

काम क्रोध को त्याग के लोभ मोह कियो नास ।
तबहूं कारज ना बनैजब लग अहंमान को आस ॥
झीनी माया जिन तजी मोटी गई बिलाय ।
ऐसे जन के निकट से सब दुख गयो हिराय ॥

सवैया पौना ॥

कामनाहि क्रोधनाहि मोहनाहि लोभ त्याग दियो है ।
रोगनाहि सोगनाहि भोगनाहि जोगबास लियो है ॥
धन नाहिं धाम नाहि मिच नाहि विषय नास कियो है ।
बिन्द्रावन असकोई एक जगमाहि जिनआपादान दियो है ॥

दोहा ॥

सील धर्म संतोष गह दया दान उपराम ।
प्रेम दीनताँ अधिक मन बने सहज सब काम ॥

चौपाई ॥

अपने को नीचा कर मानो । निंदाबचन न मुखसे आनो ॥
सत्संगमेंरुच अधिक बढ़ाओ । जग सोभा से नेह न लाओ ॥
बाट माहं जस करो बसेरा । तुम नहिं मानो वह घरमेरा ॥
इसबिधि जगमें करो पयाना । दुखसुख से तुम रहो लगाना ॥
मन अभिमान धरो नहिंभाई । छिण आगेकी खबर नपाई ॥
तुम चाहो बल निरबल होवो । रसपारा से बलनहिं जोवो ॥
हारेमन को जीता जानों । हार हार हरिने हलगानों ॥

दोहा ॥

हार पड़े सरणा गती सूझ पड़ो करतार ।
रजा हुक्म पहचान के उतरो सिर से भार ॥

चौपाई ॥

रज तम छोड़ करो सतसंगा । पावो सतगुणदुखहोइभगा ॥
साधुकी महिमा असबत लावें । तीरथ चन्द्र कल्प तरु गावें ॥
सेवन तीरथ पाप बिनासू । चन्द्र द्रस जस तापजरासू ॥
कलप निटक इच्छा पुर जाई । साध संग फल तीनों पाई ॥
द्रसन से सीतल होजावे । सेवा करत पाप नस जावे ॥
बचन सुनत जग मिथ्या भासे । इच्छा बीज सहज होइनासे ॥
माया जगमें बंधन डाला । सन्त दयाल हरैं ततकाला ॥
संत गती का भेद निनारा । अगम अगोचर अलख अपारा ॥
बिष्णु आदि जितने हैं देवा । कहिये अगाध संतकर भेवा ॥
तीन देव रचना कर ठानी । स्वारथसहितपरमारथआनी ॥
संत कृपा नहिं स्वारथ राखा । निपकेवल परमारथ भाखा ॥
पाखंड का नहिं राखा लेसा । पंथसुगम निहंहोइ कलेसा ॥
कलयुग माहिं जगतके जीवा । करैअचारनहिं पावेपीवा ॥
छूत अछूत नहिं करै बिचारा । चौका न्हाना यही अधारा ॥
अस नर बुद्धिहीन तुम जानो । साचम भावे झूठ रचानो ॥
पवन छुवत है सब जग केरा । वहीकरतघट माहिंबसेरा ॥
कहौ सुद्धता अब होइ कैसे । न्हाइ धोइ बैठे गिध जैसे ॥
उत पत मूल देह की देखो । बीरज हाड़ चामकर लेखो ॥
सत दया कर भूल छड़ाया । संत मार्ग का भेद बताया ॥
पुरुष एक चेतन्य दुरसावा । पूरण खंड रहित बतलावा ॥
भयतें रहित बैर नहिं ताके । चिन्ता पञ्चैं निकट न जाके ॥
गरभ जोनि सें रहैं अतीता । आदिअन्त जाकानहिंमीता ॥
दूसर बासम छुआ न होई । आनन्द सदा सोकनहिंकोई ॥
मनके बिना करैसब ज्ञाना । देह बिना जगरचना ठाना ॥
बिन नयनन दृष्टा वह होई । श्रवण बिना पुन श्रोतासोई ॥
सबके निकट सबन तें दूरा । भेदी देखै सदा हजूरा ॥
जो असपुरुषसरणगहिराखी । वहछूयेसुक्रन चहियेसाखी ॥

कारण पुरुष रूपसे नियारा। निरगुण जाको संतपुकारा॥
भक्त वछल और दीन दयाला। हरजनपरवह सदा कृपाला॥
जो कुछ होइ उसी सो जानो। करताऊआ अकरतामानो॥
चिन्तामणि सम रूप पिछानो। जस निश्चय तसफलतुममानो॥
पुरुष नाम सत नाम बखाना। सुरतशब्दका पंथ लखाना॥
गुरुसे प्रीति साधुकी सेवा। तबपावे कुछ हरि कोभेवा॥
टहल करै पित माता केरी। भूखेको नहिं दरसे फेरी॥
प्रापत में हर खावे नहीं। करै न सोच गयेको माहीं॥
पल पल पर यश हरिको गाई। बैर विरोध करै नहिंभाई॥
सबके लिये सुभ इच्छा राखै। बचनकठोर न मुखसेभाखै॥
पर दुखी पर दृष्ट न लावे। संग कुसंगी को नहिं भावे॥
अस तुम दूसर सुन हरखावे। अपनी अस्तुत सुनडरजावे॥
निंदिया दुस कर भी न भावै। अपनीसुनकर क्रोध न लावै॥
सुरत शब्द सो जाय मिलावै। हरिका गुणागवत हरखावै॥
जो कुछ होइ वही भल जानै। हरिको धन्यवादसुख आनै॥
वाह गुरू तू जपले मीता। जगत विघनकोसहजे जीता॥
गुरु से अब यह विनती होई। याको पाट करै जो कोई॥
नेम सहित दोहा चौपाई। करै पाठ जो चित्त लगाई॥
इच्छा पूरण रक्षा पावै। चलै सुपंथ संत गुण गावै॥

दोहा॥

बिन्द्राबन आधीन पर दया करो सब कोय।
नाम प्रीत उरमें बसे दर्शन सहजे होय॥

बारह मासा॥

असाढ़ पिया बिन भारी। मैं डगर निहारों ठाढ़ी॥
पियारे अब एही बिचारों। तन मन मैं तुम पर वारों॥
आवो करो यहां डेरा। बिन्द्राबन बसाओ खेड़ा॥
अब मोहि लिया प्यारे तूने। प्रघट रहो या खूने॥ १॥
सावन में आवन कहिगै। आसा जो मन को दैगै॥

निश दिन मैं राखेा ध्याना । खेाजो शब्द की खाना ॥ अपने जो घटमें बसके । साईं जो बोले हंसके ॥ हर छिन में नाम रटोगी । बिन्द्रावन यह माला बटोगी ॥ २ ॥

भादों घटा घन घेरें । हम नैन मींच पिउ हेरे ॥ जब चुप्प रहूं पिया बोलैं । श्रवन में चितको तोलें ॥ मैं कान को मूंदा जबसे । पिया बीन बजावैं छबिसे ॥ बिन्द्रावन की पूरी आसा । जहां पीव वहां तेरा बासा ॥ ३ ॥

कुआरैं खुली सत द्वारी । निरखा पियारा लारी ॥ चिकुटी द्वार जब देखा । छूटा जनम का लेखा ॥ मैं चक्रित अब कुछ कीजे । पिउ आपन दर्शन दीजै ॥ सुन महा सुन जहां हम आने । बिन्द्रावन लखा निरबाने ॥ ४ ॥

कातिक तका जिन अन्दर । बासा किया बिच मन्दर ॥ जो जो गगन चढ़ धाया । निरमल छुटी जब माया ॥ रही रूप रंग राती । पिया होगये हमारे साथी ॥ पूरनमासी भयौ परकासा । बिन्द्रावन की पूरी आसा ॥ ५ ॥

अगहन हमैं नहिं भावै । पिया प्यारा आपना आवै ॥ भोजन अनेक प्रकारी । बिन राम रस सब खारी ॥ छः मास हुए सब भूला । बिरहा हुई जस सूला ॥ बिन्द्रावन पियारे जगमें । ब्यापक है दसों मगमें ॥ ६ ॥

पूस मास कस बीतै । काम क्रोध जो जीतै ॥ मैं कुटिल खल कामी । तुमतो हो अन्तर यामी ॥ ऐपिया चूक निवारो सिरसे ये बोझा टारो ॥ बिन्द्रावन पियारे बोलैं । मनकी गिरह को खोलैं ॥ ७ ॥

माघै घरही में ढूंढा । बाघन का सिर जब खूंदा ॥ पिया बिन जो मकर नहावैं । आग लगे जल जावै ॥ बेनोजो है जग मेला । मैं चाहेां उसे अकेला ॥ बिन्द्रावन से बूझो कैसी । सुध रही न ऐसी वैसी ॥ ८ ॥

फागुण बसंती रुतियां । करले पिया संग बतियां ॥ बन

बन जो बनबन फूले। दृहा करेजे झूले। रंग रंग रंगीली गावैं। पिया पिया कहि धावैं॥ सुर ताल छत्तीसी रागिन। बिन्द्राबन पिया बैरागिन॥ ९॥

चैत आया जब हम चेता। तन धन है पिया के हेता॥ मैं शीघ्र से चल कर जाऊं। मैं कैसे पिया तोहिं पाऊं॥ कर जोर येही मैं भाखा। रस पिया तुम्हारा चाखों॥ नईनई अवाजैं आवैं। बिन्द्राबन सोहं रट लावैं॥ १०॥

बैसाख महीना भारी। सूरत दिखाओ यारी॥ सखीआ निरादर करती। कहाना नहीं चित धरती॥ जाउ जहां सब मूसैं। तुम बिन पिया सबरूसैं॥ बिन्द्राबन मनावोपिया को। धीरज रखो या जिया को॥ ११॥

यह जेठ अगिन अस आया। हरि बिन जो जलती काया॥ सीतल करोया हिरदा। हारामैफिरदाफिरदा॥ बारहमास हुए पिया आओ। मन्हों की मेह बरसाओ॥ मिलिया जो सतगुर रामा। बिन्द्राबन के पूरण कामा॥ १२॥

आया सखी लौन महीना। पूरण पियाको चीना। आये पया मेरे प्यारे॥ हिरदे के नैन उघारे। पाया जो मैने हेरा॥ येा सुफल जन्म है मेरा। बिन्द्राबन यह बारह मासी॥ गावै कटै जम फांसी॥ १३॥

इति

१ ओं सतगुर प्रसाद ॥ * ॥

अथ चौथा भाग ॥

बेदांत की चरचा में ॥

दोहा ॥

दरपन करके माहिं है दरपन माहीं आप ।
बिन्द्राबन बिहार में पूरण रहियो ब्याप ॥

चौपाई ॥

अस्ती भाती पिरिये रूपा । ब्यापक एक अखंड अनूपा ॥
है चेतन आनन्दी सोई । ए रस पूरण भाग न होई ॥
करै करावे नहिं कुछ करता । ऐसा रूप बिसमादी धरता ॥
येही रूप अपना है आपा । बिन बूझे भर्म दूजा थापा ॥
अह अनातम है अज्ञाना । जिनयह बूझा हुआ सयाना ॥

दोहा ॥

ब्रह्म नहीं कोई आन है सोतू आपी आप ।
भूलमिटी तब सुखहुआ बिन्द्राबननहिं ताप ॥

चौपाई ॥

मन इन्द्रीका बिषय न होई । इनका है प्रकाशी सोई ॥
जाग्रत मांह पदारथ जोई । स्वपन मांह सब गये बिगोई ॥
जाग्रत स्वपन दोऊ भ्रम होई । सुखुप्त मे दोनो गये खोई ॥
जागे पर यह जगत दिखाना । सुखुप्त का आनन्द नसाना ॥
तीन अवस्था जीव को जानो । तिनका दृष्टा चेतन मानो ॥
सो स्वरूप तेरा है भाई । याही से तू ब्रह्म कहाई ॥
जबलग आपन रूप न पाई । तबलग आवागवन न जाई ॥

दोहा ॥

द्वैत गये बिन ना मिटे आसा तृष्णा राग।
बिन्द्रावनबेदांत लख दुतियाभावतियाग ॥

चौपाई ॥

मल पापा कर्मो ने धोई। चंचलता भगती ने खोई ॥
भूल अभाव ज्ञान तें होई। जाना रूप निरमल है सोई ॥
कर्म भगति और सब ज्ञाना। कलपति तीनों एक समाना ॥
जो इन सबके पाछे रहिया। सो वह सत्य सरूप कहैया ॥

दोहा ॥

बिन्द्रावन निजरूप जिन जाना रहा न सोग।
आपन चीन्हा आपको रहा न एको रोग ॥

चौपाई ॥

स्वप्न रोग झठा है भाई। झूठे बैद ताहि को आई ॥
झूठी दवा देह दुख नासा। सबकुछ झूंठझूंठ भयाभासा ॥
जागा सोई रहा वह एका। या बिधि चेतन नहीं अनेका ॥
अहं ब्रह्म ज्ञान उपदेसा। जागा जब नहिं माया लेशा ॥
अहं ईश्वर मत कछ भाई। यामें ज्ञान भगत दोउ जाई ॥
माया सबल रूप नहिं तेरा। माया त्याग अपन पौ हेरा ॥
देख बिचार तू मनसे प्यारे। क्या तू छोड़ा काहि गहारे ॥
उत्पति प्रलै सभी कलपना। इसकीनिरनयमें नहिंपचना ॥
सबनेउत्पति भिनभिनभाखी। कहो किसनेदी पूरी साखी ॥
जैसे दसने स्वपना पेखा। भिन्न भिन्न सब दीना लेखा ॥
जो वृत्तांत इन सबने भाखा। स्वप्न समय सच्चा गहिराखा ॥
बास्तवमें जो सत वह होता। जाग्रत मांहि नहीं वह खोता ॥
इसीभांतउतपति पहिचानें। ज्ञानी जन निश्चय यह ठानें ॥
संशय रहित ज्ञान जब होई। दुबधा दुरमत गई बिगोई ॥
सब इच्छाका भया अभावा। त्यागी देह चैतन्य रहावा ॥
माया कृत रहे नांहीं देशा। मिटा सभी माया का लेशा ॥

रूपवान है लोक जो भाई। सोसब माया रचित कहाई॥
विषई जिव आसा मन राखैं। लोकमाहिं सुखरसबहुचाखैं॥
आवागवन बोझ सिर धारा। जाना पार रहे वह वारा॥
ज्ञान अवरोक्ष मुक्ति को दाता। सो उपजय देहै कुशलाता॥
खट परमान कर सिद्धी माना। परतक्षपरमानऔरअनुमाना॥
शब्दपरमान और उपमाना। अरथापत्ती पंचम जाना॥
षष्टम अनुपल्ल भधो होई। जो समझा मुक्ता है सोई॥
इन्द्री विषय परतक्ष कहावे। अग्नि उनमान धूमसे पावे॥
श्रोत्र से जो सुनया जाई। शब्द प्रमान इसी को गाई॥
ज्ञान उपमान यही पहचाना। कहा सुई कांटेसो जाना॥
है बलवान कहै नहिं खाता। बिनभोजनबल कहां सेआता॥
अर्था पत्ती येही बखाना। षष्टम का अब करो धियाना॥
घट जब जाय फूटरे भाई। घट अभाव अनु पल्ल भधिगाई॥

दोहा॥

बिन जाने परमान के अर्थ सुद्ध नहिं होय।
अर्थ सुद्ध जो नानखै कहो भर्म कस खोय॥

चौपाई॥

श्रुत सिम्रत संत सब भाखा। चेतन एक भिन्न कर राखा॥
आभाससहित बुद्धीकरै ज्ञाना। धरै कूटस्थ कोवहअभिमाना॥
साच्ची ब्रह्म एकही रूपा। येही ज्ञान ज्ञानन को भूपा॥
इन्द्री विषय नहीं है आतम। आपन लखाआप परमातम॥
सुखदुखका कहो कौनसरूपा। ज्ञात होय अस ब्रह्म अनूपा॥

दोहा॥

ब्रह्म और परपंच में रंचक भेदन जान।
दृश अदृश सब ब्रह्म है बिन्द्राबन सत मान॥
बिनम्रतकाघट कुछनहीं म्रतकाही घट होय।
निराकार आकार है बिन्द्राबन लख सोय॥

अब इस समय में बहुधा वेदान्त की भी चर्चा परमार्थियों

को अच्छी मालूम होती है और जो उसके सुनने के अधिकारी हैं उनको ज्ञान प्राप्त होता है अब सबसे पहिले अधिकारी वेदान्त का समझना चाहिये वेदान्त श्रवण करने का अधिकारी वह पुरुष है कि जिसके मल अर्थात् पाप और मनकी चंचलता दूर होगई है केवल एक स्वरूप का अज्ञानहै और चार साधनसहित हो १—विवेक २—वैराग्य ३—खटसम्पत ४—मुमुक्षता विवेक यह कि सत्य असत्य को समझता हो वैराग्य यह कि ब्रह्मलोक तक के सुखों की इच्छा नहो किंतु उनसे घणा हो खट सम्पति के यह अंग हैं समन का मारना अर्थात् संकल्प विकल्प न उठने देना १ दम इन्द्रयों का दमन करना अर्थात् विषय आदिक का त्याग करना २ उपराम जगत से वैराग्य और वेदांत शास्त्र सुननेके निमित्त देह की क्रिया होय ३ तितिक्षा धूप छांह क्षुधा तृषा सह सक्ता हो किंतु समान समझता हो ४ श्रद्धा अर्थात् प्रीति रुचिभाव और निश्चय वेदान्त में होवै ५ समाधान अर्थात् चित्त ठहरा हुआ होवै ॥ ६ ॥

मुमुक्षता यह है कि मुक्तकी इच्छा रखता होवै ऐसा पुरुष अधिकारी कहलाता है फिर वेदांत शास्त्र का श्रवण मनन निध्यासन और तत्पदत्वं पद के अर्थ का सोधन करके मोक्ष को प्राप्त होता है चारों साधन और श्रवण आदि अन्त रंग साधन कहलातेहैं और कर्म यज्ञ आदि वही रंग कहलाते हैं मुमुक्षू अन्त रंग साधन की इच्छा रक्खे वही रंग का साधन साधारण रक्खे अन्त रंगसाधन के ज्ञान में फल प्रकट है और निष्काम वही रंग का फल जो मनकी शुद्धी कर्त्ता है वही रंग अर्थात् गुप्त है और काल अन्तर है क्योंकि कर्म का फल ततकाल नहीं मिलता और ज्ञान दो प्रकार का होता है एक परोक्ष ज्ञान कि ब्रह्म है और दूसरा अपरोक्ष ज्ञान कि मैं ब्रह्म हूं जैसे किसी मनुष्य की टोपी पवन लगने से

सिर पर से उसके पैरों के पास गिरपड़ी अब वह इधर उधर टोपी को देखता है टोपी उसको दृष्टि गोचर नहीं होती किसी दूसरे मनुष्यने कहा कि क्यों घबराता है टोपी तेरे पास है यह सुन कर उस मनुष्य को ऐसा निश्चय आया कि टोपी है गई नहीं है इसको परोक्ष ज्ञान कहते हैं कि ऐसा निश्चय हुआ कि ब्रह्म है तदनन्तर उस मनुष्य ने उसे कहा कि देख तेरे पैरों के पास टोपी है अब उसने टोपी को देखा यह अपरोक्ष ज्ञान है जब ऐसा निश्चय हुआ कि मैंही ब्रह्म हूं ॥

इस दृष्टांत से यहां केवल इतनाही प्रयोजन है कि परोक्ष और अपरोक्ष के अर्थ समझ में आजावें ॥

अब बहुधा लोग यह कहते हैं कि इस समय में ऐसा अधिकारी कोई नहीं दीखता और बिना अधिकार वेदांत का श्रवण करके बाचक ज्ञानी होजाते हैं कोई मनुष्य ऐसे ही कह रहा था कि एक परमहंस वहां आगये उस मनुष्य ने दण्डवत कर पूछा कि महाराज आपका नाम क्या है उन्होंने कहा कि इस देह का नाम चन्द्रमणि है तब उसने कहा कि महाराज आपने ऐसा कहा कि देह का नाम चन्द्रमणि है आपने अपनाही नाम क्यों नहीं कहा परमहंस बोले कि नाम देह का होता है चैतन्य का नहीं फिर उसने पूछा कि आप कौन हैं उत्तर दिया कि ब्रह्म महाराज आप ब्रह्म हैं तो और सब क्या है परमहंस ने उत्तर दिया कि जो दृश्यमान है सो जगत है मिथ्या है अन हुआ भासै है और यह भी है कि सर्व ब्रह्म है ॥

क्यों महाराज जो सर्व ब्रह्म है तो तुम स्वपच के साथ क्यों नहि खाते और रोटी के बदले उपला क्यों नहीं खालेते और जो आपको कोई बुरा कहै औ मारैतो क्यों क्रोध करते हो और जब कोई दुख आता है तो क्यों हाय हाय करते

है। और जो आप ब्रह्मज्ञानी हो तौ क्यों भोजनों के खोज में फिरते है। आप में इतनी भी शक्ति नहीं कि भोजन न करौ या भोजन अपने पास मंगालो हमने तो व्यास और जनक आदि को ज्ञानी सुना है जिनमें ऐसी सामर्थ थी कि चाहैं तो पृथ्वी को लौट दें और यह सामर्थ थी कि अपना पैर अग्नि में रखदें और दुख नहो। जड़भरथजी को ज्ञानी सुना है कि जिनसे पालकी उठवाई गई और उन्होंने कुछ न कहा और ज्ञानी अंतरयामी होते हैं और महाराज जब ज्ञान हुआ तो जगत नहीं भासना चाहिये न मालूम आप का ज्ञान कैसा है और आप ज्ञानी कैसे हैं और आप ब्रह्मण किस प्रकार हैं और आपके विवेक वैराग्य षटसम्पति किस प्रकार के हैं महाराज हमतो भगवान के दास हैं जीव हैं दुखी सुखी भी होते हैं असामर्थ्य हैं स्वामी से रक्षा मांगते हैं और उसकी माया का कुछ अंत नहीं बड़े २ देवता उसका कुछ अंत न पासके तो जीव की क्या गिन्ती है हमतो उसकी केवल सेवा करते हैं जैसे पहिले बड़े २ षटषोस्वर मुनीश्वर करते आये हैं और जो भगवान ने गीता में कहा है उसके अनुसार चलते हैं और स्वर्ग भोगने की इच्छा रखते हैं ॥

परमहंस कहते हैं कि भाई जोतू ब्रह्म ईश्वर जीव और देह का स्वरूप समझले तो तेरे सब प्रश्नो का उत्तर आ जायगा और जोतू यह न समझा चाहै तो हमारा पीछा छोड़ दे परंतु एक दृष्टांत तो सुनही ले ॥

एक कुंए में मेढ़क रहता था दैवयोग से एक हंस उस कुंए पर आबैठा मेढ़क ने पूछा कि तुम कौन हो और कहां से आये हो। हंस ने कहा कि मैं हंस हूं और समुद्र से आया हूं मेढ़क ने पूछा कि समुद्र कितना बड़ा होता है हंसने कहा कि बहुत बड़ा होता है मेढ़क ने ये छलांक मारी

कि इतना बड़ा होता है हंस ने कहा कि बहुत बड़ा होता है मेढ़क ने कहा कि बहुत बड़ा होता है मेढ़कने फिर दूसरी छलांग मारी कि इतना बड़ा होता है फिर हंस ने कहा कि भाई बहुत बड़ा होता है मेढ़क ने झुंझला कर तीसरी छलांग मारी और कहा कि इससे बड़ा क्या होगा तू झूंठा है हंस विचारा चुप हो रहा सो भाई जब तक तुम सारी प्रक्रिया न सुन लोगे तब तक तुम्हारा संदेह दूर न होगा वह मनुष्य क्रोधित होकर बोला कि क्या खूब हमको तो मेढ़क बनाया और आप हंस बने खैर आप अपनी कह लीजिये परंतु आप अपने ईश्वर देह जीवका वृत्तांत कहिये परम हंसने कहा कि शुद्ध चैतन्य को ब्रह्म कहते हैं और उसी चैतन्य माया सहित को ईश्वर कहते हैं और उसी चैतन्य अविद्या सहित को जीव कहते हैं और देह जड़ है मिथ्या है अन उतपन्य हुई दीखती है जैसे स्वपन की सृष्ट शुद्ध चैतन्य का स्वरूप सतचित आनन्द रूप है और पूरणहै और जितने उस चैतन्य ब्रह्म व्यापक का अविद्या में आभास है उतने चैतन्य को कूटस्त कहते हैं और माया और मायामें चैतन्य का आभास और चैतन्य ईश्वरहै अविद्या और अविद्या में चैतन्य का आभास और कूटस्त जीव है जो कूटस्त का आभास बुद्धी में कहा जाय तो परागकी जो सुषोप्ती का जीव है हानी होगी क्योंकि सुषोप्ती में बुद्धि का आभाव है ब्रह्म अकरता है ईश्वर करता है सब सामर्थवान है माया उसकी अज्ञाकारी है और जीव भोगता है अविद्या के बस जीव के स्वरूप में जो आभास अंस है वह पाप पुन्य करै है और उसके फलों को भोगे है और ईश्वर में जो आभास अंस है वह फल देता है और दोनों में चैतन्य अंस हैं वह एकही है ईश्वर नित्य मुक्तिहै क्योंकि शुद्ध सतोगुण में आभास है चैतन्य और

माया ईश्वर का स्वरूप है रजोगुण तमोगुण परधान सतो गुण में आभास जीव है सो परछिन्न है ईश्वर व्यापक है व्यापक उसे कहते हैं कि जो सारे होय और किसी अस्थान से उसका अंत न हो काल दिसा आदि भी व्यापक कहला तेहैं पर इन सबका अंत है वास्तव में एक चैतन्य ही व्यापक है सो उसकी पूजन यह है ॥

दोहा ॥

सर्ब ठौर में देखना आतम अचल अभंग ।
यह पूजा उसटेवकी कहिये अटल अभंग ॥
जो पूजा आकारकी ताको फल परछिन्न ।
बिन्द्राबन असबोध बिन पूरण रहगयोभिन्न ॥
चेतन सबमें एक है यह निश्चय तू जान ।
जो दृष्टी है भेदकी देहभाव से मान ॥
अग्नि माहि जेसे नहीं सीतलताका लेश ।
बिन्द्राबन तस ब्रह्ममें नाहीं द्वैत कलेश ॥

अब देखो मैने अपने को ब्रह्म बताया है जीव ईश्वर देह नहीं कहा है दुखसुखखानापीना मारनापीटनानाम जातयह सब देहका धर्म है सो उन्हों के ब्यौहार माया कृत्य पृथक २ हैं माया के ब्यौहार मेटने से ज्ञानी नहीं होता माया की असतता दृढ़ करने से ज्ञानी होता है ऐसेही खपच के साथ खानेमें या उपला खानेमें ज्ञान नहीं है जो इस देहके लिये भोजन नियत है और जिसके साथ ब्यौहार सानातन से चला आता है वही यह देह अंगीकार करै है और जो खपच के साथ खानेही में मोच्च है तो एक खपचके साथ क्या उसके भाई बंधु नहीं खाते उनकोही ज्ञानी समझो और क्या उपला किसी जीवका खाना नहीं है दीमक उपले को खाजाती है तो दीमक ही को ज्ञानी समझो और जो गाली मार खाकर चुप हो रहने सेही ज्ञानी होता है तो बैल दिन भर

गाली और मार खाते हैं और कुछ बोलते हैं न मारते हैं तो उनको ही ज्ञानी समझो और जो तुमने कहा कि जब सर्व ब्रह्म है तो फिर भेद करना क्याभाई जब सर्वब्रह्म कहा तो खपच के साथ न खाना या उपले न खाना कुछ और हुआ मेरा खपच के साथ न खानाभी तो ब्रह्महीं है क्योंकि मैंने सबको ब्रह्म कहा है एक दृष्टांत भी सुनलो एक ज्ञानीथे वह अपने चेलेको वेदांत पढ़ायाकरतेथे उसमें जीव ब्रह्म की एकता आई चेले ने कहा कि महाराज मैं भी ब्रह्म हूं गुरू ने कहा हां चैतन्य मात्र में कुछ भेद नहीं फिर कुछ देर के पीछे गुरू ने पानी मांगा तो चेलेने उत्तर दिया कि मैं तो ब्रह्म हूं पानी कैसे लाऊं जब गुरू ने कहा कि वतामैं कौन हूं और पानी लाना और पानी पीना और गुरू चेला होना किस का धर्म है अब चेला चुप हुआ अब शक्ति सामर्थ की बात सुनो कि शक्ति आदि पदार्थ ईश्वर में होते हैं सो मैंने अपने को ईश्वर नहीं कहा है अब शक्ति से और मुझसे क्या परयोजन है किंतु हम तो येही कहते हैं कि माया मिथ्या है इस्से उसके पार पाने का खोज करना भी वृथा है इसलिये रचना के आदि अंत इत्यादि का विचार करना भी निष्प्रयोजन है और जो तैने ज्ञानी सक्ति बान सुनाये उसका यह भेदहै तू सुन कि ज्ञानी दो प्रकार केहोतेहैं एक जुंजान दूसरा युगत योगी और जुजान योगी भी दो प्रकार के होतेहैं कोई अधिक प्रारब्ध रखते हैं और कोई न्यून प्रारब्ध रखते हैं और जुगति योगी ईश्वर के अवतार होते हैं सो मैंने अपने को ईश्वर का औतार नहीं कहा इस निमित्त व्यास आदिक से और मुझसे कुछ सम्बन्ध नहीं रहा और जनक आदिक से और मुझ से प्रारब्ध का भेद है उनकी प्रारब्ध बड़ी थी और ईश्वरजवान थे मेरी प्रारब्ध छोटी है इस्से इतना ईश्वरज नहीं परंतु ज्ञान में

मुझमें और जनकादिकमें कुछ भेद नहीं जो तुम पूछो कि जनक आदिक को ऐसी प्रारब्ध क्यों हुई इसका वृत्तांत सुनो किसी की उपासना केवल निष्काम हुई और किसीकी सकाम निष्काम दोनों हुई निष्काम केवल से ज्ञान प्राप्त हुआ और सकाम ने ऐश्वर्य्य दिया और कुछ भक्ति भी दी और सुनो कि ज्ञानी के जगत का आभाव है ऐश्वर्य को मिथ्या समझता है फिर ऐश्वर्य बड़ा हुआ या छोटा हुआ तो क्या किंतु थोड़े ऐश्वर्य में जीवन मुक्ति का फल अधिक है उपाधि कम होती है और तुम कहते हो कि बैराग्य जैसा कहा है वैसा किसी में नहीं दीखता हम तुमसे पूछते हैं कि हमने तुमसे कौनसी धन सम्पत मांगी है जिससे तुमने जाना कि बैराग्य नहीं है और तुमने यह कैसे निश्चय किया कि हमको धन सम्पत और सुखों कि इच्छा है और यह तुमने कैसे जाना कि जो हमको सुख मिलेतो हम ग्रहण कर लेंगे और उन सुखों को सत्य समझेंगे और तुम जनक आदिक को ज्ञानी कह चुके हो वह राजा थे और ग्रहस्थ थे अत उनको सुख में भूला हुआ कहोगे या क्या भाई यह जगत का सुख दुख प्रारब्ध आधीन है ज्ञानीको कुछ हानि नहीं करता जैसे सर्प के दांत तोड़ डालने से काट नहीं सक्ता और इसको ध्यान से समझो कि बैराग्य दो प्रकार का होता है एक दोष दृष्टि दूसरा मिथ्या दृष्टि से दोष दृष्टि यह है कि जब दुख आन पड़ा उसको न सहार सके घर छोड़ के बैरागी होगये जब प्रारब्ध आधीन फिर सुख मिला बस फस गये क्योंकि सुखके न मिलनेहीके कार्ण से बैराग्य हुआ था और जिसको मिथ्या दृष्टि से अर्थात् जगत को मिथ्या समझ कर बैराग्य हुआ है उसका बैराग्य कभी नहीं जा सक्ता क्योंकि वह कभी किसी पदार्थ को और इस जगत को सत्य नहीं जानैगा इसका बैराग्य सत्य है और जो तुम

कहो कि खट सम्पत सहित कोई नहीं दीखता तो हम पूछते हैं कि मनुष्यो कौन से सुख को भोगते हैं रूखा सूखा खाने को मिलता है और पृथ्वी सोने को मिलती है भूखे प्यासे भी पड़े रहते हैं और जो तुम कहो कि धूप छांह एक सी नहीं गिनते और जो तुम ऐसाही समझते हो कि धूप खानाही मोक्ष दाता है तो उन कुली मजदूरों को ही ज्ञानी समझो जो सब दिन धूप ही में रहते हैं और कुछ धूप का खेद नहीं मानते भाई इसका यह अभिप्राय है कि एक तो धूप और छांह दोनो को मिथ्या निश्चय करै दूसरे यह कि कदाचित् धूप में जाना पड़ै तो रुक न रहै चला जाय अब देखो दो मनुष्य गरमी की रुत में खस की टट्टियों में बैठे हैं किसीने कहा कि एक बड़े ज्ञानी महात्मा फलाने स्थानपर आये हैं एकने कहा कि हमसे तो अब धूप में जाया नहीं जाता दूसरे ने कहा कि दरशन तो अवश्य करने चाहिये वह चल दिया कहिये उसने धूप को छाया के समान समझाया नहीं जो समान न समझता तो दूसरे के सदृश वह भी बैठा ही रहता इसी छांह और धूप को एकसा समझाना इसीको कहते हैं और जो तुमने अपना वृत्तांत कहा सो सत्य है तुमको उचित है कि अपने को दास समझो सुकर्म करो और कथा सुनो और ध्यान करो येही तो ज्ञान पाने का मारग है जो ऐसा करे जाओगे तो एक दिन तुम भी ज्ञानी होजाओगे और तुम देखो कि जब तक रोटी नहीं खाई है तब तक चौके का बड़ा अधिकार है कोई छूने नहीं पाता और जहां रोटी खाचुके तो उसका कुछ ध्यान नहीं कोई छुवै कोई उसमें जाय कुछ बात नहीं ऐसेही जब तक ज्ञान नहीं हुआ है तब तक अवश्य ऐसेही रीति चाहिये ज्ञान हुए पीछे कुछ बन्धन नहीं है भगवान ने आप भागवत में कहा है ॥

श्लोक ॥

यावत्सर्व्वेषुभूतेषु मद्भावनोपजायते ।
तावदेतोपसेतोउ बाङमनोकायवृत्तिभिः ॥ १ ॥

जब तक सर्व भूतों में मद् भाव न होवे तब तक मन वचन काया करके उपासना करतार है भाई हम तुम को मिथ्या नहीं बतलाते तुम हम को चाहे सो कहो सो तुमारा अपराध नहीं है क्योंकि जितनी तुमारी बुद्धि है उतनी तुम भी कहते हो। एक कहावत है कि किसी भूखे ने एक हीरा पड़ा हुआ पाया उसने कहा कि वाह चमक तो बहुत अच्छी है परंतु किस अर्थ का जो इस समय अन्न का कण मिलता तो बड़े प्रयोजन का होता हीरे को फेंक कर चला गया महाराज आपके चित्त में आवै सो कहि लीजिये अब आप यह कहिये कि वाचक ज्ञानी भी होते हैं या नहीं परम हंस ने कहा कि कर्म कांडी आदि में पाखंडी भी होते हैं या नहीं मनुष्यों में पशु भी होते हैं या नहीं पक्के खिलाड़ियों में कच्चे खिलाड़ी भी होते हैं या नहीं और फूलवाड़ी में घास फूस कांटे भी होते है या नहीं महाराज यह तो सत्य है परंतु आप यह कहिये कि वाचक ज्ञानी और लक्ष ज्ञानी कैसे पहचाने कथन तो दोनों की एकसीसी सुननेमेंआतीहैं किंतु वाचक ज्ञानीलक्ष ज्ञानीसे कुछ अधिक ही कहाता है अब सुनो जो मनुष्य पहिले कर्म उपासना करचुका है औरचारसाधन साधचुकाहै ४ और वेदांत का सरवन मनन निसिध्यासन करके ततपदत्वंपद का सोधन कियाहै और ब्रह्माकार वृती है वह लक्ष ज्ञानी है और जिसने कर्म उपासना तो की नहीं और साधन सम्पन्न भी न हुआ और ज्ञान के वचन कहने लगा वह वाचक ज्ञानी है और देखो जिसने कर्म उपासना की है उससे उस समय में जब कर्म उपासना कर रहा था तब कुकर्म जाते रहे थे

और साधन अवस्था में मन इंद्री को बस किया था और यह बात परगट है कि जिस बात का अभ्यास छूट जाता है फिर वह बात उसे नहीं होती और न अच्छी लगती है जो कछ ज्ञानी है उनकी प्रवृत्ति कुकर्म में नहीं होगी और जो कोई प्रारब्ध आधीन उनसे कुकर्म बन जाय तो उसका कुछ सोक न होगा और उस से दंड का भय नहीं क्योंकि अच्छे कर्म से भी तो ज्ञानी आनंद नहीं मानता और न उसके फल की इच्छा रखता है इससे ज्ञानी सुभा सुभ कर्म दोनों से पृथक है और बाचक ज्ञानी की रुचि कुकर्म में होगी और उससे कुकर्म बनते होंगे उसको उचित है कि कुछ काल साधू गुरू की सेवा तन मन धन से करै तब वेदांत का स्रवण करै और नहीं तो बिना अधिकार जो वेदांत का सर बन करैगा वह निस्संदेह नष्ट होगा क्योंकि मोहनभोग खाने को मुख चाहिये पहिले शुद्ध चित से साधू गुरु की सेवा करना योग्य है तब वेदांत के स्रवण करने का अधिकारी होगा नहीं (तो दोनोंदीन से गये पांडे· हलूआरहे न माडे) ॥

दोहा ॥

ज्ञानी रहे पहाड़ सम खट पट व्यापे नाहि ।
बिन्द्रा बन वह सांत करि रहे प्रपन्न घट माहि ॥

और जिसकी रुचि कुकर्म में नहीं है और कुकर्म भी नहीं करता और ज्ञान के बचन कहता है पर कुल ज्ञान नहीं है तो उसमें मनन और निध्यासन की कसर है वह मनन और निध्यासन करै और जो यह कहते हैं कि जो ज्ञानी कहाते हैं हमने उनको कभी कर्म उपासना करते नहीं देखा उनको कैसे माने कि पूरा ज्ञान हुआ सो तुम देखो कि कर्म उपासना ज्ञान एकही जन्ममें तो नहीं होता कर्म उपासना और जन्म में कर चुका होगा गीता में

भगवान ने कहा है कि (अनेक जन्म संसिद्धीततो जाति परां-गतिम्) जो कर्म उपासना कर चुका है उसकी यह पहचान है कि लड़कपनसे परमार्थ की ओर रुचि होगी कुकर्म से भय रखता होगा साधु गुरु की सेवा में प्रीति होगी और मनमें दुख सुख की सहार गति होगीभजन गीत मंगल सुन्ने का उतसाह होगा चित्त उदार होगा और जिसने कर्म उपासना नहीं की उसकी प्रकृत इसके विपरीत होगी महाराज आपने कई अस्थानों पर कहा है कि जगत मिथ्या है अन झूआ भासे है यह बात अत्यंत बुद्धि में नहीं आई जगत प्रत्यक्ष में सत्य दीखता है इसमें भांति भांति की रचना है और इसी जगत में औतार हुये और बड़े बड़े राजा महाराजा महातमा भी हुये जब दुख होता है तब दुख ज्ञात होता है और जब सुख होता है तब सुखका भान होता है लड़की लड़के इष्ट मित्र घर बार धन धाम ये सब सत्य विदित होते हैं प्रधान न्याय करते हैं गुरु ज्ञान उपदेस करते हैं आप चरचा करते हैं मैं सुनता हूं आप ऐसे जगत को अन झूआ कैसे कहते हैं और जो जगत नहीं है तो आप फिर क्या समझाते हैं जब बंधनही नहीं तो मुक्त क्या होगी ॥

और महाराज पहिले ऋषीश्वरों ने हजारों वर्ष ध्यान पूजा और तपस्या की है और अब भी लोग करते हैं भला यह होसक्ता है कि यह सुकर्म निष प्रयोजन है और ब्रह्म का पाना केवल दोचार बातों ही के समझने से आजाता है सुनो तुमने जो कहा सो सब सत्य है परंतु देखो स्वप्नमें स्वप्न की सब रचना सत्य दीखती है या नहीं एक दृष्टांत है कि किसी मनुष्य ने सुपना देखा कि मैं बड़ा साहूकार हूं मेरे बेटे पोते हैं और बड़ी धूमधाम से बिवाह आदि कारज किये हैं और संपूरण बिरादरी में बड़ा कहलाता हूं

हाकिमों में मेरी बड़ी पहुंच है और पूजा सेवा भी मेरे यहां बहुत होती है गीता सहस्रनाम का पाठ करता हूं और ध्यान करताहूं कथा वारता होती रहती है बड़े २ विद्वान साधू पण्डितों की सभा इकट्ठी होती हैं इष्ट मित्रों के साथ व्यवहार होता रहता है फिर क्या देखा कि मैं एक बार अत्यंत रोगी होगया हूं हकीम बैद दवा करते हैं होम जाप होरहा है तीन महीने पीछे आरोग्य होगया फिर एक लड़का बीमार होगया हजारों उपाय किये परंतु कोई गुण कारी न हुआ लड़का मरगया अब हाय हाय कर रोता है भाई बंधु साधू पण्डित समझारहे हैं सो कभी कभी थोड़ी थोड़ी सांत आजाती है फिर रोय उठता हूं इसमें किसी विद्वान ने आकर कहा कि अब हाय हाय क्यों करते हौ यह जगत मिथ्या है और स्वपन के समान है पहले तो साहूकार यह बोला कि महाराज आपकी दृष्टि में स्वपन तुल्य है और मिथ्या है जो आपके लड़का होता और मरजाता तो आपको प्रकट होता कि जगत कैसे मिथ्या और स्वपन के तुल्य है फिर विद्वान ने कहा कि भाई यह सब स्वपनही है तू जाग उठ तेरा दुख अत्यन्त जाता रहैगा महाराज कैसे जागें आपही कृपा करके जगाइये विद्वान ने आवाज से कहा कि जाग उठ तू सोता है और तू अमुक है उठ खड़ा हो साहूकार जाग उठा अब देखता है कि न वह घर है और न वह माल है न साहूकारी है न वह ज्ञानी जगाने वाला है जैसा था वैसाही रहगया अब परमहंस ने कहा कि देखो स्वपन की बातें सब सत्य थीं या नहीं जो सच्ची न होतीं तो क्यों जाग्रत जगत कीसी दीखों और क्यों उसने दुख सुख पूजा घर धन्य हकीम पण्डित विद्वान बैद को सच्च माना और जब जागा तब कुछ नहीं आपही आप अकेला है ॥

महाराज स्वप्न तो और बात है और यह जगत और

बात है स्वप्न में तो इस जगत की देखी सुनी वस्तुओं का ध्यान आ जाता है परमहंस ने कहा कि यह बात मिथ्या है जिस बात का ध्यान होता है उसका भोग प्रत्यक्ष में नहीं होता वह वस्तु अपने अस्थान पर रहती है यह अपने अस्थान पर रहताहै केवल ध्यान किया करै परंतु स्वप्नमें तो यहबात नहीं होती क्योंकि वहां वस्तु को भोगता है इस जगत के सदृश सब दृश्य पदार्थ सत्य मालूम होते हैं स्पर्श में आते हैं जो केवल ध्यान होता तो यह नहीं होसक्ता देखो तुम्हें एक घोड़े का ध्यान आया तो ध्यान के समय वह घोड़ा तुम्हारे सम्मुख नहीं आजाता और न तुम उस घोड़े पर सवार होकर बाजार जा सकतेहो परंतु स्वपन में तो तुम घोड़े पर चढ़ते हो उसे दाना घास खिलाते हो इसलिये स्वपन में जगत की देखी सुनी वस्तुका ध्यान नहीं हो सक्ता परंतु वस्तु नई रची जाती है और जो तुमने तपस्या पूजा का दृष्टांत कहा सो भाई यह बात है की तपीश्वरी खरजेश्वरी और रजेश्वरी सो नरकेश्वरी और जो तुमने ऋषीश्वरों का दृष्टांत कहा सो यह बात है सुनो पहिले अवधि हजारों वर्ष की होती थी कहो ऋषीश्वर सिवाय इस काम के और क्या करते जो तुम कहो कि दश बीश हजार वर्ष की तपस्या और कष्ट भोगे बिना मुक्त न होगी तो अब संतोष करके घर बैठो न इतनी अवस्था होगी और न तुम तपस्या पूजा कर सकोगे और न तुम्हारी मुक्त होगी यह बड़ी बात है कि किसी को रस्सी में सर्प का भ्रम हुआ वह पहाड़को दौड़ा गया कि वहांसे शिला लाकर इसे मारूंगा खैर महाराज यह तो देखा जायगा आपका प्रयोजन तो येही है कि जगत और स्वपन सृष्ट दोनों बराबर हैं अर्थात् दोनों मिथ्या हैं स्वपन में स्वपन सृष्ट भीतो सत्य दीखती है इसी प्रकार यह जगत अज्ञान में

सत्य दीखता है जब पुरुष स्वपन से जागता है तो स्वपन सृष्टि मिथ्या मालूम होती है किंतु असंभव होता है क्योंकि उसको कुछ चिन्ह मात्र भी उसका नहीं मिलता ऐसेही जिसको ज्ञान हुआ उसको असत्य दीखता है परंतु इसमें एक बड़ा संदेह है कि स्वपन से जागे हुए पुरुष को तो फिर स्वपन सृष्टि का मन सहित अभाव होजाता है परंतु जिनको आप ज्ञानी कहते हो उनको तो अत्यंत इस सृष्ट का अभाव नहीं होता जो अत्यंत अभाव होजाता तो उनको अपनी देह और यह जगत कुछ नहीं दीखता परम हंस ने कहा कि दृष्टांत का अर्थ तुम ठीक समझे और जो तुमने संदेह किया है उसका यह उत्तर है कि प्रारब्ध का तीर जो चल चुका है वह अपने वेग को पूरा करके ठहरैगा ॥

ज्ञान हुआ और ज्ञान के होतेही तुमारे कहने के अनुसार जगत का आभासत रहना था परंतु प्रारब्ध के कारण शरीर को ठहरना है और दुख सुख भोगना है और यह बात जगत के भास हुए विना नहीं होसक्ती इस निमित्त ज्ञानी को जगत भासता रहता है जगत की सत्यता का तो आभाव होगया और जगत के भास का आभाव शरीर पात हुए पीछे होजायगा उसको विदेह मुक्त कहते हैं क्योंकि ज्ञानी को शरीर रखना नहीं है एक और भी दृष्टांत है जैसे कुम्हार दंड से चक्कर फिराता है और जब दंड चक्कर से अलग कर लेता है तब भी कुछ देर तक चक्कर फिरा करता है इसी प्रकार ज्ञानीको ज्ञानहुये पीछे भी जगत भासा करता है परंतु कर्मों का दंड दूर होगया जिसके कारण स्वरग नरक चौरासी लाख योनि भोगनी पड़ती है और देखो अंधेरे में कहीं रस्सी में सर्प का भ्रम हुआ तो मारे भय के गिर पड़ा और चोट लग गई जब दीपक से देखा तो रस्सी निकली अब सर्प तो जाता रहा रस्सी का निश्चय हुआ परंतु चोट न जा-

यगी कुछ दिन भोगनी पड़ैगी इसी प्रकार ज्ञानी को ज्ञान हुए पीछे भी प्रारब्ध के बस जगत भासत रहता है सो उसे ज्ञानी ब्रह्म से भिन्न नहीं समझता ॥

दोहा ॥

खाना सोना बोलना ज्ञानी के सम जान ।
सबको जाने ब्रह्म मय दूजा भाव न मान ॥

और ऐसा भी देखा सुना है कि ज्ञानी को जगत का अभाव भी होजाता है परंतु ऐसे ज्ञानी की देह बरष छः महीने से अधिक नहीं ठहरती और देखो कि सब ज्ञानी एकही बरण के नहीं होते प्रारब्ध आधीन सबमें भेद होता है देखो एक पुरुष तो स्वपन मेंसे जाग उठा है और उसको स्वपन की बातों का कुछभी स्मरण नहीं रहा ॥ और दूसरा स्वपनसे जागाहै और उसको स्वपनकी बातों का स्मरण तो है परंतु कुछ दुख सुख नहीं मानता ॥ तीसरा स्वपनसे जागा है उसके नेचके आगे स्वपन की बातें फिररहीहैं दुखी सुखी भी होताहै और पश्चात्ताप भी करता है कि रात की बातें सत्य क्यों न भईं परंतु कुछ कहता नहीं ॥ चौथा स्वपन से जागा हैसो अब अपने मनमें स्वपन की बातों का फल सत्य समझता है कि जो मैं स्वपन में राज किया है तो मैं अब राजा हूंगा जो स्वपन में कंगाल हुआ तो अब कंगाल हूंगा और लोगोंसे स्वपनका फल पूछता फिरताहै परंतु स्वपनकी राज और रंकता को मिथ्याही समझता है ॥ और पाचवां स्वपन से जागा है और सोच बिचार करते करते फिर सोगया जब फिर स्वपन देखता है तब कोई बुरा स्वपन होगया तो डरकर जाग पड़ा अब मनमें सोच विचार करता है परंतु सोता नहीं और छठा पुरष स्वपनही की दशा में जागा है उसको अपनी प्रथम दसा स्मरण हो आई है तो कहता है कि मैं अमुक हूं और अमुक स्थान में सोरहा हूं

यह जो कुछ दीखता है सब स्वपना है और मिथ्याहै चलो जाग उठो क्यों इसमें गिर मारते हो जाग उठा ॥ सातवें की भी येही दसा है परंतु कहता है कि जरा सैर करलूं कुछ तुम्हारी हानि तो है नहीं तुम तो जागे पीछे वही होगे जो है। वह सैर देखता है परंतु जोकि उसको अपनी दशा का स्मरण आगया इस कारण सुखी दुखी नहीं होता जो स्वपन में रोता भी है तौभी येही जानता है कि मिथ्या है और मिथ्याही रो रहा हूं मैं तो अमुक मनुष्य हूं और जो हंसता है तो भी यही कहता है और जब कुछ देर तक गैर देख लेता है तब कहता है कि उठो कुछ अपना काम ही करेंगे या आनन्द से फिर सो रहेंगे इसमें क्या लाभ हैं जाग उठा अब देखिये कि सातों पुरुष जागे परंतु अवस्था में भेद रहा इसी प्रकार ज्ञानियों की भी दसा समझ लो महाराज जो बातें आपने सुनाई वह हमने कभी नहीं सुनीथी और सत्यही होगी हमारेही ओछे भाग होंगे जो मुझको ज्ञान नहीं आता आप दया करेंगे तो क्यों न होगा महाराज आपने ऐसा भी कहा है कि भर्म करके जगत भासता है सो महाराज भर्म क्या वस्तु है भर्म उसको कहते हैं कि होय कुछ दीखै कुछ जैसे रस्सी में सर्प और और सीप में रजत का भानु और मृग तृष्णा का जल वास्तव में रस्सी है परंतु सर्प दीखताहै सीपमें रजतका भर्म हुआ रेत है परंतु पानी सा दीखा इसी प्रकार एक ब्रह्म है उसमें जगत भर्म आतमक दीखता है और जब ब्रह्मका ज्ञान हुआ तब जगत का पता भी नहीं और जब तक सत्य दीखता है तब तक ब्रह्म ज्ञान नहीं है और केवल पढ़े से ज्ञान नहीं होता ॥ दोहा ॥

विद्या कथनी कूड़ है जो अभ्यास नहोय ।
बिन्द्राबन अभ्यासबिन ब्रह्म लामगयो खोय ॥

सांत दृत्तजा पुरष की ताको भासे आय।
जैसे निरमल जल विषे आपन रूप दिखाय॥

महाराज भर्म तो जब होता है जबकि पहिले कोई सच्चा सर्प और रजत और पानी देखाहै तभी रस्सी और सीपी और रेत में सीप रूपा और पानी भर्मसे दीखता है आप कहते हैं कि ऐसेही यह जगत भर्म का दीखता है तो सत्य जगत कौन सा है जिस सत्य जगत को देख कर ब्रह्ममें इस जगत का भर्म होता है परहंसने कहा कि देखो कि यद्यपि स्वपन संस्कार जन्य होता है अर्थात पहिली देखी वस्तु का संस्कार अंतःकरण में रहे उसके अनुसार स्वपन दीखा परंतु देखो यह कुछ नेम नहीं है कि सच्चेही सर्प को देखकर रस्सीमें सांपका भर्महो देखो भानमती का सर्प झूठा देखा है तिस पर भी रस्सी में सर्प का भर्म होगा तुमने पहिले जन्म में जो असत्य जगत देखा है उसी असत्य जगत के कारण से तुमको ब्रह्ममें इस जगत का भर्म होता है और यह हमारा सिद्धांतहै कि जगत माया आदि छः वस्तु अनादि हैं जो महाराज यह जगत भी भर्महै और मृगतृष्णाकाजल भी भर्महै तो प्यास जैसे इस पानीसे बुझती है ऐसेही मृग तृष्णा के जल से भी प्यास बुझनी चाहिये परमहंसने कहा कि इसमें भेदहै कि सृष्टि तीनप्रकारकीहै एक परमार्थिक दूसरी व्यवहारिक तीसरी प्रति भासिक व्यवहारिक सृष्टि ईश्वर की रची है और प्रति भासिक जीव की है प्यास व्यवहारिक सृष्टि में है तो विवहारिक की सृष्टि के जलसे बुझैगी प्रति भासिकसे नहीं बुझ सकी क्योंकि परस्पर में भेद ठहरा देखो परमार्थिक सत्ता तो ब्रह्मकाहै उसका तीन कालमें नास नहीं होताहै और प्रतभासिकसत्ता का नास बिना ब्रह्म ज्ञानके होसक्ता है और व्यवहारिकसत्ताका नास

विना ब्रह्मज्ञान नहीं होसक्ता क्योंकि विवहारिकसत्ता ईश्वरी घरना है और प्रतिभासिक इस जीवकी और वास्तवमें प्रति भासिक सत्ताका भी नास ब्रह्म ज्ञान के विना नहीं होसक्ता विवहा रिक सत्ता से प्रति भासक का अत्यंत अभाव नहीं होता इतना होता है कि जैसे घट फूटगया पृथ्वी मेंसे कुछ परंतु मृतिका का नास नहीं हुआ सो प्रति भासिक का अत्यंत अभाव भी परमार्थक सत्ता से होता है ॥

अब महाराज भर्म का कोई अस्थूल दृष्टांत कहिये और बाजे जो ऐसा कहते हैं कि जगत मानने का है मानो तो जगत है नहीं तो कुछ भी नहीं है इसका भी भेद सुनाइये परम हंस ने कहा कि सुनो एक बैश्य था उसके एक पुत्री थी दिवाली का तिवहार आया दिवाली के एक दिन पहिले लड़की ने एक पात्र में गेरू घोर कर पिता की खटिया के पास इस निमित्त रखके सो रही कि प्रातः काल दिवाली दिवाल पर काढ़ूंगी और सायंकाल के समय उस बैश्य की खटिया के पास उसकी इस्त्री सदैव एक लोटा पानी भरकर रख दिया करती थी तथाच उसने वह लोटा धरा हुआ देखा उसने समझा कि लड़की ने धरदिया है यह समझ कर वह सो रही प्रातः काल होतेही वह बैश्य उस लोटे को उठा कर जंगल को लेगया जब आबदस्त ले चुका तो क्या देखता है कि रुधिर बहरहा है और जाना कि यह रुधिर दस्त में आया है इससे ज्ञात होता है कि किसी ने जादू किया है या कोई कठिन बीमारी हुई है अब सोच कर अत्यन्त घबराया सुध बुध जाती रही बड़ी कठिनता से घर तक पहुंचा और आकर खाट पर पड़ रहा इस्त्री पूछती है कि क्या दशा है कुछ नहीं कहता जब इस्त्री ने बहुत पूछा तो झुंझला कर कहने लगा कि हाय हाय मैंतो घड़ी दो घड़ी में मर जाऊंगा मेरे सवासेर लोहू गया है

उसकी इस्त्री भी सुनके हैरान हुई और बैद्य हकीम के बुलाने की तयारी हुई इतने में उसकी लड़की भी जाग उठी और लोटा ढूंढने लगी लोटा उसको मिलता नहीं वह रोने लगी माता ने पूछा कि तू क्यों रोवै है उसने अपने लोटे का हाल कहा उसका बाप भी पड़ा सुनताथा जब उसको ध्यान हुआ कि वह लोहू न था किंतु गेरू था एक दम से उठ बैठा कि मैंतो अच्छा हूं निरोग्य हूं वृथा इतनी देर तक दुख भोगा अब जगत की मानन का दृष्टांत सुनो एक बैस्य था वह परदेश चला गया दश बारह वर्ष व्यतीत हो गये जब वह गया था तब उसके वर्ष छः महीने का लड़का था वह अब युवा होगया वह अपने पिता से मिलने चला इसी अंतर में उसका पिता भी परदेश से घरको आता था ऐसा जोग हुआ कि वह लड़का एक अस्थान पर किसी सराय में दिन ही से अच्छी कोठरी देख कर उतर रहा सायंकाल को वह बैस्य भी वहां पहुंचा जिस कोठरी में वह लड़का उतरा था वही उस बनिये को भी पसंद आई बनिये ने उस लड़के को निकलवा दिया और कुछ अधिक देकर उसमें आप रहा लड़का संपूरण रात भर अत्यंत खेद में रहा और रोता भी रहा परंतु बनिये ने एक भी न सुनी जब प्रातःकाल हुआ तो बनियेने लड़के को देखा और उससे पूछा कि तू कहां से आया है उसने अपने देस का नाम बताया फिर बनिये ने जात महल्ला और बाप का नाम पूछा लड़के न सब वृत्तांत कह दियाबनिये ने सुनतेही कहा कि तू मेरा लड़का है अब गले से लगा लिया और जो कि रात को उसको दुख दिया था उसका अत्यंत पश्चाताप करने लगा परमहंस ने कहा कि देखो दो दृष्टांत कहे पहले दृष्टांत से जिसमें गेरू का वृत्तांत है वह भर्म को सिद्ध करता है पिछला जगत के मानने को

देखो वही लड़का राच में था पर उसको लड़का करके नहीं माना कुछ दुखसुख नहीं हुआ प्रातःकाल उसीको लड़का समझ कर दुखी सुखी हुआ इसी प्रकार जो जगत दृष्टि करो तो जगत है और जो ब्रह्म दृष्टि करो तो जगत नहीं ॥

महाराज जो जगत नरहा तो फिर क्यारहा केवल आकास ही रहा सो आकास सून है कुछ बस्तु नहीं और आपका ब्रह्म भी कुछ नहीं क्योंकि अरूप है इसलिये मेरे को बिदित होता है कि आप आकास को जो सूनसान है ब्रह्म कहते हैं परमहंसने कहा सुनो जो तुम कहते हो कि ब्रह्म जिसको अरूप कहा कुछ है नहीं हमने तो ब्रह्म के तीन रूप कहे हैं सतचित और आनन्द तुम कैसे कहते हो कि ब्रह्म कुछ है नहीं हां स्थूल रूप तो नाश है इसलिये अरूप कहलाता है और आकास तो जड़ है और उतपति हुआ है और ब्रह्म चैतन्य है उसकी चेतन्यता से आकाश का ज्ञान होता है और तुमने जो कहा कि जब जगत नहीं रहा तो सून्य सान्य रहा देखो सूनसान तो तब होवै जिस समय कुछ भी न होवै सो सूनसान के मालूम करने वाले तो तुम आपही मौजूद हो फिर सूनसान कैसे हुआ और ज्ञान ब्रह्म का सत्य होता है इन्द्रियां और अंतःकरण जड़ है वह आप तो कुछ जान नहीं सक्ते इसलिये देख ब्रह्मही सब का प्रकाशक है ॥

दोहा ॥

जिह्वा स्रवन नासिका तुचा नेत्र है जोय ।
इनका साक्षी आतमा निश्चय मानो सोय ॥
फुरना होवै लीन जब भयो जगत को नाश ।
बिन्द्राबन तब रह गयो केवल ब्रह्म प्रकाश ।
ब्रह्मबिना कुछ होत नहिं ब्रह्म अकर्त्ता होय ।
धूम कलोह संयोग कर रेल चलावै सोय ॥

ब्रह्म जगत यह नाम सब जब लगज्ञान न होय ।
मिटो द्वैतता भाव जब नाम रूप गयो खोय ॥
बुद्धि गुरू औ शास्त्र मिले यह तीनो साथ ।
जब कुछ दीखे ठौर की बस्तु बड़े तबहाथ ॥
जैसे जग स्वपने बिषय बिन सामग्री होय ।
बिन्दाबन तस यह जगत चिदाकाश है सोय ॥

महाराज यह आप सब सत्य कहते हैं परंतु मैं देखता हूं कि ज्ञानी के पास तो कोई एक दोई जाते होंगे किंतु बहुत से तो अकेले ही सुनसान बैठे दीखते हैं और ज्ञान किसी के समझ में नहीं आता इससे ज्ञानी के मिलने से कुछ लाभ नहीं होता है और जो ज्ञान सीखा तो कोरा कोरासा विदित होता है कुछ ब्रह्म नहीं देखा जासक्ता है शास्त्र के लिखे को बकलो और तो कुछ नहीं दीखता अब उपासक का वृत्तांत सुनो बहुत से मनुष्य आते जाते रहते हैं बहुतों को उपदेश होता है कथा वारता होती रहती है खूब परशाद बटते हैं भजन धूम से होता है ठाकुरों का शृंगार होता है दरशन करके चित बहुत प्रसन्न होता है और बड़े बड़े उत्सव होते रहते हैं भगवान का नाम जपते हैं ध्यान करके ईश्वर का गुणानुवाद करते हैं जिस समय प्रेम आता है उस समय गद गद होजाते हैं तात्पर्य्य यह कि जो ये सब असत्य होते तो आनन्द क्यो देते कहीं झूंठी बस्तु से भी आनन्द होता है और महाराज वेदांत का बचन सुनके तो अभिमानही होजाता है और पुरुष निर्भय होजाता है साधू गुरू से भाव नहीं रहता महा अनर्थ बुद्ध में घुस जाता है जब यहां ही यह दशा है तो आगे क्या होना है और आप मुझसे कहिये कि कौन कौन सी पोथी वेदांत के मत की ज्ञान की दाता है और कोई एक

दो ज्ञानी भी हैं उसका नाम बताओ भला गुरू नानक-साह की बानी कैसी है ॥

परम हंसने कहा कि भाई तुमको ज्ञान सीखने को किसने कहा हमतो तुमको पहिलेही कह चुके हैं कि तुम उपासना करो किंतु दृढ़ होके उपासना करो तन मन धन से भी इन सुकर्मो को उत्तम जानो कथा बार्ता सुनो तीर्थमें डुबकियां लो दान करो व्रत के दिन माल न खावो ठाकुर पूजाकरो शृंगार करो छापा तिलक लगाके नाचो कूदो गाओ झांझ मिरदंग बजाओ हथेलियां पटको तुम नाहक झुंझलाते हो अच्छा महाराज जो तुम यह बातें अच्छी कहते हो तो फिर तुम क्यों नहीं करते हो और ज्ञान ज्ञान पुकारते हो भाई तुम अपनी फिकर कर हम अपनी फिकर करलेंगे देखो नमकीन चिरपिरा खट्टा अच्छा होता है पर किसी को स्वाद लगता है किसी को नहीं लगता मिठाई अच्छी तो है पर किसीको अच्छी लगती है किसीको नहीं किसीको भीड़ भाड़ उपाधि पसंद है किसीको एकांत सांत वृति भाती है और तुमने जो कहा कि ज्ञानी के पास एक दोही जाता होगा और बहुत से भेद दिखाये और उपसाना की महिमा की सो सुनो जिस प्रकार भीड़ भाड़ तहसीलदारी में रहती है उतनी तो महकमे डिपुटी कमिश्नरी में नहीं और जितनी जरूरात डिपुटी कमिश्नरी में है उतनी कमिश्नर के यहां नहीं साहब कमिश्नरके यहां कोई अपील वाला या राजा बाबू जाता होगा अब तुम से पूछे हैं कि बड़ा सुख में कौन और अधिक सुख किस को और उसमें चीफ कमिश्नरी का अधिकारी कौन और भाई तुमभी सच्चे हो जो नहान आया तो हजारों धोतियां लेले उठ दौड़े और कथा में दसबीस मुशकिल से दीखें हैं और ज्ञानी के पास दो चार भी नहीं दीखते अब देखो

जो तीर्थ पर सैर तमासा है सो कथा में नहीं इसलिये तुम्हारे कहने के अनुसार तीर्थ बड़ा और भागवत गीता शास्त्र छोटे हुए और जो तूने कहा कि ज्ञानी के मिलने से क्या लाभ सो भी समझ जो ज्ञानी के एक बारका दरशन जो सुभइच्छा सहित हो तो तीन सौ साठ तीर्थ नहाने और दस वर्ष कथा सुनने के फल से अधिक है और ज्ञानी के साथ सतसंग की महिमा का क्या फल कहा जाय देखो एक आदिमी के पास धनकी थैली है अपनी समझता है उससे फल खाने की इच्छा रखता है जो किसी को देता है तो ब्याज के लालच देता है जो कदाचित मुफत भी देवे तो हजारों ऐसान करता है और आप सोच बिचार करता है और एक मनुष्य नसेमें है और थैली उसके भी पास है उसको थैलीकी कुछ खबर भी नहीं और नउससेउसकोसुख भोगने की इच्छा है अब जो कोई चाहै उसके पाससे थैली लेले देखिये अब इन दोनों में किसके मिलने से लाभ है जो उपासक हैं उनको अपनी उपासना का अभिमान है उसका फल भोगा चाहते हैं वह दूसरे को क्या देंगे पहिले अपना तो पेट भरलें और ज्ञानी से जो सुकर्म होते हैं उसको अपनीकरतब्यता का अभिमाननहीं न वह फलभोगा चाहता है और ईश्वरके यहां से सबको कर्मोंका फल दिया जाता है अब ज्ञानी लेता नहीं वह धन अस्वामी हुआ सो ज्ञानी के दर्शन और सेवा करने वालों को मिलता है और जो ज्ञानी केकुकर्म है उसकाफल निंदकको मिलताहै और जिसने सुभ इच्छा कर ज्ञानी के दर्शन किये हैं उसी समय गठरी मिली इसको बिना परश्रम का मोहनभोग कहतेहैंजिसके बड़े भाग उदय हों उसको ज्ञानी के दर्शन होते हैं कहो ज्ञानी कैसे परउपकारी हैं कि दर्शनही से इतना प्राप्त होता है और जगत में भी देखलो कि राजा की तो क्षण भर की सुला-

कात सब कुछ दे देती है और कंगाल को दस वर्ष की नौकरी में इतना हाथ नहीं आता एक दृष्टांत सुनो कि कोई मनुष्य किसी दूसरे के पास कुछ धन सौंप कर परदेश को गया जब वह परदेश से आया तब उसने अपनी धरोहर चाही रखने वाला मुकर गया अब वह हैरान है सब से फ़िरयाद करता है कुछ नहीं होता होते होते राजा तक खबर पहुंची राजा ने उस मनुष्य से कहा कि कल मेरी सवारी निकलैगी सो तू उस मनुष्य की दुकान पर जिसको धरोहर सौंपी है बैठा रहियो जब मैं दुकान केपास पहुंचूं तब तू मेरी ओर को आइयो मैं तेरी ओर अपना कान कर दूंगा तू कुछ एक दो बात चुपके से कहि दीजियो इसी प्रकार दूसरे दिन ऐसाही हुआ अब यह दसा दुकान दार ने देखी तब घबराया अब कहता है कि हां जी हां जी तुम्हारी धरोहर सब मौजूद है मैं तो तुमारी परीक्षा करता था कि देखूं तुम क्या करते हो उसी समय धरोहर सौंपदी अब राजा के क्षण भर मिलने का लाभ देखिये और दश पाँच दिन जो पहिले जो उसने अरो मनुष्यों से फरियाद की है उसका लाभ देखिये और तुमने जो कहा कि ज्ञानी का तो ज्ञान कोरा है और न कुछ आनन्द है न ब्रह्म दीखता है देखो हीरे की परख जौहरी को होती है और अनाज की परख बैसको जौहरी को सुख हीरे की अधिकता में है और बनिये को सुखनाज की अधिकता में है और जो तुम कहो कि ब्रह्म नहीं दीखता सो गोसाईं तुलसीदासजी पहिलेही कहिगये हैं ॥

दोहा ॥

हे नेरे सूझै नहीं लानत ऐसी जिंद ।
तुलसी यह संसार को भयो मोतिया बिंद ॥
तन सुखाय पिंजर करै धरै रैन दिन ध्यान ।
तुलसी मिटै न वासना बिना बिचारे ज्ञान ॥

दरदिवार दरपण भयो जितदेखौं तितमोहि ।
कंकरी पथरी ठीकरी भई आरसी मोहि ॥
एक समाना सकल में सकल समाना ताहि ।
कबीर समाना बूझ में तहां दूसरा नाहि ॥
आपहि किया कराइया आपहि करने योग ।
नानक आपहि रमि रहा दूसर हुआ न होग ॥

और एक दृष्टांत है कि कोई फ़कीर मारग में पड़ा था एक मस्ता हाथी चला आता था हाथीवान ने कहा कि फ़कीर हटजा फकीरने कहा मुझमें और हाथी में एक राम है मुझ से हाथी कुछ न कहैगा तब हाथीवान ने कहा कि क्या मेरे में राम नहीं है कि जो तुमको हटने को कहता है फकीर उत्तर न देसका और भाई जो तुमने कहा कि वेदांत के बचक सुन कर निडर होजाता है और अभमानी हो जाताहै सो कहना तुम्हारा ठीकहैं इसका निर्णयबाचक ज्ञानी केसंबाद में होचुका है और देखो कि लड़के को परछाहीं से डराया करते हैं और वह डरा करता है इसलिये कि वह छाया को देव भूत समझता है अब कहो कि जब वह लड़का बड़ा होजाय तो परछाहीं से डरना चाहिये या निडर होना चाहिये ॥

दोहा ॥

सर्ब सुख वैराग में तेज तपस्या मांहि ।
भक्तीमें प्रभुता बड़ी मुक्त ज्ञान बिननांहि ॥

कुण्डलिया ॥

ज्ञान समाधि जाके लगी सो क्या लावे ध्यान ।
सो क्या लावै ध्यान ध्यान दुतिया कहलावै ॥
आपै भये बादशाह फिर कौन के मुजरे जावै ।
लिया निशाना मार तुपक अब कौन चलावै ।

मन का संकल्प भजन रूप अपना दरसावे।
जो या सोया एक पल टुकौन होय हैरान॥
ज्ञान समाध जाके लगी सो क्या लावे ध्यान॥

चौपाई॥

भभा भर्म मिटावो अपना। यह संसार सकल है खपना॥
भरमें सुर नर देवी देवा। भरमें सिद्ध साधिक ब्रह्मेवा॥
भर्म भर्म मानुष डह काये। दुस्तर महा बिषम यह माये॥
भर्म भुर्म भय मोह मिटाया। नानक तेहि परम सुखपाया॥

एको एक कहै सब कोई है। मैं गरभ ब्यापै। अन्तर बाहर एक पहचानै यों घर महल संजापै॥ पर भनेरे हरि दूरन जानो एको सृष्टि सबाई। एक ओंकार औ नहिं दूजा नानक एक समाई॥ आप उपदेसै समझै आप आपी रचि या सब के साथ। आप कीनो आपन बिस्तार। सब कुछ उसका वह करने हार॥ उससे भिन्न कहो कुछ होय। थान थनंतर एको सोय॥ आपन चरित आप करने हार। कौतुक करै रंग अपार। मन में आप मन अपने माहि। नानक की मत कही न जाय॥

और सुनो साधू गुरू में जैसा भाव ज्ञानी को होता है वैसा उपासिक को कहा क्योंकि ज्ञानी ऐसा समझता है कि साधू गुरूही ने तो यह बात लखाई है अब उनसे बड़ा कौन क्योंकि ज्ञानीको तो ईश्वर से कुछ चाह नहीं रही और ब्रह्म सो वह अपने ही को मानता है इससे उसको ब्यावहार में केवल साध गुरूहीका धन्यबाद न और सेवा रही जिनके कारण अपने स्वरूप को जान लिया और ज्ञानी जो सुभकर्म करता है सो उनका करणा सुभावक है और उपासक तो कभी साधू गुरू को देखता है कभी तीर्थ का ध्यान करता है कहीं ठाकुर से प्रार्थना करता है और बड़े २ परिश्रम से सुकर्म करता है और तुम कहो कि कौन से ज्ञानी ने साधू

गुरू को मारा है बुरा कहा है या टहल नहीं की है और क्या ज्ञानी तीर्थ भजन स्मरण ध्यान नहीं करते सो हम तो कर्म उपासना का खंडन नहीं करते क्योंकि उपासना के बिना ज्ञान किसी को नहीं होसक्ता है और केवल ज्ञान से ब्यौहार नहीं चलसक्ता है एक दृष्टांत है कि कोई मनुष्य अंधा था और एक अपंगा था दोनों मिले और दोनों भूखे थे और वृक्षपर मेवा बरतमानथा अब अंधेकोदीखता न था और अपंग से चढ़ा न जाता था दोनों ने मता करके यह सलाह की कि अंधेने पंगुको अपने कंधे पर चढ़ाया पंगु ने वृक्ष से मेवा तोड़ा और दोनों ने खाया देखो जब दोनो अकेले थे तब मेवा प्राप्त नहीं होसक्ता था इसी प्रकार ज्ञानी कोतो कर्म उपासनाकी अत्यंत अवश्यक्ता है और अकेला ज्ञान तो पंग के समान है पर तुमको यह समझना चाहिये कि निन्दा बुरे की भी बुरी है और जबतुम ज्ञानी की निन्दा करोगे तो तुम्हारी उपासना कहां रही जो ज्ञान नहीं समझ में आता तो कहो इतनी बुद्धि नहीं है या कहो कि हमको ज्ञान से प्रयोजन नहीं है तौभी अच्छा है कि निन्दा के पाप से तो बचे और बिचार कर देखो तो ज्ञानी निरुपाध होता है और उपासक अपनी नाम होने की इच्छा के कारण बड़ी धूम धाम उपाधि खड़ी करा करता है और जो तुमने कहा कि असत्य वस्तु से भी कहीं सुख होताहै देखो भानमतीके असत्य खेलसे सुख होता है और दुख भी होताहैं स्वपनके असत्य सृष्टिसेसुखदुख होताहै और यद्यपि स्वपन का सुख मिथ्याहै परसुख अच्छा लगता है और स्वपन का दुख भी मिथ्या है पर बुराही लगता है और देखो स्मरण करको कि पहिले तो तुमने कहा कि हमको तो बैराग किसी ज्ञानी में नहीं दीखता और तुम आप बैरागही का समान बतला कर निंदा करते हो कहो कैसा अपराध करते

है और ज्ञानी तो यहां भीसुखी और अगेभी सुखी देखो तुम सब कुछ उपासना की महिमा कर आये परंतु सुखपति का सुख सब से बढ़ कर है क्योंकि दो पहर तथा तीन पहर तक कथा सुनोगे पूजा करोगे गाओ बजाओगे प्रेम करोगे फिरभी यही कहोगे कि अब तो सोवेंगे जो सोने में अधिक सुख नहीं होता तो क्यों सोने के लिये कथा मेंसे उठते और देखो कि सुखपति में कोई भी वस्तु नहीं है न तन है न घर है न धन है न कुटंब है न साधू है न गुरू है न सेवा है परंतु सुखपति का सुख सबसे बढ़ कर है सो ज्ञानी को ऐसा सुख सब काल प्राप्त है विषय का सुख अज्ञान में है क्योंकि अज्ञानी सुख को दूसरे पदार्थ से माने हैं अपने में नहीं देखता और वास्तव में सुख अपनेही में है जो अपने में नहीं होता तो सुखपति में सुख न होना चाहिये था क्योंकि कोई पदार्थ सुखपति में वर्त्तमान नहीं है और देखो जो पदार्थ में सुख होता तो सब काल सुखका भागी होना था सो यह बात नहीं है धन सम्पति कुटुम्ब आदि सब वर्तमान भी हैं परंतु फिर भी मनुष्य दुखी होता है जो धन सम्पति कुटुम्ब में सुख है तो क्यों उसको सब काल सुखी नहीं रखता और जिन्होंने अपने में सुख देखा है उनके पास एक पदार्थ भी वर्तमान नहीं और सुखी हैं और मनका यह स्वभाव है एक इच्छा करी परण हुई क्षण भर आनन्द माना फिर वैसा ही दुखी है क्योंकि अब दूसरी इच्छा उत्पन्न हुई फिर मन डग मगाने लगा देखो जिस काल में इच्छा पूरन हुई तो जरा मन ठहरा और सुख हुआ या सुखपतिमें बिना इच्छा हुआ था तो सुख हुआ इसे सिद्धि हुआ कि मन की निश्चलता में सुख है पदार्थों में सुख नहीं सो ज्ञानी का मन वैराग विवेक करके निश्चल हुआ है महा सुखी है उसको

पदार्थ का होना तो उपाधि दीखता है पर सुख दाई नहीं दीखता और जो प्रारब्ध आधीन पदार्थ मिलै हैं तो उनको असत्य समझ कर भोगता है जैसे समझने वाला भानमती के खेल को देखकर सुखी होता है यद्यपि अज्ञानी लड़के भी वैसाही खुशी होते हैं पर इतना भेद है कि लड़के उस खेल को सत्य समझते हैं और बुद्धिमान उसको मिथ्या समझते हैं और देखो ज्ञानी अज्ञानी दोनों भोजन करके सुखी होते हैं पर ज्ञानी अज्ञानी समान नहीं हो सक्ता ज्ञानी सुखको भोजन से उत्पन्न हुआ नहीं मानता है भोजन को इतना समझता है कि मन की इच्छा पूरण की मन ठहर गया परंतु सुख भोजन ने नहीं दिया सुख मन में ही था ठहरने से सुख का भान हुआ जैसे ठहरे हुए पानी में मुख दीखता है और अज्ञानी भोजन कोही सुख रूप समझता है और जो निश्चलता मन की पदार्थों से होती है सो पदार्थ थिर नहीं रहता और जो वैराग्य विवेक से मन निश्चल किया है तो मन सदा थिर रहता है केवल क्षुधा पिपासा के समय तो उपाधि उठाता है और जो तुमने पूछा कि कौनसी पुस्तक वेदांत के ज्ञान की दाता है सो पुस्तकों का क्या अन्त है परंतु तुम जो चाहो तो पंचदशी, अष्टावक्र, गीता, योगवशिष्ट, पढ़ो और एक ग्रंथ विचार सागर, महाराज निश्चलदास जी दादूपंथी का बनाया हुआ भाषा में ऐसा उत्तम है कि जिसके पढ़ने से तत्काल ज्ञान होजाय हम तुमको इसी पुस्तकों के द्वारा समझा रहे हैं किंतु विचार सागर के कई प्रसंग सुनाये हैं और ज्ञानी तो बहुत हैं कहां तक नाम गिनाऊं परंतु अब तू जा महाराज कृपासिंधु ब्रह्मस्वरूप आनंद में दादूपंथी महाराज राम जी दास साधू के दर्शन कर देख कैसे महात्मा हैं और जो तुमने पूछा कि गुरुनानक शाह की वाणी का वृत्तान्त कहा

सो सुनो गुरू नानक शाह फकीर हिंदू का गुरू मुसल्मान के पीर धन्य धन्य धन्य क्या बाणी है सरबत का घूंट है पढ़तेही शांत प्राप्त है तीनों तापों का नाश करन वाली है और बाणीमें किसी की निंदा नहीं केवल मालिक की ओर अनुराग सुरतशब्द का मेल और ज्ञान है पहिले सुख मनी साहब का पाठ करो देखो क्या अमोल पदार्थ है महाराज सत्य है ऐसेही प्रशंसा सारे सुनी है और मैंने देखाहै कि और पंथोंके साधू ब्राह्मण उपासकज्ञानी सब गुरू की बाणी का पाठ करते हैं महाराज आपने कहा कि सुषुप्त का सुख सबसे बड़ा है और मैंने सोने की अत्यंत निंदा सुनी है परमहंस ने कहा कि भाई दृष्टांतका एक अंग लिया जाता है इसने सो रहने को अच्छा नहीं कहा परंतु बिन पदार्थ के सुख का रूप दिखाया है और जो सदा सोता रहै तो भी एक बात है सो किसी से सदैव सोया नहीं जाता और जो अधिक सोते हैं तब बड़ा दुख पाते हैं फिर इस सोनेसे क्या लाभ हुआ महाराज धन्यहौ धन्यहौ बड़े २ भेद बताये वही भूल से बचाया महाराज कृपा करके कहिये कि ब्रह्ममें जगत का भर्म जो हुआ सो जैसे रस्सी में सर्पका सो महाराज देखिये कि सर्प का भर्म रस्सियां संधियां लकड़ी में होता है घटमें नहीं होता और ब्रह्म जगत का कुछ मेल नहीं बताया और एकसी सूरत नहीं बताई फिर ब्रह्म में जगत का भर्म कैसे हुआ परमहंस ने कहा कि इसका कुछ नियम नहीं है देखो जात देहकी होतीहै क्योंकि एकजीव पहिले जन्म में ब्राह्मण था अब बनिया हुआ जो जात धर्म जीवका होता तो बनियां न होना चाहिये था क्योंकि जीव तो अबभी वहीहै जोपहिले था परंतु अज्ञानीका जीव जात को अपनाही धर्म माने है अब यद्यपि जाति और आतमा से किसी प्रकार का मेल नहीं है और सूरत एकसी नहीं

है आतमा व्यापक है और जात पर भिन्नहै पर आतमा में जात का भर्म होगया इसी प्रकार ब्रह्ममें जगत का भर्म होगया ॥

महाराज ब्रह्मतो प्रकाश रूप सूरजके समानहै और जगत अंधेरे के सदृश है सूरज के सन्मुख अंधकार नहीं ठहर सक्ता ब्रह्ममें जगत कैसे ठहरा परमहंने कहा कि सुनो अग्नि लकड़ी में होती है परंतु न दीखती है और न लकड़ी को जलाती है इसी प्रकार समान चेतन अज्ञान का विरोधी नहीं किंतु साधक है महाराज माया सत्य है या असत्य है या क्या परमहंस ने कहा कि माया का व्यौरेवार वृत्तान्त सुनो शून्यवादी अर्थात् जो ऐसे कहैं हैं कि कुछ चैसी नहीं वह माया को अत्यंत अन झूआ कहे हैं इसको असत्य ख्याती कहै हैं अर्थात् जैसे रस्सी में सर्प असत्य है तैसे और अस्थान पर भी सर्प असत्य है विग्य ज्ञान वादी के मत को आत्म ख्याती कहते हैं कि रस्सी में या और किसी जगह सर्प नहीं है बुद्धि सर्प है बुद्धि से बाहर कुछ नहीं बुद्धिही सर्पके आकार को धारण करेहै बुद्धि क्षण २ में बदले हैं बुद्धि से बाहर जो अस्थूल जगत दीखै है सो भर्म है और न्याय और वैशेषिक अन्यथा ख्याती कहै है अर्थात् वामी देश में सच्चा सर्प है उसी को देखैं हैं नेत्र में दोष है जिस्से पास मालूम होता है जैसे कोई रोग ऐसा होता है कि चौगुना खिलासा है ऐसेही नेत्र का दोष वामी के सर्प को निकट दिखलाता है और ख्यातवादी कहैं हैं कि जो असत्य हो अर्थात् अत्यंत अनहुई वस्तु दीखै तो गीदड़ के सींग भी दीखने चाहिये इस्से असत्य ख्याती मिथ्या है और जो कि रस्सी में सर्प क्षण भर क्या घंटों तक दीखा करता है कुछ क्षण भर का नियम नहीं और बुद्धि क्षण क्षणमें बदल जाती है इसवास्ते आतम ख्याती असुद्धहैं और आन्यथा ख्यातीभी

मिथ्या हैं क्योंकि ज्ञान पदार्थ के अनुसार होता है पदार्थ रस्सी है सच्चे सर्प को कहां देखती इससे यह सत्य है कि सच्चे सर्प का ध्यान और समान रस्सी का ज्ञान यह अख्यात वादी का मत है परंतु यह भी अशुद्ध है क्योंकि जो सच्चे सर्प का ध्यानही है तो रस्सी को सन्मुख देखकर क्यों डरा और एक काल में दो ज्ञान भी नहीं होसक्ता इससे अनिर वचनी ये ख्याती शुद्ध है वेदांत में माया अनिर वचनी है न सत्य है और न असत्य है ऐसे प्रकार की है कि जिसको कुछ नहीं कह सकते देखो कि अंतःकरण की वृत्ती नेत्रों में से निकलकर जिस पदार्थपर गिरती है उस पदार्थ के समान होजाती है और उस पदार्थ का तिमर दूर करती है पदार्थ भासता है प्रकाश सहायक है और जहां रस्सी में सर्प भासा वह वृत्ती बाहर गई और रस्सी के साथ लिपटी भी रही पर तिमर अर्थात् अंधकार दोष कर रस्सी के समानाकार नहीं हुई उस समय में वृत्ती और अविद्या का क्षोभ हुआ वह अविद्या सर्पाकार होके भासने लगी अब देखो जो अविद्या का कारज सत्य होय तो रस्सी के ज्ञान से सर्प दूर न होना था और अब रस्सी का ज्ञान हुआ तब सर्प का आभास होजाता है इस निमित्त उस सर्प को सत्य नहीं कह सकते और जो असत्य कहैं तो दीखा था इससे सत्य और असत्य से किसी औरही प्रकार की है इस हेत से अनिर वचनी कहा देखो बीज में वृक्ष कैसे रहता है जो कहो कि बीजमें वृक्षहै तो बीज के तोड़े वृक्षका चिन्ह भी नहीं निकलता है और जो तुम कहो कि उसमें वृक्ष नहीं है तो फिर वृक्ष कहां से आजाता है इसीको माया अनिरवचनी कहते हैं और जैसे सर्प अविद्याही का परिणाम था ऐसे वह वृत्ती जिसका सर्प भासा है अविद्याही का परिणाम है सो ज्ञान भी अनिरवचनी है जो वह वृत्ती

अंतःकरण का ज्ञान होता तो सर्प का अभाव न होता ॥

महाराज सत्य है खूब समझ में आई पर महाराज आपने ऐसा कहा है कि स्वपन को सृष्टि तो नई रचना है महाराज जो जीव देहसे बाहर जाकर रचता है तो स्वपन के समय में देह मृतक के समान होनी थी सो होती नहीं और देह जरासी है उसके भीतर हाथी घोड़ा घर शहर कैसे बन सकते हैं सुनो वेद में लिखा है कि स्वपन सृष्टि मन रचता है सो देह के भीतर गले की नाड़ी में सब रचता है क्योंकि मन बिना प्राण के देह सेवा कर नहीं जा सक्ता है प्राण सब इन्द्रियों का राजा है जहाँ प्राण निकसा तहां सब इन्द्रियां भी गईं जो मन और प्राण बाहर जाते तो देह मृतक समान होती और जो कहो कि केवल मन बाहर जाकर स्वपन सृष्टि रचता है सच्चे पदार्थों को देखता है सो देखो मन में ज्ञान शक्ति है कर्म शक्ति नहीं है और स्वपन में सब कर्म करने पड़ते हैं सो कर्म प्राण और इन्द्री आदि के बिना होता नहीं इस हेत से केवल मन का बाहर जाना बनता नहीं मन जैसे घोड़े हाथी रचता है वैसेही कल्पित देह इन्द्री स्वपन देखने वाले की भी रचता है क्योंकि स्वपन में राव को घाव लगा पर प्रातः काल इस सच्ची देह पर चिन्ह नहीं होता इससे सिद्ध हुआ कि वह देह जिस पर घाव लगा था और थी और कल्पना मात्र थी स्वपन साक्षी भास है क्योंकि जाग्रत देह की इन्द्रियां नहीं दीखतीं ॥

महाराज आपतो जगत को स्वपन समान कहे हैं पर मेरी बुद्धि में नहीं समाता भला यह तार जिसमें खबर भेजी जाती है और रेल गाड़ी यह मिथ्या होसक्ती हैं परमहंसने कहा कि सुनो तुम वृथा भर्म में पड़ते हो रेल तार आदि जगत में हैं या जगतसे भिन्न हैं और जब सारा जगत मूल

सहित मिथ्या हुआ तो रेल आदि कहां से सत्य पदार्थ हो जावेंगे देखो स्वप्न में तुम ऐसे ऐसे अद्भुत पदार्थ रचो हौ कि जिसका अंत नहीं मिलता और स्वप्न अवस्था में बहुतसे देखते हैं और तुम जानतेहो कि उन पदार्थोंसे स्वप्न के जगत को बड़ा लाभ हो रहा है पर हां बड़ी बुद्धिमानी का काम है धातों का सुभाव और धुवर का बल जानकर यह रेल आदि बना है देखो एक नानबाई अर्थात रोटी करने वाला था उसने एक देग चूले पर चढ़ाई और एक थालीसे उसका मुंह ढक दिया जब पानी औटा तो धूम के बलसे थाली हिलने लगी उसने उस थालीपर एक तार चिप का कर तार का दूसरा सिरा दूसरे मकान में निकाला अब जैसे२ थाली देग पर हिलै है वैसेही तारका सिरा भी दूसरे मकान में हिलै है उसने तो यह सब खेलके समान किया परंतु पीछे और बुद्धिमानों ने धुयें की बलकी परीक्षा की और धुयेके बलसे गाड़ी चलाई रेलगाड़ी में धुआं एक नलकी तरफ जोरसे जाता है उसके बलसे रेल चलती है तारका हाल सुनो कि इन्होंने यह मालम हुआ कि धातोंमें भी बल होता है और कोई धातु दूसरी धातु से मेल रखती है कोई बैर कोई धातु पोली होती है कोई ठोस देखो एक लंबी छड़ी फूल धातुकी बनाओ और एक लोहे की फूलकी छड़ी का तुम एक किनारा ठोंको दूसरे किनारे तक झनकार चली जावेगी और लोहे की छड़ीमें यह बात न होगी इसी प्रकार यह तार भी ऐसी धातों सेबना है जब खबर भेजनी होती है तबतारके सिरेको पारेसे डुबो दिया करते हैं और और तारके दाहें बाहें हिलाया करें हैं सो वह हिलाना तार लिये चला जाता है जहां तार का सिरा आता है वहां एक सुई होती है सो हिलजाती है सो जो दाहें को हिली तो क अक्षर समझा और बाहें को हिली तो ल अक्षर समझा

दोनों का जोड़ कल हुआ इसी तरह सब अक्षरों के चिह्न नियत हैं अब देखो यह बड़ी बुद्धिकी बात है पर जगत से बाहर नहीं है ब्रह्म ज्ञान दूसरी बात है ॥

दोहा ॥

साधन करै सुनारि जिम कुंदन लावै हाथ ।
बिन्द्राबन अस ज्ञान में जगत रहे नहिं साथ ॥
माया के संयोग से जो चेतन भयो जीव ।
सो चेतन निज रूपको त्याग कियो नहिंपीव ॥
दर्पण जल के माँहि जस छाया दूसर होय ।
बिन्द्राबन जो बिम्ब है नहीं हुआ वह दोय ॥
मन फुरना से रहित कर कौने बिधसे होय ।
चहे भगत चहे ध्यान कर चाहे ज्ञानसे खोय ॥

महाराज आपने तो प्रारब्ध को अमिट कहा जो प्रारब्ध अमिट है तो फिर वेद शास्त्र ने जतन क्यों लिखे कि ऐसा करै तो ऐसा होगा किसी के प्रारब्धमे धन नहीं था पर शास्त्र के अनुसार उसने जप तप पूजा की धन उसके होगया अब प्रारब्ध तो मिट गया परमहंस ने कहा कि सुनो यह झगड़े अविद्या के हैं तुम ब्रह्म विचार करते करते कहां जा पड़े खैर तुम ने पूछा हम इसका भी दृष्टांत कहि देतेहैं पर यह स्मरण रखना कि हमारा सिद्धांत यह है कि माया अनिर्वचनीय है अब सुनो जिसमनुष्यने शास्त्रके अनुसार अमल किया है और धनवान होगया इसमे प्रारब्ध नहीं मिटती इसको ऐसा समझो कि उसको प्रारब्ध में धन होना इसी मार्ग से लिखा था जैसे किसी को नौकरी करके किसी को दुकान दारी करके किसी को कथा कह कर धन मिलता है उसको जप तप पूजा करके ही धन मिलाना था ॥

दो० जैसी हो होतब्बिता तैसी उपजे बुद्धि ।
होनहार हृदै बसे बिसर जाय सब शुद्धि ॥

चौपाई ॥

होय हैवही रामरचराखा । को करि तरक बढ़ावै साखा ॥

तो महाराज अब मैं कुछ न करूंगा जो कुछ मेरे प्रारब्ध में होवैगा सो होरहेगा ॥ परमहंस ने कहा कि ठीकहै पर देखो जो तुहारी प्रारब्ध मे कुछ न करना लिखा है तो तुम वास्तव में इस बात पर उपस्थित होजाओगे और जो करना प्रारब्ध में लिखा है तो अभी एक दम में औरही समझ होजायगी और देखो कि जो कुछ न करने से तुम्हारी प्रारब्ध में सुख लिखा है तो सुख प्राप्त होगा और जो दुख लिखा है तो दुख मिलैगा ॥ एक दृष्टांत है कि दो मनुष्य थे परस्पर झगड़ते थे एक कहता था कि उद्योग बड़ा दूसरा कहता था कि प्रारब्ध किसी मनुष्य ने इन दोनों को एक कोठरी में बंद कर दिया जो प्राब्ध को बड़ा कहता था वह तान दुपट्टा सो रहा कि जो होना होगा सो होगा जो उद्योग को बड़ा कहता था उसने अपने चित में कहा कि कुछ उद्योग करो नहीं तो भूखेही मरे उसने दिवार में किसी जुगत से गरत किया और कहीं से खाना लाकर खूब खाया अब चित में कहता है कि चलो वह प्रारब्ध वाला भूखा पड़ा है उसको भी खिलादो कि वह भी जानै कि उद्योग ऐसी वस्तु है उसने उसकी कोठरी की दीवार में गरत करके कहा कि लो खाने को ले क्यौ भूखों मरता है देख हमारा उद्योग और अपनी प्रारब्ध कौन बड़ा है प्रारब्ध वाले ने कहा कि लावो खाना ले लिया और कहा कि ले देख अब हमारा प्रारब्ध बड़ा या उद्योग तूने तो इतना परिश्रम किया तब खाने को मिला और हमै सोतो हुए खाने को आया उद्योग वाला चुप हुआ अब इस दृष्टांत से ऐसा सिद्ध हुआ कि प्रारब्ध बड़ा परंतु ध्यान करने का अस्थान है कि खाना बिना उद्योग के प्रापत नहीं हुआ

किसी उद्योग वाले ने इतना उद्योग किया था जब खाना मिला इस बिना उद्योग के प्रारब्ध कुछ नहीं कर सक्ती इस्से दोनों बराबर से हैं जैसे बिना तेल और बत्ती से दीपक नहीं बलता जो तेल और बाती नहीं है तो क्या प्रकाश करैगा और जो बाती है और तेल नहीं है तो भी कैसे प्रज्वलित करै परंतु इतना अंतर निस्संदेह है कि जो बत्ती छोटी भी होय और तेल बहुत होय तो दीपक देर तक जलैगा और जो तेल थोड़ा होय और बत्ती बड़ी होय तो दीपक देर तक नहीं जल सक्ता सो प्रारब्ध चेतन्य है तो थोड़े से भी उद्योग से काम पूरा होसक्ता है और जो प्रारब्ध नहीं तो सहस्र उद्योग निष्फल हैं इतनी प्रारब्ध की प्रशंसा है अब महाराज पहिले मुझ को इस प्रश्न का उत्तर दीजिये कि एक साधू ने ऐसे कहा था कि गुरू और आचार्य्य बिरक्त होते हैं और बिना संस्कृत पढ़े ज्ञान नहीं होता सो यह ठीक है या नहीं परमहंस ने कहा कि सुनो साधू का कहना सही है परंतु तुम कहो कि तुमने बिरक्त किसको समझाता है महाराज मैंतो बिरक्त उसे जानता हूं कि जो गृहस्ती न हो और अपने पास कुछ न रखता हो और जो पहिले सम्बन्धी हैं उनसे प्रीति और मेल न रखता हो परमहंसने कहा कि यह सब बातें पशु पक्षियोंमें वर्तमान हैं न वह गृहस्ती रक्खें हैं और न किसी से मेल रक्खै है और न कुछ पास रक्खै है और बहुत करके जंगल में रहैं हैं और दूसरे दिनका फिकर भी नहीं रक्खें हैं अब तुम देखो बिरक्त उसे कहै हैं जिसको गुरुकी दया करके ऐसा बोध होता है कि जगत मिथ्या है और ब्रह्म सत्य है औ इन्द्रियों आदि के विषय में रुच नहीं है ऐसा जो पुरुष है सो बिरक्त है अब ऐसा पुरुष सच्चा है गृहस्ती होय चाहै बैरागी होय

चाहे उपाधी सहित हो चाहे उपाधी रहित हो देखो महर्षीश्वर याज्ञवल्क्य राजर्षीजनक राजा जनक गुरु नानक कबीर साहब सुकदेवजी ये वा नहीं और जो तुमने कहा कि बिना संस्कृत पढ़े ज्ञान नहीं होता सो इसका तात्पर्य यह है कि बिना संस्कृत पढ़े संस्कृत पदों का ज्ञान नहीं होता और आतमज्ञान की प्राप्ति गुरु के वचन द्वारा होती है सो गुरु चाहें संस्कृत द्वारा श्रुति स्मृति का बोध करावें चाहे भाषा वा किसी और देश की बोली द्वारा शिष्य को बोध दें इसीको वेद कहते हैं आतम ज्ञानकी प्राप्ती में दोनों एक समान हैं और जो पुरुष केवल संस्कृत पदोंही से बोध होना कहैं हैं उनके विषय में एक दृष्टांत सुनलो कहीं संस्कृत पढ़ों की समाधी उसमें एक विरक्त साधु भी पड़ंच गये सो साधूने कोई प्रश्न भाषामें किया संस्कृतवालोंने कहा कि भाषा प्रमाण नहीं इसपर साधूने संस्कृत पढ़े वालोंको भाषा में दो चार गालियां दी जबतो सबके सब साधू को मारने को दौड़े साधूने कहा कि आपने अप्रमाण की बोली को कैसे प्रमाण कर लिया सबके सब चुपहो रहे जो संस्कृत पढ़ा आतम ज्ञानी होगा वह भाषा की बोलीमें दूषन नहीं लगावेगा और देखो संस्कृत के अर्थ सब संस्कृत पढ़े हुये भाषाही में समझाते हैं औ समझते हैं ॥

महाराज एक संदेह और है मैंने यह सुना है कि प्रारब्ध उसको कहते हैं कि जो पहिले जन्म में कर्म किये हैं उसके अनुसार भोगना होगा सो कर्मोंके फल दुख सुख हैं इससे प्रारब्ध के अनुसार दुख सुख भोगने चाहिये थे पर जगत में देखता है कि दुख सुख भी भोगते हैं और इसके सिवाया किसी को शुभ इच्छा होती है और किसी को अशुभ इच्छा होती है इन दोनोंका बीज कौन है सुनो जैसे कोई फल मीठा और कोई खाड़ुआ होता है परंतु सिवाय

मिठाई और कटुता के फल में एक प्रकार की सुगन्ध और दुर्गन्धभी होती है इसी प्रकार कर्मोंका बदला सुख दुखफल के सदृश है और शुभ इच्छा और अशुभ सुगन्ध और दुर्गन्ध के सदृश है इस निमित्त सुकर्म का फल केवल सुखही नहीं है किंतु शुभ इच्छा भी है जिससे आगे को लाभ होता है और शुभ कर्म बनते हैं इसी प्रकार कुकर्म का वृत्तांत जान लो महाराज यह और कह देव कि जितने सुकर्म और कुकर्म के फल हैं उसी प्रकार दोनों भोगने पड़ते हैं या यह की सुकर्म अधिक है और कुकर्म कम हैं तो जितना सुकर्म अधिक है उसी का फल भोगना पड़ता है या यह कि एक सेर सुकर्म हो और तीन पाव कुकर्म है तो यह दोनों ही भोगने पड़ेंगे ॥

परमहंस ने यह कहा कि ऐसा निश्चय होता है कि दोनों ही भोगने पड़ेंगे तो महाराज शास्त्र ने यह क्यों कहा कि जो कोई कुकर्म होजाय तो प्रायश्चित करने से कुकर्म दूर होजायगा परमहंस ने कहा कि अपनी समझमें ऐसा आता है कि इसमें शास्त्र का यह प्रयोजन है कि प्रथमतो कुकर्मी कुकर्म करने से बच जायगा क्योंकि वह प्रायश्चित में लगा और जब प्रायश्चित कर चुका तो सब उसका भला कहने लगे अब कुकर्म करने को उसकी रुचि न होगी दूसरे यह कि सुकर्म से शुभ इच्छा भी उत्पन्न होगी तीसरे यह की कुकर्म का दुख सुख सुकर्म के फलसे भारी नहीं मालूम होगा और उस समय कुकर्म का फल कुछ काल के लिये हटभी जायगा देखोएक मनुष्य ने तो एक को मारा और एक को कुछ दिया अब जिसको मारा है वह बदला लिया चाहता है और जिसको दियाहै वह बदला दिया चाहताहै अब बदला देने का इतना दुख नहीं मालूम होता इस निमित्त कि बदला लेने का सुख उस समय सहानता करता है और देखो कि

सुख का बल हुआ दुख सहना सुगम हो जाता है जैसे मन भर की गठरी किसी बीमार के सिरपर रक्खो और मन भर की अच्छे भले के सिर पर रक्खो और देखो कि कचहरियों में सुकद्दमें नम्बरवार होते हैं परंतु जो खून का सुकद्दमा आजाय तो सब सुकद्दमें धरे रहते हैं वह पहिले होता है इसी प्रकार जब सुकर्म बढ़त हुआ तो कुकर्म के फल को हटा कर अपना फल देने लगता है ॥

महाराज यह बातें तो बहुत अच्छी हैं बड़े संदेह को दूर करे हैं आपने इनको झगड़ा कैसे कहा है सुनो ज्ञानी को देह नहीं रखनी फिर प्रारब्ध का और जतन का कहना सुनना झगड़ाही तो है जिस मारग नहीं चलना उसके कोस क्या गिनना और जब माया को अनिरवचनी कहचुके तो फिर अब क्या कहाजावै महाराज सच्च है परंतु मेरे बड़े संदेह दूर हुये अब कुछ ब्रह्मविद्या की चरचा भी मुखसे वर्णन कीजिये। परमहंस ने कहा कि जो तुझे कुछ पूछन हो सो पूछ ले महाराज मैं तो दुखी सुखी होता हूं छोटा सा हूं असमर्थ हूं और ब्रह्म आनन्द रूप है पूरण है फिर मैं ब्रह्म किस प्रकार होसक्ता हूं परमहंस ने कहा कि सुनो दुख सुख सामर्थ असमर्थ यह सब धर्म अंतःकर्ण के हैं और तू अंतःकर्ण का दृष्टा है महाराज जो मैं अंतःकरण का दृष्टा हूं तो जगत का अधिष्टान कौन है सुनो जहां चैतन्य अधिष्टान होता है तहां चैतन्यही दृष्टा होता है जैसे स्वपन का अधिष्टान और दृष्टा दोनो चैतन्यहै मिथ्या जगतअधिष्टान की हानि नहीं करता जैसे मृग तृष्णा का जल पृथ्वी को गीला नहीं करता और जहां रज्जू में सर्प का भर्म होता है तहां रज्जू में विष नहीं होजाता और जैसे २ जलाकास घटाकास मेघाकास महा कास एकही है ॥

दोहा ॥

करिकरि आपी संकलप नरक स्वर्ग ठहराय।
जैसे बालक छांहको देख भूत कहि गाय॥

पर चारों में उपाधि भेद अवश्य है इसी प्रकार जीव साक्षी अर्थात् कूटस्थ ईश्वर और ब्रह्म चेतन्य रूप करिके एकही चेतन्य है और जो उपाधि भेद है सो मिथ्या है जलाकाश इसको कहते हैं कि घटाकास और जलमें प्रतिबिम्ब आकाश का और घटा काश यह कि जितना अवकाश घटको आकाशने दिया और मेघाकाश जितना आकास बदलों को जगह देवे और बादलके जलमें जो आकाश का भास है और महा आकाश पूरण आकाश कोकहते हैं और जीव ईश्वरब्रह्मको चेतन्य रूपकरकेएक जानना और जीवईश्वर को उपाधि को मिथ्या समझना इसी को ज्ञान कहते हैं॥

महाराज लक्षणा क्या है सुनो लक्षना तीन प्रकार की होती है जहती १ अजहती २ भागत्या ३ जहती यह की जिसमें सब वचन का त्याग हो जैसे किसी ने कहा कि गंगा में गांव हैं तो गंगा में गांव नहीं होसक्ता किनारे पर होगा इसमें सब वचन का त्याग हुआ और अजहती यह कि जिसमें सब वचन का ग्रहण हो जैसे किसी ने कहा कि लालरंग उड़ जाता है तो लालरंग की चिड़यां होती हैं इसमें सब वचन अर्थात् अधिक ग्रहण हुआ भागत्याग यह कि जिसमें कुछ लिया जावै कुछ छोड़ा जावै जैसे जीव ईश्वर की उपाधी का त्याग॥ और दोनों में जो चेतन्य भाग है उसका ग्रहण महाराज अन्तःकर्ण तो जड़ है जड़को दुख सुख नहीं हो सक्ता परमहंस ने कहा कि सत्य है कि अंतःकर्ण जड़ है पर तेरी चेतन्यता जो अंतःकर्ण में है उसके कारण अंतःकर्ण को दुख सुख की ज्ञात होतीहै जैसे दीपक के प्रकाश से जुवारी जुवा खेलता है और पण्डित पोथी

बांधता है परंतु दीपक दोनों कर्मों का अभिमानी नहीं ऐसे ही तेरी चेतन्यता किये हुए अन्तःकर्ण दुखसुख भोगता है पर तुझको उन कर्मों का लेश नहीं है ॥ महाराज आभास रूप वाली वस्तु का होता है और आभास अपने से भिन्न अस्थान में पड़ता है सो आपने चेतन्य को व्यापक कहा फिर आभास के पड़ने का अस्थान कहां रहा सुनो शब्द अरूप होता है पर उसका प्रतबिम्ब धुन होती है और आकाश अरूप और व्यापक है पर जल में आकाश का प्रतबिम्ब होता है थोड़े से पानी में बहुत सी गहिराई दीखती है ॥ महाराज मुझे आपने व्यापक बताया है फिर इसका क्या कारण है जो केवल अन्तःकर्ण भोगता है देह क्यों नहीं भोगती परमहंस ने कहा देखो अंतःकर्ण दरपण के सदृश है और देह भीत के सदृश है दरपण में प्रतबिम्ब दीखता है भीत में नहीं दीखता यदपि प्रकाश पदार्थ भीत और दरपण दोनों में बराबर है परंतु दीवार को यह सामर्थ नहीं कि प्रतिबिम्ब दिखावै और देखो कि स्वच्छ जलमें आकाश का आभास बुद्धि मालूम होता है और अस्थान पर नहीं यद्यपि प्रकाश सब देह में व्यापक है परंतु आभास अंतःकरणही में पड़ता है संपुर्ण देह में नहीं क्योंकि अंतःकर्ण सतोगुण का कारज है और देह तमोगुण का कारज है अंतःकर्ण हीरे के सदृश है जैसे फूल की लाली हीरे में झलकती है पथरैली में नहीं झलकती इसी प्रकार अंतःकरण चेतन्य का आभास होता है देह में नहीं समान चेतन्य तो देह और अंतःकर्ण दोनों में एकसा है पर आभासका भेद अर्थात अंतःकरण में समान चेतन्य और आभास दो वस्तु है तो महाराज संपूर्ण देह में दुख सुख कैसे मालूम होता है जहां अंतःकर्ण होवै वहांही चाहिये ॥

परमहंस ने कहा सुनो जो अंतःकर्ण को एक असथानी हृदय में बतावै है तो वह यह कहते हैं कि अंतःकर्ण की वृत्ती संपूर्ण शरीर में फैली हुई है जैसे सूर्य का प्रकाश और जो एक असथानी नहीं कहते वह अन्तःकर्ण को संपूर्ण शरीर में व्यापक कहते हैं महाराज यह कहिये कि ज्ञान किसको होता है अहंब्रह्म अर्थात मैं ब्रह्म ऐसा कौन कहता है परम हंसने कहा कि बुद्धिमें जो चैतन्य का आभास है सो कहता है और उसीको ज्ञान होगा महाराज आभास तो ब्रह्म नहीं है और ब्रह्मसे भिन्न औरही प्रकार का है परमहंस ने कहा कि कहना तो बुद्धि सहित आभास का है और आभास कोही ज्ञान होगा परंतु आभास कूटस्थ अर्थात साक्षी का अभिमान रक्खे है अर्थात आभास अपने रूप और साक्षीके स्वरूप को अपना आपही जानेहै वेदांतमें आभास का ब्रह्म के साथ एक होना बाधिसमा नाधिकरण कहा है जैसे दरपण में जो सरूप वह सरूप अपने को बाधिकारी के असल स्वरूप में जा समाता है जैसे परछाहीं आदमी की आदमी ही में जा समाती है देखने मे दूसरी वस्तु थी पर असल में कुछ न थी जो वास्तव मे वह परछाहीं कुछ होती तो कहीं आप अकेली रहती सो कहीं दीखती नहीं ॥

दोहा ॥

हरि हर जन दोउ एक है बिन बिचार कुछ नाहिं ।
जलसे उपजे तरंग जो जल हीबि पय समाहि ॥

महाराज यह बात तो अच्छे प्रकार समझ मे आ गई परंतु परलै और ज्ञान मे क्या अंतर है परलै मेभी तो कुछ नहीं रहैगा और ज्ञानी की देह कैसे छूटै है सुनो परलै इसे कहते हैं कि जब ईश्वर जीवों के कर्मों के फल देने से उदासीन होवे है तब परलै होय है सो परलै में सब वस्तुवों का संसकार माया में रहै हैं तथाच जीवों के कर्मों

भी बाकी रहे है वह भी माया में रहते हैं और जब वह कर्म भोग देने को पक जाते हैं तब ईश्वर को ऐसी इच्छा होती है कि अब जगत रचना चाहिये उस समय माया तमोगुण परधान पांचों तत्त्वों को उत्पन्न करै है माया से आकाश तत्व शब्द समेत पैदा होता है और आकाश से वायु की उत्पत्ति और वायु से अग्नि और अग्नि से जल और जल से पृथ्वी उत्पन्न होती है इन पांचों तत्त्वों का सतोगुण अंस अन्तःकर्ण और ज्ञान इन्द्री बनै है और रजोगुण अंस से कर्म इन्द्रिया पृथ्वी का रूप कठोर रंग पीला है इससे दो इन्द्रीं की उत्पत्ति हुई एक ज्ञान इन्द्रीं नाश का १ दूसरी कर्म इन्द्री गुदा २ जल का स्वरूप द्रवता रंग सफेद इससे दो इन्द्री एक ज्ञान इन्द्री रसना १ दूसरा कर्म इन्द्री लिंग २ तेज का स्वरूप दाह उसन प्रकाश रंगलाल इससे दो इन्द्री एक ज्ञान इन्द्री नेत्र २ और दूसरा कर्म इन्द्री हाथ २ वायु का स्वरूप वेग रंग हरा इससे दो इन्द्री एक ज्ञान इन्द्री त्वचा १ दूसर कर्म इन्द्री पांव २ आकाश का स्वरूप पोल रंग काला इससे दो इन्द्री एक ज्ञान इन्द्री श्रवण १ दूसरा कर्म इन्द्री वाक ॥ इस देह के चार प्रकार के भोजन हैं लेज पानी मेज दही पेज फल भख भूना हुआ अब देखो कि परलै और ज्ञान में कितना भेद है परलै के पीछे तो फिर जीवों को पैदा होना होता है और ज्ञानी ब्रह्म में लै हुआ उसको फिर देह नहीं धरनी होती और ज्ञानी को कुछ संदेह इस बात का नहीं रहता कि देह तीर्थ पर छूटै या जंगल में दोनों बराबर हैं और जो किसी ज्ञानी ने देशकाल का भी बिचार किया है तो अज्ञानियों के उपदेश के वास्ते और बशिष्ठ आदि ज्ञानी अधिकारी हैं इनकी देह एक कलप परयंत रहती है पर इनको आतमा में जनम मरण नहीं भासे है

महाराज मैंने सुना है कि जीव के तीन देह होती हैं वह कौनसी हैं परमहंस ने कहा कि एक तो कारण शरीर कहलाता है जो सुषुप्त में होता है और दूसरा लिंग शरीर कहलाता है जो स्वपन में होता है सो १७ तत्व का होता है पांच कर्म इन्द्री हाथ पांव मुख लिंग गुदा और पांच ज्ञान इन्द्री अर्थात आंख नाक कान जिह्वा त्वचा पांच प्राण और एक मन और एक बुद्धि और तीसरा अस्थूल शरीर है और इन शरीरों से आतमा भिन्न है इन तीनों शरीरहीमें 'च कोस हैं कारण शरीर को आनंद मय कोस कहैं हैं और पांच ज्ञान इन्द्री और अंतःकर्ण की वृत्ती बुद्धी को विज्ञान मै कोस कहते हैं और पांच ज्ञान इन्द्री और मनके संकल्प विकल्प को मनोमय कोस कहते हैं और पांच प्राण और पांच कर्म इन्द्री को प्राण मय कोस कहते हैं और अस्थूल शरीर को अन्य मय कोस कहते हैं कोस का अर्थम्यान है अर्थात आतम का ढापने वाला है कोई इस देह को आत्मा कहता है और कोई इन्द्रियों को आत्मा कहता है और कोई प्राण को कोई बुद्ध को और कोई आनंदमय कोस को आत्मा कहता है सो सब यह अज्ञान के कारज है अब देखो स्वपनके समय अस्थूल शरीर नहीं भासता और सुषुपति में सूक्षम शरीरका भी आभाव परंतु आत्मा का भानु होता है क्योंकि सुख स्वरूप आत्मा है और सुषुप्त में सुख प्राप्त है जो सुषुप्त में सुख न होता तो क्यों ऐसा उठकर कहता है बि बड़े सुखसे सोये देखो आत्मा तीनों अवस्थामें वर्तमान है जाग्रत स्वपन सुषुप्त तीनों में है और पांच कोस तीनों अवस्था में नहीं होते और जो वस्तु कभी हो और कभी न हो सो वह सत्य और व्यापक नहीं होसक्ती देखो सब मतवाले इन पांचों कोसोंमें फसे हैं और आत्मा इन पांचों कोसों से भिन्न और

इनका प्रकासक है आत्मा सत्चित् आनंद रूप है यह उसके गुण नहीं है गुण कभी रहता है कभी नहीं रहता सो आत्मा सदा सत्य चित्त आनंद मय है यह रूप उसका सरूप ही है जैसे अग्निका सरूप दाह है और जो कोई ऐसे कहै हैं कि अग्निका दाह तो मंच से दूर होजाता है मंच वाला अग्नि मुख में रखलेता है पर मुख नहीं जलता सो दाह अग्निका गुण है जो सरूप होता तो कभी दूर न होता सो यह बात झूंठी है देखो अग्निका दाह दूर नहीं होता परंतु मंच के बलसे मुख और अग्नि के बीचमें परदा पड़ाजाता है इसीसे मुख नहीं जलता इससे विदित हुआ कि आत्मा व्यापक है सो अपना सरूपही है कुछ ज्ञान से ब्रह्म नहीं मिलता क्योंकि ब्रह्म कुछ दूसरी वस्तु नहीं हैं यह आपही ब्रह्म है अपने को न जानना बंधन है और ब्रह्म जानना मोक्ष है ॥

दोहा ॥

बानी बचन न कहि सके बचन माहि वह होय ।
कहेव अवाच जिस ब्रह्मको बानी बोले सोय ॥
जैसे सुपने के बिषय राजा मांगी भीख ।
बिन्द्रावन जब जागियो था वह राजा ठीक ॥
अज्ञानी के कर्म बस इच्छा उतपति होय ।
बिन्द्रबन वह बासना जन्म धरावे सोय ॥

और भाई उतपत प्रलय महाप्रलै यह माया है सो माया का बहुत बिचार करना कुछ प्रयोजन का नहीं क्योंकि जिस वस्तु को दूर करना है उसका बहुत वृत्तांत निश्चय करना वृथा है देखो बारूद का हाथी जो अच्छे प्रकार उड़ै तो प्रशंसा है बारूद के हाथी के सरूपकी प्रशंसा नहीं है इसी प्रकार माया का उड़ा देनाही अच्छा है और उसके कामोंका निश्चय करना कुछ अवश्यता नहीं है महाराज

आपने बहुत ठीक कहा आपने जीव ब्रह्मका वर्णन तो किया परंतु आपने ओंकार का भेद कुछ न कहा और मैंने सुना है कि वेदांती ओंकार की अहंग्रह उपासना करते हैं परम हंसने कहा सुनो ब्रह्मका चिन्तवन ओंकार सरूप करके अहं ध्यान से होता है ओंकार अक्षर ब्रह्म सरूप है सो अभ्यासी चिन्तवन करे हैं ओंकार ब्रह्म सरूप मेंही हां निरगुण ब्रह्म को परब्रह्म कहते हैं और सरगुण ब्रह्मको अपरब्रह्म कहते हैं सो निरगुण ब्रह्मका चिन्तन करना चाहिये जिससे मोक्ष प्राप्त होती है और जो अपरब्रह्मका चिंतवन कर है उनको ब्रह्म लोक प्राप्त होता है और जो निरगुण उपासनामें ब्रह्म लोककी इच्छा होय तो मोक्ष नहीं प्राप्त होती ब्रह्मलोक प्राप्त होता है वहां हिरण गर्भके सदृस सुख भोग करज्ञान होता है तब मुक्ति होती है अब निरगुण उपासना का यह मार्ग है कि जो कुछ उत्पन्न हुआ है और जिसने उत्पन्न किया है सब ओंकार है और सब वस्तुओं में नाम और रूप दो भाग है सो नाम से रूप पृथक नहीं इस निमित्त कि जब बैल कहा तो सुनने वाला बैल समझैगा रोटी न समझैगा इसे नाम सरूप मेंमिला हुआ है और सब नामों का मूल ओंकार है क्योंकि यह प्रणव शब्द है इसी वेदकी उत्पत्ति है और वेदसे सब नामों की उत्पत्ति है इसे सब नाम और रूप ओंकार में हैं और इसी प्रकार सब नाम और रूप ब्रह्म में हैं इसे ब्रह्म और ओंकार एकहुआ ब्रह्म वाच है और ओंकार वाचक है सो वाच और वाचक में भेद नहीं हुआ करता अब ब्रह्म और आतमा और ओंकार की इसी प्रकार एकता है विराट हिरणगर्भ ईश्वर और तत्व पद का लक्ष साक्षी यह ब्रह्म के चार भाग हैं और आतमा के चार भाग हैं विश्व तेजस प्राग और त्वंपद का लक्ष साक्षी जीव, जीव साक्षी को तुरिया भी कहते हैं विराट उसको कहते हैं कि

चेतन्य संपूर्ण परपंच सहित और विस्व उसेकहतेहैं कि जिस व्यष्टि अस्थूल अभिमानी है और विस्व भी विराट रूपही है इसी प्रकार ओंकार का पहिला अक्षर अकार विराट रूप से अभेद है विराट ब्रह्म का पहिला भाग और विस्व जीव का पहिला भाग आकार पहिला अक्षर ओंकार का है जो कि तीनों पहिले हैं इस हेत से अभेद है हिरण गर्भ और तेजस्व और ओंकार जो कि दूसरा अक्ष ओंकार का है एक है विराग और ईस्वर और मकार तीसरा अक्षर ओंकार का है एक है और ओंकार की अमातरा चौथा पाद और ब्रह्म का चौथा हिस्सा ईस्वर साक्षी और जीव का चौथा हिस्सा जीव साक्षी जिसको तुरिया कहते हैं यह चारों एक हैं ऐसे चिंतवन न करना इसको लै चिंतवन और निरगुण उपासना कहै हैं महाराज कुछ समाध का वृत्तांत बताइये सुनो समाध दो प्रकार की होतीहै एक निरविकल्प दूसरी सविकल्प विकल्प समाध में चिपुटी अर्थात् धेय ध्याता ध्यान द्वैत ब्रह्म रूप ही परतीत होवै है जैसे रुपया और चांदी रुपया चांदी रूप ही भासु होवै है निरविकलप समाध में भी चिपुटी होवै है परतु ऐसे जैसे पानी में नोन घुला होता है नोन होता तो है पर दीखता नहीं देखो सुषप्त में अंतःकरण का अभाव है परंतु निर विकलप में अंतःकरण विरतीस हित होता है पर घुले नोन के सदृश है परतीत नहीं होता और निरविकल्प का फल यह है कि वृत्ती भी जाती रहै जैसे पानी की बूंद गरम लोहेमें प्रवेश करैहै ऐसे अंतःकरण की वृत्ती ब्रह्म में लै होवै है सुषुप्त में अंतःकरण काले अज्ञान मे होवै है समाधि में और सुषुप्त मे केवल इतना ही भेद है निरविकलप में चार विघन होते हैं लै १ निद्रा करके वृत्तीत का अभाव विच्छेप २ वृत्ती ब्रह्माकार होने गई

पर जो कि ब्रह्म बहुत भीना है वृत्ती घबरा कर लौट आई कषाय राग द्वेष संस्कार ३ रसा स्वादः ४ जब विक्षेप न होवै और विरती बिना ब्रह्माकार हुये स-विकल्प का सुख भोगै महाराज आपतो जो सुनावे हैं सो अनोखो अनोखो सुनावै हैं मैंने बड़ों बड़ों के मुखारविन्द से सुना है कि विष्णु शिव आदि का ध्यान हुआ करता है आपने पूजा भी उड़ाई और ध्यान भी भगवान का उड़ाया परमहंस ने कहा कि सुनो ॥

दोहा ॥

विष्णु शिव और मक्ति यह गणपत सूरज आदि ।
यह उपजे उप एक मे सो हैं देव अनादि ॥
अजर अमर वह एक है नहिं छतम हो सोय ।
बिन्द्रावन आकार जो महा प्रले गयो खोय ॥

महाराज मुझ से एक बात यह पहले और कहि दीजिये कि बाम मारगी क्या होता है चारों बेदों से बाहर है या क्या और महाराज नास्तिक मत क्या है भाई तुमसे हारे (कहां राजा भोज कहां गंगा तेली) कहां से कहां जा पड़े खैर इस बाम मारग का भी वृत्तांत सुनो बाम मार्ग में भग की पूजा होती है जो एक समय हजार स्त्रियों की भग की पूजा उनको मिल जाय तो जीते जीहो उनको मुक्ता है यह बाममार्ग है बाम मारगी मदरा को तीर्थ कहते हैं प्याज को व्यास कहते हैं सुनो हमने तो ऐसाही सुना है कि बाम मारगी प्रतच्छ में वेदों के विपरीत हैं और ऋग यजुर साम अथर्वण इन चारों वेदों में कहीं ऐसा उपदेश नहीं है और लोग कहते हैं कि महादेव जीसे इस मारग की उत्पत्ति है अपनी बुद्धि में कुछ ऐसा आता है कि जिस वस्तु को वैष्णव मतने बुरा कहा है उसीको बाम मार्ग में अच्छा बतलाया है इससे ऐसा विदित होता है कि बा-

मारग के आचार्य ने एकता सिद्धि कराई है जिसको लोग बुरा समझते हैं वह बुरी नहीं है अच्छा बुरा सबको एक सा निश्चय कराया है परंतु देखो अमृत का विष और मिठाई एकसी तो है न तो उस मिठाई से भूख जाती है और न उस विष से कोई मरता है तौ भी मिठाई सबे को प्रसंद है इसी प्रकार जिस मत में अच्छे कर्म हैं वह मिठाई के बराबर है और जिसमें निषेध असुद्ध कर्म हैं वह कड़वी भ्रष्ट वस्तु हैं और उससे घृणा होती है ऐसा वाम मार्ग है ॥

हां शक्ति मत दक्षिणावना ऐसा नहीं है उसमें सक्ति की शुद्ध पूजा है बहुधा वैष्णव भी पूजे हैं उससे शक्ति लोक को प्राप्त है और जो शक्त को निर्गुण व्यापक रूप करके ध्यान करैं हैं उनकी गति और उत्तम होगी और जिस पूजा में हिंसा और मदरा पान है वह मार्ग पर विरत वालों का है उन को किसी तरह की भी सुक्त से प्रयोजन नहीं इसलिये इस का वृत्तांत बहुत लिखना निष्फल है तुम प्रसिद्ध देख लो कि लक्ष्मी का सुभाव सतोगुण है उनकी पूजा में जीव वध नहीं और उस सक्ति का सरूप काली भवानी है सो तमोगुण मूरत है और दुष्ट क्षै करने को धारन किया है जैसे कोई पुरुष समय आधीन क्रोध में है उससे मिलना न चाहिये न उस समय के कामों को उत्तम समझना चाहिये न उस समय की मूरत की उपासना योग्य है हां जिसके भाग ओछे हैं वह सतोगुण रूप को छोड़ के तमोगुण रूप से प्रीति करैं हैं और शुभ पजा और सुकर्म का त्याग के अशुभ कर्म धर्म शास्त्र के विपरीत करैं हैं ॥

अब नास्तक मत का वृत्तांत सुनो नास्तिक वह है जो करता नहीं मानते और कहते हैं कि जगत आपही आप उत्पन्न होता है और नाश होता है अर्थात् जहां चार तत्व मिले वहां कुछ आकार बन जाता है चाहो आदमी या जीव

जन्तु आदि जैसे तेल बत्ती दीया और आग चारों एक मकान पर हुए और दीपक प्रकाश हुआ इसी प्रकार चार तत्व के मिलने से मनुष सजीव बन गया कोई और दूसरा बनाने वाला नहीं ॥

अब देखो कि तत्वों में नास्तिकों के अनुसार यह सामर्थ्य ठहरी कि वह आप से आप मिलके एक स्वरूप बन जाते हैं देखो जो काम औरों ने एक ईश्वर मे कहे वह इन नास्तिकों ने चार तत्वों में कहे औरों के एक कर्ता और नस्तिकों के चार कर्ता और देखो जो कोई कर्ता नहीं है तो उत्पति इस प्रबन्ध से नहीं होसक्ती जब बिना किसी कारण के आप से आपही उत्पत्ति होती तो एक आदमी सौगज का और दूसरा पांच गजका एकके नेच शिर पर दूसरे के पैरमें एक की अवस्था लाख वर्ष की होती और एककी दोचार दिन की जो कि उत्पत्ति में यह बात नहीं है इससे यह उत्पत्ति किसी के विचार से है और जब इरादा हुआ तो इरादा करने वाला भी हुआ सो इन नास्तकों ने तत्वों को इरादा करने वाला माना है इससे इन्होंने चार कर्तामाने यथार्थ से देखोतो चार तत्व इनके चार करता हुए और इन चारों का मिलना पांचवीं शक्ति हुई अब ऐसे सपूतों का क्या कहना है कि जिनको पांच करता अनादि वर्तमान और जिनका स्वीकार भी है और फिर नास्तिक बनते हैं बाह महाराज वाम मार्गी और नास्तिकों का वृत्तांत अच्छा सुनाया इस्ा समय व्यतीतहुआ और महाराज यह बड़ा संदेहहै कि सब शास्त्रों में भी आपस में भेद है सुनो शास्त्रों का आशय तो बहुधा करके आत्माही का विषय है परंतु वेदांत शास्त्र व्यास भगवान का जो ईश्वर के अवतार थे कहा हुआ है और दूसरे शास्त्र युंजान योगियों के कहे हुए है और देखो जब मक्खन निकालना होताहै तो दूध हांडीरखी लकड़ी आदि

कितनीही वस्तु होती हैं तब मक्खन निकलता है सो वेदान्त शास्त्र दूध है और शास्त्र रसरी आदि के समान है सो जब दूध मथा गया ब्रह्म ज्ञान मक्खन निकला ॥

दोहा ॥

बुद्धि इंद्रिय आदि सब द्वैत भयो जब नाश।
बिन्द्राबन जो रहगया सो है ब्रह्म प्रकाश ॥

अब महाराज कहिये कि आपने स्वप्न सृष्टि और जाग्रत सृष्टि की ऐक्यता बताई पर मुझे अब भी भेद मालूम होता है क्योंकि जाग्रत काल के पदार्थ दूसरी जाग्रत सृष्टि में मिलते हैं और स्वप्न सृष्टि के पदार्थ दूसरे स्वप्न सृष्टि में नहीं मिलते हैं तो स्वप्न सृष्टि और जाग्रत सृष्टि की ऐक्यता किस प्रकार होसक्ती है * परमहंस ने कहा कि वाहरे खिलाड़ी अबतो तू वेदान्त की चोटी की खबर लेने लगा देखो जैसे स्वप्न में एकही काल में आप देखने वाला और सामिग्री पैदा होती है और स्वप्न में भी उसको दीखता है कि यह सामग्री सब पहली है जो कल थी वह आज भी है क्योंकि स्वप्न में भी तो जुग वर्ष महीना दिन सभी तो होता है इसी प्रकार अविद्या के कारण से एक काल में यह जाग्रत का जीव और प्रपंच उत्पन्न होता है परंतु अविद्या का यह खेल है कि ऐसा मालूम होता है कि यह सामान कल का है अविद्या का सतोगुण अंश ज्ञान रूप होवे है और तमोगुण अंश घट रूप होय है सो दोनों एक ही काल में पैदा होते हैं यह वेद का मुख्य सिद्धान्त है इससे यह विदित हुआ कि कल के पदार्थ आज नहीं दीखे हैं नवीन पैदा होते है परंतु अविद्या का यह लक्षण है कि जैसे अनहुये पदार्थ दिखलावे है वैसेही अनहुआ काल अर्थात समय भी हर वस्तु में दिखलावेहै सो सब अनिर्वचनीय है और जो तुम कहो कि जाग्रत के जगत के घडे का बनाने वाला कुलाल दण्ड होता है और

स्वप्न में तो अविद्या बनाती है सो देखो स्वप्न में भी कुलाल चक्र और दण्ड सेही घड़ा बनता है जो घडा रात्रि का स्वप्न में तुमने मोल लिया सो कुम्हार की दूकान से जीतो मोल लियो था और कुम्हार को तुमने घड़ा बनाते भी देखा था चक्र भी था दण्ड भी था और वास्तव में कोई भी नथा इसी प्रकार यह प्रपंच कुछ है नहीं केवल एक तेरी स्फुरना है जिस समय स्फुरना हुई तो जगत वर्तमान और जब स्फुरना नहीं तो जगत भी नहीं जाग्रत और स्वप्न में स्फुरना है जगत सम्पर्ण सम्मुख है सुषुप्ति में स्फुरना नहीं जगत् का पता नहीं और देखो जहां तुम्हारी दृति अर्थात् ध्यान न गया तो वहां कुछ वस्तु होने का क्या गुमान है क्योंकि जहां तुम नहींहो वहां कुछ होय या नहोतुमको तो अनजानही है जबतुम अपने विचारमें किसी वस्तु को मानते हो अर्थात् तुम्हारा ध्यान जब उस वस्तु तक पहुंचता है तब उसका होना तुम्हें भासता है और जब तुम्हारी दृति एक वस्तु की ग्रहण नहीं करती तो उसका होना कब ठीक हो सक्ता है इससे भाई जगत स्फुरना के साथ उत्पन्न होता है कलका नहीं है जैसे दीपक जलता है और नदी बहती है सो जिस जिस समय तुम देखो हो उस २ समय दीपक की लौ नवीन है और नदी का पानी नवीन है न पहली लौ है न पहला पानी है इसको दृष्टि सृष्टि वाद कहे हैं महाराज अबतो मेरी समझ कुछ और ही हुई जाती है आप की चर्चा क्या है मानो दर्पण है ॥

शब्द बिलावल महल्ला तीसरा ॥

अतुल क्यों तुलपा जाय । दूजा होय तो सोझी पाय ॥
तिस्से दूजा नाहीं कोय । तिस दी कीमत काके होय ॥
गुरु प्रसाद बसे मन आय । ताके जाने दुबधा जाय ॥

रहाव ॥

आप सराफ कसोटी लाये आपहि परखे आप चलाये। आपहि तोले पुरा होय। आपहि जाने सांचा सोय ॥ माया का रूप समति से होय ॥ जिसु नु मेले सो निर्म्मल होय। जिसनु लाये लागे तिस आय। सब सच्च दिखा ले ता सच्च समाय। आप लिवधातु हे आपहि। आप बुझाये आपहि आपे आपहि सतगुर शब्द हे आपहि। नानक आख सुनाये आपहि ॥

महाराज मैंने आपको अत्यन्त परिश्रम दिया है परंतु दोबार बात और भी कह दीजिये यह किस प्रकार कि एक स्थान परतो आपने कहा कि मैं ब्रह्म हूं और दूसरी जगह कहा कि सब ब्रह्म है और कहीं ईश्वर को कर्त्ता कहा कहीं माया को परमहंस ने कहा कि सुनों इसको विधि निषेध कहते हैं विधि बचन तो यह है कि सब ब्रह्म है और निषेध यह है कि मैं ब्रह्म हूं अब प्रयोजान दोनों का एकही है यथा किसी स्थान पर १० मनुष्य बैठे हों और उनमें से एक आदमी ९ मनुष्य को उठाना चाहता हो तो हर एक से बोला तू भी जा तू भी जा केवल मैं रहूंगा अब इस कहने से यह प्रयोजन हुआ कि जो दृष्टमान है सो सब जाने वाला है एक मैंही रहूंगा यह निषेध बचन हुआ कि इसने ९ मनुष्यो का निषेध किया और आपही रहा और जो ऐसे कह देता कि एकही रहै तो बिधि बचन होता इसमें यह आशयहै कि वह ९ मनुष्य उसी दसवें में लय होजाय या नाश होजाय इसे दसों एकही होगये अर्थात सब जगत ब्रह्महोगया सो एक रहा इसमें दोनों प्रकार के कहने से एकही रहा क्यों महाराज तो ब्रह्म आप ही जगत होजाता है सुनो जगत भ्रम है जैसे रस्सी में सर्प इस प्रकार जगत ब्रह्म में है और ब्रह्म से इसी प्रकार जगत नहीं बनता है जैसे कुम्हार और मिट्टी से घड़ा बनता है महाराज आपने माया को जगत का कर्त्ता कहा

है और माया भ्रम है तौ उसे जगत की उत्पति कैसे हो सक्ती है परमहंस ने कहा कि सुनो जैसे सूर्य्य आप भी प्रकाशित है और अन्यों कोभी प्रकाश देता है इसी प्रकार माया आप भी भ्रम है और भ्रम का कारणभी है सुनो एक दृष्टान्त है इसको भली प्रकार समझना जो तुम इस दृष्टान्त को खूब समझ लोगे तो तुमको कोई संदेह न रहैगा देखो जब कोई घूमता है तो उसको मकान हवेली घूमती विदित होती है अब जो घूमने वाला केवल निर्बुद्धि है या बालक है तो वह यह जानता है कि मकान फिररहा है और देखो तो उसका ज्ञान सच्चा भी है क्योंकि हवेली घूमती दीखे है अब तुम वास्तव में उसके ज्ञान को सत्य कहोगे या मिथ्या वास्तव तो हवेली फिरने का ज्ञान असत्य है क्योंकि हवेली तीन काल भी नहीं घूमी सत्य ज्ञान उसे कहै हैं जो ज्ञान ज्ञेय के अनुसार होय हां हवेली तोस्थिर और घूमती दीखी इसलिये यह सत्य ज्ञान नहीं हुआ भ्रम हुआ अब जो भ्रम का कारण घूमेरी है सो भीकुछ पदार्थ नहीं अब दृष्टान्त सुनो यह प्रपंच और आवा गमन सब भ्रम है ब्रह्म स्थिर और निर्विकार है उसमें प्रपंच कहां पर अज्ञानियों के माया और माया का कार्य सत्य दीखै है सोई अज्ञान है और तुम कहो कि सो ज्ञानी को भी दीखे है जैसे बड़े मनुष्य को भी हवेली घूमती दीखे है परंतु वह जाने है कि हवेली कभी नहीं घूमी इसी तरह ज्ञानी का निश्चय है प्रारब्धाधीन प्रपंच दीखै है पर असत्य जाने है जब तक घूमरी रहे है तब तक हवेली फिरती दीखे है सो ज्ञानी का प्रारब्ध जो पहले रचागया है उसके अनुसार दीखेहै अब तात्पर्य यह है कि माया और मायाका कार्यदोनोभ्रमहै और देखो किरीट कुण्डलकुछ सोनेसे आप भिन्न पदार्थहै ऐसे ब्रह्मही जगत है परनाम और रूप मिथ्या है महाराज जो सब प्रपंच भ्रम है

तोअन्त करण भी भ्रम हुआ अब भ्रम अन्तःकरण की वृत्ती आत्मा को कैसे पहचानेगी परमहंसने कहा देखो वृत्ती ब्रह्म को विषय नही करती अर्थात ब्रह्म को नहीं देखती परंतु अविद्या को दूर करती है इस को वृत्ती व्यापती कहे है जब अविद्या दूरहुई तोवृती में से अविद्या दूरहुई केवल ब्रह्म ही रहगया और सुनो वेदान्त शास्त्र में जहाँ ईश्वर को उपादान और निमित्त कारण कहा है उसकी यह रीति है कि जैसे घड़े का उपादान कारण मृतिका है और निमित कारण कुलाल चक्र आदि इसी प्रकार जगत का उपादान कारण माया है और निमित्त कारण चैतन्य है जैसे मकडी के जाले में मकडी का शरीर तो उपादान है जहासे जाले को उत्पन्न करै है और उसका चैतन्य निमित कारण हैं अब चैतन्य ईश्वर और मकड़ी का पृथक रहावह ज्ञान स्वरूप ही है और देखो ईश्वर को जगत का कर्त्ता कहना अज्ञान में बनै है क्योंकि न जगत है और न ईश्वर है भ्रम है केवल अज्ञानी के समझाने निमित्त ईश्वर को कारण कहा गया देखो जबकि अनाज बोना होता हैं तो पहले खेत में हल चलाते है दाना डाल कर पानी देते हैं और निराव करते हैं और रात्रि दिन खेत की रक्षा करते हैं कि कोई हाथ न लगावै और जब अनाज पका तो आप मालिक अपने हाथ से काटने लगता है देखो एक दिन तो उस वस्तु की कितनी रक्षा थी और एक दिन आपही काटने लगा इसी प्रकार भाई अज्ञान में ईश्वर सत्य है बड़ी २ महिमाके योग्यहै कर्त्ता है पालता है और रक्षा करता है परंतु जब ज्ञान आया तब माया की वह दशाहै कि जैसे पके नाजके खेतकी होती है चैतन्य माचही नियत रहता है और सुनो जैसे वैद्य रोग दूर होने के वास्ते जुल्लाब देता है तो उस समय जुल्लाब की बडी महिमा है क्योंकि रोग को दूर करताहै परंतु अंत

में उस जुल्लाब को भी दूरही करना पड़ता है अगर जुल्लाब पेट में रह जाय तो वह दुख का हेतु होता है इससे वैद्य उस जुल्लाब को भी पेट से निकलवाता हैं इसी प्रकार पहिले ईश्वर सत्य है दुख को दूर करता है और ज्ञान में ईश्वर का भी अलग करना अवश्य पड़ता है किन्तु यहां तक कि यह भी भूल जाय कि मैं ब्रह्म हूं या सब ब्रह्म है इसको निर्विकल्प समाधि कहते हैं परंतु जब तक देह है तो प्रारब्ध के वेग से ज्ञानी का समाधि से उत्थानही जाता है क्योंकि जीव बुद्धि का अग्रग्रामी है जब बुद्धि ब्रह्म की ओर जाती है तो पहले जीव को कूटस्थ के साथ ऐक्यता होती है परंतु बुद्धि फिर उत्थान करा लाती है सुनो एक बात और समझो कि श्रुतियों ने कर्म बोधन किया है या सिद्ध ब्रह्म को प्रति पादन करे हैं इसको प्रमाण गत संशय कहैं हैं॥ ब्रह्म जगत का कारण है या प्रधान आदि है इस को प्रमेयगत संशय कहे हैं ब्रह्म स्वतःसिद्ध है पृथ्वी आदि की नाईं सो और प्रमाण से जाना जायगा फिर श्रुति का प्रयोजन रहा नहीं इसे प्रनाम गत असम्भवना कहे हैं ब्रह्म को जगत से और प्रकार से स्थिति होने से जगत का कारण कैसे बनै नहीं बनता ऐसे निश्चय को प्रमेयगत असम्भावना कहै हैं॥

ब्रह्म को जगत से और प्रकार से स्थिति होने से जगत् का कारण कैसे बनै नहीं बनता ऐसे निश्चय को प्रमेयगत असम्भावना कहै हैं॥

ब्रह्म को स्वतस्सिद्ध होने करके श्रुतिको ब्रह्मको प्रतिपादन केविषे निष्फलता है इसलिये श्रुति कर्मही को बोधन करै है ऐसे निश्चय को प्रमाण गत विपिरीत भावना कहे है तन्तु और पट कारण और कार्य सदृश रूप वाले दीखें है और जगत के और ब्रह्म के सादृश्यता है नहीं इसलिये परधान आदिक जगत का कारण है ऐसे निश्चय को परमेयगत

विपरीत भावना कहै हैं महाराज सत्य है अब यह संदेह उत्पन्न हुआ जो आपने कहाहै कि जगत तेरी स्फुरना से है सो महाराज जो मेरी स्फुरना से है तो मैंने तो कभी दुख की फुरना नाकी होगी फिर मुझे दुख कहां से हुआ परमहंसने कहा कि सुनो कि जब जगत की स्फुरना हुई तो सभी वस्तु आगई क्योंकि जगत नाम सुख का नहीं है जगत नाम दुख सुख दोनों का है जैसे रात की फुरना की तो अंधकार चन्द्रमा नक्षत्र सभी है इसी प्रकार जगत के साथ दुख सुख दोनो है महाराज आपने कहा है की चेतन्य ज्ञान सरूप है तो चेतन्यको जगत भासता होगा जो भासता नहीं तो ज्ञान स्वरूप क्या ठहरा ॥ परमहंस ने कहाकि सुनो चेतन्य ज्ञान सरूप हैं परंतु जगत का ज्ञान नहीं करता क्योंकि जगत का ज्ञान अंतःकर्ण कि वृति कहै हैं परंतु अंतःकर्ण की वृति को ज्ञान कीशक्ति देने वाला चैतन्य है जैसे दीपक आप तो नहीं देखता परंतु नेचो को देखनेकी सामर्थ देता है जो चेतन्य ज्ञान का प्रकाशक न होता तो अंतःकर्ण की वृत्ती को ज्ञान नहीं होसक्ता जैसे अंधकार में दीपक बिना नेचों को देखने की सामर्थ वहीं है इससे जैसे दीपक देखता नहीं है परंतु दिखलाता है और दीपक को प्रकाशक कहतेहैं इसी प्रकार ब्रह्म जगत को नहीं देखता परंतु दिखलाता है इसकारण ज्ञानस्वरूप कहागया और देखो जो ब्रह्मको ज्ञाता और दृष्टा कहा है उसकी यह रीत है कि जैसे लोहे का गोला अगिन में गर्म किया हुआ है जो वह देह से लगजाय तो कहते हैं कि गोलेने जलाया परंतु देखो गोला जलाने वाला नहीं है अगिन ने जलाया है परंतु जो कि अगिन गोले के आश्रै हैं इसलिये गोले का नाम कह ागया इसी प्रकार ज्ञातापन तो वृत्ती में है परंतु चेतन्य के आश्रै है इसी हेतु से चेतन को ज्ञाताकहा गया ॥

महाराज आपने अज्ञान असत्य कहा इस्से अज्ञान ऐसा है जैसे बंध्या इस्त्री का लड़का अब उस लड़के के संतान नहीं होसक्ता क्योंकि वह आपही नहीं है फिर इसी प्रकार अज्ञान से रचना नहीं होनी चाहिये थी क्योंकि अज्ञान भी तो कोई वस्तु नहीं है और जो आपने सुषोप्त में जगत का बाध्यव तलाया तो अंधों को भी जगत नहीं भासता परंतु जगत का बाध्य नहीं सिद्ध होसक्ता ॥

परमहंसने कहासुनो हम परपंचकोभी तो ऐसाही असत्य कहते हैं जैसे अज्ञान को जो बंध्या इस्त्री का लडका दीखै तो निस्संदेह उसके संतति भी होसक्ती है और जो बंध्या इस्त्री के लड़का नहीं तो संतत्य भी नहीं इस्से हमारा येही प्रयोजन है कि अज्ञानी लोग बंध्या के पुत्र को चिंतवन करते हैं और उसके संतति भी देखते हैं अर्थात् अज्ञान को भी सत्य मानते हैं और इस जगत को भी सो अज्ञान और यह जगत दोनो असत्य है और जो तुमने अंधे के विषय में कहा उसका यह उत्तर है कि जगत बाध्य केवल ज्ञानी कोही है अज्ञानीयो के दृष्ट में तो सत्यही है और जब तक ज्ञानी की देह है तब तक यह जगत भासे है परंतु कुछ ज्ञानी का बिगाड़ नहीं करता जैसे किये कवार मिरग चिसना के जल को देख लिया है और फिर वह उसी मारग होकर निकला तो उस को मृग चिसना का जल फिर दीखैगा परंतु उस को धोखा नहीं होगा क्योंकि एक बार उसने वहां जाके देख लिया है की वास्तव में जल नहीं है परंतु रेत की चमक से जल दीखता है महाराज आपने पहिले कहा है कि ज्ञानी के संचित कर्म जाते रहते है तो महाराज इसी प्रकार प्रारब्ध कर्म भी क्यों नहीं जाते रहते जिस्से उसी समय जगत का अभाव होजाय ॥

परम हंसने कहा कि सुनो एक मनुष्यने एक गिलास

भर मदिरा पीलीहै और एक बोतल उसके पास रक्खी हुई है अब बोतल तो दूर होसक्ती है परंतु पी हुई मदिरा नहीं दूर होसक्ती इसका तो नशा अवश्यही होगा इसी प्रकार प्रारब्ध भी दूर नहीं होसक्ती है क्योंकि शरीर और दुख सुख जो इस शरीर को होते हैं वह पी हुई मदिरा के समान हैं महाराज ज्ञानी को प्रारब्ध आधीन जगतके सुख प्राप्त हुए वह उनके भोगने में लगा तो जीवन मुक्त के सुख का त्याग हुआ इसी प्रकार ज्ञानी विदेह मुक्तका भी त्याग कर देगा सुनो ॥

दोहा ॥

देह पात के होतही जीव पुरुष का जोय।
भया लीन आकाश में निश्चय मानो सोय ॥
यह परपंच एक भर्म था सर्प रजू में भान।
बिन्द्रावन रजू ज्ञान ते सर्पलीन नभ जान ॥

देखो देह के वियोग पर ज्ञानी का अंतःकर्ण चेतन्य आकास में लै होजाता है क्योंकि प्रारब्ध का बंधन टूटा मूल सहित अविद्या का नास हुआ और जैसे रस्सीमें सर्प है रस्सी का ज्ञान होतेही आकास में लै हुआ है वह सर्प ढूंढे नहीं मिलता और जो ज्ञानी भोग करै है सो सत्य समझ कर नहीं भोगता इस्से जीवन मुक्त का त्याग नहीं होता हां अधिक सुख जीवन मुक्ति का नहीं मिलता महाराज एक संदेह और उत्पन्न हुआ है कि बेद में इस जगत की उत्पत्ति कहो है और कई प्रकार से कही है यह समझ में नहीं आता यह कि एक बेद कई प्रकार की बातें कहीं ॥ परमहंस ने कहा कि यह प्रपंच मिथ्या अन हुआ है अब कहो कि जो बस्तु असत्य है वह उत्पन्न कब हुई माया की रचना है सो माया अनिर्बचनी है इस्से बेदने जहां जैसा समझा है वैसाही इत्तांत उत्पत्ति का लिखदियाहै जो रचना सत्य होतीतो एक

ही प्रकार से कही जाती अन्य सब मतों में भी उत्पत्ति के विषय में विरुद्ध है इससे जैसा जिसकी बुद्धि में आया वैसाही लिख दिया और यह भी सत्य है कि पचास मनुष्योंने मनो राजकी सृष्टि बनाई अब अपनी अपनी सृष्टिकी उत्पत्ति जैसी जैसीकहीवह सही और वास्तवमें केवल वहएक सत्यहै जिस ने पचास का वृत्तान्त सुनकर कहा था कि सबको भर्म हुआ था न कुछ उत्पन्न हुआ और न कुछ नास हुआ और देखो कि सब कहते हैं कि पहिले एक ईश्वर था और पीछे ईश्वरही रहेगा तो जो कुछ बीच में हुआ वह पहले ईश्वरही था जब इसका अंत आवैगा तब फिर ईश्वरही होगा इससे मध्य में भी ईश्वर ही है जो मध्य में कुछ और होजाता तो ईश्वर नहीं होसक्ता था जैसे दूध का दही हुआ और तरुण से वृद्ध हुआ अब दही दूध नहीं होसक्ता और वृद्ध तरुण नहीं होसक्ता अब जैसे दूध सत्य है वैसे दही भी सत्य है इससे जो तुम ऐसा मानो कि जगत ईश्वर से पृथक है और ईश्वर नहीं होसक्ता तो उत्पत्ति को नास वान कहना अशुद्ध है क्योंकि जैसे ईश्वर थिर है वैसाही जगत भी थिर रहैगा परंतु सब छोटे बड़े मतों में ईश्वर को एक ही कहा है और जो दीखता है उसको नासवान कहा है इससे साबित हुआ कि जो। कुछ दीखता है सो ईश्वर से भिन्न और कोई दूसरी वस्तु नहीं है भर्म से उसको पृथक समझा है अब देखो कि जब संम्पूर्ण जगत ब्रह्मही है तो चेतन्य कुछ और होगा जो ऐसा कहते हैं कि ईश्वरने सून्य सेही सब को उत्पन्न किया है हम पूछते हैं कि सून्य कोई स्थान है जो सून्य स्थान है तो ईश्वर सर्वत्र न हुआ क्योंकि ईश्वर का होना सून्य में नहीं होसक्ता इससे एक सून्य और दूसरा ईश्वर दो हुआ और जो कहो कि सून्य स्थान नहीं है तो जब ईश्वर सर्वत्र है तो फिर उत्पत्ति का होना ईश्वर के

सिवाय और कहां से हुआ महाराज सत्य है जो ध्यान करता हूं तो आपका कहना वास्तव में सत्य है क्योंकि जब केवल एक ईश्वरही था उस समय यह जगतन था परंतु जैसे कि बाजे मतवाले कहते हैं कि ईश्वर ने अपनी शक्ति से यह सब उत्पन्न किया इस से उत्पत्य का मूल शक्ति हुई किंतु यह कि सब उत्पति में से निकली और शक्ति शक्ति मान में थी इसे जो कुछ शक्ति में से निकला वह शक्तिमान में था और शक्ति मान केवल एक था इसे वह जो निकला था वह शक्तिमान हीं था शक्तिमान सेप्रयोजन साक्षात ब्रह्म से है ॥ परमहंस ने कहा कि खूब समझे कि नैन कपड़े में वेल बूटा है पत्थर में मूरत बनी है देखने में वेल बूटा और मूरत कपड़े और पत्थर से अज्ञानी पृथकही जानै है परंतु वास्तव में वेल बूटा भी तो कपाड़ाही है और मूर्त पत्थर हीतो है ॥

महाराज सत्य है जगत भर्म है और चैतन्य माच एक है परंतु महाराज जब ब्रह्म व्यापक है तो फिर अंतःकर्ण में आभास कैसे होसक्ता है और जो अंतःकर्ण हुआ तो ब्रह्म कैसे व्यापक होसक्ता है जब एक अस्थानमें दो वस्तु होंगी तो वह हर एक कैसे व्यापक होसकैंगी ॥

सुनो अंतःकर्ण तो माया का कारज भर्म है जैसे सर्प और रस्सी एक समय पर एक स्थानपर वर्त्तमानथी जब सर्प दीखा तो रस्सी कुछ जाती नहीं रही रस्सी आपभी वर्त्तमान थी और सर्पभी था इसी भर्म की दसा में एक अस्थान पर दो वस्तु रह सकती हैं और देखो आकासव्यापक है परंतु जल में आकास का आभास पड़ाता है इसी प्रकार ब्रह्म का आभास अंतःकर्ण में है सत्य है महाराज अब यह कहिये कि जिन मनुष्यों ने बैकुंठ में मुक्त मानी है और कहते हैं कि बिना ब्रह्म के देखे हम ब्रह्म का होना

कैसे मानें उनकी क्या दसा है सुनो जिनकी उपासना परी होगई है वह निस्संदेह कल्पित बैकुंठ भोगेंगे जैसे जाग्रत में जिस वस्तु में अध्यास रहता है वह स्वप्न में प्राप्त होती है परंतु प्रथम तो यह है कि (छिन्ने पुन्ने मृत्यलोके वसंत्य) फिर जन्म रखना पड़ता है दूसरे यह है जब बैकुंठ में रहैंगे तो इस समय भी कुछ दुख ही रहैगा क्योंकि बैकुंठ में अपने अपने अधिकार के अनुसार स्थान मिलैंगे जो बिष्णु भगवान के अत्यंत समीपी होंगे उनकी ईर्षा अवश्य करैंगे जो दूर होंगे हां इस जगत के सुखसे वहां अधिक सुख होगा परंतु जो विषय आनन्द मन के बिना नहीं होसक्ता और बैकुंठमें पदार्थही है इस बैकुंठीके सिर पर मन भरका बोझ बनाही रहा और अंतको धक्के खाये परंतु लोगों की समझ पर पश्चात्ताप होता है कि असल आशय नहीं समझते वेद शास्त्र पुराण आदि में बैकुंठ की प्रशंसा की है परंतु गीता में और उनी वेदशास्त्र पुराण और बाणी में यह भी लिखा है कि पुन्न दान सब कुछ करो परंतु निष्काम करो और भगवान के अरपण करदो अब इसका प्रयोजन नहीं समझते जो बैकुंठ दिलाना स्वीकार होता तो सब कर्मों को अरपण कराना अपनी ओर क्या अवश्यकता थी इससे साफ विदित है कि भगवान और महात्माओं का यह आशय रहा है कि लोग शुभकर्म बैकुंठ के लोभ से करैं और सब मुझको अरपण करैं तो मैं उनके बदलेमें उनके मनकी शुद्धी का फलदूं जिससे उनका मन शुद्ध होकर ज्ञान पावै और मुक्त होजांय अब लोग बैकुंठही जाने को मुक्त मानै हैं लोहे की बेड़ी काठी और सोनेका तौ कगले में डाला परंतु हां उनसे तौ भी अच्छे हैं जो भूत प्रेत सीतला मसान आदि का पूजा करनाही मुक्त मानैं हैं और जगत के सुख को सुखमाना है देखो सबवस्तु में अस्ती

भांती प्रिये है अर्थ इसका यह है कि कुछ है मालूम होता हैं और प्यारा है और अनाम रूप माया कीरत नासवान है असत्यी भाती प्रिये सब काल में बर्त्तमान है जैसे आटे है मालूम होता है प्यारा है सपेद दीखताहै अब जो रोटी बनी तो नाम और रूप आटे के जाते रहे पर और अस्ती भाती प्रिये तो रोटी में भी बरतमान है इसी प्रकार ब्रह्म व्यापक और सदैव बर्त्तमान और देखो जब तक ब्रह्म ज्ञान नहीं है तब तक चिपुटी ज्ञेय ज्ञाता ज्ञान तीनों बने हुए हैं और जब तक वस्तु और उसको देखने वाला और देखना बना है तब तक मोक्ष नहीं जो कोई अत्यंत प्यारा मिलता है तो उस समय यह इच्छा होती है कि मैं और वह एक होजाऊं जो कोई वस्तु अच्छी होती है तो यह चाहता है कि पेट में रखलूं इससे असल आनन्द वही हुआ जबकि एक होजाय तो जो तुम ईश्वर के समीप भी गये तो क्या लाभ हुआ क्योंकि ईश्वर का भय सिर पर सवार हुआ और तुम यह भी कहते हो कि ईश्वर की इच्छा में किसी को बस नहीं भले को बुरा करै बुरे को भला करै और तुम अपने को सदा अपराधी ही समझा करो हो इससे जो ईश्वर के सनमुख अपराध बन गया तो मारे गये जो अपराध नभी बना और ईश्वरही की इच्छा में ऐसा आगया कि तुमको दुख दे अब कहिये क्या मुक्ति हुई और जब कि तुमको यह भी दावा नहीं है कि शुभ कर्मियों को अवश्यही स्वर्ग प्राप्त होगा तो ऐसे धोखे में क्या लाभ है और जो तुम दावा करोगे तो ईश्वर के यहां अपराधी होगे क्योंकि ईश्वर की इच्छा में तुमने दखल दिया इसके विशेष उसका गुप्त भेद जानना भी तो तुमने असंभव समझा है और जो तुमने कहा कि बिना ब्रह्म के देखे ब्रह्म कैसे निश्चय होय ॥

वाह बैकुंठ तो आप देख कर ही आयो है जो कहे

कि वेद शास्त्र और बड़े २ कह गयेहैं इसे स्वर्गका निश्चय है तो ब्रह्मज्ञान क्या वेद शास्त्र मे नहीं कहा है और क्या बड़े बड़े ब्रह्मज्ञान को नहीं कह गये हैं और अब जरा ध्यान से देखो कि सुख दुख और बुद्धि आदिको तुमने देखा है जो नहीं देखा है तो निश्चय क्या लाते हो और जो वस्तु देखने में नहीं आवै उसको तुम किस प्रकार जानते हो भाई इन नेत्रों से ब्रह्म नहीं दीख सकता हां तत्पर होकर निध्यासन करो आपही को ब्रह्म कहोगे लो अब वेद शास्त्र और महातमाओं का कहना सुनलो महा वाक्य तो वेद का यह है (अहं ब्रह्मास्मि तत्वमसि) प्रज्ञा नंद ब्रह्म वेद की श्रुति सुनो (ओं सत्यं ज्ञान मनंत ब्रह्म ने हनास्ति किंचना सर्वंखल्विदंब्रह्मेति कहिये उत्तर मीमांसा शास्त्र है या नहीं यह तो वेद और शास्त्र की गवाही हुई ॥

अब गुरु नानक साहब के बचन सुनो ॥

निरंकार आकार आप निरगुण सरगुण एक एकहि एक बखान नो नानक एक अनेक ॥ आपहि आप आप उपायौ आपहि बाप आपहि मायौ। आपहि सूक्षम आपहि असथूला लखीन जाई नानक लीला ॥ जिनि आप रचो परपंच अकार तिह गुण में कीनो बिसतार। पाप पुन्य तेहि भई कहावत। कोऊ नरक कोऊ स्वर्ग बछावत आल जाल माया जंजाल हौ मैं मोह भर्म भैभार। दुखसुख मान अपमानअनेक पर कार किये बख्यान आपन खेल आप कर देखे खेल संकोचै तो नानक एकै ॥

कबीर साहब ने कहा है ॥

साधो इह मेंहरवा देखा। आपही माली आप बगीचा आपहि सीचन हारा। आपही कली आपहि फूला आपहि गूंधन हारा। आपहि दुनिया आपहि दौलत आपहि मालख-

जाना ॥ आपहि लूटै और लुटावै हाथ लिये एक प्याला कहैं कबीर सुनो भई साधो घटही में ठाकुरद्वारा ॥

दोहा ॥

कबीर जिसको खोजत पायो सोई ठौर।
सोई फिर केतू हुआ जिस को कहता और ॥
कबीर वृक्षापूछे बीज से बीज बिर्छ के माहि।
जीव जो ढूढ़े ब्रह्म को ब्रह्म जीव के माहि ॥
कबीर आदि हुती सब आपमे कल हुती तामाह।
ज्यो तर वर के बीज मे डार पात फल छाह ॥
हेरत हेरत हेरिया रहा कबीर हेराय।
बुंद समानी सिंधमें सोकित हेरी जाय ॥

चौपाई ॥

सत्य लोक की झकझ कहानी। सोई निज सतगुरु सहदानी ॥
रूप वरन जहं वांनहि देसा। तीन लोक अचरज संदेसा ॥
नहि तहं पाच तत्व की काया। सत्तपुरष आपहि निरमाया ॥

दोहा ॥

बुंद समानी सिंध में यह जाने सब कोय।
सिंध समाना बुंदमे बूझै बिरला कोय ॥

पलटू दासजीके बचन सुनो ॥

जगन्नाथ जगदीस जगमेंव्याप रहा। चारखानमे लख चौरासी और न कोई दूजा ॥ आपहिठाकुर आपहिसेवक करत आपनी पूजा आपहि दाता आपहि मंगता आपहि जोगी भोगी। आपहि बिख आपहि बिखनी आप बैद आपरोगी ॥ आपहि ब्रह्मा बिष्णु महेश्वर आपहि सुर नर मुन ह्वै आया आपहि ब्रह्म निरूपण गावै आपहि प्रेरतमाया ॥ आपहि कारण आपहि कारज बिस्व रूप दर साया पलटू दास हट जब आवै संत करैं जब दाया ॥

तुलसी साहब के बचन सुनो ॥

सोरठ ॥

हम पिया पिया हम एक लख बिबेक संतन कही ।
भई अगम रस भेख टेखा द्विग पिया एक हों ॥
हमरा सकल पसार बार पार हमही कही ।
संत चरण की लार आदि अंत तुलसी भई ॥

राग बसंत ॥

मत भ्रम मोरे घरमें दीदार ॥ टुक आंख खोला गफलत बिसार ॥ १ ॥ ब्यापक सभमे अखंड ब्रह्म छांड भटक दुनी आको भरम ॥ जुग जुग भरमत कर बिचार ॥ सुरत नैन नित सत सुधार ॥ २ ॥ बन भुलान घर बिसरि घाट ॥ ठग संग कीनो घरन घाट ॥ दिना चार तनकी चिनार ॥ छूटत तन भुगतत होनहार ॥ ३ ॥ बूझ समुझ घर खोज रोज अंदर में मन मारे मौज ॥ संगसतगुरु करले निरधार ॥ भटक भूल सबदे निकास ४ ॥ जिन जिन सतगुरु सरन लीन ॥ तिन तिनपायो अगम चीन ॥ अगम गली इकबिध बिचार ॥ तुही तुही तुलसी बार पार ॥

दोहा ॥

बार पार तुलसी लखो पगो चरण के माहि ।
छको अगम रस ब्रह्म को थको थोर मन माहि ॥
गुशाईं तुलशी दास जीने कहा है ॥

मैइर साधन करी एनजा नी जस अब निज भेख जकी नातस कोन देख दरानी ॥ स्वप्ने नृप को ग्रस्यो बिप्र बध ॥ बिकल फिरे अघ लागे ॥ बाज मेध सत कोट करै नहीं सुधि होय बिन जागे । स्वर्ग मेसरप बिपुल भैदायक प्रगट होय अबिचारे ॥ बज्र आयुध धर बल अनेक करमारे मरै नमारै । निज भरम तें कर सम भवसागर अति भै उपजावै ॥ औगाह हत वोहत नौका चढ़ कबहुं कपारन पर पावै । तुलशीदास

जग आप सहित जब लग निर मूलन जाई ॥ तब लग कोट उपाय करिमरिये तरिये नहिं भाई ॥

दोहा ॥

व्यापक ब्रह्म जो बिरज अज अकुल अनीह अभेद ।
सो कि देहधरि होइ नर जाहिन जानत बेद ॥

चौपाई ॥

व्यापक ब्रह्म अखंड अनंता ॥ अखिल अमोघ शक्ति भगवंता ॥

दोहा ॥

यथा अनेक रूप धरि नृत्य करै नट कोय ॥
सो सो भाव दिखावही आपहि होय न सोय ॥
कोई सत्य झूठ कहे कोई जुगल प्रबल कर माने ॥
तुलसी दासपर हरै तीन मर्म जब आपन पहचाने ॥

दादू साहब ने भी कहा है

दोहा ॥

नहीं तहाँ से सब हुआ फिर नाहीं होजाय ।
दादू नाही होरहो साहब से लौलाय ॥
छत मनहीं सो ब्रह्म है घटै बढ़ै नहि जाय ।
पूरण निश्चल एक रस जग तन नाचै आय ॥
उपजे बिनसे गुण धरै यह माया का रूप ।
दादू देखत थिर नहीं छिन छाया छिन धूप ॥

जग जीवन साहब ने कहा है ॥

शब्द

तुमही घट बोलत डोलत तुमही तुमही हो करतार ॥
तुमही खुवात पानी पिआवत मैमन करी बिचार ॥
तुमही ब्रह्मा बिष्णु महेश्वर तुमही योग पसार ॥ तुमही संतनके मन मानी हो तुम निरगुण निरंकार ॥

चौपाई ॥

शुभऔर असुभ अहोसबमाहीं । और दूसरो जानो नाहीं ॥

चरन दासजी का बचन ॥

स्वासहि स्वांस चलै जब आपही है सो अखंड टरे नहिं टारो। बाहर भीतर है भरपूर सो ढूंढत कहां है नाहि न्यारो ॥ चरणदास गुरभेद दियो भ्रम दूरभयो जो थो अति भारो। दृष्ट अदृष्ट जो राम को देखत राम भयो पुन देखन हारो ॥

बली साहब का क़ौल है ॥

दरिआव की मौजपर जाइ देखो कहां जाना कहां आना है। दरिआव में उठना है फेर दरिआव में समाना है ॥ यहां और नहीं कुछ करना है मैतै का भेद मिटाना है। दरिआव अखंड अद्वैत वली ना कुछ खोना है ना कुछ पाना है ॥

ग़ज़ल ॥

ज़वाबकी तरह अपने तईं बना के तोड़। तरीक़ हक में एही तोड़ है खुदा से जोड ॥ वदनके तोड़े हवाके सेवा इना निलेंगा। खुदा ही निकले जो दीजे खुदीका भांडा फोड़ ॥ ताईउनात के नुक्तों से है वसीर अहद। वही है एकवह दससौ हजार लाख करोड़ ॥ सनम को पूजै ब्रह्मन हरम को माने सेख। यह दोनों एक है मानूं किसे किसे दूंछोड़ ॥ सिवाय हस्ती हक़ के जो कुछनजर आवै। यक़ीन जाने कि देवे ख़याल की है खोड ॥ अजल से लेके अबद तक येही जो है सोहै। बरंग बहरि रवाजिसमें है न तोड़न जोड़ ॥ अवस है सैर सुखन की यह तोड़ जोड़। नियाज पास आपने जिकर और फिकर की तरफ मुंह मोड ॥

सवैया ॥

स्वासस्वास रात दिन सोहं सोहं होय जाप यही मालवार वार दृढ़ के धरत है। देह परे इन्द्री परे अतःकर्ण परे एक सो अखंड जापताप को हरत है ॥ काठ रुद्राक्ष और

खूत ऊनहूं की माला इनके फिराए कौन कारज सरत है। सुन्दर कहत एक आत्मा चेतन्य रूप आप को भजन सो तो आप ही करत है॥

महाराज निस्संदेह यह संति है। कि जीव और ब्रह्म की एकता में कुछ भेद नहीं है॥ अज्ञानियों की समझ में भेद है। यह जगत अन झुआही भासेहै। जैसे स्वप्ने में एकही काल में बाप बेटा और पोता सब सामग्री बन जाती है इसी प्रकार यह जाग्रत जगतभी है॥ स्वप्नमें भी ऐसा मालूम होत है कि मकान राज मजूरों ने तैयार किया है॥ और वह जो राज मजूर हैं उनका परस्पर में सम्बन्ध है॥ कोई बाप है कोई बेटा है कोई भतीजा है॥ तात्पर्य्य यह है कि एक सरीर में ऐसा भान होता है कि उससे बेटा पैदा झुआ है दूसरे सरीर में यह भान होता है कि फलाने का बेटा है परंतु वास्तव में सब रचना एकही छिण में होगई और जब जागे तब संपूर्ण सृष्टि लय होगई परमहाराज जोब्रह्म चैतन्य है तो चैतन्यता तो किसीपदार्थ में रही होगी स्वतंत्र नहीं रह सक्ती सो वह पदार्थ भिन्न करके कहिए कि जिसमें चेतन्यता रही झुई है॥ सुनो जो तुम मिश्री को मिठाई से भिन्न दिखा दो तो चेतन्यता भी भिन्न दिखाई जाय भाई जैसे मिठाई मिश्री का सरूपही है ऐसे चेतन्यता आपही सरूप है जो गुण होता तो गुणी से भिन्न होता॥ महाराज ब्रह्म तो कुछ झुआ नहीं सुन्नही रहा॥ भाई सुनो (लक्षण प्रमाणाभ्यां वस्तु सिद्धि) अर्थ यह है कि लक्षण और प्रमाणों करके वस्तु की सिद्धि होती है॥ कहो तुम सून्य को जाना है तो सून्य कहां और जो नहीं जाना तो तुम सून्न कैसे कहते हो भाई इसका कोई लक्षण प्रमाण है नहीं इसलिये सून्य सिद्धि नहीं होता॥ महाराज न्याय शास्त्रसुनो और वेदांत का क्या भेद है न्याय का आरंभ

वाद है जैसे तृण को जोड़कर बुहारी बनती है ये प्रमाण से द्विगुणक त्रिगुणक होकर सथूल होजाता है ॥ सो परिमाणु अनादि है और जगत की आदि है ॥ सांख का परिणाम वाद है ॥ अर्थात् प्रकृति जगत भाव को प्राप्त होजाती है जैसे दूध दही होजाता है और वेदांतियों का विवरत वाद है ॥ अर्थात् वस्तु आप बिगडी नहीं परंतु अन्य रूपतें परतीत हुई जैसे सुवर्ण बिगडा नहीं और क्रीट कुंडल का आकार होगया ॥ ऐसे ब्रह्म सदाशुद्ध है ॥ परणाम रूप प्रतीत होगया बिवरत का यह लक्षण है कि उपादान से तो भिन्न सता होवे और रूप अन्य होवे ॥ परिणाम का लक्षण यह है कि उपादान और कार्य की एक सत्ता होवे ॥ और रूप उपादान से अन्य होवे और देखो जगत ब्रह्म के अज्ञात होने से भासा है सो जब तक ब्रह्मज्ञान न होगा तब तक मूल सहित अविद्या का नास नहीं होसक्ता जैसे रस्सी के अज्ञान से सर्प भासा है ॥ जब रस्सी का ज्ञान होगा तब सर्प का अभाव होगा और देखो कि एक केवल ब्रह्म ही सजातो बिजातो सुगत भेद से रहित है ॥ और प्र'च इन भेद सहित है सजाति उसे कहते हैं कि जो उसके समान दूसरा होइ ॥ जैसे दो घट और बिजाती यह कि कोई दूसरी वस्तु उससे और प्रकार की होवे जैसे घट और पट सुक्ष यह है कि जैसे कपड़े में सूत ॥ सो केवल निसंग आत्मा है ॥

दोहा ॥

माया का बिस्तार सब अनिर्बाच तू जान।
ब्रह्म सदा है एक रस बिंद्राबन सो मान॥

महाराज आपका ज्ञान सत्य होगा परंतु उपासनाकी बराबरी नहींकर सक्ता। अब मैं गणेशजी को मनाकरउपासना का बरणन करता हूं ॥ इसको आप कैसे खंडन करोगे ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

दोहा ॥

हरि गुरु संत अनुग्रह दया साथ की होइ ॥
बिन्द्राबन सति संग मणिअलख लखावै सोइ ॥

श्लोक ॥

श्रीमुखब्राकभक्त्याहमेकायाह्य अद्वात्माप्रियसतां ।
भक्तिर्पुनातिमन्नसः स्वपाकानपिसंभवान् ॥

इसका अर्थ ॥ मैं एक अद्वा सहित भक्ति ही से मिलता हूं ॥ मेरी भक्ति चंडाल जाति को भी पवित्र कर देती है ॥

भगवान कपिल जीने भी कहा है ॥

श्लोक ॥

नपूज्यमानभक्त्या भगवत्यखिलात्मनि ।
सदृशोस्तिशिवःपंथा योगीनांब्रह्मसिद्धये ॥

योगियों को ब्रह्म सिद्धि के लिये भक्ति के तुल्य कल्याण कारी कोई मारग नहीं है ॥ बाकी औ तारन की महिमा तो परसिद्धि हैं ॥

भगवान के पार्खद ने भी कहा है ॥

श्लोक ॥

अज्ञानादथवाज्ञा नादुत्तमश्लोकनामयत् ।
संकीर्तितमघंहंति दहेदेधोयथानल ॥

भगवान का नाम जानि के कहैं या बेजाने कहै ॥ पाप को नास करदेता है ॥ जैसे अग्नि सूकी लकड़ी को जलादेती है ॥

यमराज जीने भी कहा है ॥

श्लोक ॥

एतावतालमघनिर्हरणायपापं सत्कीर्तनंभगवतोगुणकर्मनाम्नाम् ।
विक्रुश्यपुत्रमघवान्यदजामिलोपि नारायणेतिम्रियमाणइयापमुक्तिम् ॥

अर्थ—पाप नाश वास्ते केवल भगवान का कीर्तन स्वारथ

है ॥ पापी अजामिलने मरते समय नारायण नाम अपने पुत्र को पुकार के मुक्ति पाई (कलि केवल कीर्तनात्) कलियुग केवल नाम अधार ॥ और जो पूरण भक्त हुए हैं उनकी महिमा कैसी प्रगट है ॥

चौपाई ॥

भये प्रह्लाद जगत सब जानी । पिता त्रासदीन्हा तिहठानी ॥
अति प्रह्लादटेर कीउ जबही । खंभफाड़ हरिप्रगटेउ तबही ॥
कीन भगत को तुरत बचाई । ताकी कीरत सब जगछाई ॥
दृढ आसा जिन जस उपजाई । बिन्द्राबन हरि प्रगटे आई ॥
दासी सुत नारद रहे भाई । पूरबजन्म की कथा असगाई ॥
भक्तन की सत संगत पाई । बिरह उठी बन चाले भाई ॥
बिष्णु देवकी आसा लाई । लागे ध्यान करन पुनजाई ॥
बहुत काल अस जानो बीता । बिष्णु दयानिधप्रगटे मीता ॥
ध्रुवजी दृज मंडल में आए । बैठे अचल समाधि लगाए ॥
बहुतकाल असध्यान लगाया । गरुड चढे आये हरि राया ॥
राजा एक मोर ध्रुज रहिया । प्रेम भक्त में पूरा भइया ॥
धर्म नीत मरजादा माहीं । बासम निरपभयोकोईनाहीं ॥
एक समय अरजुन के ताहीं । भयोअभिमानबहुतमनमाहीं॥
मो सम भक्त न दूजा कोई । ममबस कृष्ण देव हैं सोई ॥
अरजुन सो भगवान बखाना । मेरे भक्तन को तू नहिंजाना ॥
चले कृष्ण अरजुन दोउसंगा । नाहरएक साथलियो चंगा ॥
ब्रह्मण रूप धरा भगवाना । अरजुनकोबालकहरिआना॥
दोउ चलि राजा ग्रह आए । कहियो हेतु भोजन के धाए ॥
राजा कहिउ जो अज्ञा होई । भोजन तुरत मगाऊ सोई ॥
हरि बोले सुन मारग माहीं । यहनाहरमोहिघेरिउ आई ॥
भोजन कोयह भूखा रहिया । ममबालकको मारनचहिया ॥
मुझ को ले नाहर तू खाई । यह बालक मेरोसुख दाई ॥
नाहर कहा बड़त न तेरा । कोमल मास बालकभक्त मेरा ॥

मकहियो बालक मेरा सुखदाई । बालक को नहिं खावो भाई ॥
हम तुम चले मोर ध्वज पाहीं । वाका सुत तोहि देऊं दिवाहीं ॥
सुत और मुझे दोऊ को खाऊ । काहे को तुम भूखे जाऊ ॥
राजा कहे देर नहीं कीजै । रानी कहा मुझे भक्ष लीजै ॥
इतने में सुत सुन के अइया । परिकर्मा करि शीश नवइया ॥
नृप सुत कहा दया बड़ कीना । तुम दयाल जो दरसन दीना ॥
यह तन छिन भंगी नस जाई । फिर काहू के काज न आई ॥
मेरे भाग बड़े अधिकाई । तुम्हरे कारय काया आई ॥
बाघ कहा आधा तन खाऊं । ताते अपनी भूख बुझाऊं ॥
बालक कहा लेहु तुम भाई । जितना चाहो खाओ आई ॥
नाहर कहा नहीं असखाऊं । क्यों अपने सिर पाप चढ़ाऊं ॥
कहिउ बालक फिर कैसे कीजै । करिके दया भेद कहि दीजै ॥
नाहर ने यह विध समझाई । आरा सिर पर देह धराई ॥
मात पिता दोउ खैचैं भाई । जुदा बीच से तन होजाई ॥
ज्यों आरा सुत सिर पर धरिया । हाहा कार नगर बिच परिया ॥
नृप रानी दोउ खैंचन चाहा । हरि जी हाथ पकड़ लिओ बाहा ॥
हरि पुन भये चतुर्भुज रूपा । नृप को दरशन दियो अनूपा ॥
हरि बोले मांगो बर कोई । जो तुमरे मन इच्छा होई ॥
भूप कहिउ बर दीजै नाथा । प्रीत रहे तुम चरनन साथा ॥
हे दयाल दूजा बर दीजै । भगतन से कसनी लघु लीजै ॥
बर दे के हरि विष्णु दयाला । अन्तरध्यान भये ततकाला ॥
ऐसे बहुत भक्त भये भाई । नामदेव की गाय जिवाई ॥
सिबरी के फल जूठे खावा । नरसी की झंडी सख रावा ॥
तिलोचन दृढ़ भक्ति कमाई । जिसकी टहल करी हरि आई ॥
सैना नाई और दासा । इनकी पूरन कीनी आसा ॥
मीराबाई दरसन पावा । धना भक्त का भोजन खावा ॥
हरिश्चंद्र के धरम निभावा । हाथ पैर जैदेव जो पावा ॥
कहांलग भक्ति प्रभुता गाऊं । मम बुद्धि छोट पार नहिं पाऊं ॥

आपज्ञान अद्वैत बखाना। बिनअसज्ञानमुक्तिनहिं ठाना॥
सब कोई मुक्ति भक्ति सों गावै। किसविधमुक्त ज्ञान सो पावै॥
पहिलो मुक्ति सालोक कहावै। दूजी पुन सामीप ठहरावै॥
तीजी को सारूप लखावा। चौथी को सायज्य बतावा॥
सो मुक्ति भक्ति से पावै। ब्रह्म ज्ञान काज ना आवै।

और महाराज कथावारतामें भी येही सुनाहै कि और युग में तपदान आदि करते थे आगे वालमीक आदि बड़े बड़े तपसी हुए अब कलिजुग में मुक्ति केवल भक्ति और नाम स्मर्ण से प्राप्त होती है परमहंस पूछते हुए कि उपासना अनेक प्रकार की है॥ कहो किस देव की उपासना सिद्धि दायक है॥ कौन से नाम का स्मर्ण उचित है॥ देखो जो गणेश के उपासक हैं वह कहते हैं कि गणेश अनादि देव हैं॥ त्रिपुरासुरके युध में महादेव जीने उनकी पजा की समुद्र के मथने के समय विष्णु जीने पहिले उनको पूज लिया है॥ काहे से गणेशजी सिद्धि दायक हैं यह बात बेद में और गणेश पुराण में प्रसिद्ध है॥

दोहा॥

जहि स्मृति बंदत सकल बिघन पराहि बिलाहि।
मुद मंगल आरोग धन मुक्ति भुक्ति नियराहि॥

जो पुरुष सक्ति की उपासना करते हैं॥ वह कहते हैं कि शक्ति प्रधान है॥ शक्ति का महात्म देवी पुराण में लिखा है॥ बिना शक्ति पुरुष अशक्त होजाता है॥ सबको आधार शक्ति है॥ इससे सब को शक्ति उपासना उचित है॥ शक्ति दो प्रकार की है॥ एक लक्ष्य दूसरी अलक्ष्य॥

दोहा॥

जगत बीज सदसत नहीं भाव रूप त्रैगुण्य॥
माया सो लखतवै जब योग ज्ञान ने पुण्य॥
अव्याकृत्य अव्यक्त अरु प्रकृत प्रधान निधान।
बिद्या बिद्यादिक महा माया कहे सुजान॥

अन्तकाल में सब जगत जीव चराचर खान।
नाम रूप सब छोड़के तामें सोवत तान॥
सृष्ट काल में सब जगत ज्यों बीजन तें वृछ।
अंकुर तत्यो यह ते सकल यह दृष्टान्त सदछ॥
जब नहिं दृशन दृष्ट कोउ सून्य सकल संसार।
अलखबीज से प्रगटहोय कीन्ह प्रथम अवतार।
महा लछमी नाम सो मुद मंगल को धाम॥
कहत सुनत समझत जिन्हें होत पूर्ण सबकाम॥

चौपाई॥

सोई नभपवन अनल जल माही। सूछम भूततन माचा वाही॥
शब्द सपरस रूप गंधा। उई सकल लोक कर धंधा॥
ब्रह्मा बिष्णु संकर है सोई। इन्द्रादिक देवा सब ओई॥
यछ गंधव किन्नर राछस गन। भूत पिसाच प्रेत जेते तन॥

दोहा॥

भूत भबिखत जो कुछ बरत मान है जोइ।
भुकु भोग्य भोगा त्मक जगत चरा चर सोइ।

लछ्मी के तीन भेद प्रथम महालछ्मी महालछ्मी ने लोक सृष्टि देखि के तमोगुण से दूसरा महाकाली रूप धारण किया फिर सतोगुण से तीसरा रूप महासरस्वति धारण किया तीनो में इस्त्री पुरुष की सक्ति है॥ महालछ्मी से ब्रह्मा वा लछ्मी पैदा छुए वा महाकाली से रुद्र वा सरस्वति उत्पन्न छुई महा सक्ती से बिष्णु वा गौरी छुए और उन्ही से फिर सर्ब देवता वा देवी उत्पत्ति छुए है॥ जो पुरुष सूर्य्य की उपासना करते हैं वह कहते हैं यह परतछ देवता है इन्हीकी पूजा सबको उचित है काहे से कि यह सकल जगत का कारण है॥ बेद में सूर्य्य स्वामी की महिमा प्रगट है॥ सूर्य्य को चयी में कहते हैं॥ अर्थात बेद चयी अग्नि चयी का रूप है॥ काहे से कि अग्नि का

असल रूप एसनता है ॥ सेा सूर्य्य की किरण से प्रगट है ॥ और बेद में लिखा वा लोक में प्रसिद्ध है कि सूर्य्य वर्षा में अपनी किरन से जल बर्षाते है ॥ वा जल से सर्व औषधी लता वृक्ष होते हैं ॥ उनसे फिर नाना प्रकारके जीव उत्पत्ति होते है ॥ वा जल अग्नि से उत्पत्ति है ॥ अग्नि का आधार सूर्य्य परतक्ष है ॥ इससे सब को सूर्य्य की उपासना करना चाहिये सूरज से दिसा वा घडी पल मास वर्ष आदिक काल प्रगट हुये जब सूर्य्य नारायण अवर्षन करके षोडस कला से तप्ते हैं तब परलय होजाती है ॥ और उसी जल से एक हिरण्यमय अंडा पैदा हुआ ॥ उसी अंडे से यह सकल जगत विराट रूप उत्पन्न हुआ सूर्य्य जल बर्षाते हैं ॥ इससे सर्व चराचर जीते हैं ॥ इसते उत्पन्न पालन परलै के कारण सूर्य्य नारायण हैं नाम तो सूर्य्य के अनंत हैं ॥ उसमें बारह नाम मुख्य हैं महीने महीने प्रति सूर्य्य के नाम भिन्न हैं । सूर्य्य के साथ बाराह गंधर्व अपछराह बारह नाग बारह यक्ष बारह ॥ राक्षस बारह ऋषि बारह चैच आदि देके मास २ प्रति ये सर्व गण एक २ बदला करते हैं ॥ सूर्य्य को आगे गंधर्व गायन करते हैं ॥ अप्सरा नाचती है ऋषि बेदा स्तुति करते हैं यक्ष रथ खोचते हैं ॥ राक्षस पीछे से ढकेलते हैं ॥ नाग रथ को बाँधे रहते है ॥

चौपाई ॥

बिष्णु बिरंच महेस सरीरा । निराकार निर्गुण गंभीरा ॥

जो महादेव की उपासना करते हैं वह कहते है कि शिवसदा देव है और अनाद है उन के दक्षण अंग से बिष्णु और बाम अंग से ब्रह्मा हिरदे से रुद्र उत्पन्न हुए बिष्णु बैकुंठमें ब्रह्मा ब्रह्म लोक में रुद्र कैलास परबतपर रहतेहै ॥ शिवलोक सबसे ऊपरहै तीनेा देवता शिवके देहसे पैदा हुए ॥ परंतु रुद्रहिरदे से पैदाहुए ॥ इससे सिव वा रुद्रमें कुछ अंतर

नहीं है ॥ बिष्णु जीने महादेवजी की बडी आराधना की तबमहादेव ने प्रसन्न होकर सुदरसन चक्र और सक्ति बा ऐस्वर्य दिया कि बिष्णु जी वे प्रयास तीनलोक का पालन करते हैं ॥ लक्ष्मीजी महादेव की सेवा करके बिष्णु की अति प्रिय वा सर्वोतम हुई ॥ देखो जब चिपुरासुर ने सब को व्याकुल किया तब महादेव जीने उसको नास कीया जब समुद्र से बिष निकला तो उसके भार से सब देवता राक्षस बिह्वल होगये ॥ तीनो लोक जरने लगे तब महादेव जी ने उस बिखको पीलिया ॥ जब नरसिंह जीका परबार बढा वा सबको सताने लगे तब महादेव जी ने सरभ नाम पंछी का रूप धर के सबको नास किया केवल नरसिंह जी को छोड़ दिया जब बाराह जी का बंस बहुत बढ़ा बा सब पृथ्वी ब्याकुल हुई ॥ तब महादेव जो बिठल नाम कुत्ते का रूप धर के एक बाराह जी को छोड़ के और सब बंस छय कर दिया ॥ एक समय ब्रह्मा बिष्णु से अपनी अपनी बड़ाई के हेत बड़ा झगड़ा हुआ तब महादेव जीने ज्योतिर मे लिंग प्रगट किया वा आकाश बाणी हुई जो इसका अन्त ले आवै सो बड़ा ॥ बिष्णु नीचे को दूर तक गये किंतु अंत न मिला थक के लौट आये ब्रह्मा ऊपर बहुत दूर तक गये अंत न पाया लौट के बडाई के लालच झूठ बोले इससे उनको स्राप हुआ कोई उपासना नहीं करता बिष्णु सत बोले इससे बडेवा लोक पूज्य हुए सब बिष्णु आदिक देवताईस्वर कहलाते हैं बा शिवजी महादेव बा महेश्वर कहलाते है उनके समान बड़ा और दूसरा कोई नहीं ॥

दोहा ॥

शिवगुण शिव परदेवता शिव हित शिव जग बंधु ।
शिव आत्मा शिव सर्व है ब्रह्म सदा निर्बुंद ॥

शिव जल में शिव अनल में शिव थल में शिव सर्ब ।
शिव आकाश शिव भूम में शिव भज सम तज गर्ब ॥

जो बिष्णु की उपासना करते हैं वह कहते हैं बिष्णु आनादि देवता है ॥ बिष्णु की नाभ से कमल उत्पन्न हुआ उससे ब्रह्मा उत्पन्न हुए उसे ब्रह्मा से रुद्र उत्पन्न हुए जिनको महादेव कहतेहैं जगतकी उत्पत्तिपालन प्रलयके कारण बिष्णु हैंमहिमा बेद पुरानोंमें परगटहै ॥ बिष्णु के अनंत रूप है उनमें औतार बहुत प्रसिद्ध है ॥ प्रथम महा पुरुष औतार हुआ सकल संसार अस्थावर जंगम इसीके अंतर है ॥ इसको बिराट भी कहते हैं २ सनकादिक का सरूप धारण करके लोक के कल्याण के वास्ते अति कठिन सब से उत्तम कौमार ब्रह्म चरय व्रत धारण किया ३ बाराह रूप धारण किया वा संक्षेप से कथा उसकी यह है परलै में पृथी डूब गई थी सो जल में पैठ पाताल से पृथी को अपने एक रोम पर धरके उठा लाए ४ रुचिनाम प्रजापति आकूति नाम प्रजापति की इस्त्री से भगवान सुयज्ञ का औतार लेके स्वायंभू मनु न तासे इन्द्र हुए वा तीनों लोक की रक्षा की ५ कर्दम नाम प्रजापति के भगवान कपिलदेव औतार धरके अपनी माता देवहूती को सांख्य शास्त्र सुनाया जिससे माता की मुक्ति हुई ६ धर्म की मूर्ति इस्त्री से भगवान नरनारायण रूप धरके लोक के कल्याण के बद्रिका श्रम में तप्या करते हैं ७ अत्री मुनी की अन सूईया इस्त्री से भगवान दत्तात्रेय औतार धरके सहस्र बाहु को योग मारग वा प्रल्हाद को आत्म बिद्या सिखाई ८ राजा नाभ की कामरू देवी से भगवान ऋषिभदेव रूप धरके परमहंस मारग जगत में प्रगट किया ९ भगवान राजा पृथुका रूप धरके पृथी को दुहा है १० जब हिरण्यकश्यप ने सहित परोहित अपने पुत्र प्रल्लाद को मारना चाहा उस समय भगवान नरसिंह का

रूप धरिके खंभाफाड़ के प्रगट हुए पापी को मारा प्रहलदा को उबारा ११ कमठ रूप धरके अपनी पीठ पर पृथ्वी को थांभां १२ भगवान ने धनवन्तरि रूप धारा १३ मोहनी इस्त्री का रूप धारा १४ कश्यप की इस्त्री आदित के गर्भ से भगवान बामनजी प्रगट हुए १५ मच्छरूप धरके राजा सत्यव्रत को पृथवी रूप नाव में बैठाल के परलै के कारण जल में बिहार कीया ॥ १६ ॥ हयग्रीव औतार धरा १७ हंस का रूप धारा ॥ १८ ॥ सिया रोचिय मनवंतर में वेदछरा नाम रिख के तुषिता नाम इस्त्री से भगवान विभु औतार लेके कौमार ब्रह्म चर्य्य कीया उनको देख अट्ठासी हजार रिषि ब्रह्मचारी हुए १९ उतम मन्वन्तर में धरम की सूनृता स्त्री से भगवान सत से न प्रगट हुये ॥ २० ॥ तामस मन्वन्तरमें हरि मेधा रिषि की हरणी से भगवान हरि हुये जिनोने ग्राह से गजराज को छुडाया ॥ २१ ॥ रेवत मन्वन्तर विषेशोभरनाम रिषिकी विकुंठा इस्त्री विषय भगवान बैकुंठनाथ जी उत्पन्न हुए ॥ उन्होंने लछमी की प्रार्थना से बैकुंठ लोक रचा ॥ २२ ॥ चासुख मन्वन्तर में वैराज के संभूति स्त्री विषै भगवान अजित उत्पन्न हुए ॥ जिन्होने सब जगत का पालन कीया ॥ २३ ॥ चेतामे परसरामका औतार धरा ।२४ ॥ राजा दसरथ केकई जीके गर्भ से भगवना रामचंद्र जीका औतार धरा । २५ द्वापरमें परासररिषिके यहांभगवानव्यासजी उत्पन्नहुए २६ ॥ बसुदेवके देवकी स्त्री के गर्भसे भगवान राम कृष्ण उत्पन्न हुए ॥२७॥ कलयुगमें बोधरूपधरा और वेदकोनिंदा की २८ ॥ कलयुग अंत में संभल ग्राम मे भगवान कलकी प्रगट होंगे इनमें २४ बीस औतार बहुत परसिद्ध हैं ॥ और साधारण ॥ महाराज आपने तो बड़ी उत्तम कथा सुनाई ॥ पंचदेव की ऐसी महिमा कभी नहीं सुनी थी औतारों का हाल भली प्रकार सुनाया । आप धन्य हो जो कोई

इस कथा को सुनैगा ईश्वर की दया से सर्व कामना पूर्ण होगी। भक्ति प्राप्त होगी वास्तव में बडा अमोल पदार्थ है ॥ कि थोडीसी कथा में इतने पुराणो का सिद्धांत आपने बरणन किया ॥ इति परमहंस ने कहा अब मेरे भी प्रश्न का उत्तर दीजियेगा नही महाराज मेरी बुध में तो येही आता है कि पांचों देवता की उपासना करता रहै सुनो तुमने कहा कि उपासना से सालोक आदि मुक्ति प्राप्त होती हैं। अब यो पांचों की उपासना करोगे तो बताओ कौनसे देवता के लोक में जावेगा कौन से देवता के समीप होगा पांचो देवता के अस्थान भिन्न २ है ॥ उनकी रहस जुदी जुदी है कोई कालमें आपस में देवताओं में विरुद्ध होजाता है ॥ औतारोंमें विरुद्ध बहुत हुआ है ॥ और तुमने सास्त्र पुराण और महात्माओं की बाणी में भी सुना होगा ॥ कि एक की सरणलेनी उचित है और तुम जानते हो कि जैसे इस लोक में कोई औतार सदा नहीं बना रहा इसी तरह परलै महा परलै में कोई सरूप कोई लोक न रहैगा॥ महाराज तो पांचोंमें से किसी एककी उपासना करे मुक्तहो जावेगा ॥ परमहंसने कहा तुम यह निश्चय करके एकका नाम धरो ॥ और विधि उपासना की बातलं और याद रखना कि तुम कह चुके हो कि कलियुगमें केवल नाम सेमुक्ति है ॥

महाराज मेरी सक्त उत्तर देने की नहीं है आपही कृपा करके मुझे दीजियै ॥ सुनो तुमने ऐसा कहा है कि हम तो उपासना का खंडन करतेहै ॥ सो हम उपासनाका खंडन तीन काल नहीं करते उपासना साधन है ज्ञान फल है जब निष्काम निर्गुण उपासना होवै तब मन की शुद्धि द्वारा ज्ञान प्राप्त होये तब मुक्ति कि जिसे फिर इसको अस्थूल वा सूक्ष्म तन धारना ना पड़ै निर्गुण उपासना बिना अंतर गति की प्राप्ति नहीं होती और जब तक इसका मन नाम

और शब्द में ना लगेगा तब तक अंतर वृति की परा प्त कठिन है ॥ और बिना अंतर वृति के इसके जीवन मुक्ति का सुख न प्राप्ति होगा ॥ आगे की आसा में बंधा रहिता है ॥

और एक श्लोक गरगगीता का सुनो ॥

श्लोक ॥

शास्त्राणीपठतेनाना देवानपूजयेत् ।
आत्मज्ञानंबिनापार्थ सर्वकर्मनिरर्थकम् ॥

इांकर्मसरगुण उपासना निर्गुण उपासना की प्राप्तिके साधन है ॥ पर मनुष्य भूल से इसी में फसे रहते हैं ॥ और अपनी अपनी दृष्टका पक्ष करके बिवाद में जन्म खोते हैं । जो कुछ बिवेक होय तो अपने उपास्य को सर्व व्यापि जाने तब सब देव उसी के अंग ठहरैंगे सब बिवाद मिट जायगा ॥ और देखोकल युग में इस जीव के उद्धार के लिये जो संतोने दया करके सुगम मारग बताया है उस रसते पर येा निश्चै सहित चलेगे निश्चै देह मोक्ष को प्राप्त होंगे महाराज ज्ञानी कौन से देव की निश्चय रक्खै है सुनो ॥

चौपाई ॥

पूरण ब्रह्म ज्ञान जब होई । दूजा देव न मानेा सेाई ॥
निज सरूप सब में दरशाना । एकी ब्रह्म रूप सब जाना ॥
कलपित सबजगस्वप्न समाना । जन्म मरन भैभर नसाना ॥
सम दरशी ज्ञानी है जोई । ताकर आवा गवन न होई ॥
भक्त करै जो देवन केरी । ताको रहै वासना घेरी ॥
दृढ़ आसा देवन में लावै । आसा बस ताके ढिग जावै ॥
पुन्य छीन होवै जब भाई । तब वह मृतलोक पुनआई ॥
निज स्वरूपदरसैनहिं जबलों । आवागवन मिटैनहिंतबलों ॥
चंचलता विक्षेप नसाना । परणब्रह्म ज्ञान दरसाना ॥
स्वामी एक संदेह अपारा । ज्ञानीकसकसकीनव्यौहारा॥
जग असत्य मिथ्या जब होई । फिर व्यौहार बनैनहिं कोई ॥

सुन याका सदेह मिटाऊं। तेरे बोध होत समझाऊं॥
दृढ़ आसा जाकी जा माहीं। सोताको सतसत दरसाहीं॥
ज्यो बाजीगर खेल बनावै। छोटे बड़े सभी उठ धावै॥
अज्ञानी नर देखै जाई। सत्यमान निश्चय करै भाई॥
ज्ञान वान देखै जो कोई। मिथ्या लखै खेल वह सोई॥
बालक सम अज्ञानी होई। सत्य जान माने तेह सोई॥
ऐसे अज्ञानी ब्यौहारा। जगको सत्तमान उर धारा॥
ज्ञानी जग मिथ्या सब जानो। हान लाभ तामे नहिं मानो॥
मिथ्या जान करै जो भाई। तामें हान कहो कस पाई॥

दोहा॥

ग्रहण त्याग दोउ त्याग के द्वैत कल्पना नाश।
एकहि व्यापक पूर है दूर भयो आभास॥

चौपाई॥

कच्चा भुना अन्न जस होई। देखन में एकै सम सोई॥
रहै अकार दोउ कर नाईं। अंकुर उत्पति बीज नसाईं॥
भूने में अंकुर नहिं जामो। आगे की उत्पति भई हानी॥
कच्चे में अंकुर उपजावै। महिजलमिलउपजैन सजावै॥
अंकुर बीज बासना होई। जग उपजावन हेतु सोई॥
जगको सत्य सत्य जिमाना। दूजे दिढ़ कर इच्छा ठाना॥
उपजै बिनसे सो जग माहीं। आपो अपने हाथ न साईं॥
ज्ञानी बीज वासना नासै। जग भ्रमवत सो ताको भासै॥
ज्ञानी एक ब्रह्म सब जानै। दूजी दृष्ट नहीं मन आनै॥

दोहा॥

मृग तृष्णा को नीर ज्यों दरसे जलहि समान।
बिन्द्राबन वह जल नहीं कस डूबन कीहान॥
अनिपुरुष की दृष्टि में जग व्यवहार लखाय।
बिन्द्राबन जब जग नहीं कौन ब्यौहारबताय॥

चौपाई ॥

हे स्वामी इक संसै आई। दया दृष्टि कर कहो बुझाई ॥
जग व्योहार कि रतके माहीं। कोइज्ञानीतन त्यागेताहीं ॥
कहां को गये कौन तन पावा। स्वामीयाको कहोदरसावा ॥
सिंध तरंग एकही जाने। भिन्न भेद तामें नहिं माने ॥
पूरण ब्रह्म सिंध सम होई। जग तरंग तामें पुनि सोई ॥
अस पंडता पवन में जैसे। जगत ब्रह्म में मानो तैसे ॥
ज्ञानी द्विबिध भेद नहिं माने। एक ब्रह्म चेतन सब जाने ॥
दूजी आसआस नहिं होई। तातें नहिं कछ जावे सोई ॥
ब्रह्म रूप पहिलेही भाया। तनत्यागाजहंकातहंरहिया ॥

दोहा ॥

पूर्ण ब्रह्म समान है जगत रंग जह माह।
प्रारब्ध बसतन त्यजे हानिवृद्धि कुछ नाह ॥

महाराज सत्य है सत्य है। बिना ब्रह्मज्ञान के बन्धन की भांति दूर नहीं होसक्ती ॥ और मैने भली प्रकार बिचार करके देख लिया कि मैं सजाति बिजाति सुगति भेद से रहित अखंड ब्रह्म हूं मुझे इसमें अब कोई संसै बिपरजैन रहा महाराज आप धन्न हो धन्नहो महाराज एक यह प्रेमी जोजो आप से कुछ पूछा चाहते हैं अब आप इसकी सुनिये और मेरी तो यह दया है ॥

सोरठा ॥

मूल तिमर भयो दूर भूल भ्रम जातोर हियो।
बिन्द्राबन मे पुर आपन लख आपहि रहियो ॥

मसनवी ॥

मरहबा१ ऐ सुरसदे२ बागे३ बक़ा खूब बजाना तू नहीं हक़४से जुदा ॥ आफरीं५ तहसीं६ तुझीको ऐ अजीज७। कर दिया मुझको हर एक से बातमीज८। मैं तेराहूं तुझको ऐ

धन्न१ गुरू२ मोक्ष३ सन्त४ धन्न५ धन्न६ प्यारे७ बिवेकसहित८

प्यारेदिली। तुझको सब रोसन तू रोसन मंजली१ ॥ जिकर सुलतांतुल२ अजकार है ॥ सिररे३ दूलाह४वरमने वे चारा मेदारी५ निगाह६। मरहवा ऐ अनहदे दिलदार७ मन॥ बिन्द्राबन कावेका वस खौला चमंन ॥ १ ॥ अरसटमे सुन है अवाजे वा अदा। होरही हरदम मेरे दिलमें सदा८ ॥ मस अले रोसन नहींरोगन१० जरूर। जाय११ दीगर है नहीं ऐसा सरूर१२ ॥ है अगर सैतान१३ तेरा राज दार१४ कब रहा साबित कदम ऐ नावकार१५ ॥ दिलसे कहताहूं जरा तू रुक सका। क्या हुआ जो आग ये जौरो जफा१६ ॥ बिन्द्राबन हक्क से न फेर हरगिज नजर। गंज काकूं१७ भी मिले तुझको अगर ॥ २ दम निकलता हो फाके१८ से अगर। ध्यानमत करना किसीकीनान पर१९। वाज२० सुर सद पर नहीं तुझको अमन। सुह छिपाना सकल सैताने दगल ॥ गो की तूरखता है गंजे सोमे जर२१। खाक से बत्तर नही हिमत अगर। जौ हद२२ तकवा यह नही ऐवे खबर होगये दुरवेस२३ गुदडी पहन कर ॥ बिन्द्राबन लाहू तजि सका है २४ मुकाम। है फना२५ जाते बका२६ है ला२७ कलाम ॥ बन्दगी तेरी है सब मकरो दगा। खलल२८ सनलिं लाहन इकसिजदा २९किया ॥ बनगये खूकी३० नहीं गोसी-ना३१फास। वेसफाई इस्कदर ऐसेखलाफ३२ ॥ यह खुदी३३व दहै इसे असना३४ नकर। ऐव अपना देखमत होवे खबर ॥ नफस३५ गुजराह हर घड़ी है घात पर। और मौहरत३६

प्रकासिता१ अनहदशब्द२ भेद३ ईश्वर४ रखताहै५ दृष्ट६ प्यारा७ गगन८ अवाज़९ तेल१० दूसरेअस्थानमें११ आनंद१२ कालयम१३ भेदी१४ मूरख१५ अपादा१६ खजाना१७ भूख१८ रोटी१९ उपदेस२० मालधन२१ बैरागादि२२ माथ२३ अद्वैत२४ मरजीवा२५ अमर२६ निस्संदेह२७ हरहेत२८ डंडोत२९ ब्रह्म ज्ञानी३० हिरदा३१ बकवाद३२ अनातमअहंकार३३ कमी३४ मनभूलाहुआ३५ प्रभुना३६ ॥

चाहता है सरब सर ॥ हाथ फैलाता हैं तूं वज़रे दुआ । क्यों तू बिन्द्राबन है ताबिब१ अजरका ॥ ४ ॥ एक दिल उसमें तमन्ना२ येह जार । सीन ये दिल होगया वसतारतार ॥ दिलजो आलूदा३ है अज़हिरसौ४ रवा । पानही सक्ता वह इसराहेखु.दा ॥ इस५ क्लिमतजु है ऐ वेखबर । उसपैक़ानेई हो मिलै जो खु.म कोतर ॥ देख माहे कोकि वहरे७ मालज़ार । बापको भाई को मारै वेखतर ॥ हिम्मते आली जो बिन्द्राबन नहीं । औरतों की मिसल हो परदे निशीं ॥ ५ ॥ नफ़रत८ अम्मारह को मारा चाहिये । हक़ अपना देखखाना खाइये ॥ खायगर एक लुक़्मा९ अज़ब जहे हलाल१० रोसनी हो दिलपै अज़महरे कमाल ॥ नेको बद जो कुछ आवै नज़र । सब वही है सब वही है ऐ वेखबर ॥ अक़्ल रखता है ऐ मरदे खु.दा । एक दम एक पल नहो उससे जुदा ॥ फनाफिल११ अफालहो जब कामहै । जात बिन्द्राबन को पातब नाम है ॥ तू फना१२ हो पाइगा लज़्ज़त१३ कमाल । उसमें गुम होय पसइसै कहते है हाल ॥ वहतो तुझमें है नहीं तुझको खबर । वास्ते जिसके फिरा तूं दर बदर ॥ दिलतेरा होदो जहां सै बेनियाज़ि१४ । बेहक़ीक़त छोड़ ऐ नादा मजाज़१५ ॥ नंग१६ सै और नाम से बस सुंहको मोड़ । शोश ए नामूस१७ को पत्थर से तोड़ ॥ आब१८ दरिया मौज मारै गरनई । देख बिन्द्राबन सफा पानी वही ॥

मंगताफलका१ इच्छा२ मराहुआ३ ईर्षादि४ बराबर५ सन्तोष६ वास्ते७ मनद८ गिरास९ धर्मसहित१० अकरता११ मरजीवा१२ स्वाद१३ निरइच्छा१४ परपंच१५ लाज१६ पानीनईका१७ लहर१८ ॥

इति

श्री सतगुर रामकी जै ॥ * ॥

इस भाग को चौवे रघुनाथ दास सेवक और गुरसरन
दास साधू बिहार बिन्द्राबनी पंथ ने छंदा बन्दी
किया अब उसका प्रारम्भ है ॥ * ॥



सोरठा ॥

श्री गुर सतगुर राम कृपा करो जन जानि के।
पावे मन बिश्राम बाँह गहे रघुनाथ की ॥

कवित्त घनाक्षरी ॥

श्री सतगुर रामजी दयाल हैं दया निधी सन्तन की कृपा उरमाहिं निज धारी है। श्रीजो बिहार बिन्द्राबनही है बारतिक सांतही सो वेद को बिचार चारु सारी है ॥ बिषय वेदांत जान पावे कोन मोक्षी ज्ञान जीव ईस एकता संबन्ध सो बिचारी है। कहैं रघुनाथ दास सतगुर राम आस सिद्धि है परोजन रूप आपनो लषारी है ॥ १ ॥

कवित्त ॥

चोवे रघुनाथ दास बास है फिरोजा बाद साधू गुरसरन के साथ मिल गायो है। आप अभिलाषा सार श्रीगुर महाराज बिन्द्राबन आचारज स्वामीजी लषायो है ॥ कहिहैं चौपाई छंद दोहाहू कवित जानमंगल सवैया पुनि कुंडली सुनायौ है। कहै रघुनाथ दास सतगुर राम आस सतचित आनन्द सरूपही बतायो है ॥ २ ॥

दोहा ॥

बार बार परणाम गुर चरनो में सिर नाय।
हे कृपाल रक्षिक सदा छिन छिन करत सहाय ॥

हरि गुर सन्तन भेद कछु जीमे अखण्ड अकास।
सन्त वेद दो साखि है रचिवत स्वयं प्रकास॥
श्री गुर दीन दयाल जी विन्द्रावन सुख धाम।
रघुनाथ मंगता द्वार पर पूरन कीजै काम॥
सर्व बाँछा रहित तुम पर हित वेद उचार।
हमसे जीव उधारने लियो जगत अवतार॥
हम मति मन्द अज्ञान हैं सुन्यो सार असार।
कृपा आपकी पायके समुझि परा संसार॥
दीन दयाल दया निधि मृदुल सुभाव सनेह।
क्रिपा दृष्टि चित साँति है बचन फूल झरमेह॥
साति वेद जो बार्तिक भाग पांच निज सार।
जिसमें चौथे भाग को छंदा वंद बिचार॥

सवैया॥

दीन दयाल दया कर हेरहि दोष दलै छिन एक न लागै
पारस लोहक भेद न देखत कंचन होत सरूप सभागै॥
जोसरिता मिलि जातिहि गंगहि नामसरूप सबै पुनित्य गै
दास कहै रघुनाथदया कर दीनदयाल दयाबरु मागै॥ १॥

सोरठा॥

गुरपदरजनिज मूल मर्म भूल सब मेटिया।
तजेहंस अस्थूल गुर घट भेद लखाइया॥

दोहा॥

मोमति रंक दीलदिरी तुम गुण रतन अमोल।
अनभव दृष्टी गुर क्रिपा समुझ परै तब तोल॥

छंद॥

बार बार प्रनाम गुरके चरन मैं सिर धरि करूं। कीजै गिरा अति बिमल पावन राम सतगुर उच्चरूं॥ मैं दीनतुम समरथ दाता भक्ति दान जो दीजिये। रघुनाथ तुमरो दास किंकर जानि कर गहि लीजिये॥ १॥

छंदचभंगी ॥

सतगुरश्री रामा मन बिश्रामा सब सुख धामा भय हारी। गुर दीन दयाला करत निहाला जनप्रति पाला सुखकारी ॥ विन्द्राबन स्वामी चरनन बामी अंतर जामी टेर सुनौ गुरसरन तुम्हारौ दीनपुकारौ वेगसंहारौ भरम हनौ ॥ १ ॥

गुर दीन दयाला अति कृपाला सब सुख आला निर बानो। भक्तन हितकारी नरतन धारी दुष्ट संघारी सुख दानी ॥ गुर ज्ञान प्रकासी भ्रम तम नासी घट घट बासी अपर परे। गुर सरन बिचारी प्रीति सम्हारी गुरू कृपारी सरन परे ॥ २ ॥

मंगल ॥

पाप पुन्य के फंद हैं बन्धन भवमाही हो। सतगुर राम दया करो गहिलीजै बांही हो ॥ श्री विन्द्राबन चरन की आसा चित धारी हो। आवा गमन निवारि के कीजै मोहि पारी हो ॥ पाप पुन्य अज्ञान में मनभ्रम भुलाई हो। बिषय नीर मन मीन है आसा लपटाई हो ॥ दान भक्ति को दीजिये गुर दीन दयाल हो। पल छिन सुर तिन बीसरै नट करत ख्याला हो ॥ सदा सरबदा संग रहौ नहीं चरन बिसारी हो। आसा सर्व सनय टिकै हैता भ्रम जारी हो ॥ अरजी सुनि कृपा करो गुर लेउ उबारी हो। मोको औरन ठौर है एक आस तुम्हारी हो ॥ ६ ॥ भूलि गयो निज देश को जम जाल पसारी हो ॥ सतगुर राम कृपा बिना नहिं होवे पारी हो ॥ ८ ॥ श्री विन्द्राबन चरन की मन आस लगाई हो ॥ गुरसरणदास रघुनाथ ने बिनती कहि गाई हो ॥ ८ ॥

दोहा ॥

सतगुर राम मनायके करूं ग्रन्थ बिस्तार।
कृपा करो सब सन्तजन बालकबिन्य बिचार ॥

सोरटा ॥

बर्तमान के माहि प्रीय लगत वेदांत अति ।
लहे ममांक्षी ज्ञान कर अभ्यासजु निस प्रित ॥

दोहा ॥

दरपन करके मांहि है दरपन माही आप ।
बिन्द्राबन बिहार में पूरन रहिया ब्याप ॥

कबित्त घनाक्षरी ॥

बोधा इस काल माही ज्ञान होत सुख दाई सबन को प्यारो ज्ञान वेदांत लखायो है । साधन को कहै चार गुर सुख चित धार पहलो है विवेक जो बैराग्य दूजो गायोहै ॥ सम्पति जो खट मानि मोक्षिता ये चारि जानि जोई अधिकारी भयेा साधन समायेा है । कहै रघुनाथ दास सत गुर राम अस सतगुर अज्ञा पाय गाय के सुनायेा है ॥ १ ॥

कबित्त ॥

नित्य वा अनित्य की सुभ्रसे विवेक जानि रागन स रहत जो बैरागही सुनायेा है । सम्पति जो खट मानि मन सम जानि इन्द्रीय दमन करि दम सोई गायेा है ॥ होय उपराम जग उत्पत्ति है जानेा तव सीत उष्ण दुन्दस है ततिक्षा बतायेा है । सर्धा गुरू बेद माहि समाधान चित ठाहि साधन सम्पन्न चारि ज्ञान लाभ पायेा है ॥ २ ॥

सवैया ॥

साधन चारिजु बेद कहै गुर राम कृपा अधिकारि सुजानै ।
सेा निज रूप अनूप लखै जग भेद अभे दसु दृति समानै ॥
राम गुरू बिन्द्राबन धामसु जापु करै भवके भय मानै ।
दास कहै रघुनाथ दयाकर ज्ञानसुभान प्रकास अमानै ॥ ३ ॥

कबित्त प्रमानी ॥

श्रवन मनन निध्यासत ज्ञान जु तत्वमसि पद अरथहि सोधें
मोक्ष परापति ज्ञान प्रकाश गुर कृपा मन को नित वेाधें ॥

श्रवन आदि जो साधन चारि कहै अंत रंग हृदय बिचमेदें।
कर्मख बैहरंग कहै सब मोक्ष लहै अंत रंग प्रवोधें ॥ ४ ॥

कवित्त ॥

साधन जो बहि रंग साधारन मुख्य रहै अंत रंग सो ज्ञानै।
कर्म करै निष्काम नइच्छित सुद्धी लहै मन बेद प्रमानै।
बहि रंग साधारण गुप्त सोई अंतर काल मिलै फल जानै ॥
कर्मन को फल हालन होत है बीज जमै प्रत्छ बखानै ॥ ५ ॥

कवित्त ॥

दो प्रकारको ज्ञान कह्यो अपरोक्ष परोक्ष सुभेद बतायो।
परोक्ष ज्ञान कै ब्रह्म कहू अपरोक्ष सरूपसो आप लखायो ॥
सीस की टोपी पांइ परी भइ दृष्टि अगोचर भेद न पायो।
भेद मिल्यो जब चेत भयो यही ज्ञान परोक्षसो बेद लखायो ॥
लक्षि भई जब रूप लख्यो तब दृष्टि भई कछु खोयो न पायो
सतगुररांम कृपा रघुनाथ परोक्ष रहा सो प्रतक्ष दिखायो ॥ ६

कवित्त ॥

बहुधा अब लोग कहैं इस काल नहीं अधिकारी के ज्ञान भयो है। बिना अधिकार वेदांत श्रवन कर बाचक ज्ञान सो धार लयो है ॥ कोइ मानुष ऐसेही कहत रहा अवधूत तहा एक आय गयो है। उस मानुष ने प्रनाम करी उनको निज नाम सो पूछि लयो है ॥ ७ ॥

कवित्त ॥

अवधूत कहा इस देह को नामसो चन्द्र मणी यह भेद दयो है। आपन देह का नाम कहा निज आपन नाम सो क्यों न कह्यो है ॥ कहै अवधूत यह देह को नामसो चेतन्य का नही नाम भयो है। सतगुररांम कृपा रघुनाथ सो ब्रह्म सदाई अकर्त्ता रह्यो है ॥ १ ॥ पूछत फेरि कि आप है। कौन दियो पुनि उत्तर ब्रह्म बतायो। आप है ब्रह्मतो और कहा सब देह के भेदसो जक्त कहायो ॥ अवधूत कहा इस

मान पदारथ है जग रूपसो मिथ्या लखायेा । अरु है सब ब्रह्म यही बिधि के मुख राम कृपा रघुनाथ सुनायेा ॥ २ ॥ है सब ब्रह्म तो भेद कहा जगनीचऊ ऊच को भेद नकीजै। भोजन हेत फिरौ घर मांगत रोटी नहीं उपला भखलीजै ॥ कहत बुरा कोइ मारत देह को क्रोध करो मति दोषधरीजै। ज्ञान प्रकाश भयेा जनकादिक लोभन मोह अहं इति छीजै ॥ ३ ॥ ब्यास भये जनकादि सुनै जिन ज्ञान की शक्ति सेा ऐसी भई है । पृथ्वी को लौटि कै फेरि रचै अगिनी बिच पैरन सेा कलई है ॥ ज्ञानी सुनै जड़भरत भये जिनके कांधे पर भार दई है । ज्ञानी तौ अंतरयामी सदा तुम को अवज्ञाता कैसो भई है ॥ ४ ॥ जब ज्ञान भयेा जग को क्या भाषत आपको ज्ञानन मालूम कैसो । आप है ब्रह्म सेा कौन प्रकार के कहिये बिवेक बैराग है जैसो ॥ षटसम्पति बिस भांति तुमारी सुमानत ब्रह्म जगत पुनि ऐसो । सतगुर राम कृपा रघुनाथ सेा सूर प्रकाशनहीं तम भैसो ॥ ५ ॥ हमतो हरि-दास दुखी भी सुखी कहिहैं असमर्थ सेा जीव कहावैं। रक्षा मांगत है नितराम कि माया कही कछु अंतन पावैं ॥ देव बड़े ब्रह्मादिक ये सब भूलि रहै हरि के गुनगावैं । जीव की कौन बिसाति कहा गुरराम कृपा रघुनाथ सुनावैं । ६ ॥ गीता भगवान भागवति कही उसके अनुसार सेा राह चले है । इच्छा स्वरगादि सुखन की राखत साध सुनीस्वर मेल मिलेहै ॥ सेवा हरि की नित प्रति करै सुभ साधन भक्ति के संग मिलेहै । ऐसे मनुष्य कही जबही अवधूत सेा उत्तर देत भयेहै ॥ ७ ॥ अवधूत कहै ब्रह्म ईश्वर जीव को देह सरूप सेा भेद लखीजै । उत्तर प्रश्न कोंतोहि मिलै सब संसै सेाच हृदे तम छीजै ॥ समुझ न बूझ करै बकवाद सेा छोड़ दे राह बिलंब न कीजै । सतगुर राम कृपा रघुनाथ सेा देत रहै दृष्टांत सुनीजै ॥ ८ ॥ मेढक कूप मैं बास तहां एक

हंस कहं सिंधसै चलिआयौ। मेंढक पूछत कौनतूहै कहं दे सतुमार सेा भेद बतायौ॥ मम नाम है हंस रहै सिंध में सेाई मेढक को निज भेद लखायौ। मेढक पूछत सिंव कि तातव हंस कहा बड़थाह अथायौ॥ ९॥ मेढक एक छलांग लई इतना बड़ सिंध सेा हंस चुपायौ॥ हंस कहा बड़ सिंघ बड़ा तव मेंड़क दूसर मार छलागी। कहि इतना बड़ सिंघ तुम्हार सेा हंस कहा बड़ थाह न लागी॥ मेंड़क फेर रिसाई कहै लई तीन कुलाच बड़ा कहा जागी। मेंड़क झूठ कहा जबही तव हंस चुपाइ रहै सठ त्यागी॥ १०॥ क्या मेंड़क खूब कहा हम को सेाई आप बनै निज हंस समानै। अब ईस्वर जीव का भेद कहो अरु देह भई सेा कहो परमानै॥ अब धूत कहा यही सुद्ध चेतन्य को रूप अरूप सेा ब्रह्म बखानै। माया सहत जो ईश कहा वहीजोव अविद्या के बीच बधानै॥ ११॥ मिथ्या जड़ देह असत्य कही दीखत जिमि स्वप्न समान बिलासै। चेतन सुध आनद सरूप है पूरन व्यापक ब्याप प्रकासै। ब्यापक ब्रह्म को अंग अविद्या मैं नाम वेाही कूटस्त प्रकासै। सतगुर राम कृपा रघुनाथ सेा ईश्वर जीव अनादि सुबासै॥ १२॥ ब्रह्म को अंग जो भास अविद्या मैं जीव सेाइ कूटस्त कहायौ। कारज देह प्रारब्ध सुनाम है सुन सुखापति बीच रहायौ॥ बुधि भई लै जीव प्रकासित भलि रह्यो निज रूप न पायौ। जागि परयो कहिसेा ये भलेहम जीव वेाही कूटस्त लखायौ १३ सुध सतेागुन ब्रह्म को भास जो माया को धेस सेा ईस कहा-यो। लोक रचै छिन माहि सबै पल एक मैं सक्ति सेा देत मिटायेा। रज तामस सात्वक ब्रह्म को भास भयेा सेाई जीव अविद्या बधायेा। जीव प्रतंच सुतंच नहीं रघुनाथ कृपा गुर राम की गायेा॥ १४॥

दोहा ॥

माया में आभास जो ईश्वर चेतन मान ।
जीव अबिद्या भास है देह कूटस्थ प्रमान ॥

चौपाई ॥

कूटस्थ भास बुधि बिच आया । प्रागि सुषोपति जीव कहाया ॥
बुद्धि सुषोपति माहिं अभावै । ब्रह्म भास कूटस्थ रहावै ॥
ईश्वर सर्ब समर्थी कर्ता । माया उसकी आज्ञा धरता ॥
जीव भोगता बास अविद्या । पाप पुन्य आभासे निंद्या ॥
पाप पुन्य के फल को भोगै । बन्धन जीव जगत भव रोगै ॥
ईश्वर मैं जो अंस अभासा । फल देता दोनौ परकासा ॥
चेतन्य अंस एकही जानो । ईश्वर नित्य मुक्ति कर मानो ॥
सुद्ध सतोगुन मै आभासै । चेतन्य माया ईस प्रकासै ॥
राजस तामस सत परधना । भास जीव परछिन्न सुजाना ॥
ईश्वर ब्यापक कहत उसीसै । है सारै नहीं भेद किसीसै ॥
काल दिसा ब्यापक कहलावै । अंत हेइ सर्बज्ञ न पावै ॥
बास्तव ब्यापक चेतन्य एकी । उसकी पूजा करै बिबेकी ॥

दोहा ॥

सर्ब ठौर ब्यापक सदा जल थल तृन भर पूर ।
पूजन कर इस देव का निसदिन हाल हजूर ॥
निरा कार आकार जो पूजा फल पर छिन्न ।
गुरु बिन्द्राबन बोध बिन पूरन लख्यो न भिन्न ॥
चेतन सर्ब अषंड है यह निश्चय परवान ।
भेद दृष्टि है देह की सतगुर मै नहीं जान ॥
अग्नि माहि जैसे नहीं सीतलता को लेस ।
बिन्द्राबन तस ब्रह्म मैं नांही द्वैत कलेस ॥

चौपाई ॥

मैं आपनपौ ब्रह्म बताया । जीव ईस नहीं देही गाया ॥
दुख सुख खाना पीना मारन । नाम जाति यह देही धारन ॥

है व्योहार धर्म माया के। इष्यकइष्यकनहीं मिटनैताके ॥
ज्ञानी धर्म न मेटत भई। मिथ्या जानै भोग कराई ॥
ज्ञानी माया सत्य न जानै। देह भोग प्रारब्धी मानै ॥
सुपच संग क्या उपजाखाये। इसने ज्ञान न बेद बताये ॥
देह हेत भोजन जो भाषा। जग व्योहार सनातन राषा ॥
अंगीकार करै सो भाई। खपच संग नहीं खाइ भलाई ॥
सुपच संग जो मुक्ती पावै। खपच बन्ध बड़ भोजन खावै ॥
उनकी मुक्ति न होवै भाई। उपजा दीमक निस दिन खाई ॥
दीमकही को ज्ञानी जानौ। साधन बल कछु नेक न मानौ ॥
गारी मार खाय चुप रहै। पसू मार गारी नित सहै ॥

दोहा ॥

मूढ जीव अज्ञान है सहे काल की मार।
मद्य अमद्य जो खातहै बिनाबिवेक बिचार ॥

चौपाई ॥

सर्व ब्रह्म जो हमने भाषा। उपजा खपच ब्रह्मही आषा ॥
ब्रह्म बिना कोइ दूजा नाहीं। है अधिकार ब्रह्मके माहीं ॥
कहूं एक इष्टांत सुनाई। मन निश्चय कर सुनिये भाई ॥
ज्ञानी एक वेदांत पढ़ाया। अपने चेले को समझाया ॥
जीव ब्रह्म की एकता आई। चेतन ब्रह्म एक दरसाई ॥
चेला कहै ब्रह्म मैं स्वामी। चेतन कहा एक गुरु नामी ॥
पीछे गुरुने पानी मांगा। चेला ब्रह्म कहनत लागा ॥
पानी कैसे लाऊं नाथा। मैंहूं कौन गुरू कहि बाता ॥
पानी खाना पीना कहिये। गुरु चेला क्या धर्म बतइये ॥
चेला चुप जुबाब न आया। सर्व रूप चेतन कहि गाया ॥

कवित्त ॥

लक्षि सरूप में भेद नहीं कछु देह के भावसे धर्म बखान्यो
चेला गुरू कर तत्व सबै पुनि देहके भासमें सत्य सो मान्यो ॥
सेवक सेव्य के भाव बिना भव पार न पावत जीव भुलान्यो।
देह धरेन्स कर्मकरे अरुज्ञान सरूपमें भेद न जान्यो ॥ १ ॥

चौपाई ॥

अब सक्ती सामर्थि सुनाऊं। सक्ति पदारथ ईश्वरठाऊं॥
मैं अपने को ईश न भाषा। सक्ति परोजन रंचन राषा॥

दोहा ॥

ईस्वर सक्ति समर्थ है माया कृत बिवहार।
पारन पावे है ब्रषा सुप्न सिष्ट बिसतार॥

चौपाई ॥

माया मिथ्या पार न पावे। मृगतृष्णाजल भरमभुलावे॥
आदि अंत रचना के माहीं। मायाकृतबिचारकुछनाहीं॥
कछे असक्ति बान जो ज्ञानी। सुनियेभेद सहित सहदानी॥
ज्ञानी कहिये दो पर कारा। एकजुजांनजुगतिदोन्यारा॥
दो प्रकार जोगी जू जाना। कोई अधिकप्रारब्ध बषाना॥
कोई न्यून प्रारब्धै राषै। जोगीजुगतिईस कहिभाषै॥
मैं नहिं कहा ईश अवतारा। ब्य सादिक से भेद न्यारा॥
जनकादिक जु जानै जानो। ईस्वर्य बान भये सो मानो॥
मम प्रारब्ध देह को ऐसो। नहि ईस्वर्य भोग फल जैसो॥
ज्ञान माहिंकछु अंतर नाहीं। बास्तव रूप अभेद सदाहीं॥
अस प्रारब्ध जनक क्यों पाई। भेद कछू सुनिये मनलाई॥
जाके भई भावना जैसी। सेा उपासना ठानत तैसी॥

दोहा ॥

सह कामी फल पावते परारब्ध को भोग।
निषकामी की भक्ति जो ज्ञानमोक्षसंयोग॥
ठानो करी उपासना जनक लह्यो ईस्वर्य।
निषकामी कर ज्ञान बल मो असत्य सुबर्य॥

चौपाई ॥

ज्ञानी जगत अभाव सु जानै। ऐस्वर्य को मिथ्या करमाने॥
ऐस्वर्य अधिक होइ जो भाई। जीवन मुक्ति सुख नहि पाई॥
थोड़े ऐस्वर्य मैं सुख भारी। ज्ञानी रहे उपाधि निवारी॥

तुम जो कहा बैरागन ऐसा । विधिवेदांत कहतपुनितैसा ॥
हम तुमसै पूछत हैं भाई । हमने क्या धन सम्पति चाई ॥
जिसे तुम बैरागन जाना । यह तुमने कैसे कर माना ॥
हम तुममे कछु मांगा भई । तुमने कवन परीक्षा पाई ॥
धनसुखइच्छ हमनहिंकीन्ह । ग्रहन सत्य तुम केते चीन्हा ॥
जनक आदि जो ज्ञानी भाई । राज भोग प्रारब्धी पाई ॥
ज्ञानीकी कछु इनि जानौ । दांततोड़िभय सर्प न मानौ ॥
दो प्रकार कह्यो बैरागा । दोष दृष्टि मिथ्या जगत्यागा ॥
दोष दृष्टियह कहियत भाई । दुखसुख सहे न त्यागकराई ॥

दोहा ॥

यह तड़ंग बैराग है कछू न किया बिचार ।
भोग प्राति होत ही बधे लोभ की लार ॥

चौपाई ॥

दुख को पाइ फकोरी लीन्हा । सुखके हेतकछोड़ि घरदीन्हा ॥
इहांमहंत कहा बन जागे । हाथी प्रनि सान नित आगे ॥
प्रारब्ध माया ने घेरे । ममता मोह किये पुनि चेरे ॥
ज्ञानवान मिथ्या करि जाने । ब्रह्मलोक सुख निश्चर माने ॥
देह प्रारब्ध भोग सुख आवै । निरइच्छित सो भोग करावै ॥
प्रारब्धि आधीन शरीरा । निश्चल सदा रहै गंभीरा ॥
ज्ञानी कछू संक नहिं माने । दुख सुख सहै अकर्त्ता जाने ॥
रूखा सूखा टुकड़ा खावै । धूप छाँह सहिचितनडुलावै ॥
मिथ्या समुझ भयो बैरागा । स्वरगादिकसुखतृनसमत्यागा ॥
यही तीव्र बैराग कहावै । निरइच्छित सबकाल रहावै ॥
तुमजो कहाषटसम्पति नाही । कहा ममोछी भोग कराही ॥
रूखा सूखा टुकरा खाते । पृथ्वी मांही सैन कराते ॥

दोहा ॥

भूख प्यास भी सहत हैं सीत उष्ण भी खाय ।
परमारथ के कारने स्वारथ देत न पाय ॥

चौपाई ॥

जो तुमको यह निश्चै भाई। धूप छांह सहि मोक्ष कराई॥
सब दिनधूप मजूरजो खावै। रोगदोष कछु निकट नआवै॥
ज्ञानी उनको जानो भाई। धूप छांह सहते नित आई॥
इसकायही भेदपहि चानो। धूप छांह मिथ्या कर मानो॥
परमारथ मैं रुकै न भाई। सीत उष्ण सुख दुख सम ताई॥
दो मनुष्य छाया मैं बैठै। गरमी ऋतु खस टट्टी लेटै॥
आकर कहा एक नै भाई। साधू एक अपूरब आई॥
एक मनुष्य सुनत हरषाना। दरशन को निश्चय कर जाना॥
दूजा कहै धूप है भाई। हमसे तौ कहुं चला न जाई॥
वह मनुष्य दरशन को गयो। धूप छांह दो सम कर लयो॥
काम अवश्य होइ जो भाई। धूप छांह समझै सम ताई॥
तुम अपना वृतांत बखाना। सोहै सत्य उचित प्रवाना॥
दास भाव सुभ कर्म बखानै। कथाश्रवण मिरनअरुध्यानै॥
गुरसे बास वही को मूला। गुर सुख पावै भेद अतूला॥

दोहा ॥

पहले साधन है सही कर्म उपासन जान।
ज्ञान उदै परनाम में भेदा भेद बखान॥

चौपाई ॥

त्रयकांडी यह बेद बखानै। कर्म उपासन फेर ज्ञानै॥
तुम देखोवह हृदय बिचारी। चौका रोटी हेत सम्हारी॥
जबतक भई रसोई नाहीं। चौका को अधिकार रहाहीं॥
रोटी खाय लई जब भाई। चौकाको अधिकार उठाई॥
चौके का कुछ ध्यान न होई। कोई जाउ छुओ पुनि कोई॥
जब तक ज्ञान होइ नहिंभाई। तब तक साधन सर्व कराई॥
बन्धन नहीं ज्ञान के पाछे। बिनाज्ञानदुखसुखबिचनाचे॥
श्री भगवान भागवत माही। ऊधव से यह कहा बुझाई॥
सर्व भूत में भावन होवे। तब तकमनबच कायाधोवे॥

करै भक्ति जब ताईं मेरी । ज्ञान प्रकासन साधन फेरी ॥
हम तुम कौ नहीं झुठ बतावा । साधनकौ फल ज्ञान लखावा ॥
तुम चाहै सो भाषो भाई । तुम रो नहीं अपराध कहाई ॥

दोहा ॥

भूखे को हीरा मिल्यो कदर नवा की पाय ॥
दाँनै मिलते अंन के ता सै भूख बुझाय ॥

हीराकीकछु कदर न जानो । फैंकि दिया मूरख अज्ञानी ॥
हीरा ज्ञान अमोलक भाई । बिना जौहरी कदर न पाई ॥
बिना कदरकछु हाथ न आवै । मूरख पचिपचि जन्म गमावै ॥
एक संसै मेरे उर माहीं । बाचक भी होते या नाहीं ॥
परम हंस बोले तब भाई । कर्मकांडबिच पाखण्डआई ॥
पशु मनुष्य जाति मैं भाई । पक्षी में कच्चै कह खाई ॥
फुल वाड़ी बिच घास रहाई । कांटे भी होते है भाई ॥
तबयह कहासत्ति मइराजा । लक्ष ज्ञान कौ कहियेसाजा ॥
एक रूप करनी कहि गावै । तासे लक्षि समुझ न आवै ॥
बाचक ज्ञानी अधिक सुनावै । लक्ष ज्ञानकी समुझ न पावै ॥
अब क्रपा करदेउ लखाई । परम हंस बोले सुन भाई ॥
पहले कर्म उपासन कीन्हा । साधनचारिमाहि चितदीन्ह ॥

दोहा ॥

श्रवन मनन निदध्यासने तत्पदत्वं पद सोध ।
ब्रह्मा कार सो दृष्टि है लखि ज्ञानी बोध ॥

छन्द ॥

वेदांत श्रवन मनन कर निध्यासनै जो कर रहैं ।
अर्थतत्पत्वंग पद के सोधि कर निश्चल भये ॥
त्रिती जो ब्रह्मा कार होकर लखि ज्ञानी सो कहै ।
कीनी न कर्म उपासना साधन नश्वपन भौ बहै ॥

चौपाई ॥

गुरू द्वार साधन नहि साधा । बाचकज्ञानबचन गहिबाधा ॥

पहले कर्म उपास न कीन्हा । बचनज्ञानके चितधरलीन्हा ॥
बाचक ज्ञानी कर्म त्यागा । इधर उधर नहि पाई जागा ॥
कर्म उपासना करिकै भाई । गये कुकर्म भई सम ताई ॥
मन इन्द्री न कुबसमै कीन्हा । गुर द्वारे साधन सब लीन्हा ॥
गुरुकी कृपा लच्छि जब पाई । ज्ञान भान हृदय प्रघटाई ॥
लच्छ ज्ञान प्रगट्यो जब भाई । तम अग्यान सेा गयेानसाई ॥
समता भई ईर्षा नासी । स्वयं रूप घट घट प्रकासी ॥
सेाक मेाह मत्सर भ्रम नासै । ज्ञानी रहै अनंद उलासै ॥
सुभ अरु असुभ कर्म है दोई । निर इच्छित सुभकरता सेाई ॥
फलकी इच्छा रही न काई । जीवेा को प्रवृत्ति कराई ॥
बाचक ज्ञानी कर्म करावै । करै कुकर्म सुकर्म बतावै ॥

दोहा ॥

बाचक ज्ञानी कर्म मे रहे कुकर्मैय चीन्ह ।
गुन छेाडे अवगुन गहे काग दृष्टि परवीन्ह ॥

चौपाई ॥

चहिये प्रथम साध गुर सेवा । सतगुर सैनहि राखै भेवा ॥
तन धन मन गुर हेत लगावै । गुर बचनन मै सरधा लावै ॥
श्रवन मननिध्यासन करही । बिधिवेदांतमाहिचितधरही ॥
पहले गुर मुखता चितधारै । गुर आज्ञा चितसै नहिटारै ॥
जग ब्यौहार गौन कर राखै । गुरमुख्यश्रवननितचितआखै ॥
अधिकारी जब हेावै भाई । तनमन धन गुर हेत लगाई ॥
अनभौ दृष्ट गुरू जब देवै । सार असार लखै निज भेवै ॥

दोहा ॥

ज्ञान भान घट मै खिल्यो तम अग्यान नसाय ।
सर्ब पदारथ लखि परे दीन्हा असुभ सुभाय ॥
ज्ञांनी रहे पहाड़ सम खट पट व्यापै नाहि ।
बिन्द्राबन वह साँति कर रहे प्रस्नं घट माहि ॥

चौपाई ॥

जाकी रुचि कुकर्म में नाहीं । कभी कुकर्म न करता भाई ॥
बचन ज्ञान के कहत सुनाई । लच्छि ज्ञान नहिं पाया भाई ॥
कसरि मन न निध्यासनकेरी । मनन निध्यासन लच्छिलखेरी ॥
जो यहकहत लोग बकतेरे । ज्ञानी कर्म न करते हेंरे ॥
ज्ञान कौनबिधि जानियेपूरा । बिन उपासना होइ न सूरा ॥
जन्म जन्म में कर्म कराई । जन्म अनेक न जीव धराई ॥
जन्म अनेकन को फल भाई । सिद्धि होइ ज्ञानै प्रघटाई ॥
गीता में भगवान बखाना । सिधी कोटिन जन्म प्रधाना ॥
कर्म उपासना पपिलै कीन्हा । उसकी यही परिच्छा चीन्हा ॥
परमारथ की प्रीति रहावे । करे सुकर्म कुकर्म डरावे ॥
साध गुरू की सेवा करै । दुष सुख सहै भजन चितधरै ॥
भजन गीत मंगल उतसाहा । चित उदारसंतन संगचाहा ॥
पहिले कर्म किये नहिंभाई । उसकी प्रकृत बिप्र जै गाई ॥
रहै सदा विपरीत इसीसे । ज्ञान भक्ति नहिं मेल किसीसे ॥

दोहा ॥

महा राज तुम नै कहा जगमिथ्या ब्योहार ।
बिना भया भासै सदा यह सन्देह अपार ॥

सवैया ॥

आप कहा जगको कस झूठ बिनाई भये नित भासि रह्यो है ।
बात नहीं यहआवति ध्यानमें है परत्यच्छ सुदेखि कह्यो है ॥
भांतिहिं भांति अनेकन ये सब राज भये कछुराज गयेा है ।
साहफकीर भयेअबतार महाबल बानसुराज लयेा है ॥ १ ॥
देखत एक दुखी परिवार सुखी धनधांन्य प्रधान नयौ है ।
ज्ञान गुरू उपदेस करे चरचा करते अरु आप कह्यौ है ॥
पूजन ध्यान करें सबही विधि वेद पुराण जु भेद दयौ है ।
रामगुरू रघुनाथ कृपाबिन बंधन मूल न दूरि भयौ है ॥ २ ॥
जो तुमने यह बात कही सब साचन झूठछ नेकछ मानी ।

देखि विचार करौ मनमें जग है खपना कछु भेद न जानी।
देखत देखत आपु रचै मन जागि परे तब नाहिं दिखानी।
एककछू दृष्टांत सुनो अब साहभये खपना सुख सानी ॥ ३ ॥
साह बड़े लड़िके बहु पाइन ब्याह बहू बड़ धूम सुआनी।
जातिहिआदिकी पांतिकरीसब काजकरे बड़मानगुमानी ॥
पूजन साख वेद पढ़े कछु रोग भयौ नहिं होत अरामी।
रामगुरू रघुनाथ कृपाविन जागतही नहिभूल बखानी ॥ ४ ॥
रोग अराम भयो जबही भई देह निरोग रह्यो सुखसानी।
फेरि विराम भयौ लड़िका बहु वैद दवाकर रोग बढ़ानी ॥
छूटि गयौ तन साह सुरोवत पीटत मूड़ महा दुखमानी।
भाई बंधुसबै समझावत पण्डित साधु कहत वखानी ॥ ५ ॥
सांति न होति दुखी बहु भांति सुसाधकहा जगसुप्न समानी।
साह कहैतुमरै कछु होत तौ दुखमें रोवत सुप्न न जानी ॥
देउ जगाय तुमैं कृपाकर साधु अवाज दई सुजगानी।
सुपनपदारथदूर भयौदुख आपहि आप मिटीसुगलानी ॥ ६ ॥

कवित्त ॥

जागि पड़े अबदेखत साह सुमाल कुटुम्ब न देत दिखाई।
साध जगाइ दये हमको सु साधन दीखत सोचत माहीं ॥
धन परिवार कुटुम्ब कहां बहु रोइ रहीं जहां लोग लुगाई।
जैसे को तैसोइ रहेव मनकी रचनामन माहि समाई ॥ १ ॥
साख वेद पुराण गुरू अरु ज्ञातान ज्ञान न गेय रहाई।
देखत हे सब साचहि साच सु जागि परे कछु हाथ न आई ॥
जागति के सम खप्न पदारथ साख वेद गुरू सुख दाई।
सतगुर रामकृपारघुनाथसो जागिपड़े सुपनानहिंखाई ॥ २ ॥
खप्न पदारथ और कहै कछु जक्त कहै कछु और वखानी।
खप्न में देखि कही बस्तू सुन ध्यान रहै सोइ खप्न समानी ॥
अब धूत कहैं यह झूठ सबै जिस बात को ध्यान सो भोगन
जानी। बहु बस्तु रहैं अपने अस्थान पै यह अपने अस्थान

बखानी ॥ के बलि ध्यान की याही करै पुनि स्वप्न मैं यह नहीं बातहि मानी। वस्तु कुभोगत जाग्रति के सम दृष्टा दृष्ट सेा दृश्य समानी ॥ सप्रम स्त्री भोग त्वचा बिनध्यान सै भोग न होत दिखानी। घोड़की बात सुनाइ कहूं रघुनाथ कृपा गुर राम की जानी ॥ तुम आपही सेाचबिचार करौ। घोडा तुम्हरे सुत बेलि न माही ॥ सुप्न मैं घोडे कौ ध्यानकरयौ घोडे पै चढै सुकहै। कहि ठाही। सुप्न मैं चितनै और रचौ सेाइ जाग्रति मै घोड़ा घर माही। स्वप्न में बीच बजार सवा रहेा सैल करी पुनि घास खिलाई ॥ स्वप्नसु देखि बिचार करौ कछु जाग्रत ध्यान न भोग कराई। वस्तु नई जु रचै मनही सब जाग्रत स्वप्न लषौ सम ताई ॥ चितही चेतन काज करै सब जाति कुजाति रचै जग आई। सतगुर राम कृपा रघुनाथ सेा वारन पार रहै सब ठाई ॥ तुमने पूछा वृतांत कहा तप भोग से राज सुकर्म कराई। राज को भोग सेा नर्कहि भोगत ज्ञान भयेा सब स्वप्न दिखाई ॥ ऋषिमुनिआदि के भेद सेा पूछत आयू जो वरस हजारो की पाई। कौन से काम के हेतु भयेा तन काज कहा नहिं भोग कराई ॥ अब जु कहेा नहि पावत आयू कौ नामकी राह सदा सुख दाई। कोटिन जन्ममै मुक्ति नहीं कलिमें गुरराम ने सहज लखाई ॥ सेाहंग शब्द सुतन्तर स्वास मै नाम जपेा मन घेरि घुमाई। सतगुर राम कृपा रघुनाथ सेा श्री विन्द्राबन संत लखाई ॥ सर्प को भ्रम भयेा रसरी बिच देखत आप पहाड़कु ध्याये। लाऊ सिला इस सर्प को मारी ये सर्पन दोखत भ्रम नसाये ॥ ज्ञान गुरू उपदेश कीयेा जब जागत स्वप्न सेा भ्रम न पाये ॥ सतगुर राम कृपा रघुनाथ सेा राम गुरू बिन्द्राबन गाये ॥ कहत मनुष्य जोआपकहा सच सचही सच परोजन भाखे। जक्त समान कहेा सुपना एक मिथ्या रूप सुसत्य न आखे ॥ सुप्न मै सत्य सुसत्यहि भाषत त्यों अज्ञान मै जागृति साखे ॥

सुप्त से जागृत है तबही कछु सुप्त किसृष्टि न देखिये लाखे ॥
होति असंभव चिन्ह न पावत ऐसेही जागृत ज्ञानप्रकासो ॥
यह सुपना निश्चय जगभासत ज्ञान उदै परभ्रम सुनासै ।
सतगुर राम कृपा रघुनाथ सो ज्ञान गुरू घट कीन सुवासै ॥
रामगुरू बिन्द्राबन धाम सो एकहि रूप न दूसर आसै ॥
जिसको ज्ञान भयो पर पूरन जगत असत्य सुप्नसम भासे ।
एक बड़ा संदेह इसीमें सुप्न की सृष्टि को मूल बिनासे ॥
ज्ञान भये परजक्त रहै पुनि देह रहै व्यौहार प्रकासे ।
अधूत कहा दृष्टांत यथारथ तुम समझे सो ठीक आसे ॥
जो तुमने संदेह किया उसका उत्तर प्रारब्ध प्रकासे ।
प्रारब्धि कौती रजुछूटिगयेा पुनिवेग कुपाइ गिरेबलनासे ॥
ज्ञान भये परदेह रहै जग भासत है येा सत्य न बासे ।
सतगुर राम कृपा रघुनाथ सो जक्त अभाव है अंतपै नासे ॥
मुक्ति बिदेह कहै उसही को ज्ञान भये तन जक्त बिलाई ।
औरछ है दृष्टांत कुम्हार को दण्ड से चक्र फिराइ घुमाई ॥
दण्ड अलग किया जब चक्र से चक्र फिरे कुछ देर नभाई ।
ऐसेहि ज्ञानी को ज्ञान भये प्रभासत है जग देत दिखाई ॥
कर्मको दण्डज दूरि भयेा जिस कारन स्वर्गछ नर्क नचाई ।
देखि अंधेरे में सर्प रजू बिच भ्रम भयेा भय चोटछ खाई ॥
दीपक ले कर देखि लयेा रसरी निकसी गयेा सर्प न साई ।
चोट लगी सोइ भोग करे अवज्ञान भये प्रारब्ध रहाई ॥

दोहा ॥

खाना सोना बोलना ज्ञानी के सम जान ।
सबको जाने ब्रह्म मय दूजा भाव नमान ॥
ऐसा भी देखा सुना ज्ञानी जगत अभाव ।
यों ऐसा ज्ञानी भयो देह बर्ष बिच जाव ॥

चौपाई ॥

अरु ऐसा भी देखा भाई । ज्ञानी जक्त अभाव कराई ॥

जक्त अभाव होतही भाई । खानपियनतनसुधिबिसराई ॥
देह बर्ष छः महीने माही । प्रात होय ठहरेगी नाही ॥
सब ज्ञानी नहिं येक समाना । प्रारब्धि निज भेद बखाना ॥
प्रारब्धि आधीन शरीरा । ज्ञानी बास्तव रूप गंभीरा ॥
येक पुरुष स्वपने से जागा । स्वप्न बातका ख्यालसुत्यागा ॥
अरु दूसर स्वपने से जागा । स्वप्नपदारथ सुमिरनलागा ॥
दुख सुख कछू न करता भाई । सुमिरन स्वपना चितरहाई ॥
तीसर मनुष्य स्वप्न से जागा । स्वप्न बातका दुख सुखलागा ॥
पश्चा ताप करत बड़ तेरा । स्वप्न राज करि मानत मेरा ॥
क्योनहिं सत्य कह्या यह भाई । चुप रहा मन में पछिताई ॥
चौथा जागा स्वपनसै जानो । स्वपने को फल सत्य समानो ॥
राज किया स्वपने में भाई । अवछ दूजी कहत सुनाई ॥

दोहा ॥

जो कुछ देखा स्वपन में राज भोग जंगाल ।
लोगों से पूछत फिरै स्वपन सक्ति ततकाल ॥

चौपाई ॥

स्वपनराज मिथ्या नहिं जानै । साच मान सुखदुख लपटानै ॥
पंचम जगा स्वपन से भाई । सोच बिचार करत सो जाई ॥
जब जब स्वप्न दिखाई देवै । बुरा देखि डरता दुख लेवै ॥
मनमें सोच बिचार सुकरता । सोता नही भ्रम चितधरता ॥
छठा पुरुष जागा सुन भाई । प्रथम दशा सुमिरन हो आई ॥
मैं इस काछ ना यह मेरा । सोइ रहा अस्थान सु डेरा ॥
यह जो कुछ दीखत है भाई । सब स्वपना मिथ्या होजाई ॥
जागि चलौउठि देर न कीजै । सिर मारत झूठा क्या लीजै ॥
मनुष्य सातमा जागा भाई । यहीदसा नही मनदृचिताई ॥
कहत परंतु सैर कर लीजै । हानलाभ बिच मन नहिं दीजै ॥
तुम तौ जागे पीछै वोही । होगे और न दूजा कोई ॥
देषे सैर मना मनो माही । दसा आपनी बिसरत नाही ॥

दोहा ॥

दसा आपनी सुमर कर दुख सुख मानत नाहि ।
नहि हसना नहि रोवना सुपन सृष्टि जगमाहि ॥

चौपाइ ॥

कछुक देर तक सैर कराई । जागि उठे कछु कीजै भाई ॥
अपना काम करन तब लागा । फिरि सोवै आनन्द सुखपागा ॥
इसमै लाभ नहै कछु भाई । जागि उठे सब भांति लाई ॥
देखो पुरुष सात छू जागे । भेद अवस्था बना सु आगे ॥
ज्ञनी की सोइ दसा बिचारो । वास्तव येक अवस्था न्यारो ॥
महाराज जो आप सुनावा । हम यहभेद कहों नहिपावा ॥
तुमजो कहासक्ति ही होगी । मेरेही कछु भागअ जोगी ॥
मुझको ज्ञान नहीं जो होता । दयाआपका भ्रमसब खोता ॥
महाराज तुमने अस भाषा । भ्रमकरजगतभासनहिराषा ॥
भ्रम बस्तु सब कहौ लखाई । मेटो मनकी यह दुचिताई ॥
कह अवधूत सुनो मन लाई । भ्रम कहैं इससो सुनिभाई ॥
होइ कछू फिरऔरदिखावै । रस्सी में जो सर्प लखावै ॥

दोहा ॥

सीपी मे भासे रजत मृग तृष्णा मे नीर ।
भ्रम रूप येहे सही अज्ञ सहे नित पीर ॥

चौपाई ॥

बास्तव मै रस्सी है भाई । दोष दृष्टि से सर्प दिखाई ॥
सीपी माहि रजत भ्रम होई । रजत भ्रम सीपी है सोई ॥
मृग तृष्णा का रेत कहावै । नीर जानिकर भ्रम भुलावै ॥
ब्रह्म एक यही भांति रहाई । भ्रमात्मक यह जगत दिखाई ॥
ब्रह्मज्ञान जब हृदय प्रकासे । आत्म रूप जगत सब भासे ॥
जब तकजगत यथारथ दीसे । ब्रह्मज्ञान नहि बिखे बीसे ॥
बिद्या पढ़े ज्ञान नहि होई । सत गुरकृपा पाव कोइ कोई ॥
गुरमुख गुरकी आज्ञा धारै । लहै ज्ञान भव संकट टारै ॥

बिद्या कथनी भ्रमन नासे। बिन अभ्यास न ज्ञान प्रकासे ॥
ब्रह्म लाभ सेा पावत भाई। गुर सेवा मन खान धराई ॥
सान्ति वृत्ति जब मन मैं आवै। ब्रह्म भास निज रूप लखावै ॥
निरमलजलसम अंतस होई। आपन रूप लखे सब कोई ॥

दोहा ॥

बिद्या कथनी कूड़ है जो अभ्यास न होय।
बिन्द्राबन अभ्यास बिन ब्रह्म लाभ गयो खोय ॥
सांति वृत्ति जा पुरुष की ताको भासे आय।
जैसे निरमल जल विषय आपन रूप दिखाय ॥

सवैया ॥

दीन दयाल सदा गुरराम दया निधि दीनन के हित कारी।
जो भवसिंधु अपार भरा भय दायक लोग सबै नर नारी ॥
देखत मोहि लगे भय दारुन राम गुरू अब आस तुम्हारी।
राखिलियेा गजग्राहगृस्यो जबसेाइदसाअबहोतिहमारी १ ॥
द्रोपति चीर दुसासन खैचत दीन पुकारत चीर बढ़ारी।
और अनेकन तारि दिये गिनती नहिं सारद शेषसमारी ॥
दीन दुखी रघुनाथ पुकारत श्री बिन्द्राबन नाम अधारी।
जो अवतार भयेजुग अंतर सेा गुररामहि वेद पुकारी २ ॥
दीन दयाल सुनौ अवटेर न देर करौ भव संकट भारी ॥
काल कराल महा बिकराल भयेपशु मानुष व्रति बिसारी ॥
कामहि क्रोध वधे ममतावस लोभकी फांस गलेबिचडारी।
कालकरेरहिमोलपुकारत मारतकाज न चासपुकारी ॥ २ ॥
मात पिता सुत नारि सुबंधव प्रीति यही धन हेत बिचारी।
जे धन हेातहि प्रीति करें सब जोधन नाहितु देत निकारी ॥
मैं अति दीन दुखी सबहीबिधि राम गुरू इक आसतु हारी।
श्री विन्द्राबम दीन दयाल कहैं रघुनाथ सुलेउ उबारी ३ ॥

दो० सुदरसन सिंघ की बीनती बारम्बार सिर नाय।
सतगुर राम के चरन में सुरत रहे लौ लाय ॥

दोहा ॥

कृपा आपकी पाय के मन में बढ्यो अनंन्द ।
एक संसै मन में रहा मेटो सो सुख कंद ॥

इति श्री संत बेद चौथा भाग का प्रथम बिश्राम सम्पूर्ण ॥ * ॥

चौपाई ॥

हे महराज भरम जब होई । सत्य पदारथ दीखा कोई ॥
रजू में जो सर्प दिखाना । सचा देख झूठ भ्रम माना ॥
सीपी रेत मांहि भ्रम होई । आतम रूप जो जग भ्रमहोई ॥
सत्य कौन सा जगत बताया । तिसको देखि भ्रम भयपाया ॥
ब्रह्म मांहि जग भासत कैसे । भ्रम भयो कहिये पुनि जैसे ॥
परमहंस ने कहा बुझाई । संस्कार जन्यत सुपनाई ॥
पहली देखी वस्तु सो भाई । संस्कार वासना रहाई ॥
अंतः करण माहि सोबासा । उस अनुसार सुपन सोभासा ॥
यह कुछ नेम नहीं सुन भाई । सच्चा देखि भरम जो पाई ॥
मांनमती का सर्प सुझूठा । देखा तिसपर भ्रम सु ऊठा ॥
रस्सी मांहि भ्रम सोइ होई । मिथ्या सर्प लखा पुनि सोई ॥
पहिले जन्म मांहि जगदेखा । सो असत्य कछु रूप नरेखा ॥
सोई ब्रह्म माहि जग भासा । भरम भयो अज्ञान विलासा ॥
यह सिद्धांत हमारा भाई । जग मायादिक षट कहलाई ॥

दोहा ॥

षट अनादि येहें सही माया जगत बिचार ।
ब्रह्म ईश संबन्ध जिष गुर मुख भरम निवार ॥

चौपाई ॥

हे महराज जगत भ्रम होई । मृगतृष्णा को जल भ्रम सोई ॥
जगमें जल से प्यास बुझावै । मृग तृष्णा जल प्यास नजावै ॥
फिर मृगतृष्णा सम जगभासे । है अनादि झठो सु प्रकासे ॥

परमहंस बोले सुन भाई। इसका भेद कहूं समझाई ॥
सृष्टी कहिये तीन प्रकारा। परमारथ दूसर व्यौहारा ॥
तीसर प्रतिभाषिक पहिचानो। भिन्न भिन्न कर भेद बखानो ॥
व्यौहारिक जो सृष्टि कहावै। ईश्वर की रचना श्रुति गावै ॥
जाकी प्यास जाहि से जाई। सुखको कामन आखि कराई ॥
जो सृष्टि प्रतिभाषिक कहिये। जाको प्यास जाहि से जयये ॥
भेद परस्पर अंगन माही। इन्द्री भिन्न न कर्म कराहीं ॥
ब्रह्म सृष्ट परमारथ सत्ता। बरतत तीनों काल अवस्था ॥
प्रति भाषिक सत्ता को नासा। ब्रह्मज्ञान बिन मिटै नभासा ॥

दोहा ॥

व्यौहारिक ईश्वर बिभो बिना ज्ञान नहि जाय।
प्रति भाषिक भ्रम सृष्टे अनभो दिष्ट लखाय ॥

चौपाई ॥

प्रतिभाषिक नहिं मूल बिनासे। उग्र ज्ञान से होवे नासे ॥
जो घट फूटि गया सुनिभाई। माटी में माटी मिल जाई ॥
स्रुतिका नास कभो नहिं होई। प्रति भाषिक सत्ता रह जोई ॥
परमारथ कसता उर आवै। तौ प्रति भाषिक मूल नसावै ॥
कहै मनुष्य सत्य सो जाना। स्थूल भ्रम को करो बखाना ॥
दे दृष्टांत भेद समझावो। हृदय से संदेह मिटावो ॥
बाजे पुरुष कहत हैं ऐसे। जगमानो नहि मानो भयसे ॥
इसका भेद कहो समझाई। संसै रहै न दृष्टि लखाई ॥
परमहंस तब बचन सुनायो। दे दृष्टांत भेद सम झायो ॥
एक बैश्यके कंन्या भाई। कातिक मास दिवालीआई ॥
एक दिना पहले सुन भाई। गेरू लोटा बीच घुराई ॥
लडकी खाटपासरखिदीन्हा। माता भरा नीर सो चीन्हा ॥

दोहा ॥

माता लड़िकी सों रही बीती निशा भयान।
लोटा लीन्हो बैश्यने दिशा गये मुखमान ॥

चौपाई ॥

आव दस्त जब लीना भाई । देखि पृथी परुधिर बहाई ॥
यह मन मैं निश्चयकर माना । जादू किया मरन निजजाना ॥
कैबी मारी ऐसो आई । सर्व देह को खून गिराई ॥
सोच मांहिव्याकुलचङ्ग भातीं । सुधि बुधिभूलिन आवैवाती ॥
बहुत कठिनकरघरको आये । सुस्त खाट पर कोइनसुहाये ॥
इत्तीआदि सकल घबराई । पूछे दशा सुसाहु चुपाई ॥
सहत कुटंबसबरोवन लागे । बैस्य क्रोध कर कहै अभागे ॥
सम देही की आसन जानो । घड़ी दोय मैं होत चलानो ॥
मेरे गयो सवेरे लोहू । सुस्ती छाय रही अब सोहू ॥
बैद्य हकीम अनेक बुलाये । सोच बढ्यौ सबही घबड़ाये ॥
लड़िकी लोटा ढूंढ़न लागी । लोटा कहां गयो कहि जागी ॥
लड़िकी रोवै मिलै न लोटा । माता कहै देखि उठि कोठा ॥

दोहा ॥

लोटा राखा खाट तर को लेगयो उठाय ।
बाप पड़ा सब सून रहा उठा तुरत अकुलाय ॥

चौपाई ॥

गेरू समुझ रोग सब गयो । भयो निरोगो आनद लयो ॥
इतनी देर भरम दुख पाया । वृथाकालयह भांति गवाया ॥
जगकी माननता सुनि भाई । दे दृष्टांत कहूं समझाई ॥
बैश्य एक परदेश सिधावा । बारह बरस वितीत रहावा ॥
लड़िका बरस एक काभाई । छोड़ि गये घर भइ तरुनाई ॥
चला पितासे मिलने भाई । पिताउलटिघरको चलितआई ॥
एक सहरबिचलड़िका आया । डेरा बीच सराइ कराया ॥
दिनसे ठहर रहा पिया भाई । संझा समय बैश्य तहं आई ॥
जिसकीकोठरीलड़िकाठहरा । उसमेंबैश्यकियाचहडेहरा ॥
लड़काबैश्य दिया निकलाई । आप टिके सुख आनद पाई ॥
लड़िका सीतराति दुख पावा । रोइरोइकर रातिगवांवा ॥

वैश्य निठुर कछु सुनै नभाई। लड़िकेका दुख कहानजाई॥

दोहा॥

प्रातकालके होतही वैश्य भयो जब त्यार।
लड़िका से पूछत भयो तूको कहो बिचार॥

चौपाई॥

लड़िके ने निज देस बताया। जाति पिताको नामसुनाय॥
वैश्य सुनत खन कंठ लगाई। तू लड़िका मेरा है भाई॥
राच समय मैं दुख जो दीन्हा। पश्चातापबहुतबिधिकीन्हा॥
परमहंस बोले तब भाई। दो दृष्टांत कहे समझाई॥
पहिला जो दृष्टांत लखाई। भर्म सिद्धि येा करता भाई॥
दूजा जग को मान न भाई। सत्य मिथ्य मानन दुखदाई॥
लड़िका वही रात के माहीं। माननकर दुख सुखकराहीं॥
इसी भाँति यह जगको माने। माननकर जग जीव बधाने॥
महाराज जग नाहिं रहाई। सर्व शून्य आकाश कहाई॥
कछू वस्तु आकास न होई। व्यापक ब्रह्म अकास लखोई॥
परमहंस बोले सुन भाई। तुम जो ब्रह्म अरूप बताई॥
रूप ब्रह्म के तीन बखाने। सतचित आनन्द कहैसमाने॥

दोहा॥

तुम जो कहा कछु ब्रह्म नहिं स्थूल रूप सो नास।
हेयरूप यह सब बसे चेतन ब्रह्म प्रकास॥

चौपाई॥

जड़ अकास सरूप है भाई। उतपति हू आनासहोजाई॥
चेतन ब्रह्म सदा अबि नासी। अलखरूपसुखज्ञान प्रकासी॥
तुम ने शुन्य मानही जाना। गतबिहीनक्योंकर पहचाना॥
देखे शुन्य मान जब होवे। कछू वस्तु को ज्ञातिनजोवे॥
शून्य मान के ज्ञाता भाई। अधिष्टान सब तुमहीकहाई॥
तुम मौजूद कहता सबबाता। शुन्यमान कहि भातिलषाता॥
ज्ञान सत्यही ब्रह्म से होई। अंतस इन्द्री जड वत सोई॥

जड़ में सक्ति कछू नहीं भाई। ब्रह्म सदा परकास कराई॥
जिह्वा श्रवन नासिका जानो। त्वचा नेत्र ये पांच बखानो॥
इनका साक्षी आतम भाई। मेल सहत सबभोग कराई॥
फुरना लीन भये जग नासा। केवल एक ब्रह्मकी आसा॥
ब्रह्म बिना कछु होइ न भाई। सदा अकरता ब्रह्म रहाई॥

दोहा॥

जिह्वा रसना नासिका त्वचा नेत्र यह जोय।
इनको साक्षी आत्मा निश्चय मानो सोय॥
फुरना होवे लीन जब भया जगत को नास।
बिन्द्राबन तब रहि गयो केवल ब्रह्म प्रकास॥
ब्रह्म बिना कछु होत नहिं ब्रह्म अकरता होय।
घूमक लोह संयोग कर रेल चलावे सोय॥
ब्रह्म जगत यहनाम सब जबलग ज्ञानन होय।
मिट्यो द्वैतिता भाव जब नाम रूप गयो खोय॥
बुद्धि गुरू अरु शास्त्र मिले यह तीनों इकसाथ।
जब कुछ दीखे ठौरको बस्तु पड़े तब हाथ॥
जैसे जग सुखने बिषय बिन सामिग्री होय।
बिन्द्राबन तस यह जगत चिदाकास है सोय॥

चौपाई॥

हे महाराज सत्य तुम कहेऊ। मोरे उरकछु संसैरहेऊ॥
ज्ञानी के ढिग देखत स्वामी। एक दोयकोइजायअकामी॥
बहुतक ज्ञानी रहै अकेले। सुन्नसाननहीं होवत मेले॥
ज्ञान किसी को समुझ नआवे। कौन लाभ मिल नेसे पावे॥
अरजो ज्ञान सीख भी लीन्हा। कोरा कोरा साही चीन्हा॥
ब्रह्मा नहीं कछु देत दिखाई। साधतर को बकवादकराई॥
अब उपासका कहूं वृतांता। बहुत मनुष जुरे परतांता॥
आते जाते रहै सदाई। बहुत खैयउपदेस सोआई॥
कथा बर्ता निति प्रति होई। खूब प्रसाद बटतहै सोई॥

धूम धाम से घंट बजावे। ठाकुर को शृंगार करावे॥
दर्शन कर प्रसन्न चित होई। बड़े बड़े उत्सव नितसोई॥
हरिकानाम जपति करध्याना। गुणानुवाद करत हैं गाना॥

दोहा॥

यह बिधि पूजा भक्ति मे भोर सार नित होय।
सेवक नित प्रति बहुत से करत प्रसंसा सोय॥

चौपाई॥

अरु तीरथ अस्नान कराई। गद गद कंठ प्रेम उरछाई॥
तात्पर्य हम यह लखिपावा। जो असत्य आनंद कौआवा॥
जो वेदान्त पढ़ै वा सुनई। अभिमानी हो बाद जुठनई॥
और पुरुषनिरभयहो जाई। साध गुरूसे भवन लाई॥
महा अनर्थ बढ़ि हो जावै। यहा यह दशाकहा फल पावै॥
कौनकौनसी पे थिनमाही। मत वेदांते ज्ञान कराही॥
ज्ञानी कौन भये सो भाषौ। गुरु नानक कै सेवे आषौ।
बानी उनको कहै। बिचारा। कैसी ज्ञान रूप बिस्तारा॥
परमहंस तब कहा बुझाई। हमतुमको कब ज्ञान सिखाई॥
हम तुमसे पहले कह दीन्हा। तुम उपासना करौ अकीन्हा॥
तन मन धन कुटुंब सब भाई। कथा सुनो अरु धर्म कराई॥
तीरथ न्हाउ दान बहु दीजै। व्रत पूजा शृंगार करीजै॥

दोहा॥

छापा तिलक लगाय कर नाच कूद कर गान।
झांझ मृदंग बजाइये नाहक पूछो ज्ञान॥

चौपाई॥

तुम यह बात भली बढ़ि गाई। आपन करौ सो कहोबताई॥
ज्ञानहीं ज्ञान दयो उपदेसा। तातै दीजै कछू बिसेसा॥
परमहंस बोले सुन भाई। अपना फिकिर करोतुम जाई॥
हमरा फिकिर कछू नहिकीजै। तुमरे मन आवै सो लीजै॥
खट्टा मिट्ठा नोन मिलाई। जसजस रुचि सोई तसखाई॥

मीठा स्वाद कहै सब गाई । बाजे को नहि स्वाद लगाई ॥
त्यौं काहू को भीड़ सुहावै । मन उपाधि के संग रहावै ॥
कोइ एकांत सांति वृतिभाई । करै बिचार उपाधि मिटाई ॥
कछुब करै उपासन कोई । भीड़ भाड़ बहुतक जहं होई ॥
ताकी महिमा कहू बुझाई । भीड़ बहुत तहसीलो माई ॥
डिपटी कमिश्नरी मै भाई । वैसी भीर न देत दिखाई ॥
जो कुछ भीर यहां भी होई । सोकिकमिश्नरकै नहीकोई ॥
कोइ राजा अपील को जावै । भीड़ भाड़ कछु रहन नपावै ॥
अब तुमसे पूछत है भाई । कौनबड़ा सुख काहि रहाई ॥
उनमेंचीफ कमिश्नर कहिये । कोअधिकारी हुकमकरइये ॥
तुम भी सांच कहत हौ भाई । तीरथ न्हान चलै मन लाई ॥

दोहा ॥

न्हाने को लाखें चले कथा माहि दश बीस ।
ज्ञानी के ढिग एक दो बचे लोक की रीस ॥

चौपाई ॥

जोतीरथ पर सैर तमासा । कथा माहि सो एकन भासा ॥
तीरथयह विधि बड़ाकहाई । गीता साख छोट रहाई ॥
ज्ञानी दरस लाभ क्या होई । तुम पूछा सुनियो अब सोई ॥
ज्ञानी का जो दरसन पावै । सुभ इच्छा मन कपट न लावै ॥
साठि तीनसै तीरथ न्हाये । एक बार दरसन फल पाये ॥
कथा सुनै दसबरस पुराना । ज्ञानी एक पल संग प्रमाना ॥
ज्ञानी की सत संगति भाई । महिमा अपरंपार कहाई ॥
एक आदमी पै धन होई । अपनी समुझ भोग फल सोई ॥
जोधन देयतौ लालचलावै । बिना ब्याज पैसा नहिजावै ॥
बिना ब्याज जो देवै भाई । तौ हजार अैसान कराई ॥
सोच बिचार करै बहुतेरा । सच्चा जान देय धन फेरा ॥
एक मनुष्य नसे मै भाई । धन थैली उस पास रहाई ॥

दोहा ॥

खबर न उस धन की कछू सुख इच्छा नही भोग ।
जो कोइ चाहे लेउ धन कहु को भेटन जोग ॥

छन्द ॥

तीरथ उपासन भोग कारन लाभ चित हूदे धरै ।
अभिमान करि सो भोगचाहे औरका दुख क्यों हरै ॥
आपुन फिरै कंगाल भूखे उदर क्यों दूजा भरै ।
चाँह अग्नि न लगी जा घट रात दिन चिंता जरै ॥ १ ॥

ज्ञानी करै सुभ कर्म जेते मान नही चितमें धरै ।
फल कीन इच्छा भोग करने चाह चिंता नहिं जरै ॥
सुभ कर्म का फल होयगा जो कभी इच्छा नहिंकरै ।
यह धन यकंठा रहै उनके दरस कर सेवक तरै ॥ २ ॥

कोई कुकर्म कदाचि होवे ताहि ले निंदक धरै ।
दरसन कीये निस्कपट इच्छा सर्व गठरी ले परै ॥
बिन जतन पायो माल गठरी साह सो फिरहे खरै ।
बड़ भाग पूरन जानि तिनके दरसकरि सचमन अरै ॥ ३ ॥

ज्ञानी करै उपकार निसदिन दर्श करि मनमल हरै ।
कहे बचन छाकरि कदाचित हूदे बिच साँती करै ॥
निस्कपट हो जो चरन सेवे कवल जल भवमे तरै ।
रघुनाथ सतगुर राम सेवे जन्म जम के भय टरै ॥ ४ ॥

दोहा ॥

कहू एक दृष्टांत अब वैश्य बड़ा धनवान ।
द्रव्य सोंपि परदेश गे धरी धरोहर जान ॥

चौपाई ॥

जबकि वैश्य बाहरसे आया । धन माग्योबनिया मुकराया ॥
बहु वैश्य हैरान बहूता । सबसे करैफिरियाद सुनूता ॥
कछू नभयो राजातक जाई । राजा ने बहु वैश्य बुलाई ॥
राजा हुकुम दियातब भाई । कलि सवारी मेरी आई ॥

जिसको धन त सौंपा भाई। उसकी हट्टी बैठो जाई ॥
अभी सवारी आवै मेरी। तू उठिकै अइयो मम नेरी ॥
मैं तुम और कान अब लाई। कहि दो बात जाइयो भाई ॥
ऐसेही दो दिना बिताने। दशा देखि बनिये घबराने ॥
सब मौजद धरो धन भाई। तुमरी लई परिक्षा आई ॥
तुमरा धीरज हमने तोला। लेउ धरो हरिकछैान बोला ॥
एकछिणुकराजासंग पायौ। गई धरो हरि सर्व छुटा यौ ॥
राजा संग पलक एक माही। लाभ होय दुष दोषन साही ॥

दोहा ॥

पहिले करी फिरादि बहु काहुन सुनी पुकार।
राजा को संग होतही मिल्यौ माल निजसार ॥

छन्द ॥

तुमतो कहत हो ज्ञान कोरा देखि ही हमको परे।
आनन्द नहि कुछ ब्रह्म दीखे मुझ बिन क्यों भ्रम टरे ॥
परख हीरो की लखे जो जोहरी सोइ जानिये।
नाज परखत बेश्य जानो जोहरी नहिं मानिये ॥
तुम कहत ब्रह्म जो नाहिं दीखे साखि कहू बखानिये।
रघुनाथ सूरज खिल रहा जग अन्ध दोष लगानिये ॥
अज्ञान आंखो मांहि जाले सूर ज्ञानन भासही।
ऊलू सदा दिन रात करता भरम रूप प्रकासही ॥

प्रमान दोहा ॥

हे नेरे मूझे नहीं नालति ऐसी जिंद।
तुलसी या संसार को भयो मोतिया बिंद ॥
तन सुखाय पिंजर करे धरे रैनि दिन ध्यान।
तुलसी मिटे न बासना बिना बिचारे ज्ञान।
दरि दिवार दरपन भयो जित देखो तित तोहि ॥
कहरी पयरी ठीकरी भई आरसी मोहि ॥

एक समाना सकल में सकल समाना ताहि।
कबीर समाना बूझ में तहां दूसरा नाहि॥
आपहि किया कराइया आपहि करनी जोग।
नानक आपहि रमि रहा दूसर हुआ न होग॥

चौपाई॥

और एक दृष्टांत सुनाई। एक फकीर रहै कहि भाई॥
एक मस्त हाथी चलि आवा। हाथी वान पुकार सुनावा॥
सोफकीरने चितनहि धारी। माऊत कहता फेरिपुकारी॥
तब फकीर बोले मस्ताने। सर्व रूप मैं खुदा समाने॥
माऊत ने फिरि टेर सुनाई। रस्ता से हटि जावो भाई॥
हमरे भीतो बोच खुदाई। तुमरी अभी मिटी नजुदाई॥
तुरतहू गयो फकीर हटाई। उत्तर कोइन चुप रहाई॥
भाई जो तुम कहा बुझाई। सुनि वेदांत निडर होजाई॥
अरु अभिमानी मान करावै। बाचक ज्ञान ताहि कौगावै॥
ज्ञानी सबके प्यार रहाई। मन मदादि मल रहै नकाई॥
लड़िका प्रथम डरै जो आई। हेतु परिछा डरत रहाई॥
छाया देखि बान जो डरहीं। भूति मानि उर संकाधरहीं॥
जबवहलड़िका होयसयाना। छाया निरखि नहीं डरमाना॥
त्योहीं ज्ञान वान को जानो। छाया निरख नहींभ्रममानो॥

दोहा॥

सर्व सुख वैराग में तेज तपस्या मांहि।
भक्ती में प्रभुता बड़ी मुक्ति ज्ञान बिन नांहि॥

छन्द॥

भयो ज्ञान भान प्रकाश घट मे मोह निसान सावही।
भागे उलूक जो भेद बाटी तरक तरुहि गहावही॥
डड़ते फिरै नहि राह पावै भरम कर भरमत रहे।
रघुनाथ सतगुर राम बिन जग चास जमको नितसहे॥

कुण्डलिया प्रमान की ॥

ज्ञान समाधि जाके लगी सो क्या लावे ध्यान ।
सो क्या लावे ध्यान ध्यान द्वतीया कहलावे ॥
आप भये बादशाह फिर कौन के मुजरे जावे ।
लिया निशाना मारि तुपक अब कौन चलावे ॥
मनका संकल्प भजन रूप अपना दरशावे ।
जोयासो वा एक है पलटू कौन होय हैरान ॥
ज्ञान समाधि जाके लगी सो क्या लावे ध्यान ।

चौपाई ॥

भभा भर्म मिटावेा अपना । यह संसार सकलहै सुपना ॥
भर्मे सुर नर देवी देवा । भर्मे सिद्ध साधक बह्मेवा ॥
भर्म भर्म मानुष डह काये । दुस्तर महा विषम यहमाये ॥
भर्म भर्म भय मोह मिटाया । नानक तेहि प्रभ सुख पाया ॥
एकौ एक कहै सब कोई । हेामैं गर्भ व्यापै ॥ अंतरबाहिर एक पहि चाने । येा घर महल सिभापै ॥ प्रभु नेरे हरि दूरि न जाने । एकौ दृष्टि सवाई ॥ एक ओंकार अवरनहि दूजा नानक एक समाई । आप उपदेसै समझै आप ॥ आपहि रचीया सबके साथ । आप कीन्हों आपन विस्तार ॥ सब कुछ उसका वह करनी हार । उसते भिन्न कहै। कछु हेाई ॥ थान थन्तर एकौ सेाई । आपन चरित आप करने हारा कौतुक करे रंग आपारा ॥ मनमें आप मन अपने मांहि । नानक की मति कही नजाय ॥

दोहा ॥

सेवा गुर अरु साधकी ज्ञानी के सुध भाव ।
उपासक मेवे फलनकू रागे दोष बधाव ॥

छंदद्वैया ॥

साध गुरूकी सेवा ज्ञानी सदा प्रीति से करते । राग दोख फल धरे उपासक मन थिर सरन न परते । ज्ञानी समुझ बूझ

यह करतासाध गुरू दरसाये। ईश्वरकोकछु चाह न राखी ब्रह्म सेा आप लखाये। ज्ञानी के व्यवहार माहि एक साध गुरूकी सेवा॥ जिसकारन निज रूपलखाना समुझि परीसब मेवा॥ ज्ञानी सुभ कर्मन का करता सुतै सुभाव कहोई। जोकि उपासक साध गुरू की तीर्घ ध्यान करोई॥ ह्वैया कहितीरथ ठाकुरकीपूजाचित्तनथिरता राषै। बड़े कष्ट कर्मो विचकरता सिद्धि होई सुख आषै॥ फल इच्छा कर कर्म करै सब चित उपासना धारे। ज्ञानी सदा सुतंत्र रहावे कर्म करे सुभसारे॥ ज्ञानी ऐसा कौन भया जग जिन साध गुरू नहिं सेये। तीरथभजन ध्यान स्मरनण नित ज्ञानीसदा करा ये खंडन कर्म उपासन करते बिना उपासन ज्ञाने। केवल ज्ञान न चलै ब्यौहारा कर्म उपास बखाने॥ है दृष्टांत अंध पंगुल का भूखे मेल कराये। मेवा कोइक वृक्ष ताहि पर मेवा फल सेा आये॥ अंधे को दीखत कुछ नाही पंगुल चढ़ा न जाई। दोनेाने मत एक बिचारा फलका जतन कराई॥ अंधे ने पंगुल को अपने कंधे परधर लीन्हा। पंगुल मेवा तोड़ि वृक्ष से मिलि कर खात प्रवीना॥ दोनो अलग अलग थेभाई मेवा हाथ न आई। ऐसे कर्म उपासन के बिन ज्ञानहिं पंगु रहाई॥ तुमको ऐसो समुझ चाहिये निद्रा करो न कोई। निद्रा बुरी पापकी जड़है नसि उपासना जाई॥ जब ज्ञानी की निद्रा कीन्ही फिर उपसना नाहीं। जोनहि ज्ञान समुझ में आवे बुद्धी छोट रहाही। निद्रा के पापन सेवा चेतौ भो अच्छा भाई। करि बिचार देखो तौ ज्ञानी निर उपाधि सुखदाई और उपासक इच्छा कारन धूम उपाधि उठावे॥ अपने नाम होन की आसा कर्म बीच लपटावे॥

चौपाई॥

अब जो तुमने कहा बुझाई। असत्य वस्तु से सुपना पाई॥ देखो भांनमती का खेला। है असत्य सुख मानै मेला॥

सुप्न सृष्टि सब झूठी भाई। सुख दुखदेतिप्रत्यक्षदिखाई॥
यद्यपि सुप सुपने का होई। है मिथ्या सुख मानत सोई॥
सुपने का दुख मिथ्या जानै। सुपने माहि बड़ाकरि मानै॥
अरुपहिलेतुम यहकहिआये। कही जाति बैराग नपाये॥
ज्ञानी में बैराग बतावो। निन्दा करिके हमें सुनावो॥
यह कैसा अपराध उपाया। निन्दा पाप मूल जग छाया॥
ज्ञानी सुखी सदा सब ठाई। आगे पीछैं देखि सदाई॥
तुम उपासना महिमा गाई। अधिकारी प्रतिरुत्य बताई॥
सुख सुखोपति की सुनिभाई। सबसे बढ़िकर रहै सदाई॥
कथाश्रवन पढ़रीतककीन्हा। पूजा भजन ध्यान लौलीना॥

दोहा॥

सब कारज वेा कर चुके सुख सुखोपति जान।
सोवे तब आनंद लहे सुख घट भीतर भान॥

चौपाई॥

सोने का सुख कहिये भारी। कथाध्यानसब देतबिसारी॥
जो दूसके भीतर सुख नाही। सोइ गये सब दुख नसाही॥
देखि सुखोपति माहि न कोई। तनमनधनहिंकुटुंबलखोई॥
साध गुरु नहिं सेवा भाई। सबसे बढ़िकर सुखरहाई॥
ज्ञानी को सुप अस सबकाला। प्राप्तिरहै आनन्द बिसाला॥
अज्ञानी विषई सुख माने। विषै पदार्थ माहि लुभाने॥
अपने में सुख कुछ न जाने। बाहिर ढूढ़त सुख अयाने॥
बास्तव में सुख अपने माही। सोई सुखोपति महिरहाई॥
नाम मृग कस्तूरी होई। ढूढत फिरै बनौबन सोई॥
सुख सदा इस पास रहावै। मन विषया बन में भ्रमावै॥
सुख पदार्थ में कुछ नाई। सुखो पति में नाहि रहाई॥
तब यह सुख आप में पावै। विषै बासना को छिटकावै॥

दोहा॥

सुख पदार्थ माहि जो तो सब काल रहाय।
धन कुटुंब यह तन त्रिया फिर क्योंकर दुख पाय॥

चौपाई ॥

धन सम्पति कुटम्ब सब भाई। जिन्हैं आप में सुख दिखाई ॥
इनके पास पदार्थ न एका। ज्ञानी सदा विचार विवेका ॥
सुखी रहै निसदिन सबभाती। कोई नहि उपाधिति नसाथी ॥
मन का यह सुभाव है भाई। इच्छा कर सुख दुख करवाई ॥
मन इच्छा पूरन सुख माने। फिर छिनमें दुख लहै अयाने ॥
इच्छा दूसर फेरि बधाई। डग मग डोलै भरम भुलाई ॥
इच्छा पूरन मन सुखपावे। इच्छा सुख दुख माहिनचावे ॥
सुषोपती में इच्छा नाही। मन को सुष आनन्द रहाही ॥
इसे सिद्धि ऊआ सुनि भाई। मनको निश्चलता सुखदाई ॥
सुख पदारथ में कुछ नाही। ज्ञानी मन वैराग सदाही ॥
करिविवेकनिश्चलमनकीन्हा। सर्वपदारथ मिथ्या चीन्हा ॥
प्रारब्ध आधीन जुआवै। बहुत समुझिकर भोगलगावै ॥
जैसें समुझ दार नर कोई। बाजीगर को स्वांग लषोई ॥

दोहा ॥

भाँनमती के स्वांग को देखि खुभी जो होय।
बालक देखे सत्य कर नर असत्य कर जोय ॥

चौपाई॥

बुद्धिवान मिथ्या करि जानै। लड़िका सच्च जानि लपटानै ॥
त्यौ ज्ञानी अज्ञानी भाई। दौनौ भोजन करै बनाई ॥
ज्ञानी कछू सुषनहि मानै। मन इच्छा पूरन कर जानै ॥
बिन आहार विचारन आवै। बिनविचारनहिमनठहरावै ॥
सुष नाही कछु भोजन माही। सुषमन मैही रहत सदाही ॥
मन ठहरे परसुष को देवै। चंचल मननिसदिन दुषसेवै ॥
थिरपांनी में सुष दिषलाई। मन ठहरे प्रसुष सोई भाई ॥
अज्ञानी भोगन सुष मानै। निश्चलता मनकी नहि जानै ॥
भोग पदार्थ सो सुनि भाई। है झूठे निसदिन दुष दाई ॥
करि वैराग विवेक विचारा। मन निश्चल करि रूप सम्हारा ॥

मनथिर सदा कही नहिजावै । छुधा पियासा आनिसतावै ॥
तुमपूछा किस पुस्तक माही । ग्यांन बेदांते कथा सुहाही ॥

दोहा ॥

पुस्तक को क्या अंतहे रुचिअपनी परमान ।
पंचदसी गीता पढ़ो अष्टा बक्र सुजान ॥

चौपाई ॥

जोग बसिष्टि पढ़ौ तुम भाई । एक बिचार सागरसुखदाई ॥
निश्चल दास करी सो भसा । बड़ उत्तम है ग्रंथ प्रकासा ॥
तिस के पढ़नै से सुनि भाई । ज्ञान होइ तत्काल लषाई ॥
हम ने जो तुमकौ समझाया । इन पुस्तक के द्वार लषाया ॥
अरु ज्ञानी बड़ जगमै जानो । ब्रह्म रूप ये साध बषानो ॥
राम जीदास कृपाल दयाला । दादू पंथी ज्ञान बिसाला ॥
गुर नानक जो बाणी गाई । भये संत दोउ दीन पुजाई ॥
उनकी महिमा कहा बखानौ । बाणीअंम्रत रूप सो मानौ ॥
बानी श्रवन करै चित लाई । तीनि तापसै सांति कराई ॥
पक्षि पात नहि निद्रा भाई । केवलि नाम अखंडल षाई ॥
मालिक का अनुराग लषाया । सुरति सब्दकामेल कराया ॥

दोहा ॥

प्रथम सुख मनी ग्रंथ को पाठकरो मनलाय ।
अर्थ पदार्थ लषि परै हस्ता अमिन बुझाय ॥

चौपाई ॥

महाराज है सत्य सुअैसा । करी प्रसंसा सुनियत जैसा ॥
मैनै भी निज नैनन देषा । ब्रह्मन पंथ पूजते भेषा ॥
सर्ब गुरू की बानी पढ़ही । निन्दा दृष्टि न चितमें धरही ॥
महा राज तुमने जो भाषा । सुष सुषोपति बढ़िकै आषा ॥
सोने की निद्रा बढ़ भारी । परमहंस तब कहा बिचारी ॥
यह दृष्टांत दयो सुनि भाई । एक अंग कर भेद लषाई ॥
सो रहना कछु नीकन भाषा । बिना पदार्थ सुष सो अषा ॥

सोता सदा रहै भी कोई। ऐसा भया न होगा सोई ॥
जो कोई अधिक सोवताभाई। जब जागै तब दुखअधिकाई ॥
इस सोने में लाभ न कोई। रहत वासना मन सुख होई ॥
धन्य धन्य तुम बड़े कृपाला। भेद बताय भूल भय टाला ॥

दोहा ॥

धन्य धन्य तुम धन्य हो महिमा अगम अपार।
भेद भूल सब नासि के लीन्हों मोहि उबारि ॥

सवैया ॥

बारहि बार प्रनाम करौं अब शीश धरौं चरनौ बिच माथा।
मोसम दीनन है जग मैं कछु आपहि दोष हरौ सुखदाता ॥
मैं मतिमंद कुचालि कुसेवक पालत अपजिमै पितु माता ॥
औगुन मोर सबै प्रभु जानत कालहि केबस भरम भुलाता ॥
मोहि न ठौर कछू करुना निधि जो कहै तुम ब्रह्म सनाथा।
एकहि आसन और कछू अवसंग सदा निज चाहसु साथा ॥
जीवन मीन सदा जलही हित राम गुरु चरनौ बिच माथा।
श्री बिन्द्रावन नाम अधार सुदास कहै रघुनाथ अनाथा ॥
दीन दयालसुनौ अरजी मरजी निज जानि करौजुबिचारी।
कारन कौन बिसारि दयौ निज जानत महिमा बेदपुकारी ॥
जानत हौ मम पाप दयानिधि आपहि काहिन लेउ सम्हारी।
पापिन तारि दयौ खगगीधहि भालु तरेकस साधन धारी ॥
आप करौ सब के हित पूरन होय बिरंच मस्क तहि हारी।
माछर होइ बिरंच बनावत महिमा चारहु बेद पुकारी ॥
दीन दुखी रघुनाथ दयानिधि द्वार खड़ौ अब टेरत हारी।
श्री बिन्द्रावन धाम सुनामक कारन कौन सुयादि बिसारी ॥

इति श्री सांचबेद का चौथा भाग का दुतीयो बिश्राम।

चौपाई ॥

एक छपा करि कहो ये देवा । ब्रह्ममांहि जगका भ्रमभेवा ॥
रस्सी संधि लकड़ीया होई । भरम सर्प का होता सोई ॥
घट में भरम सर्प को नाही । ब्रह्म जगतनहिंमेलरहा दी ॥
सूरति नहिं एकसी कोई । ब्रह्म मांहि जगभ्रमक्योंहोई ॥

छन्द दूहा ॥

परम हंस कहते सुन भाई इस मेंने मन मानो ।
देखो जाति देहकी होती जीव अजाति बखानो ॥
पहला जन्म भयो ब्रह्मण के अब वेश्य के आयो ।
जीवमांहि जोजाति धर्महे बणियातन क्योंपायो ॥

दूहा ॥

जीव वही अब हू है भाई जो पहले था सोई । अज्ञानी का जीव जाति को अपनो धर्म लखोई ॥ जदपि जाति आत्मा सेती मेल नही कुछ जानो ॥ सूरति एक न आतम व्यापक परछिन्न जाति सो मानो ॥ जाति भरम आतम मै भाई भयो भूल अज्ञाने । ब्रह्म माहियो भरम जगत को कह रघुनाथ बखाने ॥ ईमहराज ब्रह्म प्रकासी रूप सूर्यवत भासे । जगत अंधेरे के सदृस है क्यों कर जगत प्रकासे ॥ परम हंस बोले सुन भाई अग्नि काष्ट मैं होई । नहिं दीखै नहिं लकड़ी जारो देां चेतन्यर होई ॥ इसप्रकार चेतन्य समाने अज्ञा विरोधन होवै । साधक है सब काल ए करस प्रघट भये तम खोवे ॥

दोहा ॥

महाराज माया कहो सत्य असत्य कि होय ।
भरम रूप यह है कहा निश्चय कहिये सोय ॥

चौपाई ॥

परम हंस बोले सुन भाई । माया का वृत्तांत सुनाई ॥
बादी सून्य असत्य बतावै । है नाही अन ठुई लखावै ॥

कहै असत्य ख्याती भाई। रज्जी में जो सर्प दिखाई ॥
है असत्य अख्यानङ्ग माहीं। सर्प असत्य भरमभय पाहीं ॥
है विज्ञान वाद मत भाई। आतम ख्याती कहत सुनाई ॥
रज्जी कभी सर्प नहिं भाई। बुद्धी में है सर्प लखाई ॥
बुद्धी से बाहिर नहिं भाई। बुद्धि सर्प आकार धराई ॥
बुद्धी क्षणक्षण मैं फिरि जावै। बाहिर जग अस्थूल दिखावै ॥
बुद्धी से बाहिर जो भाई। दीखत है सो भरम लखाई ॥
न्याय और वैशेषिक भाई। कहै अन्यथा ख्याती गाई ॥
बामी देश सर्प है सच्चा। नेत्र दोष उस कुजिन रच्चा ॥
मालुम पास होत है भाई। रोग दोष से देत दिखाई ॥

दोहा ॥

जिसके नैनो रोग है ताको भर्म दिखाय।
नेत्र दोष बांमी निकट भांती सर्प लखाय ॥
और ख्याति बादी कहे जो असत्य अर्थात।
बिना भई बस्तू लखे गीदड़ सींग दिखात ॥

दूहा ॥

यों असत्य ख्याती है मिथ्या रजू सर्पक्षण भासे। क्षिण भर का कुछनेम नहींहै घंटौ सर्प परकासे॥ बुद्धी क्षण क्षण माहीं बदले इसे बातअसत्ते। आत्मख्याती कहैं असुद्धे मिथ्याख्याति अनित्ते ॥ २ ॥ ज्ञान पदारथ के अनुसारे होता है सुन भाई। रज्जी रूप पदारथ सच्चा सर्प भ्रांति जो पाई ॥ इसे यही सत्य है निश्चै साचे सर्प धियाने ॥ सोई ध्यान रज्जी चित आया सच्च सर्प भय माने ॥ अरु समान रजू का ज्ञानै अख्यात बादी कहते ॥ दूसरज्ञान स्मृती बादी जानि यही चित धरते। यह भी मत असुद्धहै भाई सच्चे बिन क्यों डरते॥ भरम भुलाने भेद न जाने नाहक पचि पचि मरते। रज्जी सनमुख पड़ी देखिके क्योंकर फेरि डरावै ॥ सांच सर्प का

ध्यान कीया जब रस्सी सर्प दिखावै ॥ एक काल में ज्ञान न दोई होसक्ते नहीं भाई ॥ इसै कही अनिर वचनी यह सुद्ध वेदांत लखाई ॥ माया अनि र्वचनी है भाई सत्य असत्य न कहिये ॥ सत्य असत्य मिलीभीनाहीं भरम जेवरी कहिये ॥ छंद॥ अन्तष्करन की वृति नेचोंसे निकलजिस परपरै ॥ सोई पदारथ रूपके समान होजाती फरै ॥ तिमर वृ पदार्थ को करि फिर पदार्थ लखि धरै ॥ प्रकास रूप सुभास जानौ सो सहायक भ्रम हरै ॥ दोया ॥ जहां रस्सी में सर्प भासता बाहिर वृति सुजाई । रस्सी के संग लपटि रही है दोष तिमर भय दाई । अंधकार के दोष धार उर नाहिं यथारथ भासे । वृत्ती और अविद्या मिल कर सर्पाकार प्रकासे ॥

चौपाई ॥

जोकि अविद्या कारन होई । सत्य न देखो मिथ्या सोई ॥
ज्ञान भये रस्सी के भाई । सर्प दूरि तब होता जाई ॥
जबी ज्ञान रस्सी का होवे । सर्प अभाव दृष्टि नहिं जोवे ॥
इसे सत्य नहिं कहते भई । जो असत्य तो देत दिखाई ॥
इसे सत्य असत्य न कहिये । सत्य असत्य निलीनहिंलहिये ॥
कहा अनिर वचनी सोभाई । बीज मांहि जो वृक्ष समाई ॥
तोड़ो बीज वृक्ष नहिं भासे । वृक्ष नहीं तो प्रगट आकासे ॥
बीज वृक्ष में रह्यो समाई । बाहिर प्रगट भयौसु दिखाई ॥
इसको माया नाम बखानो । यही अनिरवचनी करजानो ॥
जैसे सर्प अविद्या काहो । सो परणाम भरम रहाही ॥
जैसे सर्प वृती में भाखा । है परणाम अविद्या राखा ॥
ज्ञानअनिरवचनी सोइजानो । अंतष्करण वृति पहिचानो ॥

दोहा ॥

वृति जो अंतष्करण की होता ज्ञान सुजान ।
तो अभाव नहीं सर्प का रहता भरम समान ॥

चौपाई ॥

हे महाराज सत्य सब भासा । हिरदे से सब संसै नासा ॥
एक रहा संदेह हमारे । सुपन नई रचना मनधारे ॥
तनबाहिर मन रचनाकरहो । तौसुपने तन मृतक चहही ॥
सूक्षम देह सुपन की होई । तीनि लोकरचना मनसोई ॥
हाथी घोड़ा मुलिक मकाना । सूक्षममेंकिस भांतिसमाना ॥
सो संदेह कृपा कर नासौ । परम हंस बोले मुनि व्यासौ ॥
वेद बचन यह भाखा भाई । सुपन सृष्टिमन रचत बनाई ॥
देह गले के भीतर जानो । नाड़ी सूक्षम तहां बखानो ॥
नाड़ी में सब रचता भाई । बिना प्राण बाहिर क्यों जाई ॥
प्राण मनै को घोड़ा जानो । इन्द्री सब प्रजा कर मानो ॥
प्रान गये इन्द्री सब जावे । बिना प्रानन्हिं टिकने पावे ॥
मनजु प्रान बाहिर जब जाई । देह मृतक हो जाती भाई ॥

सोरठा ॥

मन इन्द्री अरु प्रान कंठ महि रचना करै ।
सुप्न कल्पना जान सच्च पदारथ भास भ्रम ॥

चौपाई ॥

मन में ज्ञान सक्ति है भाई । कर्म सक्ति नहिं कर्म कराई ॥
सुपन मांहि चहियेसब कर्मा । कर्म प्रान इन्द्रीको धर्मा ॥
इन्द्री प्रान बिना तन भई । मृतक भयो कहत है ताई ॥
इसे मन बाहिर नहिं जाई । कंठ मांहि सब रचता भाई ॥
घोड़ा हाथी मनजु रचाई । कल्पति इन्द्री देह बनाई ॥
सुपने में सोइ देखत भाई । राज भोग सुख दुख सबपाई ॥
सुपने में तन घाउ लगाना । इसतनपरकछु चिन्हनआना ॥
इसे सिद्धि भया सुन भाई । कल्पित देह सो और रहाई ॥
सुपन साक्षी भास रहावे । जाग्रत इन्द्री देह न पावे ॥
आप कहाजग सुपनसमाना । मोर बुद्धिमें भरम रहाना ॥

रेल तार मिथ्या क्यों होई। वर्तमान में दीखत सोई
खबरि एक दो घंटे माहीं। कोस हजारन पहुंचे जाहीं॥

दोहा॥

जगत भरम सुपना कहा रेल तार जगमाहि।
भले भरम में पड़े हो अचरज मानत काहि॥

चौपाई॥

परमहंस बोले सुन भई। वृथा पड़े भरम मैं आई॥
रेल तार आदिक जग माहीं। जगसे भिन्न दीखता नाहीं॥
मूल सहित जग मिथ्या होई। रेल आदि क्यों सत्य लखोई॥
स्वप्न मांहि तुमहीं सब करते। अद्भुत नये पदारथ रचते॥
सपन सृष्टि तुमरी रचनाई। वारा पार नहीं कहि जाई॥
सपन अवस्था मैं सब भाई। साचें लाभ होत सुख दाई॥
स्वप्न जगत मैं प्रगट दिखावै। लैन दैन सब काम चलावै॥
धाति सुभ व धूम्र बल भाई। रेलआदि यह वणति बनाई॥
रेल बनी सो भेद बताऊं। चलन रीति वाकी दरसाऊं॥
रोटी करै एक भटियारा। चूल्है ऊपर देग चढ़ारी॥
देग मांहिं पानी भरि धरेऊ। ऊपर ढकना वारी दयऊ॥
जल औटा धूआ बढ़ि चाला। थारी थरथर कपै सुढाला॥
थारी ऊपर तार लगाया। तार सिरा मकान बंधाया॥

दोहा॥

उसी तार का सिरा ले बांध्यो बीच मकान।
जस जस थारी हिलत है तार हिलत सो जान॥

चौपाई॥

सिरा तार का खैके भाई। दूजै महल निकासा जाई॥
ज्यों ज्यों थारी चलती भाई। त्यों त्यों तार हिलै सुजाई॥
उसने तो यह खेल बनाया। बुद्धिमान कल रेल चलाया॥
धूरम के बल गाड़ी चलई। इक नलराह धर्म जो भरई॥

फाल तार का कहूं सुनाई । धाति धाति सैं मेल रहाई ॥
धातौ में बल भी कछु होवै । धातु दूसरी मेलक रोवै ॥
पोली धातु होति कोई बैरी । कोई ठोस देखो बल केरी ॥
फूल धातु को छड़ी बनावौ । लम्बोकर एक छोर गड़ावो ॥
सिरा छोड़ ज्यों ठोंकौ भाई । सोइ झनकार अंततक जाई ॥
लोहे की पुनि छंडी जो होई । येक छोर पर ठोको सोई ॥
परअवाज जहं कीतहं रहई । अस २ ठोस धाति पुनि कहई ॥
इसी प्रकार तार यह भाई । कई धातु को मेल कराई ॥
खबरि भेजनी जबही होवै । तार सिरा पारे बिच डोवै ॥
दांहैं बांहै तार हिलावै । वही हिलाना तार ले जावै ॥
तार सिरा जहां होवै भाई । सिरे बीच दो सुई लगाई ॥
सुई चलै दांहैं को जबहीं । कःअक्षर पहिचानो तबही ॥
बांहीं तरफ सुईचलि गिरही । लःअक्षर समझोगे तिबही ॥

दोहा ॥

दोनों अक्षर जोड़ि के कलजु हुआ अस रीत ।
इसी तरह अक्षर सबै चिन्ह होत सोई नीत ॥

छन्द द्वैय ॥

दाहै बाहैं सुई गिरति हैं दाहैं कःहैं भाई । बांहीं अ-
क्षरलः पहिचानौ दोनों कल सुकहाई ॥ है तोबड़ी बुद्धिकी
वातें परयह भी जग व्योहारे । ब्रह्मज्ञान कछु और बातहै
माया छत से न्यारे ॥

दोहा ॥

सो धन करै सुनार जो कुंदन लावै हाथ ।
बिन्द्राबन अस ज्ञानमें जगत रह्यो नहिं साथ ॥
माया के संजोग से जो चेतन्य भयो जीव ।
सोचेतन्य निज रूप को त्याग कियो नहिंपीव ॥
दरपन जलके मांहि जस छाया दूसर होय ।
बिन्द्राबन जो बिम्ब है नहीं हुआ वह दोय ॥

मन फुरनासो रहत कर कोने विधि सो होय।
चाहे भक्ति चहे ध्यान कर चहे ज्ञान से खोय॥

छन्द हैया॥

महाराज आपने भाषा प्रारब्ध नहिं मिटते। जो प्रारब्ध अमिट नहिं मिटती वेद यत्न क्यों लिखते॥ यत्न करै तो फल को पावै बिना यत्न कुछ नाहीं। जप तप पूजा से धन पाया प्रारब्ध न रहाई॥

परम हंसने कहा कि सुनिये ये झगड़े अज्ञाने। तुमतो ब्रह्म विचारहि करते कहां जाइ उरझाने॥ हम इसका वृत्तांत कहत हैं तुम स्मरण यह राखो। हमरा तो सिद्धांत यही है अनिर बचनी यह भाखो॥ सास्त्रवेदरीति अनुसारे जतन किया धन पाया। इसै प्रारब्धि नहीं मिटती ऐसो समुझ लखाया। इस मारग से धन का होना लिखा रहै सुनि भाई॥ कोई नौकर कोई करै दुकानै कोई कथा कराई॥ जस जस लिखा होय प्रारब्धै तस तस ही संयोगे॥ बिना लिखा नहिं पावै भाई दुख सुख कर्म सुभोगे॥ यह संजोग बिजोगे दोनों प्रारब्धि एक होई। जस जस होनहारई होवै तस तस प्रघट सोई॥

प्रमान दोहा॥

जैसी हो होतव्यता तैसी उपजे बुद्धि।
होनहार हिरदे बसे बिसर जाय सब सुद्धि॥

चौपाई॥

छै वर्ष जो रामरचि राखा। को करि तरक बढ़ावै साखा॥

दोहा॥

महाराज अब निडर में कछू करौंगो नांहि।
जो कुछ लिखा सो भोगि हौं यह निश्चय मन मांहि॥

चौपाई॥

परम हंस ने कहा बुझाई। प्रारब्ध संयोग कराई॥

जो कुछ करना लिखा न तोरे। तुम करिहौ सोई चित जोरे॥
जो कुछ लिखा कर्म में करना। तौ यह समुझ रहैगी डरना॥
जो कुछ नहिं करने में भाई। तुमरे भागे सुःख लिखाई॥
तौ सुख प्राप्त तुम को होई। लिखलिखदुखदुखपैयासोई॥
एक कहूं दृष्टांत सुनाई। दो मनुष्य झगड़े थे भाई॥
एक बड़ा उद्योग बतावै। येक सुख्य प्रारब्धी गावै॥
कोइ मनुष्य नै लीये बुलाई। कोठे में दोउ बंदकराई॥
जिसने मुख्य भाग्य को माना। सोइ रहा चादर को ताना॥
जो कुछ होना होगा सोई। हमरे करै न दूजा कोई॥
जिन उद्योग बड़ा बतलावा। उसने हृदय बुद्धि उपावा॥
कुछ उद्योग करौ किन भाई। नाहीं तो भूखे मरि जाई॥
कोठा फोड़ि गयो सो जानो। करिउद्योग पदारथ आनो॥

दोहा॥

प्रारब्धी भूखा रहे हम पहले कस खाय।
आधो पारस दीजिये करतब मुख्यलखाय॥

चौपाई॥

कोठे में एक छेद कराई। प्रारब्धी से पूछत जाई॥
भूखै मरो लेउ यह भाई। बिना करे कछु हाथ न आई॥
कहै प्रारब्ध बानला भाई। जो कुछ दिया सो लीना खाई॥
पीछे कहा देखि अब तूही। परारब्ध हमरी ही हूही॥
प्रारब्धी बड़ भयो हमारा। तैं उद्योग किया अति भारा॥
तब खाने को तुमने पाया। हमको खूते आनि खिलाया॥
यह सिद्धांत समुझिये भाई। मूल बड़ी प्रारब्ध कहाई॥
करके ध्यान समुझिये ऐसा। बिन उद्योग प्राप्त नहिं पैसा॥
बिन उद्योग न भोजन पाया। परारबधनहिं उठिकरधाया॥
परारबध उद्योगे भाई। दोनों कही बराबर गाई॥
बिना तेल बत्ती के भाई। दीपक कभी न बरता आई॥

दोहा ॥

तेल भयो बत्ती नहीं तो क्यों होय प्रकाश ।
बत्ती है अरु तेल नहिं नहिं जरने की आश ॥

सवैया ॥

है इतना अंतर प्रारब्ध कु तेल बिना नहिं दीपक भासै ।
है उद्योग समान बती कहि कोटिज्ञ बाती देर प्रकासै ॥
जो थोड़ा होय तेल बती बड़ थोड़ी देर में दीप बिनासै ।
जो प्रारब्ध भई चेतन्य तौ थोड़े करना बज्रत सुभासै ॥

कबित्त घनाक्षरी ॥

चेतन्य प्रारब्ध होइ थोड़ाहो उद्योग सोइ पूरा काम होत सही निश्चय जिये जानिये । प्रारब्ध मलीन पाय सहस्र उद्योग धाय निस्फल होत जैसै मन कल्पना समानिये ॥ मुख्यही प्रारब्ध जानि पाछही उद्योग मान तेल बाती दोनो मेल दीपक जो जारिये । कहै रघुनाथदास सतगुर राम आस पहलेई कर्म कर प्रारब्ध बिचारिये ॥

कवित्त ॥

महाराज ससय एक भाषत है बेद भेख पहले जन्म कर्म किये सोई भोग पायेा है । कर्म फल दुख सुख प्रारब्ध के अनुसार जहां जहां जाई तहां ऐसोई सुनायेा है ॥ जगत में दीखत है दुख सुख भोग मान कोई कोई इच्छा सुभ असुभ जगायेा है । दोनोही को बीज कौन सुनो जैसा वृक्ष जोन कोई फल मीठा अरु कड़ुआ कहायेा है ॥ १ ॥ मीठा अरु कटुकता फल में है एक सार त्योहीं सुगन्ध दुर्गन्ध अरु बसाइये । इच्छा सुभ असुभ दोगन्ध दुरगन्ध जान कर्म सुभ करै फल बासना समाइये । इच्छा सुभ लाभ दे सुकर्महीं को हेतु जान ऐसेही कुकर्म दूर बासना लखाइये । सुभ अरु असुभ कर्म इच्छा अनुसार भो जैसा जो कर्म करै सोई फल पाइये ॥ २ ॥ महाराज कहैा और जिते सुभ असुभ कर्म

दोनौ के फल समान भोग भुगताइये। सुकर्म किया अधिक कुकर्म कछु थोड़े है दोनोहो भोगकै असुभ मिटि जाइये॥ मन भर तौ कुकर्म सुभ कर्म मन दो जान दोनौ फल भोगै के पाप न भुगाइये। कहै रघुनाथ दास सतगुर राम आस भोग फल दोनो मिलै निश्चैही लखाइये॥

चौपाई॥

परम हंस तब कहा बुझाई। दोनो फल भोगत हैं जाई॥
शास्त्र बेद कहा क्यों ऐसा। करै प्राप्तत मिटै अनैसा॥
परमहंस बोले सुन बाता। अपनीसमुझमाहिअसआता॥
शास्त्र यही प्रयोजन राखा। बचै कुकर्म पराश्चित भाषा॥
बहुतो लगा पराश्चित माहीं। सर्वलोग पुनि देत भलाहीं॥
अब कुकर्ममैं रुचिनहिं आवै। सुभ इच्छा सुभ कर्म करावै॥
फल कुकर्म का दुख है भाई। फल सुकर्म का सुख रहाई॥
सुख सुकर्मन का फल पावै। दुख कुकर्म फल ध्यान न आवै॥
फल कुकर्म का हटि वोजावै। कछु कालपीछे फिरआवै॥
एक कहूं दृष्टांत सुनाई। एक एक को मारा भाई॥
एकमनुषको उन कछु दीन्हा। बदला दोऊचहत हैलीन्हा॥
जिसको मार दई है भाई। वह बदला लैने कूं धाई॥

दोहा॥

लेन्हें का सुख पाइके दुःख न मालुम देय।
ऐसे भोग कुकर्म का सुभ फल नास करेय॥

चौपाई॥

सुख का बल जब होता भाई। कुछ दुख सहना सुगम कराई॥
मनभर की गठरी एक होई। सिर बिमार के राखो सोई॥
जोकि मनुष्य निरोग रहाई। सिर गठरी धर नहिं अकुलाई॥
देखो जाइ कचहरी माहीं। लम्बर सै इन्साफ कराहीं॥
जो सुकहमा खूंनी आवै। लम्बर सबी धरे रहि जावै॥
वह सुकहमा पहलै होई। जस सुकर्म फल जानौ सोई॥

फल कुकर्म कौदेत हटाई। सुभ इच्छा सुभ फल सोइपाई।
सुभ कर्मन कोफल सुखदाई। असुभ कर्म कौ दिया भुगाई॥

दोहा॥

महाराज अच्छा कहा दूरि किया संदेह।
यह झगड़ा क्यों जानिये मेंटत भर्म कलेस॥

कबित्त॥

ज्ञानी कौ न देह चाहरा।ष नकी इच्छा नाहि प्रारब्धी यत्न का तौ झगड़ा ही लषाइये। जिस गाम कौन जाना मारग के कोस गिनै झगड़ाही जानि देखिकौन लाभ पाइये॥ माया अनिरबचनी कही हम बारबार ओसकी बून्द से प्यास ना बुझाईये। कहै रघुनाथ दास सतगुरू राम आस सुपने कौ खेलसमसुपना समझाइये॥ महाराज सचकह्यो दूरि करे भर्म सब ब्रह्मही की बिद्या अब छपाकरि बखानिये। कहै अबधूत तुझै पूछ नासो पूछिले महाराज मेरीमति दुःख सुख मानिये॥ छोटा असमर्थ रूप ब्रह्म है अनन्द बड़ा पूरन है सर्व ठोर क्योंकर सो जानिये। कहै रघुनाथ दास सतगुरू राम आस अंतस के धर्म जान ब्रह्म मैन आनिये॥ कहै अब॥ धूत सुनौ दुःख सुख सामर्थ नून धर्म अन्तःकर्ण के दृष्टान्त बखानिये। मै तौ जग दृष्टा भायौ अधिष्टांन कौन कहै। दृष्टान्त चेतन्य अधिष्टां न सोई मानिये॥ सुपनै मै द्रिष्टा अधिष्टांन आप दोनौ एक जागृत मै जक्त रूप जैसेई जानिये कहै रघुनाथ दास सतगुरू राम आस मिथ्या जग अधिष्टां न हांनी नही मानिये॥ जैसै मृग चष्णा जल पृथ्वी कोन गील करै रजू माही सर्प भर्म बिख नही पाइये। जला काश घटा काश मैंधा काश महा काश कहनै कौ चारि रूप एकही लखाइये॥ आपी संकल्प नर्क स्वर्ग रूह बनाये आप बालकही छांह देखि भूत भय पाइये। चारौं मै उपाधि भेद अवश्यहै इसी भांति साखी है जीव कूटस्थ ईश गाइये॥ ब्रह्म है चेतन्य

रूप एकही येचार मानि भेद है उपाधि ताहि मिथ्या जल भासी है। जला कासक है ताहि घटा काश मै जुबिंब दीन्हौ अब कास सो अकासही प्रकासी है॥ घटा काश कहै ताहि जितनौ औकास पाय मैघा कास बादल नौजग है जला रासीहै। महा कास पूर्ण सब जीव ईश ब्रह्म जानि चेतन्य सेा स्वयं रूप एक सर्ब बासीहै॥ जीव ईश की उपाधि मिथ्या कर जानौ सेाय ज्ञान कहै मूल ताहि सर्ब सुख रासीहै॥ महाराज लक्षण क्या लक्षण है तोनि कहै जहती है अज हती है भाग त्याग आसीहै॥ जहती है ताहि जान सर्ब बचन त्याग मान गंगा मै गाऊ कहै सर्ब वाक्य नासीहै। कहै रघुनाथ दास सतगुरू राम आस लक्षण है अज हती जो सर्ब बाक्य भासीहै॥

कबित्त प्रमाणी॥

लक्षणअहतीक कहत है ताहि सुग्रहन करैसब अक्षरभाई। काहू कहा रंग लालउड़ातहै लालहि रंग सुपंछी उड़ाई॥ भाग त्याग कहु जिसमै कछु ग्रहन कियौ कछु जात छुटाई। ईश्वर जीव उपाधिको त्यागसेा चेतन्य भाग जोग्रहन कराई॥ अंतस करणकहै जड़ रूपको दुख नही सुख भोग है तामैं। अवधूतकहा तुम सत्य कही परतेरीहै चेतन्यसक्तिसु बामै॥ कारण ताहि के सुष्यल है दुख अंतस ज्ञान सहेात है जामै। दीपककैपरकास यथारथ दिष्टिदई नहिं कर्म सुतामै॥ जस दीपक के प्रकास भये पर ज्वारी जुवा कोई पोथी बामै। प्रदीपकेकर्म को मान नहीं तुहि चेतनरूपहृदय बिचसांचै॥ तेरोहि चेत नभास लिये अंतस सुख दुख सुभोगत नाचै॥ सुझ कौउन कर्म को लेस नही चेतन्य सुदीपक रूपहीराचै॥ रूप की वस्तु का हेात अभास सुभिन्न पड़े अस्थान सै जाई॥ ब्यापक चेतन आप कहा आभास पड़े अस्थान कहाई॥ सुनि सब्द अरूप काधुनि प्रति बिबसु ब्यापक व्योम अरूप

लखाई। जल मै प्रति बिंब अकास को भासत अंतस बुद्धि चेतन्य दिखाइये॥ ब्यापक मोहि कहा महराज यह कारन कौन सुभेद बताइये। केवलि अंतस भोग करै सब देह नहो क्यों भोग कराइये॥ अंतस देह दोऊ जड़रूप सुभोगत एक न भोग कहाइये। कहै अवधूत सुनौ मति काजड़ दर्पण माहि सुरूप लखाइये॥

कवित्त॥

अंतस करण सुदर्पण रूपहै देह भई जस भीति समानै। दर्पणमै प्रतिबिंब लषौ निजभीति मै दीखतनाहि सुजानै॥ प्रकाश पदार्थरूप कहै समभीति मलीनन रूप दिखानै। दर्पण निर्मल अंतस जानि सुचेतन भास पड़े सोवखानै॥ १॥ चेतंन्य प्रकास समान सदा नहिं भीति मै दीखत देहसो जानौ॥ दर्पण म प्रतिबिंब पड़े मतिकाहि बिकार सुदर्पण मानौ॥ त्यौ जल बीच अकास कौ भास है औरज भूमि पै नाहि दिखानौ॥ चेतन ब्यापक है सबदेह मैं अंतस मै प्रतिबिंब लषानौ॥ २॥

देह तमोगुण कौ है कारज अंतस करण सतोगुन जानौ। अंतसहीरा सदृस है निरमल फूलकि लाली झलक समानौ॥ पाथर मै नहीं रंग सुभासत चेतन अंतसबीच लषानौ। है चेतन्य समान सुदेह मै अंतसभास चेतन्य दिषानौ॥ ३॥ तौमहराज सम्मूरण देह मै दुखसुख क्योंकर देतदिखाई। अंतस करण तहांदुख चहिये देह सबै दुख सुख सो पाई॥ अवधूत कहैं अस्थान हृदय मैं अंतस वृति सुदेह समाई॥ सूरज एक अकाश मैवास है भास किरंन्यसुभूमि पै छाई॥ अंतस एक अस्थान कह्यो पुनि ब्यापकहै सबदेह किमाई ५॥

दोहा॥

महाराज यह कहो अब ज्ञान कौन को होय।
अहं ब्रह्म को कहत है भेद बतावो सोय॥

चौपाई ॥

परमहंस नै कहा बुझाई । चेतन भास बुद्धि के माहई ॥
सो यह कहै उसी कौ ज्ञाना । बुद्धी मै चेतन्य समाना ॥

दोहा ॥

महाराज आभासतो ब्रह्मनहीं कछु होय ॥
भिन्न कहत है ब्रह्मसे और प्रकारे सोय ॥

चौपाई ॥

परमहंस बोले सुन भाई । बुद्धि सहित आभास कहाई ॥
अरु अभास कौ होवै ज्ञाना । कहै अभास कूटस्थ बखाना ॥
साक्षी का अभिमान कराई । आप अभास सरूप लखाई ॥
साक्षी के सरूप कौ जानै । अपना आपहि लख्यक रानै ॥
कहै आभास ब्रह्म के साथा । कहै एक बेदांत सनाता ॥
बाध्य समानाधि करण भाई । जस दर्पण मै रूप समाई ॥
वह स्वरूप अपनै कौ बाध्यक । असल रूप मै जाइ समाध्यक ॥
जस मनुष्य की है परछाही । सो मनुष्य मै जाइ समाही ॥
देखन माहि दूसरी भासै । वस्तु एकही असल प्रकासै ॥
जो कुछ वस्तु दूसरी होई । आप अकेली रहै न कोई ॥

दोहा ॥

हरि हरजानदोउएकहै बिब बिचार कुछ नाहि ।
जलसे उठे तरंग ज्यों जलही विषय समाहि ॥
महाराज तुम क्रिपा से समुझि परी सब बात ।
प्रलय ज्ञान मे अंतरा सो करीये बिख्यात ॥
प्रलय माहि कछु रहे नहिं ज्ञान दृष्टि जग नाश ।
ज्ञानी कस देही तजे कैसे भोग बिलाश ॥

चौपाई ॥

परमहंस तब कहा बुझाई । परलय का वृत्तांत सुनाई ॥
जब ईश्वर जीवन के ताई । कर्म भोग फल देत सुनाई ॥
तब परलय होजावै भाई । वस्तू संस्कार रहि जाई ॥

संस्कार माया मै रहई । जीव कर्म बांकी जो अहई ॥
माया मै सब रहै समाई । संस्कार कर्मादिक भाई ॥
जब सब कर्म्म भोग पकि जावै । ईस्वर कै इच्छा अस आवै ॥
जगरचना करनी अबचहिये । इच्छा मायारूपसु लहिये ॥
माया तमोप्रधान सेा भाई । पंच तत्व उत्पन्न कराई ॥
माया से आकास सेा जानेा । शब्द समेत भयौ सेा मानो ॥
नभसै उत्पति बायु भई है बायूसे उत्पति अग्निकही है ॥
अगिनी सै जल उत्पति भाई । जल सै पृथ्वी रची बनाई ॥

दोहा ॥

पाँचपृत उत्पति भये माया कौ परपंच ॥
पंच बिषै प्रकृती भई भिन्न भिन्न बरनंच ॥

चौपाई ॥

अब पचीस प्रक्रिति सुनु भाई । एक एक की पांच कहाई ॥
हाड़मास नाड़ी त्वच रौमा । पंच प्रक्रिति पृथ्वीकीहैमा ॥
अस्थ भाग पृथ्वी सुख राखा । चारिभाग चारौं कौआखा ॥
मास दियाजल कूंसुनि भाई । अग्नि रूपनाड़ी कहिगाई ॥
त्वचा पवन को रौम अकासा । पांचप्रक्रिति पांचौके पासा ॥
जलकी पांच प्रक्रिति बखानौ । रेत खेत रक्तेंपित मानौ ॥
लार पांच एकही बखानी । रेतभाग जल आपु रखानी ॥
खेत पवन कौ दीन्हा भाई । रक्त भाग पृथ्वी ने पाई ॥
पित्त अग्नि को दिया सोजानो । लार दई आकासे मानो ॥
पंच कहू पवनी कीगाई । धावन पसरन उछलन भाई ॥
चंचलता संकोच कहावै । पांचौ प्रक्रिति पवन कीगावै ॥
धावन भाग पवन सुखलीन्हा । चार भाग चारों कौ दीन्हा ॥
पस रन दयौ पृथी कौ भाई । उछलन अगिनी को बरताई ॥
चंचलता जलकी पहि चानौ । है संकोच अकास बखानौ ॥
पंच प्रक्रिति अगिनीकी भाई । भिन्न भिन्न कर कहू सुनाई ॥
क्षुधापि आसा आलस भाई । निन्द्रा क्रांति अग्नि सै गाई ॥

छुधा भाग अग्नी मुख राखा। दई पिआसा पवन सुआखा ॥
आलस दयौ पृथी कौ भाई। निन्द्रा रूप अकास कहाई ॥
क्रांति दई जलकौ पहिचानौ। अब अकास की प्रक्रितबखानौ ॥
अहं कार क्रोधे अरु लोभा। मत्सर मोह पंच है सोभा ॥
अहंकार राख्यौ आकासा। क्रोधअगिन को रूप प्रकासा ॥
लोभ पवन कौ दीना भाई। मोह दयौ जल कौ बरताई ॥
मत्सर रूप पृथ्वी कौ जानौ। पचीसप्रकृति यह भेदबखानौ ॥
पंच तत्व की इन्द्री भाई। एक एक की दो कहि गाई ॥
श्रवन ज्ञान वाक्य है कर्मा। इन्द्री दो आकास सुधर्मा ॥
नेत्र ज्ञान पग इन्द्री दोई। अग्नि तत्वकी कहीयत सोई ॥
त्वचा ज्ञानकर कर्म बखानै। पवन तत्त दो इन्द्री जानै ॥
रसना ज्ञान उपस्थ बखाना। इन्द्री दो जलकी ए माना ॥
नासा ज्ञान गुदा है भाई। इन्द्री दो पृथ्वी की गाई ॥
तत्वो का सात्वक गुण भाई। अंतस इन्द्री ज्ञान बनाई ॥

सोरठा ॥

अंतस इन्द्री ज्ञान अंस सतो गुण से भई।
इन्द्री कर्म बखान अंस रजो गुण मानिये ॥

चौपाई ॥

प्रलय ज्ञान मै कितना भेदा। ज्ञानी कभी न करते खेदा ॥
प्रलय के पीछै सुन भाई। पयदा जीव होत फिर आई ॥
ज्ञानी ब्रह्म माहि लय होई। फेरि जन्म धरता नहिं सोई ॥
ज्ञानी को कुछ संशय नाई। देह रहै कौ अवछ्ठि जाई ॥
तीरथ जंगल एक समानै। ज्ञान वान कछु संकल्प मानै ॥
जोकि किसी ज्ञानी नै भाई। देशकाल का ध्यान कराई ॥
हित अज्ञानिन को उपदेशा। आप रहै निरलेप हमेशा ॥
वशिष्ट आदि ज्ञानी जो भाई। अधिकारी आपु बड़ पाई ॥
इनकी देहकल्प एक रहई। पर इनको आत्म सुख अहई ॥
जन्म मरन कबहू नहिं भासै। स्वयं आत्मा रूप प्रकासै ॥

महाराज अब सुना सुभैनै। देहजीवकी तीनि सोकहनै॥
परमहंस बोले सुन भाई। तीनौ देह कहूं समझाई॥
कारण देही एक कहावै। सुंन सुखोपति बीचह पावै॥
दूसर लिङ्ग सरीर कहाया। सत्रौ तत्व वेह अस गाया॥
पांच कर्म इन्द्री सह जानो। पांच ज्ञान इन्द्रिया बखानौ॥
पंच प्राण मन बुद्धि कहाये। सत्र तत्व सरीर बनाये॥
तीसर तन अथूल बखानै। आतम भिन्न सबन सै मानै॥
पंच कोस तीनौ तन माही। भिन्नभिन्न करकहूं सुनाही॥
कोस अन्न मय कहूं बखाना। देह अथूल के स यह माना॥
कारन निमित रजो गुणभाई। तामस उपा दांन कहिगाई॥
सात्वक गुण अवाह सो जानौ। देह भई चेतन्य सुमानौ॥
तब अज्ञानी मरता भाई। मम मेरा चित भाव रहाई॥
जिस पर ममता मोह रहेऊ। ताहिरकोगुणव्यापतभयेऊ॥
स्त्री पुरष मेल जब होई। पिताबिन्दजल कहिये सोई॥
रक्त पृथी का रूप कहावै। गर्भ बीच दो तत्व मिलावै॥
दोनों में गर अति होई। अगिनितत्वकहियतहैसोई॥
मात उदर जो पोल रहाई। रूपअकास द्वारछिकि जाई॥
उदर माहिजो पवन रहाई। छेद्र द्वार प्रवेस कराई॥
पंच भूत को पुतरा भाई। गर्भमाहि जड़ बढ़ता जाई॥
लेज पेज अरु भोज कहावै। भक्ष्य चारिभोजन कहलावै॥
लेज नाम जल भोजन जानौ। पेज दूधरस कहा बखानौ॥
भोज कहे फल आदिक भाई। भक्ष्य अंनयौ चारि कहाई॥
माता भोजन जोई पावै। नार द्वार तन पुष्टि करावै॥

दोहा॥

कारन निमित रजो गुण उपा दांन तम सोय।
पंच भूत एकठे किये गर्भ बीच चढ़ होय॥
लगत पांच ये मास के चेतस सतो सुभाय।
सर्व देह चेतन्य भइ फूल सुगन्ध लखाय॥

चौपाई ॥

नवै मास बाहिर जब आया । दूध साध पाली निज काया ॥
आप अन्न जब खानै लागा । भयौ पुष्टि तनरस सुखपागा ॥
कोस अंन मय कहा बखानी । महा दचारिंतहि बिच जानी
बसारसा गृसा पहि आन । कासौ चारिये बन्धन मानौ ॥
देह संगता मानि बसा है । कुल के कर्मन बीच रसा हैं ॥
जाति धर्म बिच गृस्थ भाई । तीनि लाज बिच गयो कसाई ॥
कुलधर्मलोक बेद तिज लाजा । कासौ जीव जगकरतसुकाजा ॥
दूजा कोस प्रान मय जानो । दस प्रकारकी पवन बखानो ॥
प्रान उपान बियान समानैं । है उद्यानै पंच बखानैं ॥
प्रान पवन ऊपर को जावै । कहै उपान जो बायु सरावै ॥
नाड़ी द्वार घूमती सोई । ब्यानपवन कहियतिहैं वोई ॥
रोम रोम बिच रही सनाई । पवन समान कही सोइगाई ॥
कै उछार जाके संग होई । कहैं उद्यानि पवन हैं सोई ॥
पांच पवन औरो है भाई । इनके भीतर कही बुझाई ॥
नाग डकार कहत है भाई । कूरम आंखी पलक चलाई ॥
क्रिकल नाम छीकको जानौ । देवदत्त जमुहाई मानो ॥
पवन धनंजय कहिये सोई । मृतक देह फुलावत जोई ॥
दस प्रकारकी पवन बखानी । कोस प्रान मय भेद सुजानी ॥
तीसर कोस मनो मय जानो । पांच कर्म इन्द्री मन मानो ॥
सातैं अहंकार है भाई । कोस मनोमय कह्यो सुनाई ॥
चौथा कोस कहै बिज्ञाना । चित्त बुद्धि इन्द्री पंचज्ञाना ॥
पंचम कोस अनंद बखाना । बुद्धी कारण देह समाना ॥
पांचो कोस कहै सुन भाई । जाग्रत स्वपनसुषोपतिगाई ॥
कोस म्यान के सम है भाई । आतम काढ़ कनक इलाई ॥
कोइ यह देह आतमा भाषै । इन्द्रिनको कोइ आतमा आखै ॥
कोई प्राणको इ बुद्धि आनन्दे । कोइ कोइ आतम कहैसुविन्दे ॥
अज्ञानै के कार्य जानो । सुन सुषोपति सर्व बिखानौ ॥

दोहा ॥

सुपन माहि अस्थूल नहिं भाषत सूक्षम देह ।
सुषुप्ती मे सूक्षम नहिं आत्म भांन करेह ॥

चौपाई ॥

सुख स्वरूप आतमा होई । सुख सुषोपति प्रापति सोई ॥
सुख सुषोपति में नहिं होई । तौ क्योंकर उठि कहता सोई ॥
इमतो बड़े अनंदित सोये । भूलि गये जग दुख सुख कोये ॥
आतम तीन अवस्था माहीं । बर्तमान सुख रूप सदाहीं ॥
पांचो कोस अवस्था माईं । बर्तमान ब्यापक नहिं भाई ॥
बस्तु कभी होवे नहिं होई । ब्यापक सत्य न कहते सोई ॥
सबमत पांच कोसमैं बाधे । आत्म भिन्न न सूझै आधे ॥
आत्म सबसे भिन्न रहावै । इन सबको परकास दिखावै ॥
आत्म सतचित आनन्दरूपा । उसमे गुण नहिं सदा अनूपा ॥
गुणनासे प्रघट कहि होई । आत्म सतचित आनन्द सोई ॥
यह स्वरूप आत्म का भाई । दाह स्वरूप अग्नि जो गाई ॥
जो कोइ इसमें तरकलगावै । दाह अग्नि को मंच बुझावै ॥

दोहा ॥

मेचों केवल अगिनि को मुखमें लेते धारि ।
मुख नहिं जलता ताहिसे कहते गुणहि बिचारि ॥

चौपाई ॥

जो सरूप अगिनीका होता । मंत्रमाहिं नहिं रूपहि खोता ॥
सो यह बात झूठ है भाई । अग्नि दाह नहिं दूरि कराई ॥
प्रमंच नवल सुखके माहीं । प्रहा अगिनि बीच रहिजाई ॥
इससे सुख जरता नहिं भाई । अगिन दाह का रूप सदाई ॥
इसे बिदित हुआसुन भाई । ब्यापक निज सरूप दरसाई ॥
ब्रह्म ज्ञान से मिलता नाहीं । ब्रह्म ज्ञान नहिं भेद रहाहीं ॥
ब्रह्म दूसरी बस्तु न कोई । ब्रह्म आप है भूल लखेाई ॥
बन्धन ब्रह्म न जाना भाई । कह्यो ब्रह्म सो मोक्ष कहाई ॥

दोहा ॥

बानी बचन न कह सके बचन मांहि वह होय ।
कह्यो अवाच्य जिस ब्रह्म को बानी बोले सोय ॥
जैसे स्वप्ने के विषय राजा मांगी भीक ।
बिन्द्राबन जबही जग्यो था वह राजा ठीक ॥
अज्ञानी को कर्म बस इच्छा उतपति होय ।
बिन्द्राबन वह बामना जन्म धरावै सोय ॥

चौपाई ॥

अह भाई उतपत्ति कहावै । प्रलय महा परलय श्रुति गावै ॥
यह सब माया भर्म कहाई । इस का नहिं बिचार सुखदाई ॥
जिस बस्तू को करना दूरी । जिसमें चितक्यों धरो हजूरी ॥
माया को वृतांत न कीजै । निश्चै करि मिथ्या करि दीजै ॥
ज्यों बरूद का हाथी भाई । नहीं प्रसंसा रूप धराई ॥
जितना उड़े मुष्यसो जानो । माया रूप असत्य बखानो ॥
माया कृत पदारथ सोई । सर्बझूठ निश्चय नहिं कोई ॥

सारठा ॥

माया कृत व्योहार मिथ्या कर सब जानिये ।
समझ हेत बिस्तार निश्चैकर निज रूप को ॥

इति श्री तोमरा बिश्राम ॥ * ॥

श्री सतगुर रामजी सहाई ॥

चौपाई ॥

महाराज अब ठीक बखाना । ब्रह्म जीव का भेद नसाना ॥
ओंकार भेद नहिं कहा । सो मेरे मन संशय रहा ॥
मैंने सुना वेदांति ज्ञानी । ओंकार उपासना बखानी ॥
अहंग्रह उपासना कहही । ओंकार ब्रह्म चित धरही ॥
परमहंस बोले सुन भाई । ब्रह्म चिन्तवना ओंम कहाई ॥
ओंकार सरूप सुनानो । करिकै अहंध्यान सो मानो ॥

ओंकार अक्षर है भाई। ब्रह्मस्वरूप सकल श्रुति गाई॥
अभ्यासी सुमिरनको करता। ओंकार ब्रह्म चित धरता॥
ब्रह्म स्वरूप मैंहोऊं जानै। निर्गुण ब्रह्म पारको मानै॥
निरगुणब्रह्मसुमिरनाचहिये। जिसु मोदिपदारथ लहिये॥
अरु जोअपर ब्रह्म को ध्यावै। ब्रह्म लोक प्राप्ति होजावै॥
जो निरगुण उपासना भाई। ब्रह्म लोक इच्छा जुरहाई॥

दोहा॥

इच्छा ब्रह्म जुलोक की होय मोक्षनहिं मान।
ब्रह्मलोक होइ प्रापती हिरण्य गर्भ पहिचान॥

चौपाई॥

हिरण्य गर्भ समसुख भुगाई। ज्ञान होय तब मुक्ती पाई॥
अब निर्गुण उपासना गाऊं। मारग है सो सत्य लखाऊं॥
जो कुछ उत्पन्न ऊआसोजानो। जिसनेउत्पन्नकियासोमानो॥
सो सब ओंकारहै भाई। नाम रूप सब बस्तु लखाई॥
नामरूप दोभाग सो जानो। नामस्वरूपपृथकनहिंमानो॥
जाका एक दृष्टांत सुनाऊं। भिन्नभिन्नकरभेद लखाऊं॥
जैसे बैल कहा सुन भाई। ज्ञान बैल का होता ताई॥
नहिं समझैगा रोटी भाई। इसैनाम सरूप मिलाई॥
सर्व नाम मूले ओंकारा। प्रणव शब्द है बेद पसारा॥
ओंकार से बेद भये है। बेद भेद सब नाम कहे है॥
इसै नाम रूप दो भाई। ओंकार मैं रहै समाई॥
इसी प्रकार नाम सब रूपा। रहै ब्रह्म मैं ब्रह्म अनूपा॥
ब्रह्म वाच्य वाचक ओंकारा। वाचक वाच्य न भेदनियारा॥
ब्रह्म आत्मा अरु ओंकारा। एक रूप सब किया पसारा॥
हिरण्य गर्भ बैराट कहावा। ईश्वर तत्पद लक्षि सुनावा॥
साक्षी ब्रह्म भागये चारी। इसी प्रकार आत्मा धारी॥
विश्वते जस प्राज्ञसु जीवा। त्वंपद लक्षि साक्षी थीवा॥
चारोपद आत्म के जानो। ओंकार के कहु बखानो॥

कहैं अकार उकार मकारा। अर्ध मात्रो दुन्न सुधारा॥
चारो पद ओंकार कहाये। भिन्नभिन्न कहि सब समझाये॥
करो एक तात्पर्य सब केरी। एकी रूप नहीं कुछ फेरी॥
ओंकार मैं प्रथम अकारे। रूप विराट नहीं ये न्यारे॥
पहला भाग ब्रह्म को भाई। नाम विराट कहा पुनिगाई॥
प्रथम भाग आत्म का जोई। विश्व नाम जीव पुनिसोई॥
विश्व अरु बैराट सो एकी। भेद दिष्टि नहिं जानौनेकी॥
कहै उकार नाम जो दूजा। हिरण्य गर्भ दूजा सो हूजा॥
तेजस जीव दूसरा भाई। हिरण्य गर्भ से भेद नकाई॥
हिरण्य गर्भउकार सो एकी। भेदा भेद न करै विवेकी॥
तीसर अक्षर कहै मकारा। ईश्वर तीसर पद विस्तारा॥
दोनौ एक रूपही जानौ। जीव प्राज्ञ ईस एक मानौ॥
ओंकार की मात्रा जोई। चौथो अर्ध कहै पुनि सोई॥
ब्रह्म भाग चौथा जो कहिये। ईश्वर साक्षी नाम सुलहिये॥
चौथा हिंसा आत्मा केरा। जीव साक्षी एक नफेरा॥
चारि एक रूपही गाये। ऐसहिचिन्त बनमनमैलाये॥
कहै उपासना निर्गुण भाई। चिन्तवनलय एकरूपलखाई॥

दोहा॥

कुछ समाधि का भेद अब कहिये कृपा निधान।
सुनो समाधी दोयहै करि हो भेद लखान॥

चौपाई॥

निर्वि कल्प है एक समाधी। सावि कल्प दूसरी सुसाधी॥
सावि कल्प मैं चपुट रहाई। ध्याता ध्याने ध्येय कहाई॥
दैति ब्रह्मही रूप प्रतीता। रुपिया चांदी एक लखीता॥
रुपया चांदी रूपही जानौ। चांदी से कुछ भिन्न न मानौ॥
कहै समाधि निर्विकल्प भाई। चिपुट रहै नदेय लखाई॥
जो प्रानी मैं नौन घुलाना। नौन सही परनही दिखाना॥
देखौ सुन हुओ पति नाहीं। अंतस को अभाव ह्वै जाहीं॥

निर्षि कल्प मै अंतस होवै । वृत्ती सहित रहै सब जोवै ॥
धुरे लौन वेग द्रिस सुभाई । निर्विकल्प फलवृति लखाई ॥
जैसे बूंद नीर को जानौ । गर्म लोहपर परतस मानौ ॥
ऐसे अंतस करण सुभाई । वृति ब्रह्म मैं लय होजाई ॥
सुखुप्ति मै अंतस वृति जोई । अज्ञान बीचलय होवै सोई ॥

दोहा ॥

समाधि सुखो पति भेद है इतनाही तूजानि ।
लया वृत्तोर अज्ञानमे रहे सुखे प्रो मानि ॥

चौपाई ॥

निर्विकल्प मैं विघन सो चारी । लय विक्षेपक खाय विचारी ॥
रसा स्वाद चौथा है भाई । बिक्षु चारया कहै बुझाई ॥
खय निन्द्रा करि वृति अभावा । है विक्षेप वृति घबरावा ॥
वृती ब्रह्मा कारन न होई । भीना रूप लख्यनहिं सोई ॥
वृती गई घबराइ सो भाई । लौटि आय विक्षेप कहाई ॥
संस्कार रागे अरु देसा । यहक खाय दुख सहैं ह मेसा ॥
रसा स्वाद चौथा है भाई । विक्षेप रहित वृतीज आई ॥
वृती ब्रह्मा कारन होवै । सहविकल्पपुनिसुख कोजोवै ॥
हे महराज आप जो भाषा । सब सन्देह हृदय से नाषा ॥
बड़े बड़े यह भाँति सुनावै । विष्णुशिवादिक ध्यानलखावै ॥
पूजादिक तुम सबै उड़ाई । ध्यानादिक षट भेद लखाई ॥
परमहंस बोले सुनि भाई । या काभेद कहूं समुझाई ॥

दोहा ॥

विष्णु उपासिक अरु शक्ति यह गणपति सूरज आदि ।
यह उपजे उसएक से सोहो देव अनादि ॥
अलग अलग बहु एक है नहीं कितम है सोय ।
बिल्लावन अज्ञान लो महा प्रलय गयो खोय ॥

चौपाई ॥

महाराज एक कहै बुझाई । मारग वाम कहै क्या भाई ॥

नास्तक मतका भेद लखावो। वाहिर वेद कि बेद बतावो॥
परमहंस तब कहा सुनाई। इनमैं सार कछू नहिं भाई॥
पर यह सब वृत्तान्त सुनावो। मारग बाम भेद दरसावो॥
मारग बाम कहै यह भाई। भगकी पूजा करे बनाई॥
इच्छि सहज एकही बारा। भगपूजा मिलि मुक्ति बिचारा॥
जीते जीयत मुक्ति बेगावै। मदरा को तीरथ गोह रावै॥
पियाजनाम कौ व्यास बखानै। बेदों से बिपरीति सुमानै॥
ऋग युजरथाम अथर्वणभाई। चारों में यह रीति न गाई॥
लोग कहैं यह मारग होई। शिवनै उत्पति कीन्हा सोई॥
अस कुछ समुझ परतहै भाई। बैष्णव मतसे उलटि लखाई॥
बैष्णव जिसको निन्दा करही। अच्छामानिताहिचितधरही॥

दोहा॥

इस्से ऐसा बिदित है आचार्य इनकेर।
सिद्धिकरी है एकसा अच्छा बुरा न फेर॥

चौपाई॥

अच्छा बुरा एक सम मानैं। याही से बेसिद्धि बाखानै॥
सुपनै का बिष और मिठाई। दोनौ झूठ एक सों भाई॥
मीठे सै नहो भूख बुझाई। बिष के पीये नहीं मरिजाई॥
पर पसन्द मिठाई भाई। अच्छे कर्म सदा सुख दाई॥
बुरे कर्म हैं जहर समाना। स्रष्ट बस्तु घिण बुरी निदाना॥
मार्ग बाम कहा यह भाई। कर्म्म बिपुज्य सबै कराई॥
सक्ति दक्षना बना मत गावै। दूसन इसमें कोइ न आवै॥
पूजा शुद्ध शक्ति की जानौ। बैष्णव शक्ति पूजते मानो॥
उस्से शक्ति लोक ही पावै। पूजा शुद्ध शक्ति की ध्यावै॥
अरु शक्ती जिन निर्गुण माना। ब्यापक रूप करै जो ध्याना॥
उनकी गति उत्तम है भाई। शुद्ध सतोगुण शक्ति कहाई॥
जिस पूजा मैं हिंसा होई। मदिरापान प्रवृति करोई॥

दोहा ॥

यह मारग प्रकृति का कभी न मुक्ती होय।
इससे यह संक्षेप सो बरन सुनायो सोय॥

चौपाई ॥

तुम प्रसिद्ध देखिलो भाई। सतो सुभाव लक्ष्मी गाई॥
उनकी पूजा शुद्ध कहावै। हींसादिक कछु हीन न पावै॥
उसी शक्ति का रूप भवानी। काली नाम तमोगुण जानी॥
राक्षस दुष्ट किये जिन नाशा। धरा तमोगुण रूप प्रकाशा॥
उत्तम पुरष समय आधीना। क्रोध भरा न करै यकीना॥
समय देखिनहिंमिलनाचहिये। उत्तम काम नउनको कहिये॥
उसी समय की भक्ति न कीजै। छोट भाग सोचित धरिलीजै॥
शुद्ध सतोगुण रूप कुड़ाई। तमोरूप से प्रीति बढ़ाई॥
शुभ पूजा शुभ कर्म त्यागे। अशुभ कर्म पूजाविच लागे॥
अशुद्ध कर्म धर्म न कोसाधें। शास्त्रबेद रीति तज आंधे॥
नास्तिक मतयह कहिये भाई। करता जगको कहै नगाई॥
जगत आपही उतपति होई। आपइ नास कहै पुनि सोई॥

दोहा ॥

चारि तत्व जहां मिलि गये बनता कछू अकार।
जीव जंतु वा आदमी तत्वों का ब्यौहार॥

चौपाई ॥

बाती तेल दिया अरु भाई। अगिनी चारों एक मिलाई॥
चारों एक होय अस्थाना। दीपक तुरत प्रकासक राना॥
चारितत्व यों मेलिमिलाना। चेतन्यता उत्पन्न बखाना॥
सर्व परपंच बनायो भाई। दूसर कोइ न करता आई॥
तत्वोंको करता कहै सोई। जगको करता और नकोई॥
तत्व मेल जब होता आई। चेतन्यता प्रगट होजाई॥
वाहीको सब जीव बखानैं। चारतत्व रचना सब ठानैं॥
अब देखौ तत्वैन को भाई। नास्तिक ने करता ठहराई॥

तत्वों के अनुसार सो जानौ। चारोंमिलि एकरूप बखानौ॥
देखो जोकुछ काम कहाये। ईश्वर मैं सबने कहि गाये॥
नास्तिक तत्व चारिमैं भाखै। करता चारितत्व कोआखै॥
जो कोइ करता नाहीं भाई। उतपति यों नहीं होतीआई॥
बिना किसी कारन के जोई। उतपति आप आपसै होई॥
नेम न ऐसा चहिये भाई। जो कुछ ईश्वर रचा बनाई॥
एक आदिमी सौगज केरा। दूसर भयो पाचगज फेरा॥
नैनएक के सिरपर चहिये। दूजेके चरनो बिच लहिये॥

दोहा॥

लाख बरष की आरबल एक कहू की होय।
एक जीय दो चार दिन नेमन या में कोय॥

छन्द द्वैया॥

उत्पति में यह बात न भाई इस्से यही बिचारे।
उत्पति करी बिचार किसी ने भये इरादा वारे॥
नास्तिक नें तत्वों कौ माना येई इरादा करते।
करता चारि इन्होंने माने तत्व चारि बिस्तरते॥
चारि तत्व का मिलना भाई सक्ति पाँच भीगाई।
ऐसे भये सपूत जिनौने करता पांच कराई॥
हे अनादि ब्रत्तमान देखियत स्वीकार भी मानै।
फिर नास्तिक बनते हे मूरख अपना भेद न जानै॥
मारग बाम नास्तिक के मत आप कहा समझाये।
वृथा काल बितीत भया यह हाथ कछु नहीं आये॥
महाराज संदेह बड़ा हे बेद शास्त्रन माही।
शास्त्रों का आसे तो एकी आत्म बिखै लखाहीं॥
यह बेदांत शास्त्र हे भाई कीन्हा ब्यास बखानै।
ईश्वर के अवतार ब्यास जी सब मतवाले मानै॥
और दूसरे शास्त्र भाई जुयान जोगी गाये।
दूध सार बेदांत निकास्यो छाछि जगत भरमाये॥

हाड़ी दूध दही अरु लकड़ी सर्व समिग्री जोरे ।
माखनसार निकासिलिया जबसर्ब जग तन भयेकोरे ॥
शास्त्र तौ बेदांत दूध है घोर शास्त्र सब रस्सी ॥
मथ्यौ दूध ब्रह्म ज्ञाननिकास्यौ छाछिजगतबिचपरसी ।

दोहा ॥

बुद्धि इन्द्रीया आदि सबद्वैति भयो जब नास ।
बिन्द्राबन जो रहि गया सो है ब्रह्म प्रकास ॥

चौपाई ॥

अब महाराजकृपाकरिकहिये । सुप्न सृष्टिजगएकलखाइये ॥
सुप्न जगत में भेद बहूता । सुप्नपदारथमिलेनहिंसूता ॥
जाग्रति काल वस्तु जो होई । दूसरजाग्रति मिलतीसोई ॥
सुप्न पदार्थ एक न पावै । दूसर सुप्न औरही आवै ॥
सुप्न सृष्टि जाग्रति त्यौ एकी । किसप्रकारलखिसकैबिबेकी ॥
परमहंस ने कहा बुझाई देखो सुप्न सृष्टि प्रभताई ॥
जैसै सुपनै एकहि काला । आपहि बनता देखन बाला ॥
सर्व समिग्री पेदा लिखता । सुपनमाहि सबउसेदिखता ॥
यह समिग्री पहली होई । कलघी वही आज है सोई ॥
सैन माहि जुग बर्ख महीनै । दिनअरुपहरघड़ीपलचीन्है ॥
इसी प्रकार अबिद्यौ जानौ । कारन एक काल करमानौ ॥
जाग्रति जीव प्रपंच बनाया । खेल अबिद्या यह उपजाया ॥

दोहा ॥

ऐसा मालुम होत है यह कलिका सामान ।
अंस अबिद्या सतोगुन होवे रूप ज्ञान ॥

चौपाई ॥

अंस तमोगुण घटको रूपा । दोनौ एकै काल अनूपा ॥
पैदा दोनौ एकही काला । सतोतमो गुण अंस बिसाला ॥
मुख्य वेद सिद्धांत बखाना । इसभेद बिदित सब जाना ॥
कलि पदार्थ रहे जुभाई । आज नहीं सो देत दिखाई ॥

पैदा नष्ट और ही होई। लक्षन यही अविद्या सोई॥
जे अन लखे पदारथ भाई। देखि पड़े सब वैसेइ आई॥
काल समय हर वस्तु अनेका। दीखि पड़े सच सब लेका॥
सबै अनिर बचना पहि चानौ। यामै कछू न संसय मानौ॥
जोतुम कहोकि जाग्रत केरा। घड़ा कुलाल दंड महि हेरा॥
सुपन अविद्या घड़ा बनावै। सब समिग्री सुप्न दिखावै॥
चक्र कुलाल दंड सब भाई। सुपन माहि घटयही बनाई॥
जोघट राचि सुपन में पाया। तुमनै मोल लिया तब आया॥

दोहा॥

गये दुकान कुम्हार की घटका दीना मोल।
घड़ा बनाते लखा तुम चक्र दंड घट तोल॥

चौपाई॥

वास्तव मै कोइ हता न भाई। है परपंच सों देत दिखाई॥
केवलि तुमरी फुरना होई। सर्व पदारथ रचती सोई॥
जब अस्फुरना होइ सो भाई। बर्तमान जग देत दिखाई॥
जब फुरना नहिं तुमरी होवै। जग जाग्रति नहीं कछु जोवै॥
सुपन मे अस फुरना भाई। जगत सम्पू रन सन्मुखपाई॥
सुखुप्ति मै फुरना नही होवै। जगत सुप्न कापतान जोवै॥
तुमरी वृति जहां को धावै। सोइपदारथ प्रगट दिखावै॥
वृति ध्यान नहिं गया तुम्हारा। क्यागुमान कछु वस्तुनसारा॥
जह तुमनहीं वहां कछुनाही। तुमको तों अनुभआसदाही॥
तुम अपने विचार करि माना। किसीवस्तु कोध्यानकराना॥
तब उसका होना सो भासै। वृत्तिध्यान बिननही प्रकासै॥
जब तुमरी वृति वस्तू एका। ग्रहनकरैनही होयविवेका॥

दोहा॥

जग फुरना के साथ मे उत्पन्न होता मीत।
कलका नही बिचारिये नदी प्रबाहल खीत॥

चौपाई ॥

दीपक नदी प्रभाव सो जानो। जिसजिससमय देखिसोमानौ॥
उस उस समय दीपकी जोती। पल छिन रूपन बीनै होती॥
ऐसे नीर नदी का जानौ। छिनपलनीरनबीनसोमानौ॥
दिष्टी सृष्टि बाद यह भाई। जगत अनित्य प्रवाह सदाई॥
हे महराज समुझ अब मेरी। भई और कुछ दई सुकेरी॥
चरचा आप कही जो ऐसी। दर्पन सम दीखे जस तैसी॥
शब्द बिला वाल है परमानै। गुरनानकयहभांति बखानै॥

सब्द ॥

अतुल क्यौं तुलीया जाय। दूजा होय तौ सोभी पाय॥
तिस दूजा नाही कोय। तिसदी की मतिका कौहोय॥
गुर प्रसाद बसै मन आय। ताके जानै दुविधा जाय॥

रहाव ॥

आप सराफ कसोटी लाये। आपहि परखै आपच लाये॥
आपहि तोले पूरा होय। आपहि जानै साचा सोय॥
माया का रूप समति सै होय। जिसनूमेलेसो निरमलहोय॥
जिस नूलाये लागे तिस आय। सबसच्च दिखालेतासच्चसमाय॥
आपलिब धातु है आपहि। आप बुझाये आपहि जापे॥
आपहि सतगुरसब्दहैआपहि। नानक आख सुनायेआपहि॥

दोंहा ॥

महाराज मै आप को बहुत परिश्रम दीन।
बात और दो चारभी कहि दीजे परबीन॥
कह्यो एक अस्थान पै मैहू ब्रह्म बखान।
फेरि दूसरे कहत हो सबही ब्रह्म समान॥
कहि ईश्वर करता कहो कहि माया बिस्तार।
एक खुलासा कीजिये लख्योजाइ तबसार॥

चौपाई ॥

परमहंस बोले सुन भाई। इसकोबिधि निखेद कहि भाई॥

सर्वब्रह्म यहबिधि पहिचानौ । मैह्र ब्रह्म निखेद वखानौ ॥
दोनों एक परोजन भाई । कहू एक दृष्टांत सुनाई ॥
कोइ अस्थान विदितहै भाई । दश मनुष्य बैठे तहां आई ॥
एक आदिमी किया उपावा । नौ मनुष्य को चाह उठावा ॥
तौ हरेक से बोले भाई । तूभी जा तूजा तू जाई ॥
केवलि यहां रहूंगा मैंही । इस कहनेको समुझ लखैही ॥
जोकछु दृष्टि मानहै भाई । सोसब जावै मैंही रहाई ॥
यह निषेद सुखबचन सुनावा । नौ मनुष्य गिनि दये उठावा ॥
आपहि रहै और जो ऐसे । कहिदे ताकि एकहि तैसे ॥
कहिदे ताकि एक रहाई । तौबिधि बचन भयेसुन भाई ॥
इस्वै यह आशय पुनि होई । नो मनुष्य दशमैलय सोई ॥

दोहा ॥

बिधिकर सबजग ब्रह्म है करनिषेद जगजीव ।
दो प्रकारकी कह नसै एकी रहा सो पीव ॥

चौपाई ॥

क्यों महाराज ब्रह्म जगहोई । परमहंस कहैजग भर्म सोई ॥
ज्यौ रस्सीमैं सर्प दिखाना । इस प्रकारजब ब्रह्म समाना ॥
और ब्रह्म सै इस परकारा । जगत नहीं बनता है सारा ॥
जस कुम्हार अरु माटी भाई । घट बनता सोदेत दिखाई ॥
ब्रह्म मांहि जग भर्म सरूपा । आदि अनादि सुब्रह्म अनूपा ॥
हे महाराज आपने भाखा । मायाको करता करि राखा ॥
माया भर्म रूप है सोई । उस्वै जग उत्पति क्यों होई ॥
परमहंस बोले सुन भाई । सूर्य आप प्रकासित आई ॥
अरु सब को प्रकास दिखावै । माया भर्म रूप सोइ गावै ॥
माया आप भर्म है भाई । भर्म रूप कारन कह लाई ॥
तुमै एक दृष्टांत सुनाऊं । मनके सब संदेह मिटाऊं ॥
इसको समझ लेउगे भाई । फिरन तुमै संदेह रहाई ॥
जबकोई बालक घूमै आई । घूमत सर्व मकान दिखाई ॥

दोहा ॥

जो बालक निर बुद्धि है जानत फिरे मकान ।
उसका साचा ज्ञानहै घूमत रहे दिखान ॥

चौपाई ॥

बालक तौ यह जाने भाई । फिरै मकान हवेली आई ॥
तुम मिथ्या या सत्य कहैागे । मिथ्या भ्रमके रूप लहैागे ॥
फिरियोनमकान हवेलीभाई । सो यह ज्ञानअसत्य कहाई ॥
तीनि काल मकानन फिरही । हैअसत्य कोइ चितन धरही ॥
सत्य ज्ञान वह कहिये भाई । ज्ञान ज्ञेय अनुसार रहाई ॥
महल हवेली अस्थिर होई । घूमति देखिपरीपुनि सोई ॥
यहै असत्य ज्ञान भ्रम जानो । भ्रमको कारन घूम सुमानौ ॥
घूम पदारथ कछु न भाई । चंचल बालक खेल कराई ॥
अब दृष्टांत सुनो चितलाई । यह प्रपंच भरम सब गाई ॥
आवा गमन भरम सब जानौ । ब्रह्मविकाररहितथिरमानौ ॥
ब्रह्म माहि परपंच न कोई । अग्यानी परपंच लखोई ॥
माया अरु माया को कारज । दीखे सत्य भ्रम सेा जारज ॥

दोहा ॥

माया को कारज लखै अज्ञानी सेां जान ।
ज्ञानी देखे ज्ञान से भरम रूप पहिचान ॥

बालकफिरित हवेलीजानै । ज्ञानवान घूमनी बखानै ॥
ज्ञानी को निश्चै है भाई । प्रारब्धि आधीन रहाई ॥
देखे सबी प्रपंच निदांना । पर असत्यभ्रम रूपसेा माना ॥
जब तक रहै घुमेरी भाई । तब तक फिरिती देत दिखाई ॥
ज्ञानी की प्रारब्धि रहाई । पहली रची गई सेा पाई ॥
उस अनुसार दीखता सेाई । सत्य पदारथ लखै न कोई ॥
अवयवतात पर्य्य पहिचानौ । माया कार्य भ्रम देाइ मानौ ॥
आभूखण सौने ही रूपा । नाम रूप दो भिन्न सरूपा ॥
ऐसे ब्रह्म जगत है भाई । नाम रूप मिथ्या कहिगाई ॥

जो परपंच भरम सब होई। अंतसकरण भरम पुनि सोई॥
भरम रूप अंतस की वृती। आतम को क्योंकर चित धरती॥
परमहंस कहे देखो भाई। वृति ब्रह्म नहिं देखति आई॥

दोहा॥

देखो वृती को विखे ब्रह्म नहीं कुछ होय।
नहिं देखति सो ब्रह्मको देति अविद्या खोय॥
ब्रह्मको वृत्ति व्यापती कहे बेदांत सुनाय।
भई अविद्या दूरि अब निरमल वृति लखाय॥
केवलि ब्रह्महि रहि गया भई अविद्या नास।
मिट्यो दोस अज्ञान को सूरज ज्ञान प्रकास॥

चौपाई॥

सुनि बेदांत सास्त्र मैं भाई। ईश्वर उपादान कहि गाई॥
कारणनिमितकह्योपुनिईसा। वही रीति है विखै बीसा॥
जैसे घट का कारण भाई। उपादान मृत्तिका कहाई॥
कारणनिमितकुलाल सुजानो। चक्र आदिसब ही पहिचानो॥
इसी प्रकार जगत को भाई। माया उपादान कहिगाई॥
कारननिमितचेतन्यसोजानो। मकड़ीकी गति कछू बखानो॥
जैसे मकड़ी जाल पुरावै। उपादान मकड़ी तन गावै॥
जहाँ से उत्पन जाला कीन्हा। कारणनिमिततांहिकोचीन्हा॥
मकड़ी का चेतन्य सो मानो। कारणनिमिततांहिपहिचानो॥
अब चेतन्य ईस मकड़ीका। प्रथम रहा वह ज्ञान सबीका॥
चेतन्य ईश्वर ज्ञान सरूपा। पृथक नहीं वह सदा अनूपा॥
जगको करता ईस बतावा अज्ञानि दृष्टि मेंगायसुनावा॥

दोहा॥

जगत ईश दोऊ भरम है केवल शुद्ध सरूप।
अज्ञानी को समुझ हित ईश्वर कारन भूप॥

चौपाई॥

जबकि अनाज बोअना होई। खेतमाहिं हर चलता सोई॥

बीज डालकर पानी देवै। करै नराव घास चुनि लेव ॥
रातिदिवसरक्षानितकरहीं। कोई हाथन लावै कबहीं ॥
जब अनाज पकि जावै भाई। मालिक अपने हाथ कटाई ॥
देखो एक दिना वह होई। कितनी रक्षा करता सोई ॥
एक दिना काटत है आपै। गिनै न कछु पुन्य अरु पापै ॥
इस प्रकार अज्ञान सेा भाई। ईश्वर महिमासत्य लखाई ॥
बड़ीबड़ीमहिमाकहि गाई। पालक रक्षा करत सदाई ॥
जभी ज्ञानका भया प्रकासा। माया रूप असत्य सेा भाषा ॥
मायाकी वह दशाबिचारी। पकेनाज सम काटि निवारी ॥
चेतन्य माच निरंतर होई। और न दूजा रहता कोई ॥
और एक दृष्टांत सुनाऊं। तेरे मन के भर्म नसाऊं ॥

दोहा ॥

रोग दूरिहो करनको बेद्य जो देत जुलाब।
महिमा करै जुलाबकी इससे रोग नसाव ॥

चौपाई ॥

अंत माहि जुल्लाबहि भाई। दूरिहि करना परत सुजाई ॥
अस जुल्लाब पेटमें रहई। तौवह दुख काहे तू अहई ॥
इमि वैद्य जुलाब निकारै। करै निरोग रोग सब टारै ॥
इस प्रकार पहले सुनि भाई। ईश्वर सत्य कहै सुखदाई ॥
दुख सब दूरि करत है जानौ। ज्ञान भये ईश्वर अलगानौ ॥
यहभी भूल जाइयो भाई। मैंहू ब्रह्म कहै यों गाई ॥
या सब ब्रह्म रूप कहि गावै। निर्विकल्प समाधि कहावै ॥
जबतक देह रहत है भाई। ज्ञानी का प्रारब्ध कहाई ॥

सोरठा ॥

ज्ञानीका उत्थान प्रारब्धि के वेग से।
हेतुयही पहिचान अप गामी जीवहै ॥

दोहा ॥

बुद्धि ब्रह्मकी तरफ को पहले जाती मीत।
जीव मिले कूटस्थ संग होत एकता नीत ॥

बुद्धी फिर लोटाय कर लाती है सो जान।
जीव मिला कूटस्थ में भेदा भेदन मान॥

चौपाई॥

सुनो एकवह समुझ विचारी। कर्म बोध श्रुतिनै विस्तारी॥
क्रिया सिद्धि ब्रह्मको करहीं। संशय गत प्रमान सु अहही॥
ब्रह्म जगत का कारण होई। या प्रधान कहत है सोई॥
परमेय गत संसय कहै भाई। जग कारण परधान लखाई॥

दोहा॥

ब्रह्म स्वत: सिद्धि कहे वृथा आदिजो जान।
जाना जाय प्रमान गत असम्भावन मान॥

छंदहैथा॥

ब्रह्मस्वते सिद्धि होने करिके श्रुति ब्रह्मको गावे।
प्रति पादन विषये निष्फलता श्रुतिकर्म बतलावे॥
गत प्रमाण कहेसो निश्चा विपरीत भावना कहिए।
सतगुर रामरूपा रघुनाथ भेद सबन को पहिए॥
षट कारण अरु कारज भाई सदृश रूपही वाले।
दीखे है और जगत ब्रह्मके सदृश्यता नहिं टाले॥
प्रधानादि क जगका कारण ऐसा निश्चय भाई।
गत प्रमेय विपरीति भावना इसका नाम कहाई॥
हे महराज सत्य तुम भाषा भयो एक सन्देहा।
जग तेरी फुरनासे कहिए दुख फुरना नहिं येहा॥
दुख फुरना मैंने नहिं कीन्ही फिर दुख क्योंकर आया।
परमहंस ने कहा सुनो अब जगकी फुरना पाया॥
जग फुरना में सबी बस्तु है सुख दुख दोनों होई।
राचीको फुरना जो कीन्हो अंधकार ये होई॥
चंद्र नक्षत्र सभी राति में दुख सुख जगत होई।
जगतेरी असफुरना माही कहे रघुनाथ सुगाई॥

चौपाई ॥

महाराज आपने भाखा । चेतन्य ज्ञान सरूप सुआखा ॥
चेतन्य को जग भासत होई । नहिं तो ज्ञान सरूप न सोई ॥
परमहंस बोले सुनि भाई । चेतन्य ज्ञान सरूप रहाई ॥
जगका ज्ञान नहीं कुछ करता । जगतज्ञानअंतस की विरता ॥
वृति अंतस की सुनि भाई । ज्ञान शक्ति चेतन्य से पाई ॥
जैसे दीपक महल जगाई । आपन देखै नेत्र दिखाई ॥
नेचन को सब देत दिखाई । बिन परकाश शक्तिनहीं भाई ॥
चेतन्य ज्ञान प्रकाश न होवै । अंतसकरण वृति क्या जोवै ॥
जैसे अंधकार में भाई । नेत्रों को नहिं देत दिखाई ॥
दीप प्रकाश होतही भाई । नेत्रों को सब देत दिखाई ॥
जैसे दीपक आपन देखै । दृश्य दिखाइ रूप सब भेखै ॥
दीपक रूप प्रकासित होई । ब्रह्म जगत को दृष्टा सोई ॥

दोहा ॥

कारण ज्ञान सरूप है ज्ञाता दिष्टा जानि ।
ब्रह्म प्रकाशत सर्व मय अंतस ज्ञान लखान ॥

चौपाई ॥

उसकी यही रीति है भाई । गोला लोह गरम कर वाई ॥
अग्नि समान रूप जिन पाया । लगा देह गोले भर साया ॥
गोला की सामर्थ न भाई । देह आदि को देय जलाई ॥
यह सामर्थ अग्नि की जानो । अग्निबिना नहिं देह जरानो ॥
अग्नी जो गोला में भाई । गोल कासो नाम धराई ॥
इसी प्रकार समुझना चहिये । ज्ञाता पन वृती में लहिये ॥
आत्मे चेतन्य के सुन भाई । इसे ज्ञाता ब्रह्म कहाई ॥
हे महराज आप जो भाखा । यह अज्ञान असत्य बताखा ॥
इसे यह अज्ञान सो ऐसा । बंध्या पुत्र कहै पुनि जैसा ॥
लड़िके को संतान न होई । वास्तव आपसमें नहिं कोई ॥
ऐसेही अज्ञान कहाई । रचना क्योंकर करी बनाई ॥

कछू वस्तु अज्ञान न होई। जगरचना चहियेनहिंसोई ॥
आप कहा सुखमूल के माहीं। जगतबाध्य बतलाया सांही ॥
अन्धे कौभी जगत न भासै। जगतबाध्यनहिंसिद्धिप्रकासै ॥

दोहा ॥

परमहंस ने कहा मुनि सत्य जो नहिं परपंच।
बंध्या सुत अज्ञान है ज्ञान दृष्टि नहिं संच ॥

चौपाई ॥

बंध्या सुत जो दीखै भाई। उसके भी संतान रहाई ॥
जो बंध्या कौ पुत्र न कोई। तो संतान कभी नहिं होई ॥
हमरा यही परोजन जानौ। अज्ञानी बंध्या सुत मानौ ॥
करै चिंतवन निस दिन भाई। सो उसके सन्तान दिखाई ॥
जग अज्ञान सत्य कर मानै। ज्ञानवान मिथ्या दोउ जानै ॥
अन्धे विषय कहा तुम जोई। जगत बाध्य ज्ञानी को होई ॥
अज्ञानी की दृष्टी माहीं। जगत सत्यही रहै सदाहीं ॥
जबलग तक ज्ञानीकी देही। जबतक जगत भासता तेही ॥
ज्ञानी का कुछ बिगड़े नाहीं। मृगतृष्णा समभर मलखाहीं ॥
मृगतृष्णा जल देखि सुलीन्हां। यामैं जाइन करै अचीन्हा ॥
मृग तृष्णा जल भासै भाई। ज्ञानी कभी न धोखा खाई ॥
वास्तव में जब कछू न जानौ। चमत्कारेतकरनीर दिखानौ ॥

दोहा ॥

पहले कहा को आपने ज्ञानी के सब कर्म।
संचित है सो जरि गये प्रारब्धी के धर्म ॥

चौपाई ॥

प्रारब्धि कहि हेतु रहाई। क्यौंनहिं कर्मजरे कहेगाई ॥
प्रारब्धि के कर्म नसाता। लगता अभव तुरत होजाता ॥
कछु एक दृष्टांत सुनाई। इसी प्रकार समुझिये भाई ॥
एक मनुष्य ने मदिरा भाई। एक गिलास पिया पुनिधाई ॥
और एक बोतल उसपासा। दृष्टिकरत कीसत्ति सुनासा ॥

यो ज्ञई मदरा जो भाई। वह तोनसा अवश्य कराई॥
यों प्रारब्धि दूरि नहिं होई। दुख सुख देह भोगता सोई॥
महाराज ज्ञानी के ताईं। कर्माधीन जगत सुख पाई॥
प्राप्ति ज्ञये भोग कर्मन ते। भोग न लगान जीवन मुकते॥
जीवन मुक्ति सुखन कौत्यागा। जगत सुख मान्यौ अनुरागा॥
ज्ञानी भोग करै यों भाई। बिदेह मोक्ष कात्याग कराई॥

दोहा॥

देह पात के होतही जीव पुरुष का जोय।
भई लीन आकास मे निचै मानो सोय॥
यह परपंच एक भरम था सर्प रजु मे मान।
बिन्द्राबन रजु ज्ञान ते सर्प लीन नभ जान॥

चौपाई॥

देह बियोग भये पर भाई। ज्ञानी सत्त चेतन्य समाई॥
अंतस चेतन्य मांहि अभावै। प्रारब्धि बन्धन मिटि जावै॥
मूल अबिद्या भई अभावा। रजू ज्ञान से सर्प नसावा॥
रस्सी में जो सर्प दिखाना। रजू ज्ञान नभ सर्प समाना॥
ढूंढ़ै सर्प नहीं कछु पावै। मूल अबिद्या सहत नसावै॥
ज्ञानी भोग करै जो भाई। सत्य न समझै भोग कराई॥
इसे जीवन मुक्ति न त्यागै। अधिक सुख जगमेंनहिं पागै॥

दोहा॥

ज्ञानी जीवन मुक्त है जग दुख सुख नहि कोय।
प्रारब्धि का भोग तन आप अकर्ता सोय॥

इति श्री चतुर्थो विश्राम सम्पूर्ण॥*॥

चौपाई॥

महाराज एक संत्त आया। बेद जक्त उत्पति कहि गाया॥
कइप्रकारसे उत्पति भाखी। समुझि नआवै कहौ सेसाखी॥
एक बेद कइ भांति बखानै। रचना भिन्न भिन्न कर ठानै॥

परमहंस कहै सुनौ पियारे । मिथ्या यह परपंच बिचारे ॥
झूआ नहीं अनझूआ दिखावै । वस्तु असत्य जन्म कह पावै ॥

दोहा ॥

माया की रचना सभी माया सत्य न जान ।
कही अनिर बचनी यह इससे बेद प्रमान ॥

बेद उचित जहां जैसा देखा । वही कहा दृतांत बिसेखा ॥
रचना सत्य होय जो भाई । एक प्रकार कहै सब गाइ ॥
सबमत बिषय बिरुद्ध बखानै । उतपति और औरही ठानै ॥
जैसा जिसकी बुधि समाया । बैसाई लिखि गाय सुनाया ॥
और पचास मनुष्य न भाई । मनौ राज की सृष्टि बनाई ॥
यह भी सत्य सत्य सब कहई । उत्पति सृष्टि आपनी अहई ॥
जस जस कही सही सब जानो । बास्तव सत्य एक नहिं मानो ॥
जिन पचास कौ किया दृतंता । सबको भरम झूआ यहमंता ॥
ना कुछ उत्पति नास कराई । चितन्य पहले एक रहाई ॥
अब पीछै ईस्वर एक रहिया । बीचमाहिंईस्वरसोईकहिया ॥
आदि अंतमधिछू के मांही । चेतन्य एकभरमजगछांही ॥
मद्धि मांहि कुछ औरे होई । अंतमांहि कस ईस्वर सोई ॥

दोहा ॥

जैसे दूध दही हुआ तहूण सो दृष्टु बिचार ।
दही दूध नहिं होसके दृष्टुन तरण सम्हार ॥

चौपाई ॥

जैसे दूध सत्य है भाई । वैसे दही सत्य करि गाई ॥
जो तुम ऐसी माननि मानौ । जग ईस्वर से पृथक बखानौ ॥
अब जो ईस्वर थिर है भाई । वैसेई जग थिरहि रहाई ॥
जो यह जगत ईस नहिं होई । तौ परपंच सत्यही सोई ॥
सब छोटे बड़ मते बिचारो । ईस्वरसेंजग निस्वरसारो ॥
जो दीखै सो होइ है नासा । नासवान सब भरम खुलासा ॥
इससै यह निस्चै कर जाना । जग से भिन्न न ईस्वर माना ॥

बस्तु दूसरी को इन भाई। ईश्वर से जो भिन्न रहाई ॥
ईश्वर एथक भरमसे जाना। ब्रह्म सम्पूर्ण जगत बखाना ॥
चेतन्य कछु और नहीं होई। चेतन्य ब्रह्मन कहीयेदोई ॥
जो ऐसा कहते हैं गाई। ईस सून्यते रचता भाई ॥
सून्य कोई अस्थान कहावै। ईश्वर तहां वर्तमान रहावै ॥

सोरठा ॥

ईश्वर का अस्थान सून्य मांहि नहीं हो सके।
एक ईश्वर एक सून्य दोहोना साबित नहीं ॥

चौपाई ॥

एक सून्य एक ईश्वर भाई। जुग्या होय तौ एक नगाई ॥
जोकि सून्य अस्थान नहीं है। तौ ईश्वर सरवज कहीहै ॥
फिरईश्वरउत्पति कससकरता। बिना ईसको जग बिस्तरता ॥
महाराज सत्य है सोई। आप कहौ सो छपा न होई ॥
जब केवल ईश्वर था एकी। उसीसमय यहजगत नदेषो ॥
कोइकोइमतवाले असकहिया। ईश शक्ति से जग सब भइया ॥
सब उत्पति का शक्ति मुलूल। शक्ति कहांसे भई अतूला ॥
शक्ती शक्ति मान में कहिये ॥ शक्ति वान से भिन्न न पइये ॥
जो कुछ शक्ती मेसे आया। शक्ति वानसे भिन्न नपाया ॥
शक्तिवान के बलि एक होई। शक्ती शक्ति वान बिच सोई ॥
जोकुछ उत्पति शक्ती कीन्हा। सक्तिवान से भिन्न नचीन्हा ॥
शक्तीमान ब्रह्म एक होई। सो साक्षात प्रकासत सोई ॥
परमहंस बोले सुन भाई। नैनू कापड़ा बूटो सोहाई ॥

दोहा ॥

नैनू का कपड़ा लखो बूटा बेलि कढ़ाय।
कपड़े से नहिं एथक है चेत एथक दरसाय ॥

चौपाई ॥

पत्थर मैं मूरति जो भाई। अज्ञानी को एथक दिखाई ॥
वास्तव में पत्थरही जानो। कापड़ा बूटा बेलि बखानो ॥

हे महाराज सत्य है सोई। जगत भ्रम चेतन्य एक होई॥
व्यापक एकै ब्रह्म कहावै। अंतस करण भास कस आवै॥
अंतसकरण ब्रह्म जो जानौ। व्यापक ब्रह्म न होय समानौ॥
एक अस्थान वस्तु है दोई। व्यापक एक न कहिये सोई॥
परमहंस कहे सुनौ सयानै। माया अंतसकरण बखानै॥
माया को कार्य्य भ्रम होई। अंतस माया कारय सोई॥
सर्परजू एक समय सो भाई। एक अस्थान मिलै पुनि आई॥
सर्प दीखता रजू न आवै। रस्सी वर्तमान ही पावै॥
इहे भरम दसा में भाई। एक अस्थान दो वस्तु लखाई॥
व्यापक सब आकाश सुजानौ। जल में भास सरूप दिखानौ॥

दोहा॥

व्यापक सर्व आकाश है जलमें रूप दिखाय।
ब्रह्म प्रकाश अभास जो अंतसकरण लखाय॥

चौपाई॥

महाराज अब एक सुनइये। मुक्ति गये बैकुंठै पइये॥
बहुत मनुष्य कहै यह बाता। मुक्ति भये बैकुंठहि पाता॥
बिना ब्रह्म देखै क्या होई। ब्रह्म भया मानै कस सोई॥
उनको कही है दसा बिचारी। परमहंस कहैं सुनचितधारी॥
जिन उपासना कीन्ही पूरी। निस्संदेह फल पावै भूरी॥
कल्पित वे बैकुंठहि भोगे। जन्म मरन का मिटै न रोगे॥
जैसे जाग्रत में सुन भाई। जिस वस्तू में ध्यान रहाई॥
वह सुपनै में प्रापति होई। या में कुछ सन्देह न सोई॥
गीता में भगवान बखाना। छिन्न पुन्य मृत लोक समाना॥
फिर भी जन्म धराना होई। आवागवन मिटा नहिं सोई॥
जो बैकुंठ महि भी जावै। वहां भी दुःख सुख सब वै॥
अपने अपने है अधिकारा। बैठन को अस्थान सहारा॥

दोहा॥

कोई समीप भगवान के कोइ कोइ दूरि रहाय।
एक एक को देखि धरे जन्म फिरि आय॥

चौपाई ॥

इस जगमे सुख अधिक कहावै । विषानन्द मन साथ रहावै ॥
मय बैकुंठ पदार्थ होई । सिर ऊपर मन बोझा सोई ॥
आवागमन मिट्यो नहीं भाई । अंतकाल फिर धक्के खाई ॥
पर मनुष्य को समुझ अनेरी । असत्यअसलसमुझिनहिंहेरी ॥
बेद शास्त्र पुरान बखानै । है बैकुंठ प्रसंसा ठानै ॥
फिर गीता अरु बेद पुराना । पुन्य दान निस्काम बषाना ॥
जो सुभकर्म करो तुम भाई । हरिहि समर्पण कीजै जाई ॥
इसका यही परोजन जानौ । मन सुद्धी हित कर्म बषानौ ॥
जो बैकुंठ दिवायो चहिये । त्यौ अर्पण क्यों कर्म करइये ॥
इयै साफ विदित हैं भाई । यो भगवान बेद यह गाई ॥
लोग करै सुभकर्म बनाई । लोभ दयो बैकुंठ लषाई ॥
कर्म मोहि जो अर्पन करई । तौ मन के मल संसै हरई ॥

दोहा ॥

कर्म करै निस कामना हरि अर्पण करि देय ।
अंतस मन सुद्धी लहै ज्ञान पदारथ लेये ॥

चौपाई ॥

हरि के अर्पण कर्म जु करही । मनसुधोफलज्ञानहि लहही ॥
मुक्ति हेतु सुभकर्म बषानै । जीव मुक्ति बैकुंठहि मानै ॥
बेडी लोह काटि जिन डारी । सोना लोक गलेबिच धारी ॥
भूत प्रेत आदिक जो मानै । तिनसै अच्छे सुध बषानै ॥
पूजै भूत प्रेत मसाना । भक्तिजानितिनमैं उरझाना ॥
जग के सुख सुख करि मानै । निजसुखका कुछ भेद नजानै ॥
सर्ब वस्तु मैं रहा समाई । अस्तो भांति प्रीय लखाई ॥
है प्यारा सब का हित जानो । नाम रूप माया कृत मानो ॥
नासवान माया कृत होई । प्रीये रूप को नास न कोई ॥
अस्तो भांति प्रीय सबकाला । बर्तमान पल छिन दरहाला ॥
जैसे आटा मालूम होई । प्यारा सेत दीखियत सोई ॥

नाम रूप रोटी बनि पाया। आटे का सब रूप गमाया॥

दोहा॥

ज्यों रोटी के बनतही आटा रूप नशाय।
अस्ती भांती प्रिय एक वर्तमान सो लखाय॥

चौपाई॥

जब तक ब्रह्म ज्ञान नहिं भाई। तबतकजियुटोजगतरहाई॥
ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय ये तीनों। बनैरहै दिष्टा सो चीन्हों॥
जब तक वस्तु होयगी जौलौ। देखन हार रहैगा तौलौ॥
अरू देखना रहैगा भाई। तबतकमोक्षकभीनहिंपाई॥
अतिसैप्यारा जब मिलि जावै। इच्छा यही येक होजावै॥
उसी समय इच्छा यह होई। मैं वह येक रूप रहु सोई॥
वस्तु बहुत अच्छी कोइ होई। पेट मांहि रखि लीजै सोई॥
इसे अनन्द असन सो भाई। एक होय द्वैता बिसराई॥
ईश्वर के समीप हूजावै। लाभ क्या बैकुंठहि पावै॥
फिर तुम यह भी कहते भाई। ईश्वर इच्छा जोर न काई॥
मालिक भला बुरा जो करई। करि अज्ञा सिर ऊपर धरई॥
तुम अपने को सदा सुभाई। अपराधी समझत हो आई॥

दोहा॥

ईश्वर के सन्मुख भये कीया कोई अपराध।
इच्छा भई इस की दुख सुख दीन्हें बाध॥

छन्द हैया॥

तुम अपराध नहीं भी कीन्हा ईश्वर इच्छा भाई।
इच्छा के अनुपार भोग सब कहो मुक्ति क्या पाई॥
तुमको तो यह भी नहीं निश्चय स्वर्ग कर्म से पावे।
धोखे में नहिं इधर उधरके नाम कहो क्या आवे॥
दावा करो ईश से कोई तो अपराध बधाय।
ईश्वर की इच्छा में तुमने दखल दिया फल पाये॥

इससे अधिक गुप्तही भेदा तुमही अमअब जानो।
निश्चय नहीं एक बस्तु का कपट कर्म लपटानो॥
अरु जो तुमने कहा कि भाई बिना ब्रह्म के देखे।
निश्चय कैसे होई ब्रह्म का स्वरग आदि तुम पेखे॥
अह बैकुंठ देखि तुम आये ताको निश्चय कीन्हों।
कहो कि बेद शास्त्रमें भाषा तब स्वर्गादिक चीन्हों॥
ब्रह्म ज्ञान क्या बेदन कहते शास्त्र भेद न देखे।
बड़े बड़े सब ब्रह्म ज्ञान को अवतारादिक सेवे॥
जरा ध्यान से देखो सुख दुख वृद्धि आदि में होई।
नहीं देखा निश्चय का लाते बिन देखे भरम मोई॥
जो बस्तु देखी नहिं भाई किस प्रकार तुम जानो।
इन नैनों से ब्रह्म न दीखे ततपर हो पहिचानो॥
सर्वन मनन करो निध्यासन आपहि ब्रह्म लखोगे।
बेद शास्त्र अरु संत बखाने सो मुनि आप तकोगे॥
महा बाक्य जो बेद बखाने ताका भेद बताऊं।
चारि बेद के चारि बाक्य हैं एकै रूप लखाऊं॥
अहं ब्रह्म अस्मी जो भाई तत्वं मसी बखाने।
प्रज्ञानंद बेद की श्रुती सुनो भेद पहिचाने॥

श्रुती॥

ओं सत्यंज्ञानमनन्तब्रह्मनेहनानास्तिकिंचनः। सर्वंखल्वदंब्रह्मोति

दोहा॥

उत्तर मिमांसा साख्य भाई यह भी है या नाहीं।
यह तो बेद और साख की दई गवाही माहीं॥
अब गुरु नानक बचन उचारे और सन्त भी गावै।
सब सन्तन की साखि बिचारो येकै रूप लखावै॥

गुरु के बचन॥

निरंकार आकार आप निर्गुण सरगुण येक।
ये कहि येक बखानो नानक येक अनेक॥

आपै आप आप उपाया। आपहि बाप आपही माया॥ आपहि सूक्ष्म आपहि स्थूला। लखी न जाइ नानक लीला॥ जिन्ह आप रच्यो परपंच अकार। तिहुगुणमैं कीन्हों विस्तार॥ पाप पुन्य तहि भई कहावत। कोउ नर्क कोउ स्वर्ग बछावत आस जाल माया जंजाल। हे मैं मोह भरम भय भार॥ दुख सुख मान अपमान। अनेक प्रकार किये बख्यान॥ आपन खेल आप करि देखै। खेल संकोचै नानक एकै॥

कबीर बचन—साधो हरिमें हरिको देखा॥

टेक—आपहि माली आप बगीचा आपहि सींचन हारा। आपहि कली आपही फूला आपहि सूंघन हारा॥ आपहि दुनिया आपहि दौलत आपहि माल खजाना। आपहि लूटै और लुटावे हाथ लिये एक प्याला॥ कहै कबीर सुनो भाई साधो घटही में ठाकुर द्वारा॥

दोहा॥

कबीर जिसको खोजते पायो सोई ठौर।
सोई फिरकर तू भया जिस को कहता और॥
कबीर कृत्ता पूछे बीजको बीज कृत्त के मांहि।
जीव जो टूटे ब्रह्म को ब्रह्म जीव के मांहि॥
कबीर आदिहुती सब आपमे सकल हतीता मांहि।
ज्यों तरवर के बीज में डार पात फल छांह॥
हेरत हेरत हेरिया रहा कबीर हिराय।
बुंद समानी समुद्र में सो कित हेरी जाय॥

चौपाई॥

सत लोक की अकह कहानी। सोनिज सतगुरु है सहदानी॥ रूपवरन जहंवहां नहिं देसा। तीन लोक अचरज सो भेसा॥ नहीं तहां पांचतत्त्वकीकाया। सत्य पुरुष आपहि निरमाया॥

दोहा॥

बुंद समानी समुद्र में यह जाने सब कोय।
समुद्र समाना बुंद में बूझै बिरला कोय॥

पलटू दास जीके बचन ॥

शब्द——जगन्नाथ जगदीश जग में व्यापि रहा ॥

टेक—चारि खानि मै लख चौरासी और न कोई दूजा।
आपहि ठाकुर आपहि सेवक करत आपनी पूजा॥
आपहि दाता आपहि मगिता आपहि जोगी भोगी।
आपहि बिस्व आपहि बिसुनी आपहि बैद आपहि रोगी॥
आपहि ब्रह्मा बिष्णु महेस्वर सुरनर मुनि ह्वै आया।
आपहि कारण आपहि कारज बिस्व रूप दरसाया॥
पलटू दास दिद्रिष्टि जब आवै संत करै जब दाया॥

तुलसी दास के बचन ॥

सोरठा ॥

हम पीया पिया हम एक लखि बिबेक संतन कही।
भई अगम रस भेव देषा दिग पिया एक ह्वै॥

दोहा ॥

हमरा सकल पसार वार पार हम ही कही।
सन्त चरन की लार आदि अंत तुलसी भई॥

राग बसंत ॥

मति भर्मे रे घर मे दीदार टुक आंख खोल गाफिल बिसार॥

टेक—ब्यापक सब मैं अखंडय ब्रह्म छाड़ि भटक दुनिया कौ भर्म।
जुग जुग भ्रमत कर बिचार सुरत नयन नित सत सुधार॥
बन भुलान घर बिसर बाट ठग संग कीन्हौ घर न घाट।
दिना चार तन को चिन्हार। छूटत तन भुगतत होत हार॥
बूझ समुझ घर खोज रोज। अन्दर मैं मन मारै मोज॥
संग सतगुर कर ले निरधार। भटक भूत सब दे निकास॥
जिन जिन सतगुर सरण लीन। तिन तिन पायौ अगम चीन॥
अगम गंभीर ये कबिधि बिचार। तुही तुही तुलसी वार पार॥

दोहा ॥

वार पार तुलसी लखै पगो चान के मांहि।
छको अगम रस ब्रह्मको थको थीर मन मांहि॥

गुसाईं जी का पद ॥

मै हरि साधन करिय न जानी । जस आमय भेष जस कीन्हा ॥
तस दोष कवन दरवानी ॥

टेक—सपनेहुपकौ ग्रस्यो विप्रवध विकलफिरैअघलागे ।
बाज मेध सत्कोटी करै नहीं सुध होइ बिन जागे ॥
स्वर्ग में सर्प विपुल भय दायक प्रघट होय अविचारे ।
बज्र आयुध घरबल अनेक कर मारहि मरैन हारे ॥
निज भ्रमत कर संभव सागर अति भय उपजावै ।
अब गाहत बोहि तनबका चढिकबज्र कपारन पावै ॥
तुलसी दास जग आप सहत जब लग निर्मूलन जाई ।
जब लग कोट उपाइ करी मरिये तरीये नहिं भाई ॥

दोहा ॥

व्यापक ब्रह्म जो बिरज अज अकुल अनीह अभेद ।
सो कि देह धर होय नर जाहिन जानत बेद ॥

चौपाई ॥

व्यापक ब्रह्म अखंड अनन्ता । अखिल अमोघसक्तिभगवन्ता ॥

दोहा ॥

यथा अनेक रूपधरि नृत्य करै नट कोय ।
सोई सोई भाव दिखावही आपहि होय न सोय ॥

पद ॥

कोई कहै सत्य झूठ कहै कोई जुगल प्रबल कर मानै ।
तुलसीदास पद हरैतीनि भर्म सो आपन पहिचानै ॥

दादू जीने कहा ॥

दोहा ॥

नही तहां ते सब हुआ फिर नाहीं होजाय ।
दादू नाही हो रहो साहब से लौलाय ॥
जब मनहीं सो ब्रह्म है घटे बढ़े नहीं जाय ।
पूरण निश्चल एक रस जगत न नाचे आय ॥

उपजे बिनसे गुण धरे यह माया को रूप।
दादू देखत थिर नहीं छिण छाया छिण धूप॥

जग जीवन दास ने कहा॥

शब्द॥

तुमही घट बोलत डोलत तुमहि तुमहि है करतार। तुमहि खवावत पानी प्यावत मैं मन करी विचार॥ तुमहि ब्रह्मा विष्णु तुमही तुमही जोग पसार तुमही सन्तन के मन मानी है तुम निरगुण निरंकार॥

चौपाई॥

शुभअरु अशुभ कहो सबमांहीं। और दूसरो जानत नाही॥

सवैया॥

स्वामहि स्वाम चले जब आपहि है सो अखंड टरे नहीं टारो।
बाहिर भीतर है भर पूरसु ढूढत कहां है नही न्यारो॥
चरण दास गुर भेद दयो भ्रम दूरि गो थो अति भारो।
दिष्टि अदिष्टि जो राम को देखत राम भयो पुनि देखन हारो॥

बखीने कहा है॥

दरियाव की मौज पर जाइ देखौ। कहांजाना कहा आना है॥ दरियाव में उठना है फेरि दरियाव में समाना है॥ यहां और नहींकुछ करना है। मैंते का भेद मिटावना है॥ दरियाव अद्वैत अखंड बखी नाकुछ खोना है ना कुछ पावना है॥

ग़ज़ल॥

हुबाब की तरह अपने तईं बना के तोड़। तरीक़त में यही तोड़ है खुदा से जोड़॥ बदन के तोड़ेहवा के सिवाना निकलेगा। खुदाकी निकले जो दीजे खुदीका भांड़ा फोड़॥ ताईं उनात के नुक्तों से है कसीर अहद। यही है येक वह दस सो हजार लाख करोड़॥ सनम को पूजै ब्राह्मन धरम को मानै सेख। ये दोनों येक है मान किसे किसे दूं छोड़॥

सिवाय हस्ती हक़ के जो कुछ नजर आवै। यकीन जानो कि देवे खयाल की है खोड़ ॥ अजल से लेके अबदतक वही जोड़ै सोड़ै। बरंगबइरि रवां जिसमें है न तोड़ न जोड़ ॥ अबस है सेर सुखन को यह तोड़ जोड़ नियाज। यश अपने जिक्र की और फिक्र की तरफ़ मुंह मोड़ ॥

सवैया ॥

स्वांस २ राति दिन सोहं २ होय जाप यही माला बारबार हठ केधरत हैं देह परे इन्द्री परे अंत: करण परे येक सो अखण्ड जाप ताप को हरत हैं। काठ सुद्राछ और सूत जनहों की माला इनकेफिराय कोन कारज सरत हैं। सुन्दर कहत येक आत्मा चेतन्यरूप आपको भजन सोतो आपही करत हैं ॥

दूहा ॥

निर संदेह यही महाराजा जीव ब्रह्म येक रूपा।
ज्ञान वान येके कर मानै अज्ञानी भ्रम कूपा ॥
ज्ञानी को जो समुझ अमेटै निज सरूप दरसाये।
अज्ञानी नानत्वं समुझि कर माया भ्रम भुलाये ॥
जगत अन हुआ भासै स्वामी सुपन जिमें बिस्तारा।
येक काल में बाप पूत सब कुल कुटंब रचिडारा ॥
इसी प्रकार जायति जानो जगत सुपन सम होई।
जो ब्योहार जगत बिच दीखे सुपने साच लखोई ॥
सुपने में मकान बनाया राज मजूर लगाये।
राज मजूर परसपरमे सब है सम्बन्ध बधाये ॥
कोई बाप कोई बेटा भाई कोई भतीजा होई।
तात परज यह हरिदेही में भास अनन्त लखोई ॥
येक देह में भास होत है पुच जन्म धर पाये।
देह दूसरी में यह जानत वाका पुच कहाये ॥
बास्तवमें रचना सब येकी छिणक माहि भई सोई।
जब जागे तब भई सर्वलय दृष्ट परत नहि कोई ॥
पर महाराज ब्रह्म है चेतन्य तो चेतन्य रहावे।
किसी पदारथ में चेतन्यता रहे स्वतंच दिखावे ॥

सो वह कहो पदारथ न्यारा चेतन्यता तहि माही ।
परमहंस कहे भेदसुनो अब मिसरी माहि मिठाही ॥
मिसरी से नहिं मीठा न्यारा त्यों चेतन्य सब होई ।
रूप मिठाई मिसरी का सब चेतन्य रूप लषोई ॥
गुण होता है भिन्न गुणीते गुणन गुण का रूपा ।
महाराज तो ब्रह्म कछू नहिं सुन्यही रहा अनूपा ॥

श्लोक ॥

लक्षणप्रमाणभ्यां वस्तु सिद्धिः ॥

दोहा ॥

लक्षण और प्रमाणों करके वस्तु सिद्धि जो होई ।
तुमने सुन्य कौन बिधिजाना नहींजाना कहु सोई ॥
जो जाना तो सुन्य कहाहे नहीं जानातो कैसा ।
तो तुम सुन्य कहत हो कैसे वह जैसे का तैसा ॥
कोई लक्षण प्रमान नहींहे सून्य सिद्धि नहीं होई ।
न्याय सांख्य बेदांत बिषय में भेद कहो क्या सोई ॥
वादा रंभ न्याय का कहिये तिनके जोड़ बटोरे ।
ताकी येक बुहारी बांधी अणु परमान सुजोड़े ॥
व्यणुक अनुक होकर अस्थूला होजाता परमाणं ।
है अनादि अरु जगत आदि है सांख्यवाद प्रमाणं ॥
प्रकृति जगत भाव को प्रापति होजाती है जैसे ।
दूध दही होजाता भाई दही दूध नहिं कहसे ॥
बाद विवर्त कहे वेदांतहि बस्तु न बिगड़ी कोई ।
अन्य रूप प्रतीति भई है कुण्डल सुबरण टोई ॥
सुबरण येक रूपही जानो कुण्ड किरीट बनाये ।
यों अकार रूप है सर्वं ब्रह्म सुद्ध कहि गाये ॥
है परिणाम रूप परतीता लक्षण सुनो विवर्ते ।
उपादान से तो भिन्न सत्ता अन्य रूप सो धरते ॥
यह लक्षण परिणाम कहाहे उपादान अरु कारज ।
सत्ता होवे येक औरही रूप अन्य हो कारज ॥

उपादान अरु कारज की एक सत्ता होवै भाई।
उपादान से रूप अन्य है और देखि जग आई॥
जगत ब्रह्म अज्ञात हुये से भासत जब तक जानो।
ब्रह्म ज्ञान नहीं होगा जबतक मूला ज्ञानसुमानो॥
रस्सी के अज्ञान भये से सर्प भासता भाई।
जब रस्सी का ज्ञान यथारथ सर्प अभाव कराई॥
अरु देषो एक केवल ब्रह्महि भेदस जाति न होये।
और बिजाती सुक्त भेदसे ब्रह्म सुरहत लषोये॥
भेद सहित है यह परपंचे कहे सजाती बासे।
होय समान दूसरा कोई घटके ढिग घट जासे॥
कहे बिजाती उसको भाई बस्तु दूसरी होये।
घटअरु पट यह भेद बिजाती सक्त सूचपट सोये॥

दोहा॥

भाया का बिस्तार सब अनिर बाच्य तू जान।
ब्रह्म सदा है एक रस बिन्द्राबन सो मान॥

चौपाई॥

हे महाराज आप को ज्ञाना। सत्य कहा सो सब मैं जाना॥
पर उपासना के सम नाहीं। मैंगणपतिसुमिरतमनमाहीं॥
मैं उपासना बरनन करहूं। इसको कसै षण्ड न करहूं॥

दोहा॥

हरि गुर सन्त अनुग्रह दया साध की होय।
बिन्द्राबन सतसंग मणि अलष लषायो सोय॥

श्लोक॥

भक्त्याहमेकयाग्राह्यः श्रद्धयात्माप्रियस्सताम्॥
भक्तिःपुनातिमन्निष्ठ श्वपाकानपिसंभवान॥ १॥

चौपाई॥

मैं एक श्रद्धा भक्ति सहाई। भक्ति अन्न मिलों तेहि आई॥
मेरी भक्ति सुपच्छ पावै। होय शुद्ध मम लोक सिधावै॥

कपिल भगवानोवाच ॥

श्लोक ॥

नष्यु ज्यमानयभक्त्या भगवत्यखिलात्मनि ।
सदृशोस्तिशिवःपन्था योगिनाँब्रह्मसिद्धय ॥ २ ॥

अर्थ—चौपाई ॥

जोगिनको ब्रह्मऋधिसुहोई । भगवति भक्ति तुली नहिकोई ॥
कोइ मारग कल्यान न जानो । कीर्तन भक्ति प्रसिद्धि बखानो ॥

भगवान के पारषद ने भी कहा है ॥

श्लोक ॥

अज्ञानादथवाज्ञाना दूतमश्लोकनामयतं ॥
संकीर्तितमघंहंति दहेद्धंधोयथानलः ॥ ३ ॥

अर्थ—चौपाई ॥

जान अजान नाम हरि गावै । पाप लेस कछु रहन नपावे ॥
जैसे अगिन प्रजुलित होई । करे भस्म बन लकड़ी सोई ॥

यमराजो वाच ॥

श्लोक ॥

रातावतालमघनिहरणाय संकीर्तिनंभगवतोगुणकर्मनामनम : ॥
विक्रुश्यपुत्रमघवान्यदजामिलोपि नारायणोतिम्रियमाणयापमुक्तिम् ॥ ४

अर्थ—चौपाई ॥

पाप नास करने को भाई । केवलि भगवति नाम उपाई ॥
अजामिल पापी बड़ भारी । मरण समय सुत नामपुकारी ॥
नाम पुकारत मुक्ति पाई । पुत्र नाम नारायण गाई ॥
कलिकेबलि कीरतन सारा । कलयुग में निजनाम अधारा ॥
औरज्ञ भक्त भये बज्ञ तेरे । महिमा अगम प्रगट हरिहेरे ॥

चौपाई ॥

भये प्रह्लाद भक्त सब जानी । पिता त्रास दीना तेहि ठानी ॥
अतिप्रह्लादटेरकियोजबहीं । खंभ फाड़ हरिप्रगटे तबही ॥
लीन भक्तको तुरत बचाई । ताकी कीरति सब जग छाई ॥

दृढ़ आसा जिन यज्ञ उपजाई। बिन्द्रावन हरि प्रगटे आई॥
दासी सुत नारद रहैं भाई। पूर्व जन्मकी कथा असगाई॥
भक्तनकी सत संगत पाई। बिरह उठी बन चालै भाई॥
बिष्णु देवकी आस लगाई। लगे ध्यान पुनि करने जाई॥
बहुत कालअस जानौ बीता। बिष्णु दयानिधि प्रगटे मीता॥
ध्रुवजी ब्रजमंडल मे आये। बैठे अटल समाधि लगाये॥
बहुत काल असध्यानलगाया। गरुड़ चढ़े आये हरि राया॥
राजा एक मोरध्वज रहिया। प्रेम भक्त में पूरा भइया॥

दोहा॥

भक्ती बस भगवान है भक्तन के रछ पाल।
प्रथम कसोटी सबकी पीछे करत निहाल॥

चौपाई॥

धर्म नीति मरजादा माहीं। बासम नृपति भयो कोइनाहीं॥
एक समय अर्जुन के ताई। भयोअभिमान बहुत मनमाही॥
मोसम भक्तन दूजा कोई। मम बस कृष्ण देवहैं सोई॥
अर्जुनसों भग वान बखाना। मम भक्तनको तू नहिं जाना॥
चले कृष्ण अर्जुन दोउ संगा। नाहर एक साथ लिया चंगा॥
ब्राह्मण रूप धरा भगवाना। अर्जुनको बालक कर आना॥
दोऊ चलि राजा गृह आये। कह्यो हेतु भोजनको धाये॥
राजा कह्यो जो आज्ञा होई। भोजन तुरत मगाऊं सोई॥
हरिबोले सुन मारग माहीं। यह नाहर मोहि घेरो आहीं॥
भोजनको यह भूखा रहिया। मम बालकको मारनचहिया॥
मुझको ले नाहर तू खाई। यह बालक मेरो सुख दाई॥
नाहर कहै बूढ़ तन तोरा। कोमल मास बल भष मोरा॥
मैं कह्यो बाल मोरसुखदाई। बालकको नहीं खावो भाई॥
हम तुम चले मोरध्वजपाहीं। वाकासुततोहि देउदिवाहीं॥
सुत अरु मुझै दोउको खावो। काहेको तुम भूखे जावो॥
राजा कहा देर नहीं कीजै। रानी कहा मुझे भखिलीजे॥

इतने मैं सुतसुनिकर आया । परिकर्मा कर शीस नवाया ॥
नृप सुत कहा दयाबड़कीन्हा । तुम दयाल जो दरसनदीन्हा ॥
यह तन छिनभंगी नसि जाई । फिर काहू के काज न आई ॥
मेरे भाग्य बड़े अधिकाई । तुमरे कारज काया आई ॥
बाघ कहा आधा तन खैहूं । ताते अपनी भूख बुझैहूं ॥
बालक कहा लेउ तुम भाई । जितना चाहौ खावो आई ॥
नाहर कहा नहीं अस खाऊ । क्यों अपने सिरपाप चढ़ाऊ ॥
कह्यो बाल फिर कैसे कीजै । करके दया भेद कहि दीजै ॥
नाहर ने यह बिधि समझाई । आरा सिर पर देउ धराई ॥
मात पिता दोउ खैचै भाई । जुदा बीच सै तन होजाई ॥
ज्यौ आरा सुतसिरप्रधरीया । हाहाकारनगरबिचपरीया ॥
नृपरानी दोउ खैचन चाया । हरिजीहाथपकडिलायौधाया
हरि पुनि भये चतुर्भुज रूपा । नृप को दरसनदियौअनूपा ॥
हरि बोले मागौ बर कोई । जो तुमरे मन ईच्छा होई ॥
भूप कह्यो बर दीजै नाथा । प्रीति रहै तुम चरननसाथा ॥
हे दायाल दूजा बर दीजै । भक्तन से कसनी लघु कीजै ॥
बर देकरहरि बिष्णु दयाला । अंतर ध्यान भऐ ततकाला ॥
ऐसे बहुत भक्त भये भाई । नाम देव की गाय जीवाई ॥
सिबरी के फल जूठे खावा । नरसी की हुंडी सखरावा ॥
तिलोचन दृढ़ भक्ति कमाई । जिसकीटहलकरी हरिआई ॥
सैना नाई अरु रैदासा । इनकी पूरन कीन्ही आसा ॥
मीरा बाई दरसन पावा । धना भक्त का भोजन खावा ॥
हरिश्चंद्र को धर्म निभावा । हाथ पैर जयदेव जो पावा ॥
कहां लग भक्ती प्रभुता गाऊं । ममबुद्धि छोटपारनहिपाऊ ॥
आप ज्ञान अद्वैत बखाना । बिनअसज्ञानमुक्तिनहींठाना॥
सब कोई मुक्ति भक्ति से गावै । किस बिधिमुक्ति ज्ञान सेपावै ॥
पहले मुक्ति सा लोक कहावै । दूजी पुनि समीप ठहरावै ॥
तीजी कैसा रूप बतावा । चौथी कौसा जुज्य लखावा ॥

सो मुक्ती भक्ती से पावै। ब्रह्म ज्ञान कछु काजन आवै॥
अस महाराज कथा के माही। यही सुना है दूजा नाही॥
और जुगन में तप मखदाना। करत रहे पायो विश्रामा॥
बाल्मीक आदिक तप धारी। बहु तक भयेनाम उरधारी॥
अबकालिकेबलि मुक्तिप्रधाना। भक्ति नाम स्मरन सैजाना॥
और भाँति कोई मुक्ति न पावै। बेद पुराण साख्य अस गावै॥

छंद हैया॥

परम हंस पूछत है भाई बहु उपासना कहिये।
कहु उपासना कौन देवकी सिद्धि होय फल लहिये॥
कौन नाम का स्मरण कीजे गणपति प्रथम मनाये।
जोकि उपासक गण पति जीके आदि गणेश बताये॥
त्रिपुरासुरसे जुद्ध किया जब शिव गणेश को पूजे।
मथ्यो समुद्र बिष्णु भगवानें पहले पूजन हूजे॥
गण पति देव सिद्धि दायक है बेद पुराण बखाने।
महिमा और गणेश पुरान में देव प्रसिद्ध सुनाये॥

दोहा॥

जहि सुमिरत बदंत सकल बिगन पराहि बिलाहि।
मुद मंगल आरोग्य धन मुक्ति मुक्ति नियराहि॥

हैया॥

जो उपासना करत मक्ति की मक्ति प्रधान बतामें।
मक्ति महात्म है पुराण मे देबी पाटक रामें॥
बिना मक्ति के पुण्य अमक्ती होजाते सब कोई।
सब आधार मक्ति के जानो मुख्य मक्ति है सोई॥

दोहा॥

इसे सबको मक्ति की उचित उपासना जान।
मक्ति दो प्रकार की लक्ष अलक्ष समान॥
जगत बीज सट् मन महीं भाव रूप ये गुण।
माया सों लखुनावै जब जोग ज्ञान ने पुण्य॥

अव्या कृत अव्यक्त अरु प्रकृति प्रधान निधान।
बिद्या बिद्या दिक महा माया कहे सुजान॥
अंत काल मे सब जगत जीव चरा चर खानि।
नाम रूप सब छोड़ि के तामे सोवत तानि॥
सृष्टि काल मे सब जगत ज्यो बीजन ते वृच्छ।
अंकुर तत्योते सकल यह दीष्टाँत सवच्छ॥
जब नही दृश्यन दृष्टि कोऊ सुन्य सकल संसार।
अलख बीज से प्रघट हो कीन्ह प्रथम अवतार॥
महा लक्ष्मी नाम सो मुद मंगल को धाम।
कहत सुनत समझत जिन्हें होत पूरणसबकाम॥

चौपाई॥

सोई नभ पवन अनल जल मही। सूच्छ भूत तन्मचा वही॥
सब्दस्पर्श रूप रस गंधा। वोही सकल लोक कर धंधा॥
ब्रह्मा बिष्णु संकर है सोई। इंद्रादिक देवा सब ओई॥
यच्छ गंधर्व किन्नर राच्छस गन। भूत पिशाच प्रेत जेते तन॥

दोहा॥

भूत भबिष्यत जो कछू बर्तमान है जोइ।
भुक्त भोग भोगात्मक जगत चराचर सोइ॥

चौपाई॥

तच्छा भेद तीनि कहि गाये। महा लच्छमी प्रथम कहाये॥
लोके सुन्य देखि के भाई। तम गुण दूसर रूप धराई॥
नाम महा काली सोइ जानो। सतगुण महा सरस्वति मानो॥
तीनों रूप शक्तिके भाई। इच्छी पुरुष शक्ति सब गाई॥
महा लच्छमी सै दो भइया। ब्रह्मा और लच्छमी कहिया॥
महा कालीसे दोये जानो। रुद्र सरस्वती उत्पति मानो॥
महा सरस्वती से सुनि भाई। बिष्णु गौरी उत्पति गाई॥
उनसे देवो देव बखानै। रजतम सत उत्पतिस बठानै॥

दोहा ॥

सूर्य उपासक पुरुष हैं कहें सूर्य बड़ देव ।
देव प्रतक्ष सुपूजिए जगके कारण भेव ॥

चौपाई ॥

जोकि पुरुष सूर्यको सेवै । कहै प्रतक्ष सर्व मय देवै ॥
इसै उचित सूर्य की पूजा । कारण जगत देव नहिं दूजा ॥
प्रघट वेद में महिमा गाई । सूर्य चई मय वेद सुनाई ॥
वेद चई अग्नि चई रूपा । सकल उष्णता अग्नि सरूपा ॥
सूर्य किरणि सेउक्त बखानौ । प्रगट उष्ण किरणि सूमानो ॥
लिखा वेद में भेद यह भाई । सूर्य किरणि जलको बर्षाई ॥
जलसे सब औषधि है जानो । वृक्ष लता उत्पति जीव मानो ॥
जल अगिनी से उत्पति होई । अग्नि अधारपरगट रविसोई ॥
इसै सब सूर्य्य को मानौ । आदि सर्वकी सूरय जानौ ॥
दिशाविदिशा घड़ीपलभासा । काल प्रगट बर्षादिक नासा ॥
जब सूर्य्य आवर्षण करही । षोडस कला तपै पुनि अहही ॥
तब प्रलय होजावै भाई । उस जलसे एक अंड उपाई ॥

दोहा ॥

उस जल सेती एक हिर्ण्य मये अंडा भयो ।
उसी अंडसे जानि सकल जगत उत्पति कह्यो ॥

चौपाई ॥

सूरज जल बर्षावै भाई । उसे सब चरअचर जिवाई ॥
इसे उत्पति पालन जानौ । कारण प्रलय सूर्य्य भगवानो ॥
नाम सूर्य्यके कहै अनंता । द्वादश नाम मुख्य भगवंता ॥
महीने महीने प्रति के नामा । भिन्न भिन्न जपु पूरण कामा ॥
द्वादस गंधर्व रहै सो साथा । द्वादस रहै अप्सरा गाथा ॥
नाग यक्ष राक्षस ऋषि भाई । द्वादस द्वादस संग रहाई ॥
चैत्र आदि देमाष बखानै । मास मास प्रति सेवा ठानै ॥
येक येक गण बदलत भाई । गंधर्व गान करत है आई ॥

नृत्य अप्सरा करति सुजानै। बेदा स्तुति ऋषिकृत बखानै॥
यक्ष रथै खैंचत हैं भाई। राक्षस रथै ढकेलत आई॥
रथको बांधै नाग कराला। सूर्य्य देव सबके प्रति पाला॥

दोहा॥

सूरज की महिमा सबी भाषैं सूर्य्य पुराण।
आदि अन्त मधि सूर्य्य है परघट देव बखान॥

चौपाई॥

बिष्णु बिरंच महेस गरीरा। निराकार निरगुण गंभीरा॥
जो कोई महादेवकी अर्च्चा। सिवअनादि दूसरनहीं चरच्चा॥
शिवके दक्षिण अंगसै भाई। बिष्णु प्रगट भये सो गाई॥
बांम अंग से ब्रह्मा भयेा। रुद्र हृदय से उत्पति कह्यो॥
बिष्णुलोक बैकुंठ बिराजै। ब्रह्मलोक में ब्रह्मा राजै॥
रुद्र बास कैलास बखाना। शिवका लोक ऊच अस्थाना॥
शिव से तीनौ देव बखानै। रुद्र हृदय शिव भेद न मानै॥
बिष्णू ने शिव भक्ती कीन्हा। शिव प्रसन्न ह्वै असबर दीन्हा॥
चक्र सुदर्शन शक्ति सुभाई। ऐस्वर्य दयौ लोक प्रभुताई॥
बिष्णू तीनिलोकप्रतिपालहि। प्रीय लक्ष्मी से बाचा लहि॥
महादेव की सेवा कीन्हा। बिष्णु सर्ब पदार्थ लीन्हा॥
देखौ जब त्रिपूरासुर बाढा। ब्याकुल देवकि ये घर काढ़ा॥

दोहा॥

त्रिपुरासुर को नाश करि देवन को सुखदीन।
जो बिष निकसा सिंध से महादेव सोपीन॥

चौपाई॥

जब नृसिंह बढ़ा परवारा। सबको लगे देन दुख भारा॥
तब महादेव रूप बिस्तारा। सरभ रूप पक्षी को धारा॥
सबको नाश कियासुनि भाई। केवलि नृसिंह दिये बचाई॥
जब बाराह बंस बढ़ भइया। सब पृथ्वी ब्याकुल दुख पइया॥
तब महादेव भये प्रगटाई। कुत्ता रूप बिटलना गाई॥

बाराह बंस नाश करिदयऊ । बाराहनी को क्रोड़तभयऊ ॥
ब्रह्मा बिष्णु बाद एक ठएऊ । आपसमें झगड़त सो भयऊ ॥
ब्रह्मा बड़े आपको मानैं । बिष्णू बड़े आपको जानै ॥
शिव जोतिर्मय लिंगप्रगटाया । यह अकास बाणी कहि गाया ॥
इस्का अंत ले आवै सोई । उसको बड़ा कहै सब कोई ॥
बिष्णु नीचेको गये भाई । अंतन मिला लोटि पुनि आई ॥
ब्रह्मा ऊपर को उठि धाये । अंतन मिलालोटि फिर आये ॥

दोहा ॥

ब्रह्मा बोले झूठ कहि लालच बड़े कहाइ ।
इस्से पूजा है नहीं झूट छोड़ दुख दाइ ॥

चौपाई ॥

ब्रह्मा झूट कहा सुन भाई । आप भयो पूजा नहीं पाई ॥
बिष्णु देव सब सत्य बखाना । तीनौलोक पुज्य कर माना ॥
ब्रह्मादिक सब देव कहावै । अथ बाइ खर पदवी पावै ॥
शिव महादेव महेश्वर भाई । सब से बड़े बड़े सुख दाई ॥
और दूसरा देव न कोई । सब शिव रूप रूप शिव सोई ॥

दोहा ॥

शिव गुरू शिव पर देवता शिवहित शिव जगबन्धु ।
शिव आत्मा शिव जीव है ब्रह्म सदा निरद्वंद ॥
शिव जल में शिव अनल में शिव थल में शिव सर्व ।
शिव अकाम शिव भूमि में शिव भजु सब तज गर्व ॥

चौपाई ॥

बिष्णू की उपासना करही । सोकहै बिष्णु अनादिसु अहही ॥
बिष्णु नाभसे कंवलसोजाना । ब्रह्मा भये कंवल से मानौ ॥
ब्रह्मा से भये रुद्र सुभाई । जिनको महादेव कहि गाई ॥
जग उत्पति पालन लय कारी । महिमा बिष्णु प्रगट जगभारी ॥
महिमा बेद पुरानन गाई । बिष्णु अनन्त रूप है भाई ॥
उनमें ए अवतारहि जानौ । बहुतप्रसिधिबेदबिधि मानौ ॥

प्रथमै महा पुरुष अवतारा। सब संसार रूप जिन धारा॥
इसकोही बैराट बखानैं। जड़ चेतन्य सब अंदर जानै॥
दूसर सनकादिक भये चारी। बाल रूप ब्रह्मचर्य्य व्रतधारी॥
तीसर रूप बराह बखाना। कथा कहूं संक्षेप सुजाना॥
परलय में पृथ्वी जल माहीं। डूबि गई जल था सब ठाहीं॥
जलमें पैठे पृथ्वी लाए। महिमा सब पुराण बिचगाये॥
चौथा रूची प्रजापति भाई। आकूती इस्त्री कहि गाई॥
पंचम जज्ञ पुरुष अवतारा। स्वायंभू मंन्वतर सारा॥
छटये इन्द्र भये सुन भाई। लीला सबी पुरानन गाई॥
कर्दम नाम प्रजापति केही। कपलिदेव अवतार धरेही॥
माता देवहूती कौ भाई। सांख्य ज्ञान उपदेस कराई॥
सांख्यसास्त्रजिनबरननकीन्हा। सो अवतार सातयौ चीन्हा॥
धर्म पिता मूरति है माता। नर नारायण पुत्र सुहाता॥
तीनि लोक कल्याणहि अर्थी। बद्रीखण्ड तपस्या करता॥
सो अवतार आठयौ जानौ। तीनिलोकहितकारीमानौ॥
अत्रि मुनि की नारि सुहाई। अनुसूया पतिब्रत सो भाई॥
दत्तात्रेय अवतार भयेऊ। सहस्रबाहुकौजोगसोदयेऊ॥
आत्मविद्या सकल पढ़ावा। जनप्रहलाद मुक्ति सोईपावा॥
यह अवतार नवां है भाई। कीरतिसकल पुरानन गाई॥
नाभ राज मरुदेवी रानी। ऋषभदेव भगवान बखानी॥
ऋषभदेव दसमैं अवतारा। परमहंस मारग बिस्तारा॥
पृथुका रूप ग्यारहवां धारा। पृथ्वी दुही बिदित संसारा॥
हिरनाकुस भक्तन दुख दीन्हा। पुत्र पिरोहत मारन चीन्हा॥
जन प्रहलाद त्रास बहुदयेऊ। खंभफाड़ि हरिपरघटभयेऊ॥
नरसिंह रूप बारहवां धारा। हिरणाकुस पापी संघारा॥
चयोदस रूप कमठ कौ धारा। पृथ्वी थांभि लई सब भारा॥
चतुर्दसै धन्वतर भयेऊ। वैदक सार्ङ्गधर निरमयेऊ॥
मोहनी रूप पंद्रमा भाई। अमृत देवन पान कराई॥

कस्यप की अस्त्री सुनि भाई। अदिती रूप अनूप सुहाई॥
बामन रूप भयेउ भगवाना। बलिछलराज लियाजगजाना॥
सो अवतार सोलहमा जानौ। लीला प्रसिद्ध पुरान बखानौ॥
मत्स्य रूप धारण हरि कीन्हा। प्रलयदिखाइनृपतिकोदीन्हा॥
सत्यव्रत राजा कौ भाई। पृथी रूप नवका दिखलाई॥
नवका मैं नृप लयौ चढ़ाई। जल प्रलय बोहार कराई॥
यह अवतार सचहवां भाई। हयग्रीव अवतार सुगाई॥
हंस रूप धारा प्रभु मानौ। ब्रह्मा केहित प्रघट बखानौ॥
स्वारोचिख मन्वतर माहीं। वेदसिरा नाम ऋषि पाहीं॥
तुखिता नाम अस्त्री जानौ। बिभुअवतार लीयौभगवानौ॥
ब्रह्म चर्य्य कौ मार्ग सुधारा। सहस्रअठासी ऋषिभयेउदारा॥
उत्तम मन्वतर मैं भाई। धर्म सुनृता अस्त्री गाई॥
सत्य सैन अवतार सोलीन्हा। प्रघट भये भगवान सुचीन्हा॥
तामस मन्वतार के माहीं। हरिमेधा ऋषिहरणी पाहीं॥
हरि अवतार लयौ जब भाई। ग्राह सै गज कौदयौ छुटाई॥
रेवत मन्वतर मैं जानौ। बिषयशुभ्र ऋषिनामसुमानौ॥
बिकुठा इस्त्री नाम बखानौ। बैकुण्ठ नाथ जन्मे भगवानौ॥
लक्ष्मी की प्रार्थना पाई। रचा लोक बैकुंठ बनाई॥
चाक्षुष मन्वतर मैं जानी। बै राजा संभूती रानी॥
अजितभगवानलीनोअवतारा। सब जगका पालन निरधार॥
त्रेता परस राम अवतारा। जिनकीकथा विदित संसारा॥
नृप दसरथ कौसल्या रानी। रामचन्द्र अवतार सो जानी॥
द्वापर ऋषि पारासर जानौ। जन्म ब्यास लीन्हों भगवानौ॥
फिर भये रामकृष्ण अवतारा। भक्तन हित लीला बिस्तारा॥
कलिमैं बोद्ध रूप हरि धरा। बेदन की निन्दा करि डरा॥
कलि के अंत कलंकी भाई। जन्म लेये संभल मै आई॥
हरि अवतार भयेसोई जानौ। है चौबीस प्रसिद्ध बखानौ॥
हे महाराज आप को गावैं। नई नई सब कथा सुनावैं॥

पंचदेव की महिमा जानो। कभी न सुनी भली कर मानी॥
आप धन्य हो कृपा निधाना। भली प्रकार भेद मैं जाना॥
जो कोई इसको सुने सुनावै। मन इच्छित सोई फल पावै॥
निस्कामी जो कथा बिचारै। भक्ती मिलि भव संकट टारै॥
बड़ा अमोल पदारथ जाना। थोड़ीसी सिद्धांत पुराना॥
परमहंस बोले सुन भाई। हमरा उतर देउ सुनाई॥

दोहा॥

महाराज मम बुद्धि में यह बिचार अवहोय।
पूजा पाँचो देव की नित प्रति कीजे सोय॥

छन्द द्वैया।

परमहंस कहते सुन भाइ तुम आगे कहि आये।
मुक्ति कही सालोक्य आदि तुम किस उपास से पाये॥
पंचदेव की करि उपासना कहि के लोक सिधे हहे।
कौन देव के पास रहोगे जहा तहा धक्का खेइ हो॥
पांच देवता भिन्न भिन्न हे जुदे जुदे अस्थाने।
उनकी राहस पृथक पृथक हैं एक मुक्ति कस जाने॥
कोई काल आपस में भाई देव बिरुद्ध जो होई।
अवतारन में भयो बिरूधे अस पुराण कहे सोई॥
सास्त्र पुराण संत की बाणी सरन एक की गावे।
अरु तुमभी जानत हो भाई थिर नही लोक रहावे॥
जैसे इसी लोक के मांही थिरन रहे अवतारे।
प्रलयमें कोई रूप लोक नहीं रही है यही बिचारे॥

दोहा॥

महाराज इन पांच में करूं एक की सेव।
तासे मुक्ती पाइये पायो मुक्ति सुदेव॥

छन्द द्वैया॥

परमहंस बोले सुन भाई निश्चय करिके कहिये।
एक देवका नामधरो तुम बिधि उपासना गहिये॥

यह भी यादि रखना भाई तुम आगे कहि आयो।
कलिमें केवलि मुक्ति नामसे नाम कहो सो गायें॥
महाराज मेरी अब सक्ती कोई आपन जाने।
अब उत्तर कोई नहिं आवे आपही कही बखाने॥
आप कृपाकरि बोध दीजीये औरन कोई उपाये।
सुरति सब्दको सन्त बषाने सो भी कहीये गाये॥
परमहंस बोले सुन भाई महिमा नाम सुनीजे।
सुमिरन पहले करै नामको नामीप्रघट जुकीजे।
नामी नाम भेद नहीं कोई नाम सर्वत्र बखाने।
बिनानाम नामी नहीं प्रगटै नाम सो सत्यसमाने॥

कुंडलिया॥

सत गुर राम सुनाम है। सो सर्वत्र अतोल॥ व्यापक व्याप्य सो जानिये। महिमा अगम अमोल॥ महिमा अगम अमोल नाम सो सर्व पसारा। जहां नामको जाप वही नामी नहीं न्यारा॥ सूच मांहि जो वस्तु वस्त्र में सूच रहाई। सत्य रहै सब ठौर गुरू सब भेद लखाई॥ राम सर्व में रमि रहा घट घट आवै बोल। सत गुर राम सो नाम है महिमा अगम अतोल॥

नामी नामहिं माहिं है। नाम सुनामी जाना नाम बिना नहिं पाइये नामीका स्थान॥ नामी का असथान नाम सर्वत्र सुजानौ॥ सूरज सूर्य प्रकास सूरसे भिन्न न मानौ। बिना नामके जाप प्रघट नामी नहीं होवै॥ नामी माहीं नाम जापु करि हृदय जोवै। सतचित आनंद रूप सतगुर राम समान। नामी नामहि माहि है नाम सुनामी जान॥

सत्य सत्य सो सत्य है गु तम रू प्रकास। राम रमा सो रमि रहा जल थल पूर अकास॥ जलथल पूर अकास सत गुरूराम सुजानौ। भेदाभेदनकोइदिष्टिबिननाहि दिषानौ॥ सूरज कौ प्रकास सर्व कौ दीखै भाई। जब नैनन दोष

प्रघट दिन रातिकराई ॥ जीव हृदें अज्ञान है नाम प्रकट नहीं भास सत्य सत्य सो सत्य है गू तम रू प्रकास ॥

जो कोई सुमिरै नाम को नामी परघट होय। नामी वह सर्वत्र है नामी नामन दोय। नामी नामन दोय नामसै नामी पावै। नामन जानै मूल नाहि नामी प्रगटावै ॥ अलख लष्य के बीच नाम कहिये सो साषी वार पार है नाम कीयो नामी बस भाषो ॥ रघुनाथ सतगुरु राम जी व्यापक व्याप्य लषोय। जो कोई सुमिरै नाम को नामी प्रघट होय ॥

रूपनाम आधीनहै रूपबिना नहीं नाम। रूपन पावै नाम बिन सतचित सतगुरुराम ॥ सतचितसतगुर रामबेदअरुसन्त पुकारा। है अषंड भरि पूरि सर्वमय सबके पारा ॥ नाम पुकारौ आय तुरत नामी चलि आवै। नामनहोवै यादि नाहि नामी कोपावै ॥ रघुनाथ सतगुर रामजी घट घट पूरन धाम रूप नाम आधीन है रूप बिना नहीं नाम ॥

परोष्य रहा सोप्रघट है। प्रघट परोष्य समान ॥ परोष्य प्रगट करि पाइये। नामी नाम सुजान ॥ नामी नाम सुजान नीर यश पृथ्वी माहीं। कहीं दूरि कहीं निकट बिना खोदे नहीं पाहीं ॥ गाफिल सेहै दूरि निकट चेतन्य के मानौ। घट घटमें भरि पूरि न तिलभरि खालीजानो ॥ रघुनाथसतगुर रामजी मूलमंत्र है जान। परोष्यरहा सो प्रगटहै प्रघट परोष्य सो मान ॥

दोहा ॥

नामी व्यापक नाम में नामसो नामी एक।
व्यापक अग्नि सो काष्ठमें गुर मुख करत बिवेक ॥
नाम बिवेकी जो भये तिनने पायो सार।
रघुनाथ घाट घट भीतरे नामि उबार अरु पार ॥

छन्द चन्द्रंगी ॥

गुर घट निज मूला काटे शूला भ्रम नभूला गगन गिरा।
जब निरख निहारी सुरति सिधारी प्रेम पियासी मने फिरा ॥

सुरति पक्ष पकाई स्याम समाई घन गहराई झलक झरै।
रघुनाथ बिचारी दीन पुकारी गुरु सम्हारी भई परै॥

कोटरा॥

परमहंस बोले सुनु भाई तुम ऐसा कहि आये हो।
तुम उपासना खंडन करते हम नहीं खंडनगाये हो॥
हम उपासना खंडनकबहु तीनिकाल नहीं करते हैं।
साधनहै उपासना फलहै ज्ञानचित सुद्ध हित धरतेहैं॥
जब निर्गुण निस्काम उपासक तबमन सुद्धी पावै है।
ज्ञानि प्राप्ती होवै तबही केवल मुक्ति कहावै है॥
फिर अस्थूलन सुच्छ तन कछु धरना पड़े न भार रे।
सतगुर राम कृपा रघुनाथै कहै रघुनाथ सुनाई रे॥
जबतक नहीं उपासना निरगुण अंतर वृत्ति न होवे रे।
ज्ञान प्राप्त रूप न पावै मन घट उलटि न जोवे रे॥
जब तक इसका मन नहीं लागै नामशब्दके माहीं रे॥
तब तक अंतर वृत्ति न प्राप्त कठिन बात है भाई रे॥
अंतर वृत्ति किये बिन इसको जीवन मुक्ति न होवै रे।
सुख नहीं मुक्ति का प्राप्त आसा बंधन जोवै रे॥
गीता गर्ग माहिं यह भाष्यौ कहै अस्लोक सुनाऊरे।
सतगुर राम कृपा रघुनाथै बंधन मूल नसाऊ रे॥

स्लोक॥

नानाशास्त्रं चपठते नानादेवान्यपूजयेत॥
आत्मज्ञानंबिनापार्थ सर्वकर्मनिरर्थकः॥ १॥

कोटरा॥

कर्म उपासना सरगुन भाई निरगुणके सब साधन रे।
प्रमनुष्य भूलै सरगुण मैं फसे रहै भव बाधन रे॥
अपने अपने इष्ट पक्ष मैं करते वादबिवादे रे।
खोवै जन्म भेद नहीं जानै बिन बिबेक अबे आंधै रे॥

कुछ विवेक अंतर में होतौ तौ उपास्य सर्वज्ञ रे।
अपना देव व्यापी सर्वत्र अंग देव अलपत्ता रे॥
सब बिवाद मिटिजावै भाई निज उपास्य कौ जानै रे।
सर्व देव उस अंग समानै और नटूना मानै रे॥
अरु देखौ कलिजुग में भाई जीवन के हितकारी रे।
जीवन के उद्धार करन कौ संतन दया बिचारी रे॥
मार्ग गम बिबताया भाई जो जन लावै निश्चै रे।
मोक्ष प्राप्त होइ सहज में रूप आपनौ पावै रे॥
महा राज ज्ञानी का निश्चय कौन देव को मानै रे।
परमहंस सिद्धांत कहै अब सुनौ भेद यह जानै रे॥

चौपाई॥

पूरन ब्रह्म ज्ञान जब होई। दूजा देव न मानै कोई॥
निज सरूप सब में दरसाना। एकी ब्रह्म रूप सब जाना॥
कल्पित सबजग सुप्न समाना। जन्ममरन भय भरम नसाना॥
सम दृष्टी ज्ञानी है जोई। ताकर आवागमन न होई॥
भक्त करै जो देवन केरी। ताकौ रहै बासना घेरी॥
दिढ़ आसा देवन मै लावै। आसा बसतां केढ़िग जावै॥
पुन्य छीन होवै जब भाई। तब वहअच्छतलोकपुनिआई॥
निजसरूप दरसैन नहीजबलौ। आवागमन मिटैनहोंतबलौ॥
चंचलता बिक्षेपन साना। पूरन ब्रह्म ज्ञान दरसाना॥
स्वामी एक संदेह अपारा। ज्ञानीकसकसकीन्हव्योहारा॥
जग असत्य मिथ्या जब होई। फिर व्योहार बनै नहीकोई॥
सुनया का सन्देह मिटाऊं। तेरे बोध हेत समझाऊं॥
दृढ़ आसा जाकी जामाहीं। सोताकौ सतिसतिदरसाहीं॥
जों बाजीगर खेल बनावैं। छोटे बड़े सबै उठि धावैं॥
अज्ञानी नर देखै जाई। सत्य मानि निश्चै कर भाई॥
ज्ञानवान देखैं जो कोई। मिथ्या लखैं खेल वह सोई॥
बालक सम अज्ञानी होई। सत्य जानि मानै तेहि सोई॥

ऐसै अज्ञानी व्यौहारा। जगकौ सत्यमानि उरधारा॥
ज्ञानी जग मिथ्या सब जानै। हानि लाभ तामैं नही मानै॥
मिथ्या जानि करै जो भाई। तामै हानि कहौं कस पाई॥

दोहा॥

ग्रहन त्याग टोऊ त्यागि के द्वैति कल्पना नास।
एकहि व्यापक पूर है दूर भयो आभास॥

चौपाई॥

कच्चा भुना अन्न जस होई। देखन मैं एकहि सम सोई॥
रहै अकार दोउ कर भाई। अंकुर उतपति बीज नसाई॥
भूंनै मै अंकुर नही जामी। आगे की उतपतिभई हानी॥
कच्चे मैं अंकुर उपजावै। महिंजलमिलिउपजैनसिजावै॥
अंकुर बीज बास ना होई। जग उप जावन हेतू सोई॥
जग को सत्य सत्यजिन माना। दूजै दिढ़ कर इच्छा ठाना॥
उपजै बिनसै सो जग माहीं। आपी अपने हाथ न साहीं॥
ज्ञानी बीज बासना नासै। जग भर्मबत सो ताकौभासै॥
ज्ञानी एक ब्रह्म सब जानै। दूजी दिष्टि नहीं मन आनै॥

दोहा॥

जग तृष्णा को नीर ज्यों दरसै जलही समानि।
बिन्द्राबन वह जल नही कस डूबन की हानि॥
अन्य पुरुष की दृष्टि मैं जग व्यौहार लखाय।
बिन्द्राबन जब जग नहीं कौन व्यौहार बताय॥

चौपाई॥

हे महाराज सत्य सब भाखा। ब्रह्मज्ञान बिन बन्धन नाखा॥
भ्रांति दूरिन आन उपाई। ब्रह्म ज्ञान निज रूप लखाई॥
मैनै भल प्रकार कर जाना। भेदरहित निज रूप सो माना॥
सजातिबिजातीसुगतिजुभेदा। सब सै रहित रूप निरवेदा॥

सोरठा ॥

अनिर बाच है मूल रूप अनामी जो धरै ।
जनमादिकही सूल बिन्द्राबन ज्ञानी तरै ॥

दोहा ॥

ऊपर नीचे कलपना यही अज्ञान सरूप ।
माया पदको त्यागकर बिन्द्राबन लख रूप ॥
सरबलोक के पार लख अकहिअनाद सम्हार ।
बिन्द्राबन पूरन लखेा अमर रूप आधार ॥

सोरठा ॥

अलख अगम के पार देस अनामी निरख कर ।
अनिर बाच से न्यार सतगुर राम सतचित धर ॥
पूरन पदको नाम निकट आपने ताहि लख ।
माया छत को नाम ताको मनसे टूर रख ॥
मूल तिमर भयो टूर भूल भर्म जातो रह्यो ।
बिन्द्राबन में पूर आपन लख आपे रह्यो

॥ * ॥ आरती ॥ * ॥

सतगुर राम की आरति कीजे । बिन्द्राबन जी की सरना लीजे ॥
चेतन राम सब संत लखावा । सतगुर राम नाम रस पीजे ॥
शब्द का थाल सच पालंगो । अलख लोक तामें दीप धरीजे ॥
अगम लोक बाती बट डाली । लोक अनामी थिरत रखीजे ॥
अजर लोक तामूल धराओ । अमरा पुर का पुर करीजे ॥
लोक अनादी तिरगुन रूपा । जाको ले कर माल गुहीजे ॥
कर्म भगति मिल चौर ढुलावैं । निस काम भगति भोग धरदीजे ॥
कोट सूरजी पुरष जह ठाड़े । अलख अगम दरसन रस पीजे ॥
पुरष अनामी और अज राजी । अमर अनादी लख मन भीजे ॥
स्वरग बैकुंठ आद जो धामा । ब्रह्मादिक जहाँ बास करीजे ॥
चेतन चित कर रूप चितारा । बल हारी यही शब्द कहीजे ॥

सतगुर राम की चरना परसो । ज्ञान परकाशी जोत जगीजे ॥
सभी पुरष ले आरत कीनी । तुहीं तुहीं धुन येही सुनीजे ॥
महा आरती अदभुत गाई । ज्ञानी गुर से भेट लहीजे ॥
रूप द्वैत बिलासहि जानो । सतगुर राम बिना सब छीजे ॥
रघुनाथ गुर सरन बड़ भागी । पुरन सतगुर राम लखीजे ॥

सोरठा ॥

दूर भयो भय मूल सतगुर राम के दरस कर ॥
लखा निजातम रूप सतचित आनंदी रह्यो ॥

इति

——0 * 0——

१ ओं सत्त नाम सतगुर समरथ दीन दयाल ॥ *॥

अथ पाचवां भाग

बिहार बिन्द्राबन ॥

दोहा ॥

नदि बेद की आद है गगन मांहि भरपुर।
बिन्द्रावन सुख धाम है आगे अगहद तूर ॥

नाद के ध्यानी का जा मिलना पुरुष में प्रेमी जिसका वृत्तान्त चौथे भाग के अंत में आया है महाराज परमहंस जीसे जिन्होंने चौथे भाग में अद्वैत ज्ञान को सिद्ध किया है दण्डवत प्रणाम करके पूछता हुआ कि महाराज बहुत से संत महात्माओं ने मोक्ष को नाद के ध्यान से कहा है कहिये नाद के ध्यानों को मोक्ष की प्राप्ति है या क्या और इस समय में इस मारग की सिद्धता होसकती या क्या परंतु महाराज दया करके पहले यह समझा दीजिये कि यह मन जगत के विकारों से कैसे हटे परमहंसजीने कहा सुनो जगत में बड़ा विकार इच्छा है सो जब यह मनुष्य जगत के पदारथों कोदेखे है या उनका वृत्तांत सुने है तो उनको सुखदाई जान कर उनके पाने की इच्छा करता है जो कदाचित प्राप्त हुए तो कुछ दिन विशेष सुख पावे है और जो प्राप्त न हुए तो दुखी रहता है और जो पदारथ मिल जाता है सो थिर नही रहता है उसके जाने का

दुख सहता है और जो कदाचित कोई पदारथ बहुत काल रहा भी तो उसका सुख समान होजाता है फिर और दूसरे बिसेख सुख की इच्छा कर कर तपा करता है और जो पदारथ पास है उसका सुख बिस्मरण होजाता है और देखो पदारथों की प्राप्ति से जो सुख उपजै है सो बिजली की चमक के समान है और जो सुख बिचार करके प्राप्त होता है वह पुनो के चांद के उजियाली के सदृस है बिजली की चमक मे उजियाला बिसेख पर थिर नहीं चांद का उजियाला समान परथिर है सो बिसेख सुख जो पदारथों से मिलता है सो ठहरता नहीं इस सुख को तुम ऐसा जानो जैसी झठी पोतकी झलक और समान सुख ऐसा है जैसे सच्चे मोती की आस सो मूरख पोतकी झलक को देख कर मोहित होजाते हैं और अंत को दुख पाते हैं और जो सावधान पुरष है वह मोती कोऊ तम जाने हैं और पोत की प्राप्ति वा हानि में सुख दुख नहीं माने हैं अब तात परज यह निकला कि जगत के पदारथों की इच्छा दुख का मूल है सो बहुत करके पदारथोंके देखने था उनकी प्रसंसा सुननेसे उपजै है सो जिस पुरषमें बैराग होगा और कुसंगी न होगा जिस पुरष के बिशेष सुखको इच्छा उत्पन्न न होगी क्योंकि उसका समयसत्संग ध्यान बिचार में बितीत होगा जिनकी ऐसी रहनहै उनको सदासुखकी प्राप्ति है और उनमें ही नाम रूप स्थान और अवधि बैराग संतोष की बिदित होगी और प्रेम बिरह से हर समय चेतन्य होगा और भाई सबसे बड़े रोगमान बड़ाई काहै इस से बचना बड़े ही सूरमाका काम है ॥

दोहा ॥

काम गयो तो क्रोध धन जाई क्रोध गयो तो लोभा ।
लोभ गयो तो मोहन जाई मोह गयो तो मान बड़ाई शोभा ॥

कोई साध थे मनसे इच्छा मान बड़ाई की थी किसी देश को गये वहां महाराज की बड़ी प्रसंसा हुई उसदेश का राजा भी आया अब महाराज को बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ यहां तक कि महाराज दूध धारी थे एक सेर दूधका आहार था सो जिस दिन राजा आए उस दिन महाराज से पाव सेर दूधभी न पिया गया क्योंकि मान बड़ाई के आनंद से पेट भर गया फिर किसी कारण से राजाका आना न हुआ अब महाराज बड़े सोच और फिकर में हैं भीतर आग बलै है अब महाराज की इतनी भख बढ़ गई कि सेर भर चनेसे भी पेट नहीं भरता सो भाई यह मान बड़ाई बड़ा रोग है माजिक से बिमुख करावै है अहंकार बढावै है और प्राप्ति से कोरा रक्खे है इसका ध्यान हर समय रखना चाहिये जब यह न होगी तो दुख पास न आवैगा महाराज धन हो एक संदेह और दूर कीजीये ऐसा कहै हैं कि सत-संग में जात पांत का कुछ बिचार न करना चाहिये सुनो पलटूदास जी का बचन है ॥

कुण्डलिया ॥

सर्बंगी सोइ नाम का रहनी सहित बिबेक।
रहनी सहित बिबेक एक कर सबको जानै ॥
खान पियन में जुदा नहीं येकै मैं सानै।
लिये रहै मरजाद तजै नहिं नेम अचारा ॥
धरम सनातन सुभ असुभ दोउ करत बिचारा।
बोलै सबद अघोर अद्वैत अभंगी ॥
निरमल कारज करै सोइ पूरा सरबंगी।
पलटू ऊपर राखै कुल धरम भीतर राखै एक।
सरबंगी सोइ नाम का रहनी सहित बिबेक ॥

और जो तुमने कहा सो भी सत्य है हजारों बचन वैसे

भी हैं सो इसका निरने अपनी बुध में यह आता है कि बचन अधिकारी प्रति है पर यह निस्चे है कि नेम अचार ऊपरका करम है भाई अपना सा दुख दूसरे का समझो जीव की रच्छा करो भूखे का पालन करो मालिक को याद में रहो ॥

सब्द ॥

नापढ़ पाप दीपट्टी उमर दिना दिन घट्टी वे। भूखे नंगे नूबारी देदाड़ी रहै दावे सुफल उनादी खट्टी ॥ धीआ पुता देवारी कारज करदावे भरदा जगदी चट्टी। साह हुसैन फकीर सांईदा फूंकफपट दी टट्टी ॥

अब कुछ बचन पार्स भाग के कहते हैं मनुष्य यह जानता है कि मरना सत्य है परंतु इसने खेलनेमें रचा हुआ है यह जगत बिनासी है तौ भी इस पर भरोसा करता है सब का मकूकम के अनुसार हुए हैं फिर गई हुई का सोच करता है दिन गुजरे जाते हैं और माल के बटोरने में उमर खोरहा है नरक की अगन अत्यन्त कठोर है और फिर पाप करता है स्वर्ग सत है परंतु धरम के काम में देर कर रहा है करता एक है और उसका कोई सरीक नहीं है और प्रीत दूसरे के साथ करता है ऐसे मनुष्यों की दसा देख कर बड़ा पस्चात्ताप है अपसोस और धिक्कार है कि प्रतच्छ संसार को संसै का मूल देखता है और फिर भूलता है ऐसे पुरसों से मालिक बचाये रहै एक सांई लोग का बचन है कि मैंने चार हजार पोथियां पढ़ी हैं उनमें से चार बातें अंगीकार की हैं दिन भर में उन बातों को चार हजार बेर पड़ता हूं १ अैसन जो बंदगी सांईकी करनी है तो कर नहीं तो उसका दिया रिजुक मतखा २ अैसन जो उसके दिये में राजीन होवै तो और दूसरा सांई ढूंढ कि बहुततसा देवे अैसन जो करम ईस्वर ने निषेद किये

हैं उनसे बचनहीं तो उसके देस ते बाहर चलाजा अैसन जोतू पाप किया चाहै तो पहिले कोई जगह उत्पन्न करले जहां तुझे ईश्वर न देखै नहीं तो पाप मत कर एक और फकीर का बचन है जो बंदगी कर सकता हूं तो अपराध किस वास्ते करूं जो मैं सत बोल सकता हूं तो झठ काहे को बोलूं जो हलाल का खाना मिले तो हराम का किस वास्ते खाऊं जो मैं अपने औगुनों पर दृष्ट कर सकता हूं तो दूसरों के औगुन क्यों ढूंढू जो मालिक की याद में हूं तो दुनीया से यारी क्यों करूं किसी परमारथी किताब का बचन है करता कहे है किऐ बेटे आदम के तू नहीं डरता मेरी बादसाहत जो सदा थिर है खाने का भै मत कर मेरा खज़ाना भर पूर है जो तेरा काम अटकै मेरा ध्यान कर मैं तेरा काम भले प्रकार कर दूंगा मै तुझ को मिच समान रखता हूं तूभी मेरा हो और मुझै दोस्त रक्ख मुझसे भै रख मैंने तुझको मिटी और पानी की बूंद से बनाया है इसमें मुझको कुछ जतन नहीं करना पड़ा सो तू रोटी के पैदा करने का सोच क्यों करता है जो कुछ कि उत्पन्न किया है सब तेरे लिये और तुझको अपनी बंदगीके लिये सो तू इनका गुलाम हुआ तूने जान बूझके अपनेको मुझसे हटाया सब जानवर और आदमी अपने मनके सुखके हेत तुझको ढूंढते हैं और मैं तुझको चाहता हूं सो तेरे भले के वास्ते और तू मुझसे भागता है अपने मनके लिये तू मेरे ऊपर क्रोध करता है परंतु मेरे वास्ते अपने मनके ऊपर क्रोध नहीं करता तेरा काम बंदगी करने का है मेरा काम भोजन पहुचाने का तू बंदगी भूलता है परमैं भोजन देता रहता हूं तू कलके वास्ते मुझसे भोजन मांगता है परमैं कलके लिये फ़रम नहीं मांगता फकीरों के बचन हैं बिद्याने को तीन बस्तु कठिन है १ संसार जो परमारथ में हानकरता है २ काल

धरम से रोकता ३ है मन चंचल ईश्वरसे सन्मुख नहीं होने देता लोग दुनिया के पीछे पड़े फिरतेहैं यह नहीं जानते कि मौत उनके पीछे लगी फिरती है अचानक मार लेगी जो मालिक को भूलकर पाप करते हैं यह नहीं जानते कि पापका फल दुख होगा लोग हस देते हैं यह नहीं जानते कि इस गलते सांई राजी है या नहीं जो मनुष्य सांई से बिमुखहै और दुनियांसे सन्मुखहै जब सांईके दुवारमें जावेगे तब एक बुढिया माई जिसका मुहकाला बिल्ली कीसी आंखै बड़े बड़े दांत ऊपर का ओठ तले को लटका हुआ और नीचे का ओठ ऊपरको चढ़ा हुआ हाथ पैर नीले महा भयानक वहां खड़ी होगी उस समय दरगाह से आवाज आवैगी कि इसलोगो इसको पहचानते हो तब सब कहैंगे कि इस हत्यारी चुड़ैल से बचा हम इसे नहीं जानते दूसरी आवाज होगी यह तुम्हारी प्यारी दुनियां है जिसकी तुम सदा प्रसंसा करते रहे और इसके हेत गरबों को दुख देते रहे धर्म को बेचते रहे अपना पेट पोषन भली प्रकार से करते रहे सांई को सर्वस बिसार दिया सो यह वह दुनियां है जो तुम्हारी अत्यंत प्यारी थी अब हुक्म होगा कि दुनियां को नरक में डाल दो उस समय दुनियां पुकारैगी कि कहां हैं मेरे पुराने दिली साथी संगी और मेरे अन्नाकारी तब हुकुम होगा सत्य है इसके प्यारों को भी इसके साथ नरक में बासा दो जो दोनोंको बिछोड का दुख नहो बचन है जो दोनों लोकों का राज्य मिलै तो भी राजी नहो क्योंकि यह थिर नहीं जो दोनों लोकों का राज्य प्राप्त हो और वह छीना जावै तो उदास नहो तब दौलतमंद है दुनियां की बड़ाई पाकर भूलै नहीं भूलना काम कमहिम्मतों का है एक फकीर साहबने खुश होकर किसी सेवक को आशीर्वाद दिया सांई तुझको हिम्मत देवे

कि तू दुनियां को दोस्त न करै और कंगाली को धन कर जान और दुखको सुख कर मान और फकीरों की संगत कर और खुवारी को बड़ाई करके मान और जीनेको मरना पहचान मालिक के भरोसे गुजरान कर बचन है कि जो छः स्थानों में दुनियां की बात करे तो तीन बरष की बंदगी जाती रहै धरमशाला विद्वानों के सन्मुख मुरदे के पीछे समाधों के पास पिछली रात भजनके समय एक समय खुदा ने मूसा पैगम्बर से फरमाया कि जब तेरे पास कंगाल आवै तो खुसी हो यह नेकों की निशानी है और जिस समय दौलतमंद आवै तो जान कोई गुनाह किया है दुनियां में आठ बात बहुत भली हैं स्त्री को लाज जवान को तोबाह विद्वान से बंदगी धनवान उदार हो मिचो में प्यार हो सुन्दर से निरबाहहो नियाव राजासे परमारथ फकीरों से और यह भी कहा है कि बिना लाज स्त्री ऐसी है जैसे भोजन बिना नोनका जबान होकर तोबा न करे सीप है बिना मोती बिद्वान बंदगी ना करै वृक्ष है बिना फल का दौलत मंद उदार न हो नाला है बिना पानी मिच से प्यार नहीं जान देह है बिना चेतन सुन्दर है और बफा नहीं अरथात् निरबाह नहीं जानकि कमान है बिना चिल्लेकी बादसाह में न्याय नहीं जान बादल है बिना मेहका फकीर है बिना परमारथ के निसचै मान दिया है पर प्रकास से खून है सांई ने फरमाया है कि टूटै दिल में मेरा बासा है लुकमान हकीम का बचन है जिस समय निमाज पढ़ै दिल पर दृष्ट रख जब साधू लोगों की संगत में होवै जवान पर निगाह रख खाने के समय हलक पर निगाह रख जब घर आवै आंखों पर निगाह रख सांई को मत भूल मौत को याद रख किसी की नेकी को मत भूल बचन है दुनिया सदा जवान है किसी फकीर ने पूछा कि हे दुनिया तूने बहुत से खसम किये पर

किस कारण से जवान बनी रही दुनीयाने जवाब दिया कि जो मरद थे वो मुझसे भागते रहे और जो नामरद थे वह मुझ पर मरते रहे इसलिये मैं जवान बनी रही बचन है की सांइ को सदा सनमुख जान के डरता रहै दुनिआं से भाग तो दुनियाँ का प्यारा होगा दौलतमंद वह है कि जो किसी से कुछ न चाहै हराम अरथात अनरथ का खाना मत खा तेरी दुआ कबूल होगी जो भला हुआ चाहता है तो मा बाप को राजी रख बचन हैं कि चिंता उमरको खातीहै कंजूसता धन की हान करती है निंदा बन्दगी को खाती है तोबाह गुना को नास करता है पुन्य आपद को दूर करता है बचन है कि पांचन सीहत लड़को से सीख १ रोटी का सोच मत कर ए जब दुख होवै तो मालिक पर क्रोध मत कर जो लड़ाई हो जाई तोजलदी मेलकर जो कोई धमकावे तो रोदे कुछ जखीरा मत रख महाराज धनहै। बड़े अमोलक बचन सुनाये महाराज आपने फरमाया कि सर्व जीवों पर दया करे पर महाराज जीवका मारना तो कुरान अंजील और पुराण में लिखा है यह कैसे सुनो कुराण आदि में यह बात कही एक दो जगह लिखी होगी सोभी उसमें संदेह है कि किसी ने पीछे से लिख दिया है और दया और जीवकी रक्षा हजारों जगा लिखी हैं अब हजार जगह की बात माननी योग्य है कि एक जगह की दूसरे हम पूछते हैं कि जो और हजारों आज्ञा कुराण पुराण में लिखी हैं उनका भी कोई निर्वाह करता है या केवल मास खानाही लिखा है भला जो और अंजील कुरान पुराण में और सिखा लिखी है तौ उन सबका धारण हो तो मास भी खावो जो पापका बदला मिलैगा तो पुन क्या व्यर्थ जाइगा अब इसको हम क्याकरैं जो शुभ बातैं तो सब त्यागदीं और स्वाद के कारण अशुभ को ग्रहण किया अब क्या हिंदू क्या

मुसलमान क्या और यह कहते हैं कि ईश्वर की अज्ञा का निर्वाह इस समय में नहीं होसक्ता है पर जीवहिंसा उसकी आज्ञा के अनुसार करना बनता है कहिऐ इस समझ पर क्या धूल डालै भाई पहिले तो जीवहिंसा की अज्ञाही में धोखा है दूसरे उस समय के लिये हो कि जब मनुष्य भी पशूही थे कुछ बुद्ध न थी नाज नहीं होता था और अब वह समा नहीं है महाराज मैंने सुना है कि जीव नहीं मरता और देह जड़ है सतहै परन्तु जब मारना खाना है तब जीव प्राणको कहते हैं प्राणका देही से वियोग मरना है सोमहा पाप है बिना प्राणकी वस्तु, अन्न आदिका खाना दोष नहीं हां जिसको अपने प्राणकी सुध न रहै वह चाहै सो करै और जब तक अपने प्राणकी गमहै तब तक दूसरे के प्राणका वियोग करना महा हत्या है महाराज ओं सोहंका जपना कैसा है वह स्वारथ परमारथ दोनों का कारज बनाता है सब महात्माओंने बड़ी महिमा की है देखो ओं की महिमा गीता में कही है ॥

श्लोक ॥

ओंमित्येकाक्षरंब्रह्म व्याहरणमामुनुस्मरन् ।
यःप्रयातित्यजंदेहं सयातिपरमाङ्गतिम् ॥ १ ॥

सो अजपा है इनका ध्यान मुख्य है महाराज वाह गुरु का जाप कैसा है वाह अत्यन्त उत्तम है देखो वाह गुरु चार अक्षर हैं वा ह गु र सत जुगमें बासुदेव का जाप था सो व ह अक्षर से होता है द्वापर में हर का जाप त्रेतामें गोबिन्द का जाप और कलजुग में राम का जाप है हर का जापहसे गोबिन्द का जापग से राम का जापर से चारोंजुगों का जाप वाहगुरु में है दूसरे वाह के अरथ यह है गुरु पद का अरथ यह है गु नाम तिमर का रु नाम परकासकाजोति मर अरथात अज्ञान को दूर करके परकास करै सो गुरु

और जो दिक्षा का देनेवाला है उसेभी गुरू कहते हैं और गुरू को ईश्वर कहा है अब देखो वाह गुरू कहने में ईश्वर तक के धनवाद हुआ और मुसलमानों की किताब में लिखा है कि वाह अवाज ईश्वर को है और आदि में यही सब्द हुये हैं महाराज छाया पुरष का ध्यान क्या होता है सुनो पहिले दिन में और पीछे रात में भी तिर मिरे देखा करते हैं सिद्धांत इसका सिधी है मोक्ष दाता नहीं महाराज इस जगत का तो हाल कुछ औरही है परमारथ को कोई नहीं समझता परमहंस ने कहा ठीक है सुनो जगत का सुख प्रसिद्ध और असथूल है और परमारथ का सुख सुक्ष्म और झोना है सो जिस पुरष की बुधि सुकरम करके निरमल हुई है उसको परमारथ के सुख की भान होती है परंतु अब जीवों की बुधि मोटी है इसी कारण से झीने पदारथ में परवेस करने जोग नहीं होती हांसत पुरखों का सत संग प्राप्त हो तो कारज सहज में बन जाय महाराज मेरे पहिले प्रस्न का जावाब दीजीये परमहंस ने कहा कि नाद की उपासना सब उपासनओं से उत्तम है और अंत में साक्षात ज्ञान की प्राप्ति है किंतु इस में इतनी स्रेष्टता है कि जो अनहद सब्द का ध्यान करते हैं उनकी किसी दसा में हानि नहीं होसक्ती है और जिसने उपासना की और बातें जैसे नाम का समरण साधु गुरू की सेवा बाणी का पाठ दया धरम सील संतोख आदि बिधि पूर्वक किया है तो उसके न कोई भरम उत्पन्न होता है न मन की चंचलता सताती है और थोड़ेही समय में अनहद सब्द सुन कर सुख सब्द अर थात सत सब्द में पहुंच कर सतगुर के असथान में उन्मन होजाता है अरथात सुरत माया के परपंच से गुजर कर अपने निज सरूप मेलै होती है और जिसने पूरी उपासना नहीं की है उसके अनहद सब्द बहुत से समय में सुनाई

होता है और मन अत्यन्त संकल्प विकल्प उठाया करता है चित जमने नहीं पाता परंतु कोई नुकसान की सूरत नहीं है हां वेदांत को बिना अधिकार के सुनने से बांचिक ज्ञानी होजाने का भय है कि फिर वह मनुष्य किसी अर्थ का नहीं रहता न ज्ञानही आया और न उपासना में मन लगाता है महाराज नाद के ध्यानी तो यह कहते हैं कि पिंडे सो वह मंडे और जो कि देह असति है फिर महाराज देह में सब्द किस प्रकार सति होसकता है दूसरे सब्द आकास का गुण है सो आकास जड़ है और गुण गुणीमें रहता है इससे नाद के ध्यानी की लै आकाशमें होनी चाहिये क्योंकि शब्द की लै आकास में होगी परमहंस ने कहा सुनो जैसे आकास व्यापक है और देह में है ऐसे शब्द भी व्यापक है और देह में है इससे सत सब्द का देह में होना साबित और जो तुमने कहा कि नाद के ध्यानी की लै आकास में होनी चाहिये सुनो जो सब्द आकास का गुण है वह सब्द नकली है जथारथ में सब्द आकास का गुण नहीं परंतु आकास के करता का करता है देखो यह बेद की स्रुति है (ऐकोहं बहु स्याम्) जो तुम कहो कि यह सब्द आकास का गुण है तो पहिले आकास हुआ पीछे सब्द तो स्रुति खंडन होती है क्योंकि स्रुति का यह अभिप्राय है कि (एकहूं अनेक होजाऊं) जो तुम आकास को पहिले मानो तो ये कहना असति होगा और सास्त्र का कहना सब प्रकार से सति है आकास की उत्पति से पहिले स्रुति हुई परंतु यह ध्यान से पहिले समझने की बात है कि अक्षर बिना जिह्वा और आकास के नहीं निकल सक्ता और पुरुष के जिह्वा का होना नहीं कहा जा सक्ता क्योंकि वह हाड मास चरम का बना हुआ नहीं है इसके विसेख जब स्वामी आपही सब अस्थानों पर पूरण और व्यापक था तो

आकाश कहां था इससे यह संस्कृत के अछर (एकोहं बहु श्याम्) ब्रह्माजीके मुखसे निकले है और इन अछरों का मूल वेद की रचा है जिसको ब्रह्माजीने समझा उसमें अछर नहीं वह धुनिके समान है वह धुनि ओंकारसे उत्पन्न हुई है अब इन धुनि और ओंकार का मूल जो सब्द है वह सति सब्द है वह सब्द आकास का गुण नहीं है तथाच जिस को सत गुरू का उपदेस हुआ है वह अनहद सब्द से निकल कर ओंकार की धुन में पहुंच कर सुन महा सुनके पार सति सब्द में पहुचता है अब वह सति सब्द और पुरष एक ही है बहुधा भेद नहीं और तुमने पूछा इस समय में ध्यान बन सकता है या नहीं सुनो इस कलियुग में करम उपासना जोग्य कोई भी नहीं बन सक्ती केवल एक नाम का स्मरण या सब्द का ध्यान येही सुगम है और प्रत्यछ में मन की एकागरता के कारण है और मनकी एकागरता और मनकी अन्तरवृत्ति हुए बिना कारज सिद्ध नहीं होसक्ता वेद शास्त्र महात्माओं का एही सिद्धांत है कि मन निश्चल होवे इससे मनका निश्चल होना और क्रियाकर्मोंसे असंभवहै किंतु मन और भी भ्रमात्मक होजाता है और नेती धोती प्राणायाम इस कलियुगमें न्यून अवस्था और स्वल्प पराकर्म होने के कारण नहीं होसक्ते और जोकि मन बहुत मलीन है वेदांत के श्रवण का भी अधिकारी होना कठिन है सत्य नाम का स्मरण और भूखेको दान और सब्दका ध्यान कलियुग के लिये उपकारी समझके महात्माओं ने दृढ़ाया है सो बड़े प्रारब्धियों को प्राप्त होगा ॥

अडिल ॥

एक आस बिस्वास कहो सुख नामरे गृह में रहेउदास करो सब कामरे ॥ उर तुलसी की माल सुभग सिर सोहता। अरे हां रे पलटू नाम भेद अब चीन देख जम रोवता ॥

गुरु नानक साहब का बचन ॥

नानक सतगुर भेटिऐ जो पूरी होवै जुगत ॥ हसंदिया खेलंदिया पहनंदिया खानंदिया बिचेहोवै मुक्ति ॥

महाराज आप धन्य हैा खूब मेरे चितको विश्रामित किया अब दया करके दोचार भजन ऐसे सुना दीजिये कि जिससे शब्दकी महिमा का वृत्तांत विदित हो अच्छा प्रेमीजी सुनो ॥

राग मलार किवार महला १ श्लोक २६ ॥

घरमें घर दिखाय देशो सतगुर पुरख सुजान । पंच सब्द धुनि कारतिह बाजै सब्द निसान ॥ दीप लोय पाताल तह खंड मंडल है रान ॥ तार घोर बाजंत्र तह साचतखत सुलतान । सुख मनके घर राग सुन सुन मंडल लोलाय । अकथ कथा विचारिये मनसा मनहि समाय । उलट कमल अष्टत भरिया यह मन कत झूंनजाय ॥ अजपा जाप नवीसरै आदि जुगाद समाय । सबसखि आपंचे मिले गुरमुख निज घर बास । सब्द खोजि यह घर लहै नानक ताका दास ॥

शब्द ॥

चुअत अमीरस भरत ताल जहां शब्द उठे अस मानी हो । सलता उमड समुद्र सोखै नहिं कुछ जात बखानी हो ॥ चांद सूर्य तारागन नाहीं नहि वहां रैन बिहानी हो । बाजै बीन सितार बांसुरी रर्ंकार सुहुवानी हो ॥ कोटि झिलमिली जह वह झलकै बिन जल बरसत पानी हो । शिव अज विष्णु सुरेश शारदा निज निज मत अनुसारी हो ॥ दश अवतार एक ततराजे अस्तुत सहज सहानी हो । कहै कबीर भेद की बातें बिरला कोई पहचानी हो । करि पहचान फेर नहिं आवै जम जुलमी की खानी हो ॥

सब्द ॥

मगर महोइ सो जानै साधो ऐसा देस हमारा । वेद कि

तेव पारनहि पावै कहन सुनन सो न्यारा ॥ जात बरण कुल क्रिया नाहीं नहिं संध्या नेम अचारा । बिन जलबूंद पड़ै जहां भारी है मीठानहिं खारा ॥ सुन महल जहं नौबत बाजै किंगरी बीन सितारा । बिन बादल जहां बिजुली चमकै बिन सूरज उजियारा ॥ बिना नैन जहां मोती पोछै बिनसुर सब्द उचारा । जो चल जाय ब्रह्म यह दरशै आगे अगम अपारा ॥ कहै कबीर वहां रहन हमारी कोई बुझै गुरमुख प्यारा ॥

शब्द ॥

आदि अंत ठिकानी बातैं कहो आपनी देखीहो ॥ राह अजान पंथ को पावै चिकुटी घाट उतारा हो । अविगत नगर जाइ जहां पहुंचे मारग बिहंग बिचारा हो । बांयें चंद्र सूरज हैं दहिने सुख मन सुरत समानी हो ॥ सोहं सोहं सून में बोलै वही सब्द की खानी हो । तुरि आवैठा जाग्रत जोगी लगी उन सुनी ताड़ी हो ॥ ईंगला पैठा सहज समाजी पिंगला पवन अहारी हो । हद पर बैठा सत गुरु बोले वे हद बोलै चेला हो ॥ अजपा जाप छुटी है दुतिआ अनभो भया अकेला हो । सुन संवत द्वादस है अटवां चार तत्व से न्यारा हो ॥ पलटू यह टक साली सिक्का परखैगा कोई प्यारा हो ।

तिलाना ॥

ततरंग ततरंग लौलाई कंज कमल पर बाजति अनहद उठत रंग धम धम धरनि । दिम निस दिन सखि सुनि धुनि लागी भाग भवन सुध पाई ॥ संख मृदंग मधुर धुनि धधकत तदिमत दिम तुम तुम तरन । करत घोर घन घोर पपीहा पिव पलक पलक लख माही ॥ महल मरम मंदु घर तुलसी चरण चाल चम चम चरन ॥

आरती ॥

यह बिध आरती राम की कीजे । आतम मंद्र वार न लीजे ॥
तन मन चंदन प्रेम की माला । अनहद घंटा दीन दयाला ॥

ज्ञान का दीपक पवन की बाती। देव निरंजन पांचो पाती॥
अनन्द मंगल भाव की सेवा। मनसा मंदु आतम देवा॥
भगत निरंतर में बलि हारी। दादू न जाने सेवा तुमारी॥

सब्द॥

जाके लगा अनहद तान सोई निरगुन नाम की। जिकर करकै सिखर हेरै फिकर रारंकार की॥ जाकै लागै अजपा गगन झलकी जोत देख बिसाल की। मधि सुरली मधुर बाजे बांये किंगरी सारंगी दहिन जो घंटा संख बाजै गैब धुन झनकार की॥ अकह की यह कथा न्यारी सखा नाही आन है। जग जीवन पराने सोध के मिल रहै सत नाम है॥ जबसे अनहद घोर सुनी इन्द्री थकित गलित मन झुआ आसा सकल भुनी। घूमत नैन सिथल भई काया अमल जो सुरत सनी॥ रोम रोम आनन्द उपज कर आलस सहज भनी॥ मतवारे जो सब्द समाया अन्तर भीज कनी। करम धरम के बधन टूटे बिपता सकल हनी॥ आपा बिसर जगत सब बिसरो कित रहे पंच जनी। लोक भोग सुध रही न कोई भूले ज्ञान गुनी॥ रहे लौलीन चरनही दासा कहै सुखदेव सुनी। ऐसा ध्यान भाग से पाये चढ रहे नित सिखर अनी॥

तिलाना॥

सुरतिआ हमरे मन भायो लो सरबनसुनत गई भूल सुध बुध सब सरबन और तीन ग्राम मिल नई नई तान सुनाई लो। झनक झनक घुंगरू जहां निरतत सुहर सुहचंग बीन सारंगी सहनाई॥ गति बाजत मृदंग धधकारा धिरकट धिरकट धेतला मता किडकिडधा किडकिडधा ऊलट पलट लख अछर चिकुटी घाट ताना दिर दिर तीम तिलाना गाय लो॥ परथम घाट लख बाट तिलो के मधि जोति जगिआरी जग मगात धारा अमीझर बरसे। गरजत गगन घनानना घनानना सनमुख सदा भर पूर सूर पीआ ताके बल बल जाई लो॥

शब्द ॥

यह अचरज की बात कहो कासो कहोरी सखी। एक दिन निसा समय के माहीं सूरत चढ़ी अकास ॥ गगन घोर धुन गरजन लाग्यो फटक भवन भ्यो भास। पुनि प्रति रोज रोज अस होई खुल खुल खेल दिखात ॥ न्यारी न्यारी धुन धधकार मुरली बीन सुहात। अलख पलक के पार द्वार से सुन सहर दृसात। जगमग जोत होत जजियारी पुनि ब्रह्मंड लखात ॥ दीन दास गुरु सूर कृपा तें अधर अलोक लखात ॥ सुन्दर प्यारा सबसे न्यारा निरख निरख मुसकात ॥

शब्द ॥

जिनको सुरत नामही रमी नेह नौबत झरत तन घरकवहूं नहिं नगमी। शांत भ्रांत बिहीन मन बिच बपुखछुत सम छमी ॥ लहर लालच लोलपन बिसराई बिखरस वमी। सुध स्वास शब्द से नाम महि मधु जमी ॥ युगल अमल अननि सूरत छिन छिन पियत प्याला अमी।

लावनी——जो सतगुर के हैं साथ नरद जुगधारी।
बिन्द्रावन सो जग पार जीत नहीं हारी ॥

टेक—बिन सतगुर के आधार सूर नहीं होना। प्यारे जनम जनम हूइ हान रतन धन खोना ॥ पिआ बिन जीना तू जान अरी मरना री। जोहर बिन है चित धीर नहीं तरना री। सतगुर भरा भंडार भूख नहिं प्यासा ॥ जो पावै सतद्वार पुरी सब आसा। जिनके बिरहा काज खम लगा नहिं कारी। रहे वैसवही झख मार जनम धिरकारी ॥ पिआ ढूंढा मैं हर देस पता नहिं लगता ॥ अली तन मन दीना जार हुई मैं मंगता ॥ घर घर मांगी भीख लाज नहिं लाई। अरी जनम मरन बेवहार बंद नहिं भाई ॥ इस बिरहन का दुख देख अगिन बुझजाती ॥ डाइन दुबधा खार जिगर को खाती ॥ मारैं मिलकर तानैं तान मरद औनारी ॥

क्या सुजन्म हुआ जग मांहि हाइ सब खारी ॥ पियारे रोवैहै दिन रैन चैन नहिं पाया। कहो क्यौं कर राखे धीर सैन बिन काया ॥ नहिं कोई पहुना इस राह सफर है भारी। प्यारे जीते जानो मौत टरै नहि टारी ॥ सब सखिआ चित कठोर करी बेद रदी। अली तन मन दीना जार हुई मैं हरदी ॥ भरती हुं ठंढी हाय हुआ जल जारी। जल भुन के मैं खाक हुई सब सारी ॥ एरी सुनिये अचरज बात रोइ दुख दीना। सखी भली अभागि न साथ हाय संग लीना ॥ दुख रोवै है सीर कूट छोड़ दे प्यारी। क्यौं आई मैं तुझ पास रहो तुम न्यारी ॥ सत गुररास अपार सुकत को मूला सोई अभाग न जान सार पद भूला सो मूरख हैं बीमार नही आरामा। एरी सिरपर भूला काल वृथा नर जामा ॥ एरी करम कला बिस्तार पर नहिं पाना। सुख दुख में भर माइ जाल उर झाना ॥ शब्द बिना संसार मूल अंध्यारी। अली अंत्र साधना सार सोई बिसरारी ॥ सत सत सतगुर राम झूठ जग जानो। मन इंद्री को प्रेम बिसै पर मानो ॥ ऐरी अगम अगोचर जान वार नहिं पारी। बिन्द्राबन चित धार काल सिर मारी ॥

मलार ॥

अरी एरी मगन मनहर से। जिउ जिउ बदरिआइ से ॥

टेक—चमक चमक बिजुली की चांदनी दिखाई रुन झून जिउ मेघा बरसे। बूंदीयों की झनकार सुन सुन हरखाई अनहद की धुन जिव पर सै। सुनत पिया प्यारी मिल तन सुध बिसराई मेघ भया जब बरसै ॥ एकही सरूप देखो वाही सत रूप पेखो छूट गई इच झूठे घर सै। बिन्द्राबन सतलोक में बासागह पकडो दोउ करसै ॥

मलार ॥

अमीरस बरसैरी मेरो तन मन हरखाई काली बादली

उमड घुमड़ बिजली की चमक मेरो हिया झुलसेरी। छिन में घुम्बरी धमारी घोर अंधियारी मेरा जियरा कांपेरी॥ सुरत सुहांगिल पियाकी सनेही नौबत सुन सुन धमकैरी। मीठी मीठी धुन धधकारैं आईं॥ शंख मृदंग धुन गरजैरी काम क्रोध चक्र बज्र कीने पग धरन पर बजैरी॥ सतगुर राम सहाई दाता काल कलाड़ पैरी। सोंहं झीन झीनी धुनई सुत जल बरखैरी॥ बिन्द्राबन निशु दिन रहो हर्षाई काहे मेरा मन तरसैरी।

सावन॥

मेरी तो सुरत लागी भवन में पिया संग भयोरी मिलाप॥

टेक—चढ़े नैन स्थान से कंजा लखा जो रूप। बंकनाल के पार हो जगमग जोत सरूप॥ त्रिकुटी घाट उतार हो सुना जो मधुरा राग। शीतल बर्षा अमीकी झड़ी जो सावन लाग॥ तन मनकी सुध ना रही बसी जो पूरन धाम। लखा रूप निरगुन कला पूरन सतगुर राम॥ गगन माहि सोहं धुनी गाजै आठो जाम। बिन्द्राबन जो पञ्च है पूरन होवै काम॥ मंगल सोहंराम समीप जो रमता दरसिया। मुकत पदार्थ हाथ जो सतगुर परसिया॥ बिन सूरज उजियार चहुंदिश हो रहा। शीतल जलकी धार अमीरस बह रहा॥ उलटे नैनन देख अलख प्रकास है। पी इमरत मतवार सहज वही बास है॥ ३॥ सुन्न सिखर के माह जो नौबत बाजती। सुरत पगोजा माहि मधुर धुन गाजती॥ ४॥ बिनखाती और सीप जो मोती उपजिया होगया मेल मिलाप वही दुख बिनसिया बंक नाल के पार ठिकाना जिन किआ। सहज समाधो पाइ अनाहद चीनिआ॥ ५॥ तीन सुन्न के पार जो चौथा देखिये सति गुर हाथ दुर बीन अगम को निरखिये॥ ७॥ अट पट औघट घाट सबी से पार हो हंस गती को पाइ शब्द सेता

सारहे ॥ ८ ॥ मन निश्चल होजाय तो आपो आप है । द्वैत कलपना नास नहीं कुछ ताप है ॥ ९ ॥ मंगल मंगल होत पिया संग बास हो । दुबधा दुरमत दूर भरम को नाश हो ॥ १० बिन्द्रबन बिहार जो दसवें द्वार मे । पूरन होगयो तीन गुणा के पार में ॥

आरती ॥

पूरण पुरष आरती लाओ । सोहंराम गुरू पद ध्याओ ॥
दीपक जोत सुरत कर बाती । अनहद संख अखंड बजाओ ॥
घंटा नादि निरंतर ध्याना । प्रेमके पुहप सुफल बरसाओ ॥
दया धरम मेवा मिष्ठाना । सील सुमत के थाल सजाओ ॥
सेवा सुमरन कर सब साजा । सब्दसोथार मधुर धुनगाओ ॥
सांत सरोवर जल भर लीजे । आनदछीटसुगमछिड़काओ ॥
बिन्द्राबन बिहार लखो घट । आरतिपरसादअमरफलपाओ ॥

श्री सतिगुर राम के पंथ के श्री महंत की और कुछ साधों की और कुछ भगतों की बानी लिखते ॥

दोहा ॥

जगत उधारन कारने अचारज बानी कीन ।
हेनरच का छेड़ कर सार अंस लओबीन ॥
आचारज की छपासे सब गिरन्थपढ़ लीन ।
श्री महंत कृतार्थ सब्द ब्रह्म सु चीन ॥

चौपाई ॥

प्रथम भागमें सब्द प्रधानो । दुतिये सांख सबमतको जानो ॥
पंच देव समवाद जो कीनो । तितो भाग सोभी लख लीनो ॥
चौथे में बेदांत परकासेव । सतगुर छपा करी सो भासेव ॥
जीवन मुक्तक सा धन जोई । पंचम में भाषेव पन सोई ॥
नाद बिद्या करी परकासा । जासे सर्व दुख का नासा ॥
संत साध की बानी जोई । यामें प्रमान प्रगट कहे सोई ॥

अमृत भरी हजूर की बानी। कछु कछोरभी कहूं बखानी ॥
श्री महंत की हरो पीयासा। शब्द अनाहद करो प्रकासा ॥

दोहा ॥

स्वांत बूंद सम बचन है मन है सीप समान।
पड़े सीप में स्वात जब मोती उपजे जान ॥
अचारज बड़े पर स्वारथी बोले अमृत बैन।
चित चंचल कठोर को कर देते हैं चैन ॥

श्री महंत छत मंगल ॥

औगुन सिंध समान है गुन एको नाहीं हेा। श्री बिंद्रावन पुरष दयाल की आसा मन माहीं हेा ॥ मे.सम पतित न आन है देखा मन मझाहीं हेा। भोजल अगम अथाह है ॥ बूडा तामाही हेा। सतगुर बेग उबारी ये पकडो गहि बाही हेा ॥ काम क्रोध मद लोभ सदा यह दुख दाई हेा ॥ स्वामी निज जन जान के राखेा सरनाई हेा ॥ जनम जनम भुगतत फिरेा भौ सागर माहीं हेा। तीरथ बरतन देव की आसा मन माहीं हेा ॥ अब सतगुर के चरन बिन भावै कोई नाहीं हेा। नर तन दुरलभ देव को सब कहत सुनाई हेा ॥ यह तन नोका तरन को आगे फिर नाही हेा। यह तन मोती ओस कातिमत न नसजाई हेा ॥ बिन सतिगुर कोई दूसरेा तारन को नाहीं हेा। जिम सपने की सम्पदा देखत न सजाई हेा ॥ सुरत सबद पाये बिना कुछ हाथ न आई हेा भ्रम भरम वार बिलोकी ये जल दीखत माही हेा ॥ ज्यों मकड़ी मुख तार जग उरझो भौ माहीं हैा। जिउ तर वर पाता झरै फिर लागत नाहीं हेा ॥ तिउं नर तन चेतन तुझे फिर आवत नाहीं हेा। रूप अखंड व्यापक पूरन सब घट माहीं हेा ॥ अटल स्वरूप की बीनती साहिब अंत सहाई हेा। बिनती श्री महंत की समाप्तम ॥

आरती ॥

आरती सतिगुर राम की गाओ। सूरज चांद पर दृष्टि जमाओ॥
अनहद सबद बजे दिन राती। दसम द्वार में जोत को पाओ॥
उलट कंवल सुधा कर राखो। सुआसा का चंवर ढोलाओ॥
बीन बांसरी घड़ी ओ घंटा। ओं धुन में जाइ समाओ॥
गगन थाल सम साधन मेवा। अटल सरूप श्री बिंद्राबन धेआओ॥

दोहा

सतगुर राम की धुन करो अचारज का कर ध्यान।
बिषय कामना नास होइ उपजे निर्मल ज्ञान॥
सोई धुनि अब कहत हूं चित को मुनो लगाइ।
संध्या काल में जो करे सर्व पाप मिट जाइ॥

श्री सतगुर राम की धुनी ॥

वाह गुरु जी सत गुर राम। श्री बिंद्राबन सत गुर राम॥
सत गुर राम नाम सत गुर राम। श्री बिंद्राबन सत गुर राम॥
मेरे मन बस रहे सत गुर राम। श्री बिंद्राबन सत गुर राम॥
सद बलिहारी सत गुर राम। श्री माता सत्ता सत गुर राम॥
तू कृपालू है गुरु जी सत गुर राम। श्री बिन्द्राबन सत गुर राम॥
जल थल में तू है सत गुर राम। श्री बिन्द्राबन सत गुरराम॥
घट घट के बासी सत गुर राम। श्री बिन्द्राबन सत गुर राम॥
पूरन न्यारे सत गुर राम। श्री बिन्द्राबन सत गुर राम॥
अलख अगम है सत गुर राम। श्री बिन्द्राबन सत गुर राम॥
सत लोक निवासी सत गुर राम। श्री बिन्द्राबन सत गुर राम॥
शब्द अशब्दो सत गुर राम। श्री बिन्द्राबन सत गुर राम॥
नाम अनामी सत गुर राम। श्री बिन्द्राबन सत गुर राम॥
सत्त अनादी सत गुर राम। श्री बिन्द्राबन सत गुर राम॥
सदा रहे यक सत गुर राम। श्री बिन्द्राबन सत गुर राम॥
मारे कंस रावना सत गुर राम। श्री बिन्द्राबन सत गुर राम॥
प्रहलाद उबारे सत गुर राम। श्री बिन्द्राबन सत गुर राम॥

हां नाहीं सो सत गुरु राम। श्री बिन्द्राबन सतगुर राम॥
जो कुछ है सो सत गुर राम। श्री बिन्द्राबन सतगुर राम॥
सेवा साध बताई सत गुर राम। श्री बिन्द्राबन सतगुर राम॥
सत नाम जपाया सतगुर राम। श्री बिन्द्राबन सतगुर राम॥
अजपा जाप जपाया सतगुर राम। श्री बिन्द्राबन सतगु राम॥
सबद सो पाया सतगुर राम। श्री बिन्द्राबन सतगुर राम॥
घंटा संख बजाया सतगुर राम। श्री बिन्द्राबन सतगुर राम॥
दश पंच सरूपी सतगुर राम। श्री बिन्द्राबन सतगुर राम॥
मुरली बीन बजाई सतगुर राम। श्री बिन्द्राबन सतगुर राम॥
ठों सोहं सतगुर राम। श्री बिन्द्राबन सतगुर राम॥
मन थिर किया सत गुर राम। श्री बिन्द्राबन सत गुर राम॥
सत नाम कहा ऐ सत गुर राम। श्री बिन्द्राबन सत गुर राम॥
ज्ञान प्रकाशी सतगुर राम। श्री बिन्द्राबन सतगुर राम॥
सांतबेद लख सतगुर राम। श्री बिन्द्राबन सतगुर राम॥
आवन जान मिटाया सतगुरराम। श्री बिन्द्राबन सतगुर राम॥
कुछ नाहीं सो सतगुर राम। श्री बिन्द्राबन सतगुर राम॥
महाकाल सो सतगुर राम। श्री बिन्द्राबन सतगुर राम॥
सरब रूपहै सतगुर राम। श्री बिन्द्राबन सतगुर राम॥
संत सिरोमण सतगुर राम। श्री बिन्द्राबन सतगुर राम॥
आवां मनस गोचर सतगुर राम। श्री बिन्द्राबन सतगुर राम॥
सर्ब प्रकाशी सतगुर राम। श्री बिन्द्राबन सतगुर राम॥
स्वं प्रकाशी सतगुर राम। श्री बिन्द्राबन सतगुर राम॥
अटल स्वरूपी सतगुर राम। श्री बिन्द्राबन सतगुर राम॥
सतगुर रमनाम सतगुर राम। श्री बिन्द्राबन सतगुर राम॥

श्री माता जी की स्तुति श्री महंत छन॥

छन्द॥

सुनो मात मेरी दीन की पुकारा। बहे जात को बाँह गहि करो पारा॥
तुही आदि सत्ता जोती स्वरूपी। निरगुन निरीह हैगी अनूपी॥

तुही सुरसती होय रची बेद बानी। करे है मरजादा बड़ी है सयानी ॥
दीन जान कर जलद होवै क्रपाला। सतगुर राम के पंथपर होवो दयाल ॥
तुही ब्रह्मा होकर जगत को उपाया। तुही सिव हो के सब को खपाया ॥
तुही बिष्ण हो के प्रति पाले जीमाता। तीन लोक में तुहीतो है बिख्यांता ॥
तुही सक्त नामी अनामी कहावे। पंच सब्द का भेद तुहीतो बतावे ॥
तुही तो पंच देव माता रचीहै। क्रहू परगट कहूं गुपती छपी है ॥
तुही लछमी आदि सक्ती अनंता। कोई भेद ना पावे हेगीं वे अंता ॥
तुही पंच जोती होकर पर कासे। दसम द्वार और हृदय में मासे ॥
पंचभूतमाता जी तुहीतो बनाया। सब जगत दीसे माततेरी तो छाया ॥
सत चित आनन्द तेरा सरूपा। चतुरदस भवनकी तुहीतो है भूपा ॥
सुर असुर जन कोई भेद न पावे। नेती नेत करके बेदा बतावे ॥
तुही निरगुनी सरगुनी उभय माता। जोत सरूप सब में बिख्याता ॥
सक्त स्वरूप सब में बिराजे। सब के आद करतत को तुही साजे ॥
कहां लो बरनो मात उपमा तुमारी। कहनमैं न आवे सबसे तो नेआरी ॥

दोहा ॥

मैदीन हूं सति गुर राम सुनिये मेरी पुकार।
दूसर उपाय ना सूझता हार पड़ा हूं दूआर ॥

चौपाई ॥

सतगुर राम सुनिये पुकारा। किउंकर छोड़ मेरा निसतारा ॥
बिषै भोग में चित लगाया। सुरत सब्द का मरम न पाया ॥
डूबत हूं भव निध के माहीं। हे सतिगुरजी पकड़ो बाहीं ॥
मातापिता जिव कर प्रतिपाला। दीनजानकर होवो दयाला ॥
बार बार मैं भूलन हारा। तुम बिन को नलो मेरी सारा ॥
क्रपा कर तैं सब कुछ दीना। क्रतघनी छिन नाम नलीना ॥
रतन जन्म मानस तन कीना। बिना नाम खाख में दीना ॥
चौरासी लख जून है जेती। मानस तन से तुले न तेती ॥
बिद्या पढ़ी सांत ना आई। बरत नेम करे बहु भाई ॥

एक उपाइ कहो सुन लीजे। सुरत शब्द में चित को दीजे॥
आचरज रूप धर जग में आए। सब मारग प्रगट करवाए॥
विहार विन्द्रावन जहां जमधारा। हैजनो चढ़कर उतरो पारा॥
आचरज तुला धार बिख्याता। भवनिधि में गोता किउं खाता॥
कंज कवल पर सुरत लगावैं। अलख पुरुष में जाइ मिलावैं॥
ऐसे सतगुर दीन दयाला। मन मत में भूला बेताला॥
नाहक तैंने जन्म गंवाया। दसमदुवार का भेद न पाया॥
पीछे भूला तो अभी चितारो। अब दूसरा करो बिचारो॥
सतिगुर राम है सुझे प्यारा। अटल सरूप जिसने है तारा॥

दोहा॥

अटल स्वरूप के सतिगुर राम है दुसर हुआ न कोइ।
बार बार बलहार ने जिह कहि देखो सोइ॥

शब्द —राग काफी॥

मेरा मन मतारी माता क्यों नहिं सतगुर राम तूं गाता। रत्न जन्म तू वादे खोवै मारेगा जमदाता॥ विषय भोग यह चार दिवस के आखिर तू पछताता। काल नगारा सिरपर बाजै ताकी सुध नहिं लाता॥ धन दारासुत यहां के साथी कोई संग न जाता। काल भुअंगम आनड सै गाता का भय नहिं खाता॥ अति नगीच पिया है तेरे ताका खोज न पाता सुरत शब्द का मारग बिखड़ा। कोई कोइ साध आता॥ श्री बिन्द्रावन अटल ने पाया मिटगई जमकी घाता॥

कुंडलिया॥

रे मन मूरख बावले तू समझै नाहीं एक। तू समझै नाहीं एक मैं बहु कर समझावा। आचरज जी कृपा करी मन सुन्न में लावा॥ पंच शब्द तिह हो रहे सुख कहा नजाई। संति तो सबही कहगए किने खबर ना पाई॥ नो दो आरे तजो प्रगट भाई दसमा गुपत राख आ। नौबत झड़ै अगम की सत गुरने भेद बताया॥ सतिगुर राम सर्वच में अटल नेकरा

विवेक। रे मन मूरख बावले तू समझे नाहीं एक॥ बगले में इक बंगला देखा तिसमें पुरष अलेख। तिसमें पुरष अलेक बिनजिह्वा बानी बोले॥ जिस पर किरपा करे कपाट देवै तिस खोलै। देत्तान उपदेस भरम को दूर मिटावै लेकर साध उपदेस आनंद के मंगाल गावैं। सतगुर राम का जाप ताइ सिरोमन जानो॥ दुबधा दुर मत दूर पाप॥ होये सब हानो। सिव दीन दास के गुरू श्री विन्द्राबन पायो पुरष अलेख॥ बंगले में इक बंगला देखा तिसमें पुरष अलेख॥

सब्द

काहे सतगुर राम बिसरायो॥ प्यारे नाहक जनम गंवायौ॥ बिरह अगनने तनमन जारा। खासा भर भर आयौ॥ लिख लिख पतिआ भेजु सजन पै कोई खबर न पायौ। निस दीन नीर बहै मोह कैनो पिया परदेस सिधायौ कोनउपाइ करो मेरी सजनी जासो पिया घर आइयो अनहद नाद की डोर गही सुरत सबद सो लायौ॥ सुन्न महा सुन पार उतर कर भवर गुफा चढ धायो। सत पुरष श्री विन्द्रा बन पूरन हरी दास चरनन लपटायौ॥

सब्द॥

सतगुर राम का मेहू चेरा॥

चढ़ी सुरत गगन के माहीं। जमसे करा न बेड़ा॥ अवध गली की राह मैं पाई करा अलख में डेरा। सता लोक लौ जेती गिनती सब काहू में घेरा॥ नारद को श्री बिंद्र बन मिल गए मिट गये जनम मरन का फेरा॥

रेखता॥

पड़ा जग बीच भारी तम कुसंग तब सरहे हरदम बिसेरस चाह में माते कपट निंद्रा से हैं राते अपनपौ चीन नहिं जाना लगाई रात दिन हम हम। गुरू से नेहन किलाते रहन कुछ कहन और गाते। यह हृदा साफ

छो कसे कपट सारी समझ छुई कम। गुरु सेवा बड़ी न्यामत॥ ये मन पापी को है सम्मत। नहीं बस प्रेम से धारे इसी से छिरद्दा यह गम। करो अरपन यह तुम तन मन है सति गुर राम विन्द्राबन। सुरत जो नाद सोलावै तभी पावै यह फल सम दम। करम और भरम में लगे नहीं परकास कस जाग। दासगुर सरनकी अरजी कबूल होवै मिटै भैजम॥

शब्द॥

मन तुम श्री विन्द्राबन ध्याओरे। तन धन कुटम सरब दुख दाई इनसंग नेह नलाओरे॥ घट अंतर अनहद धुन बाजै तामैं सुरत लगाओरे। सुध रूप श्री सतगुर जीका दरसन कर सुख पाओरे॥ सतगुर राम सिंध के माहीं निज मन गोता खावोरे। गुरसरन दास की चाह यही है श्री विन्द्राबन गुन गाओरे॥

ठुमरी॥

श्री विन्द्राबन के चरन कवल हियमै मोरे बसगयोरे। पीतांबर छवि अधिक सोहावै मन मतंग को बस कर लावै। मनो घन ऊपर दामिन चमकै मनहीं मोरा हरखैरे॥ बिन देखे तलफ़त हूं रैनदिन कहो तुम बिन क्योंकर मिलै चैन नहि पड़त धीर पल पल हियरे बिन दरस तड़फ गयोरे॥ करम रेख नहि मिटत पियारे जो सहस जुग बीतै भारे। सतगुर बचन चित नाहीं धारे। कहो अब का बिध तरबै रे॥ गुर सरन दास सतगुर राम जो ध्यावै। बंसीकी तान घट मांहि सुनावै बजत नाद घन घन घनन॥ पिया के घर जावैरे॥

मंगल॥

मैं पापी बिडाल हूं सुध बुध कुछ नाहीं हो। श्री विन्द्राबन कृपाल होय राखो गह बांहीं हो॥ सतगुर तुम आधार हो काटो जम फांसी हो। गुरसेवा कुछ ना बनी जग होव तहां सी हो। अबकी बेर निज पतित को गहि राखो हाथा हो॥ मन मतंग से बस नहीं करता नित घाता हो। मैं मूरख

नादान हूं बुध साफ हिरानी हे। सतगुर राम दयाल होइ दो शब्द ठिकानो हे॥ गुर सरन दास सरन सतगुर को नित सुख पाता हे। श्री बिन्द्राबन सतनाम से आवा गवन नसाता हे॥

दोहा॥

श्री बिंद्राबन आनंद घन घट घट जानन हार।
गुरसरन दास कुछ सुख लहिओ ताप्रति करै जुहार॥

रेखता॥

भेजो सतगुर राम बिन्द्राबन मिलै नहिं फेर यह नरबन। करो तुम नाम से प्रीती यही सुख जान लो रीती॥ जगत झूठा लखो भाई मिले तुमको खराइर धन। गुरू पूरा जभी पाया चरन से प्रीत नित लाया। जुये कारज मेरे पूरे लखा सो रूप मैं घट बन। बिरह का खेल मैं खेला पिया ने बाहि गहि मेला। पियारा मिल गया माई सुखीहो सभी तन मन। सुनी धुन गगन में प्यारी जगत सुध मिट गई सारी मिला सतगुर सरन को प्यारा छके हैं नैन और सरवन॥

दोहा॥

श्री बिन्द्राबन आनन्द घन पूरण परम प्रकास॥
मनसा बाचा करमना रहूं आप की आस॥

चौपाई॥

सतिगुर राम दया निध पायौ। श्री बिन्द्राबन नाम लखायौ॥
बड़े भाग मैं सरण में आयौ। मेरे दुख सब दियौ मिटायौ॥
औगुन मेरो दृष्ट न आयौ। सब्द भेद दीना दर सायौ॥
सत पुरस का रूप बखाना। निरमाया निरद्वंद लखाना॥
मम मतिअल्पपार नहिंपायौ। सतगुरदीनसेवा चितलायौ॥

सब्द॥

सतगुर राम मिले पित मातरी। तन धन जेती और खसाई कोई साथ न जातरी॥ जब यह हंसा निकल जायगा

कोई खबर न पातरी । जो कुछ करो सो कर लो प्यारे गया समा नहीं आतरी ॥ भजन बन्दगी रूह संग मेला सुफल है येही बातरी । सतगुर राम दास चरनन बलिहारी पाई अमोलक दातरी ॥

रेखता ॥

भजो सतगुर राम बिन्द्रावन नहीं कुछ देर हो हर जन ॥ जिसै यह बूझ आवैगी उसीको सुरत जागैगी । सभी जग भोग झूठा है पसू बत होगया नर तन ॥ पड़ा सुख नीद में भूला क्रोध और काम बस भूला । पड़ी जब मार बचनों की निरोगा होगया तन मन । गुरू कृपा करी मुझ पर सुरत फेरी मेरी धुन पर लखा जब सब्द का मेला हुआ सुध साफ यह 'बर तन ॥ चरन सेवा मुझे भाई नहीं अब चित कहूं जाई । दास गुर परसाद की आसा पुरी जब मिल गया निज धन ॥

सब्द ॥

प्यारे श्री बिन्द्रावन गाओरे । सतगुर राम को धुन अति प्यारी गाओ तो फल पाओरे ॥ सुरत सब्द का मारग लेकर गगन पुरी चढ़ धाओरे । घट में तेरे तीरथ है गाता में मल मल नहाओरे । सतगुर प्रीतम की अभिलाषा चरन सरन चित चाओरे सब्द ॥ सुरत श्री बिन्द्रावन सो पागरी मन को जान यही का लानागरी । सारी अवस्था ब्यर्थ गवाई सतगुर राम नचेत अभागरी । सुन मन मेरे क्यों नहिं मानत गुर चरनन सों लागरी ॥ यह तन प्यारे चार रोजका सुरत सब्द में जागरी । जगत बिषय है सब दुख दाई इनका करतू त्यागरी । संत दास जिन अमृत चाखा हुआ हंस मन कागरी ॥ सब्द ॥ श्री बिन्द्रावन लख जागरी प्यारे हुए हंस रहे जो कागरी ॥ धीरज मूरत रूपी सतगुर मिले मुझे बड़ भागरी । चरन सरन आए सो मुकता जगत फास नहीं लागरी ॥ सतगुर राम अलख दर सावा साफ किए सब दागरी ॥ अमर लोक

निज बासा पावै जो चरनन सेा पागरी ॥ सतगुर राम सरन निज दासन दास। जगत आसदी त्यागरी ॥

छन्द

निज चरन गुर के ध्याइ के मन मुदित मेरो भयो।
बार पद को पाइ के तन शुद्ध मेरो हो गयो ॥
शीतल परसादी पाइके बुध शांत निज पद को गह्यो।
निज बाक गुर के मनन कीनो जास कर सुख वह लह्यो ॥
राम दास की चाह निज यह सेव मैं गुर की करूं।
परताप सतगुर राम से गुर नाम निज हिरदे धरूं ॥

शब्द ॥

सतगुर राम मुझे अति प्यारो। मैं मूरख कुछ जानो नाहीं मुझे गुरू जी तारो ॥ बार बार गुर पइयां लागों अबकी बार उधारो। शब्द भेद कृपा कर दीजै ॥ मोहि लगाओ पारो। गुर भगत सेवक निज दासा भगत दान आधारो ॥ ॥ शब्द ॥ सुरतिया उलट सुन्न में जागरी सुख मन सेज बिछा के पिआरी पियारे के सुख में पागरी ॥ दहने सुरत शब्द में राखे पियाकी सुन तूंरागरी बीन बांसुरी संख मृदंग धुन सब बाजन का साजरी ॥ पंच बिषय ए लूटन वाले इन को लख तू आगरी। सतगुर राम सनेही प्यारा सतगुर सेवक पायो सोहागरी ॥

राग जैत श्री ॥

माई मैं सपन में बड़ भर्मीया १ करम धरम और जप तप पूजा पण्डित नाम कहायो २ जैसे सिंघ भूलावल आपन झुंड्यो हरि दूब चरायो ३ शीस महल में खान की नाई भौंक भौंक मर जायो ४ के हर काया निरख आपनी सप्पे ने कूप गिरायो ५ ऐसी भूल भई है भारी अब सतगुर राम जगायो ६ संत सरन को नीद सभ भागी नाद मारग मैं पायो ७ ॥

छंद ॥

श्री सतगुर राम की उसतुत सुनो नर अति पावनं ।
अलख अगम सरूप सो शिव आदि करते गावनं ॥
सिद्ध जन मुन रटत निस दिन जन्म मरन नहि धावनं ।
श्री सतगुर राम की धुन सार जगको तारनं ॥
काम क्रोध बिकार जेते सरब का हो नासनं ।
सतगुर राम ब्यापक रूप पूरन सत्त है यह बारतं ॥
चित्त निरोधा शब्द सरबन मोक्ष को है कारनं ।
धुन अनाहद मद्ध गगन के होय इत एकागरं ॥
सोयम परकाश श्री बिंद्राबन तुम रघ जारनं ।
शांत बेदी पण्डिता जन नंद किशोर कहावनं ॥

धुर पद ॥

श्री बिंद्राबन पूरन दयाल जीओ पर हुए कृपाल ।
सुमिरन बिध तीन सार जिह्वा अजपा ओर नादको ॥
छल कपट तू कर त्याग हृदय से गुर टहल लाग ।
गुर दयाल धन तेरे भाग भज एक सतगुर राम को ॥

शब्द ॥

लखा जो सारो भेद सतगुर राम है पूरो । सतगुर की अज्ञा नित मानो बाजे अनहद तूरो बड़ भागी तुम उनको जानो चरन कमल की धूरो । काल कलेस मिटे इस मन के दूर हुआ सब कूरो । श्री बिन्द्राबन कृपा कीनी राम सहाय हुये दुख चूरो ॥

तिल्लाना ॥

मन गंग जमुन सरजू लेनहाई । ईड़ा पिंगला सुख मन धारा सुनत सब्द घन घन घनन ॥ सतगुर रामसरन जो लागे निस दिन सुमिरन माही ताल सुरन सर गम गम पाई । तादिमतादिम तन तन तनन ॥ श्री बिन्द्राबन चरन संगपागे

राह मिली है दाही। राम चरन चरनन के दासा धारीम धारीम मन मन मनन ॥

रेखता ॥

श्री सतगुर राम की संगत सिरोमन जानले प्यारे। भजो सत नाम हिरदे से रहो तुम जगत से न्यारे ॥ यही जिन के प्यारा है कटे जम जाल है सारे ॥ करम जंजाल से छुट कर सरन संतन से हो प्यारे। समझ और बूझ जब आई उतर गये बोझ सब सारे। ब्राह्मण ब्रह्म को चीने भरम सब दूर कर डारे ॥ जो गुर परसाद बड़ भागी सुरतदे शब्द के लारे। बचन श्री बिन्द्राबन अचारज के परोहित चित्त में धारे ॥ कबीदा॥ वाह गुरू केनामसे आसिक जन्म सुफलकियेजातेहैं। सतगुर सब्द के ध्यान में पग कर आपी में मिल जाते हैं ॥ सरन लई सतगुर की इस आपे को डाल दिया। झूठे जगकी आसा मेटी साफ बिलग होजाते हैं। जागना होइ तो जाग ले मूरख सतगुर राम का पाना सुसकल है। औसर चूके पछतावेगा दिन योही बीते जाते हैं ॥ श्री बिन्द्राबन से प्रीत करेगा दया राम बस प्रावेगा। बिना भजन इस नाम के प्यारे जमकी फांसी जातेहैं ॥ कबीदा ॥ सतनामअपारमिला येही श्री बिन्द्राबन से पाना है। जिन इमरत रस को पान किया फिरना कही आना जाना है ॥ जब सुन्न मंडल मे धाम किया तब अपना रूप लखाना है। होपार तू जग के धंधे से जिन इसी बचन को माना है ॥ सतगुर राम को जाप है रूप हिरंबर वाह गुरू को ध्याना है। सतगुर परसाद की आस चरन बिच बास इही सुख सुमिरन ज्ञाना है काल के जाल मे जीव फसे सब जगत रहा उर झाना है। तू मान बचन सतगुर राम के जो आप आपन को सुलझाना है ॥ दिन चार के भोग किये फिर आखिर को मर जाना है। तू चेत समझ असली यत को फिर

सह जे घर को जाना है सतगुर राम को जाप हो रूप हिरं बर वाह गुरू को ध्याना है सतगुर परसाद की आस चरन बिच बास येही सुख सुमिरन ज्ञाना है ॥

दोहा ॥

सतचित आनन्द रूप हो वाह गुर सतगुर राम ।
नाम भेद जिन पाइआ पूरन होये काम ॥

चौपाई ॥

इस तन में गुर पूरा पाया । निजानन्दघर मांहिलखाया ॥
जब लग अपना रूप न जानै । भूला भूला फिरैनि मानै ॥
श्रीबिन्द्रावन तुम चरननमामी । श्री गुर परन अंतर जामी ॥
मैं कामी क्रोधी बड़ भारी । सरन जान अब लेव उबारी ॥
बिषियनसे मैं अति मन लाया । तानें मुझको बड़ भरमाया ॥
मुये मुकत सबही बतलावै । आस आस जीवन भरमावै ॥
संत बेद परतीत न माने । अपनीधुननिसदिन ओताने ॥
मान के हेत मुकत बिस रावै । जगसुखकोछिनछिनमेंधावै ॥
जो कोई सार भेद वत लावै । जियतेमुकत रूपदिखलावै ॥
करम फंद गल मांही डारे । बिसै आदिके चित में धारे ॥
सतगुर जो सत रूप लखावैं । भया छत सुख चितना भावैं ॥
सतिगुरकरमारग मिलगयऊ । तनमनगुरअरपनकरदयऊ ॥
ग्रन्थ अखंड भयौ प्रकासा । दुखकलेशकोहोगयोनासा ॥
गुर सेवा यह करम रहाई । आसाकाछ कीरहीनभाई ॥
नाम रतन घट घट में चीना । मान सरोवर में सुखलीना ॥
सुन और महा सुन दरसावा । भेद अभेदसभी लख पावा ॥
अलख अगम अमरापुर पाया । सत सरूप नहीं वह माया ॥
सतगुर राम सभन सिर ताजा । जिनजाना पूरन तिनकाजा ॥
गुर सेवक निज पाया नामा । जाइ बसा अपनेगुर धामा ॥

दोहा ॥

सतगुर राम नित भज मना जो चाहत सुख लेन ।
चोरासी के छुटेते लहै सरब सुख चैन ॥

सतगुर राम जिन पाइया दूसर रही न आस।
सो जन मुकता होइगे पावै निज घर बास॥

झूलना॥

इस घर में घरकी चाह करै सतसंग की धार में बहना जी कंज कमल के घाट लगे तब आगे सुरत चलावना जी॥ तहां से रसता भिन्न हुआ दहिने को तुम चल जाना जी। आगे पंच शब्द वहां बाजत परखे उनका कहना जी हरदम में ए याद रहै एक नाम के साथ को चाहना जी॥ वाह वाह की आवाज तहां आवै बजत प्रेम से गहना जी। गुप्त प्रगट श्री बिन्द्रावन खुलें बिलोचन नैना जी॥ दास मुकता सतगुर राम पूरन अब जैजै कहते रहना जी॥

दोहा॥

वाह गुर सतगुर राम जी तुमहो दीन दयाल।
भवजल में बह जात था लीना मोहि निकाल॥

शब्द॥

सतगुर राम नाम सुमिरौंगी। पल पल लगन लगौंगी चित सों चरन कमल हिरदय में धरौंगी॥ दीन जान आपन कर लेहैं सरन गये छिन मांहिं तरोगी। दरसन पायत प्रतिज्ञ छूटै सो गरो गउन साथ हरौंगी। अधर महल साईं का बासा श्याम कंज में सुरत भरौंगी॥ मुकता दास सतगुर राम जो मिल हैं अपना काज बनाय करोगी॥

दोहा॥

वाह गुर सति गुर राम बिन मोर जापना कोइ।
जो नर इन को जपत हैं चार पदारथ होइ॥

सब्द॥

सब जग माता रीमाता श्री बिन्द्रावन नहिं ध्याता। यह झूटम झूक दो दिन के राछिन भर मोनस जाता॥ नाह कपडा भरम के माही वृथा जनम गवाता। मरतो बार संग

नहिं जावैं झूठा जग का नाता ॥ अपने सुख के साथी सब ही सुत दारा और भ्राता । नर तन दुर्लभ फिर नहिं पावै विरथा खास बिताता । पर मारथ के संगी इन को जानो श्री बिन्द्रावन और मता ॥ सत गुर दास सत गुर राम को चेरानि जस रूप दृसाता ।

होली—भैरवी सखी सब छोड़ चलनारी ॥

बहुत बरसजीलिये पिआरी आखर जम कोहि बरनारी । गावे सब विवाह के मंगल हाय हाय लग पड़ नारी ॥ मेरी डोली को चार पुरष लागे आग मैं जाइ जल नारी । होली अब राख की उड़ती देख के हाथ को मलनारी ॥ सतगुर राम की सरन आव ताकी नहीं कुछ जनम मरनारी । श्यामदास के गुरू श्री बिन्द्रावन अब कुछ जात न वरनारी ॥

रेखता ॥

लखा जब रंग सतगुरका करम औगुन मिटाया है । लज्जत भूली है सक्कर की मजाइ मिसरी का पाया है ॥ करम व्यौहार के धंधे यही सक्कर की लज्जत है । सुरत ने सब्दसे मिल करमजह मिसरी का खाया है ॥ साहब का दूर घर है गा अलख नाम उसका कहते हैं । लखा कोई संत जन प्यारा अपी मे खुद समाया है ॥ पिया पाने की मोह सतगुर अजब मंजिल दिखाया है । अनोखी धुन वहां हैगी सरवन कर मन लोभाया है ॥ श्री बिन्द्रावन स्वामी का दामन सिस लख मन दास पकड़ा है । छूटा ने से नहीं छूटैं गुरु इस मन को भाया है ॥

शब्द ॥

सतगुर रामसे खेलूंगी होरी नर तन नगर श्रीबिन्द्रावन सतकर संग मिलोरी । प्रेम भक्त पिचकारी लीन्ही राम चरन चित जोरी सोके शरीरंग बनोरी ॥ ज्ञान बैराग की माट भराई ऐसा अबीर उड़ोरी । कुम कुम कुमत दूर

कर राखो सतगुर शब्द सुनोरी ॥ उलट तिल दृष्टि करोरी। सहस कवल दल श्याम कंज में जहां यह फाग मचोरी ॥ अधर अवाज उठी अनहद की सुरत सब्द गहि पूरी। गरज सुन मस्त भयोरी ॥ घंटा संख मृदंग पखावज बीन सुरचंग बजोरी। सुरत प्रेम मगन हो चाली ॥ सो जगत आस को तोरी। चौबे रघुनाथ कहयोरी ॥

दोहा ॥

सतगुर राम की सरन में हार पड़ा हूं आइ।
बिरध अवस्था आगई नैनन नजर न पाइ ॥
पुष कलच ने छोड़िया सतगुर दीना मान।
नेमाने का मान है ने ताणेआ का तान ॥
बेनी दास गरीब की कोई दूजा नाहिं।
अन्त की बेर उधारी यों तुमहीं सबके माहिं ॥

निरगुन जात अजान हूं सेवा की वड़ चाह। सतगुर राम की सरन हूं कोई सुझे बतावे राह ॥ चित सुध के वास्ते बरतन साफ करेव। और नहीं कुछ मांगदा नाम दानगुर देव ॥ बिभूतीदास गरीबकी अरज सुनो महराज बक्षत गरीब अजान हूं तुम हो राज बिराज ॥

होली—शब्द

तेरे तिलनपरचमके चादनी भयो चंदपरकासरी। अंतर तिमर बिनासन लागा सोवत उठो में जागरी ॥ गगनमंडल मुरली की धुन सुन सखीअन मन होलाग्रही। कालीदह के घाट प्रकाशी नाग लीओ नाथरी ॥ गरीब दास आनाथ निहाल कर लीना श्री बिन्द्राबन मिले बड़े भागरी ॥

शब्द ॥

सतगुर रामदयाल मेरापै रंग डारदियोहै। भर पिचकारी शब्द की मारो कर दिओ है निहाल ॥ वाह वाह महमा

कहा लो वरनो मलदियो ध्यान गुलाल। मैं गरीब अनाथ हूं लई चरन कीलार॥ सिंध ठाकुर के गुरू श्री बिन्द्रावन तिन का रंग अपार।

शब्द॥

सतगुर राम का मैं हूं चेरा। सुरत शब्द की रेल बैठ के करा अलख घर डेरा॥ सत्तनाम में जाय रहा हूं नहीं तहं जग घेरा। झूठा जगत त्याग दे प्यारे नाकर मेरा तेरा॥ अयोध्या प्रसाद के गुरू श्री बिन्द्रावन तिनका मैं हूं चेरा॥

दोहा॥

वाह गुरू सतगुर राम बिन दूसर कोई न नाम।
जो नर इनको जपत हैं पूरन होगये काम॥

दोहा॥

नाद की करो उपासना अचारज का कर ध्यान।
बार बार ग्रंथ पढ़न से उपजे निर्मल ज्ञान॥

छंद॥

बंदों गुरु स्वामी सतगुर नामी करूं प्रणामी आप परे।
गति अपरमपारा अलष अपारा अनभव सारा लख करे॥
बानी गहि तोली अगम अमोली सन्तन खोली बेद कहे।
रघुनाथ बिचारी गुरू कृपारी सुरति सिधारी शब्द गहे॥
गुर अकथ कहानी बेद बखानी भेद न जानी नेति कहे।
जोगी अहमानी पंडित ध्यानी मुंडित स्यानी हारि रहे॥
जो पद निरबाना संत बखानाकाल हिराना प्रेम मिला।
रघुनाथ बिचारी गुरू कृपारी जागि परारी मान लखा॥
सत सुरति सहेलो खुलिकै खेली गर्ज घुमेली घोर सुनी।
घट चटकि चढ़ाई पल पल छाई दल पर आई ऐन पुनी॥
घर घरसे गवनी मेटी भवानी सुनती अवनी छबि छाई।
गुर समुद लखाई शैन कराई मान मिलाई गुर पाई।
गुर गगन गिराई गांठि खुलाई बाट बताई सुरति गई॥
सुन शब्द समानी समुझ सो बानी गुरमग छानी एक मई।

मैं मतिकर मंदी सदा निखंदी जुग जुग बंदी भूल रही ॥
रघुनाथ बिचारी गुरु कृपारी सुरति सम्हारी शब्द गही ।
सुरति संग राती शब्द सुमाती रंगसो साथी अमर भई ॥
सजि कीन्ह सिंगारा दुखसुखपारा महल निहारा सतसही ।
निरखा पियपियारा भिनभिनसारा अगमअपारा अलखलखा ॥
रघुनाथ बिचारी गुरु कृपारी सुरति सम्हारी सत्य अखा ।
परसत पद मूला भई अतूला काटे शूला भर्म गई ॥
पिय सेज सम्हारी रस सुखमारी अकहकहारी कहाकही ।
जो सूरति धाई शब्द मिलाई सिंध समाई शैल करी ॥
रघुनाथ बिचारी गुर बलि हारी भरम न सारी रूप भरी ।
दल अष्ट बखाने मूल सुजाने सुरति समाने तिलदां हैं ॥
कमला कर कंजा मनको मंजा मानस मंजा धर जां हैं ।
होती झनकारा अमृत धारा चाचक पियारा प्रेम भरा ॥
रघुनाथ बिचारी गुरु कृपारी सुरति सम्हारी भर्म टरै ।

राग——गौड़ी ॥

अन हद धुनि झन कारा साधो भाई तिलखिड़की एक द्वारा ॥

टेक—अष्ट कवल दल सूरति लौटी श्याम कंजके न्यारा । दाहै ऐनके अंदर दोतिल एक बिचारा ॥ घंटा संख किंगडी बाजै झांझ झलक झनकारा । झिल मिलि जोति प्रकाश दिखावै बिन सूरज उजियारा ॥ बिन बादल जहां पानी बरषै बहै अमीरस वारा । गरजै गगन पर नब धुनि गाजै बिकुटी महल निहारा ॥ सूरति चली मीन मारग गहि पंछी खोज बिचारा । सतगुर राम कृपा रघुनाथै सोहं नाम बिहारा ॥

राग गौरी ॥

सुरति गहि शब्द सिधारी साधो भई गुर चरनो बलि हारी ॥

टेक—दश प्रकार अनहद धुन बाजै पहिला शब्द चिन्हारी। झिंगा शब्द दूसरा कहिये सुनत रहै अल सारी ॥ घंटा शब्द तीसरा जानो चौथा संख सुनारी । पंचम शब्द बीन

का बाजै षष्टम ताल लखारी ॥ सातै बजै बांसुरी के सुर अष्टम मृदंग सभारी। नवां नफीरी शब्द बाजत है दशमें घन गरजारी ॥ दशमा शब्द सुरति जब पावै सर्व बासना जारी। पार ब्रह्म ओंकार रूप है चिकुटी रूप अपारी ॥ रंरंकार सोहंगुर धामा भवर गुफा पट पारी। सतगुर राम कृपा रघुनाथै सिंध में बुंद मिलारी ॥

राग गौरी

सत गुर राम अपारी साधो माई आप बार अस पारी ॥

टेक—जीव बिअष्टस मिष्टी ईश्वर बनसोइ ब्रह्म बिचारी। सिंध तरंग भेद नहीं कोई सूरज किरण पसारी ॥

होरी—घट घट घट गुर भेद दयोरी ॥

टेक—अष्ट कवल दल सूरति लोटी दाहै ऐनगह्योरी। दाहै ऐनके अंदर श्याम कंज पट पौरी ॥ घोर अनहद मचोरी ॥ पचरंग होरा मोती झलकै झिलि मिलि जोति झरोरी ॥ बिना नैन जहां मोती पोह्यो अस्तधार बह्योरी। परमैं नहीं जात कह्योरी। सूरति चंग पतंग डोरिगहि ज्यों आकाश चढ्योरी ॥ छाइ रहै पलछिन नहीं बिछरै बारसै पार गयोरी। पार सोइ बार रह्यौरी ॥ वह सांई बहुरंगी कहिये सब सब रूप धरोरी। सतगुर राम कृपा रघुनाथै एक अनेक भयोरी ॥ उलटि घट यह एक रह्यौरी।

छंद ॥

नमो सतगुर राम चरनन जीव काज सुधारनं।
निज दास आपन करय निश्चल भरम संसै नासनं ॥
श्री आचार्य्य बिन्द्राबन कृपालू ज्ञान दुति प्रकासनं।
चरण मानो कमल के सम मम भवर मन गुंजा रनं ॥
दरस कर नित बढ़त आनन्द काल कष्ट निवारनं।
सनकादि गुरपद रटत निसदिन रामगुर गुन गावनं ॥

शेष सुमिरन पार पावत वेद नेत बखाननं।
गुरसरन दास तजमोह निन्द्रा भक्ति गुर पद तारनं ॥

॥ * ॥ आरती ॥ *

आरती श्री बिन्द्राबन जी की। * । सतगुर राम नाम जपनी की ॥ * ॥

॥ टेक ॥

भाव भक्त का थाल सजाओ। दीपक दृढ़ बैराग धराओ ॥ घृत संतोष प्रेम की बाती। ज्ञान अग्नि परकाश अमीकी। *। सीलछिमा झाड़ी भर लीजे सूरत उलट शब्द रस पीजे ॥ अनहद घंटा संख शब्द सुन बिषय भोग रस मत मह फीकी। * । सतगुर ने दल कंजल खाया। चिकुटी जोत प्रकाश समाया ॥ अलख पुरुष के सनन्मुख ठाढ़ी। सूरत उलट भई निज पीकी। * । शिव सनकादि आदि मुनि नारद। सेस सहस मुख जपत जो सारद ॥ बिन सतगुर कोइ भेद न पायो। इरखा दोख मिटी नहिं जी की। * । दास गुरसरन कहे कर जोरी। भक्त दान देव करो निहोरी। चंद चको प्रीत ज्यों लागे येही लालसा मोरे ही की। * । आ० श्री० बिं० ॥ *

॥ * ॥ आरती ॥ * ॥

आरति सतगुर राम जी की कीजे। * । सूरत उलट शब्द रस पीजे ॥ * ॥

॥ टेक ॥

सब थाल संतोष दीप धरि। घृत बैराग बिमल कर लीजे ॥ बाती प्रेम फूल फल भगती। ज्ञान अगिन परकास करीजे ॥ * ॥ मूल कपूर हिरदय परकासे गुर मुख हो सन्मुख चित दीजे। अष्ट कवल दल स्याम कंज पर अनहद घंटा संख सुनीजे ॥ * ॥ सुरत उलट चली दस द्वारे गरजत गगन प्रेम रस पीजे। किंगड़ी झांझ मधुर मुरली धुन ओं सोहं अल लखी जो। * । ररंकार सोइ राम सुन्य में सोहं सतगुर शब्द कहीजे। श्री बिन्द्राबन परघट जानो बार पार नित दरसन लीजे ॥ कृपा करी रघुनाथ दास पर द्वैत दिष्ट संसे सब छीजे ॥ श्र० स० गु० राम० ॥ * ॥ * ॥ * ॥

बिहार बिन्द्राबनी पंथ का कुछ २ वृत्तान्त परमारथियो को बिदत होना चाहिये ॥

सो कुछ एक तले लिखे हुए खत से कि जो बीच अवध अखबार लखनऊ महीने मारिच सन अठारह सै सत्तर के १८७० में छपा था बिदित होगा ॥ उलथा खत का कि जिस्का वृत्तांत ऊपर लिखा गया ॥ जनाब ऐडीटर अवध अखबार सलामत ॥ इबारत तले लिखी हुई आप के पास भेजी जाती है और यह इच्छा है कि आप ज्यों की त्यों अपने अखबारमें छाप दीजिये॥एक हमारे मित्रों मेंसे ऐसा कहै हैं कि अबकी बरस मेला कुंभ प्राग का पुलस वालों अधिकारके कोतवाल साहब पराग की मेहनत और परिश्रम से बहुत अच्छी तरह से हुआ और मालिक की कृपा दृष्ट से मरी आदिक से मेले वाले कुसल में रहे औ एक यह नई बात मैंने देखी कि जैसे अखाड़े सन्यासियों बैरागियों उदासियों निरमले साधों आद के मेले में थे उसी भांत अखाड़ा साधों बिहार बिन्द्राबनी पंथ का निसान सहित जिसकी जरद ध्वजा थी मध्य मेले के था इस अखाड़े में यह एक बड़ी उत्तम बात थी कि प्रत समै भजन पाठ सुमरन वाह गुरु सतगुरु राम का और परमारथी चरचा होता रहता था और बहुत करके सब पंथ के साध वहां आते थे और अन्न आदि द्रव्य भी बहुत बटता रहता था। और अमावस के दिन थी बिन्द्राबन जी अचारज पंथ भी आगरे से आये उस दिन सायंकाल के समय यह देखा कि अचारज जी अपने थी महंत अटल स्वरूप सहित हाथी पर बिराजमान थे सहित छत्र आदिक समग्रीके और आगे उनके दस बारह हाथियों पर अच्छे अच्छे निसान थे और सवारी में बाजे बाजे और बल्लम बरदार भी बहुत थे और लगभग दो हजार के निरमले साध और अचारजजीके साथ सवारी

के थास थे ॥ उस समय के आनन्द का बरनन कठिन है और कहां लो बरनन करों अन गिनत जातरी अचारज जी के दरसनों से महा आनन्द को प्राप्त होकर अपने अपने भाग की सराहनाकर रहे थे और दूसरे दिन एक महंत उदासियों के अखाड़े के दो सौ उदासी के करीब अचारजजी को हाथी पर सवार कराकर अपने स्थान पर बड़ी प्रतिष्टा सहित ले गये और जिस भांति अचारज पंथ से बरतना चाहिये उसी रीत और मरजादा से बरते और इसी भांति भाई महताब सिंहजी श्री महंत निरमले साधों के पंथके बड़ी प्रीति और आदर से बरत ते रहे जहां सुना तहां एही सुना कि अचारज जी इस समय में पूरे ज्ञानी और ध्यानी और प्रकाश रूप हैं ऐसे महात्मा सामरथ वान का सबको आदर करना उचित है अचारज जी का यह कैसा अच्छा सुभाव है कि ऐसीपरभुता दोनों लोकों की पाकर सब से निम्रता और प्यार सहित बरत ते हैं यह बात सत्य है कि मेवेही की भरी डाली झुकती है और उनकी कृपा से बहुत से साधू शब्द का ध्यान और अद्वैत ज्ञान की प्राप्ती में लगे रहते हैं कंगालों की सहायता होती है देखो फैजाबाद में अन्नक्षेत्र खाना अचारज जीका किया हुआ अब तक वरतमान है बहुत से उदासियों ने अचारज जी से भेख लिया और बहुत से गृहस्थी बड़ी जातो के सरन में आए और प्रति समय बड़े बड़े आदमी राजा बाबू और सरकारी नौकर जिनको परमारथ की इच्छा रही अचारज जी के पास देखे बिहार विन्द्रावन ग्रंथ कहा हुआ अचारज जी के से इतना कुछ जीवों को लाभ हुआ है कि जिसका कुछ बरनन नहीं हो सकता अचारज जीने कई जगह पाठशाला नियत किया है सत तो यह है कि आज तक ऐसा अचारज कोई नहीं हुआ कि जिसने गृहस्त और नौकरी की अवस्था में ऐसे

सृष्टि ज्ञान को प्रापत होकर पंथ चलाया होय ऐसी ईश्वरकी कृपा अचारज जी ही को मिली है कि जो दोनों ओर ऐसी शोभा के साथ निबा रहे हैं और एक यह बड़ी सुनने में आई है कि जो जिस पंथ का हो उसको उसी पंथ के अनुसार उपदेश देकर सत ज्ञान दृढ़ कराते हैं पक्षपात किसी तरह नहीं रखते सत्य है कि बिना कृपा ईश्वर की कौन पंथ चला सक्ता है हां ऐसी सामर्थ और सिद्धता अचारज जी ही में देखी निस्संदेह इस समय में उन लोगों के बड़े भाग जानने चाहिये कि जो अचारज जी के प्रीति सहित दर्शन करै ॥ और आसहै कि और अखबारों के मालिक भी इस वृत्तांत को अपने अखबार में लिखेंगे कि जिससे स्वारथ परमारथ का भला है ॥

दसखत हकीकत गोई अर्थात सतवकता

रेखता ॥

बही जब नाम की धारा भया मन मस्त मतवारा ॥ तरंगे प्रेम की उमही मिली जहं सिंध निज सारा ॥ करारे लाज के धाये नही है वार अब पारा ॥ बिना सतगुर राम के कृपा करे को आनि निरबारा ॥ कहै गोबिंद कर जोरी दया कर कीजिये पारा ॥

नक़ल तहरीर कोतवाल साहब इलाहाबाद ॥
वमोजिब आरडर सरदार नारायण सिंह इन्सपेक्टर

सहर मोहतमिम मेले माघ इलाहाबाद ॥

———०००———

जोकि अखाड़ा साधान बिहार बिन्द्राबनी पंथ का दो साल मेले पिराग राजमें वास्ते स्नान के आया और दूसरी बार मेला कुंभ का था चुनाचे अखाड़ा मज़कूर को जगह फर दोबार सुतसिल ख़ास चौक वैरागी साधानके पास बरा बर दिया गया व अखाड़ा मज़कूर बरोज़ अमावस मेला कुंभ में व इमराही अखाड़े निरमले साधानके वास्ते स्नान बीबेनीमाधोजी के गया था औ मैं मुहतमम मेले माघ इस तहरीर को ईमानन लिखता हूं कि चलन इस पंथ का नेक है व स्वामी अखाड़े बहार बिन्द्राबनी हज़ारहा रुपये परमार्थ अपनी ज़ातसे सरफ़ करते हैं और अपने धर्ममें बड़ा येतक़ाद रखते हैं अगर आयंदह भी अखाड़ा मज़कूर वास्ते असनान के चबेनी किनारे आवै तो जगह मुताबिक़ सदर के इनको दिया जावै ॥ ग़रज़ इस तहरीर से यह है कि जो अफ़सर बंदोबस्त करै वह मुताबिक इसके करैगा तो कुछ तकलीफ वाक़ै न होगी व इसका अज्र मिलैगा ॥

मरक़ूम १५ फरवरी सं० १८७० ईस्वी

[बक़लम बाबू लाल]

दस्तख़त बमुहर सरदार नारायन सिंह कोतवाल ॥

अब महाराज संक्षेपता से इस समय के अनुसार
मुक्त के साधन कहिये

सुनो—बड़े और सज्जनों और साधु गुरू और अपाहज की सेवा और जीव की रक्षा तन मन धन से विचार और संतोष सहित करना पहिला साधन है पुरुष को सब चराचर में पर पूर्ण अंतरजामी जान कर निष्कपट वाहगुरू सतगुरूराम नाम का स्मर्ण बानीका पाठ और प्रार्थना करना और शब्द अपने अंदर सुनना दूसरा साधन है ऐसे साधनोंसे मन शुद्ध और थिर होकर निजपदको जोसरबज्ञ सुख का समूह है पावैगा

महाराज आपका सिद्धांत क्या है मानो सूरज है कमल के अथाना पन्न जो ममोक्षी जनो का हिरदा है उसको प्रकाश करने वाला है जैसे सूर्य के उदय होने से कमल खिल जाता है हां कमोदन मुंद जाती है सो जिन मनुष्यों का हिरदा कमोदनवत है और विचार से रहित है अर्थात बुद्धि विहीन है सो आनन्द की प्राप्ती से विमुख रहते हैं महाराज धन्न है धन्न है आप जैसा सिद्धांत कौन कहि सक्ता है मैंने बहुत से मतोंके साधन और सिद्धांत सुने परंतु परसपर विरुद्धही पाया और जो साधन और सिद्धांत आपके मुखारबिंद से सुना सो ऐसा है कि जिसका विरोध किसी मत से नहींहै सर्व्व जीवों का कार्य सुगमसे करने वाला है चेतन्न सेवा नामका सुमिरन पाठ शब्द का ध्यान क्या अमोलक साधन है जिस्से बिबेक सहित बनै वो निस्सं देह आवा गमन से रहित होकर निज स्वरूप सच्चिदानंद हो रहैगा ॥

ग्रन्थ करता की प्रार्थना ॥

अब ग्रन्थकर्त्ता ईश्वर और संत महात्माओं से यह प्रार्थना करता है कि जो कोई विहार बिन्द्राबन को प्रीति से निष्काम अर्थात संसारी और परलोक के सुख आदि

की कांक्षा बिना पढ़े और सुनें उनके चित्त संसारी कामना और मिथ्या ध्यानों से अत्यंत शुद्ध होकर निश्चल और एकाग्र होजांय और दिव्य दृष्टि प्राप्त हो ॥

दोहा ॥

मनके अस्थिर होतही दरसे सत्य सरूप ।
मिथ्या तम की हानि है बिन्द्राबन लखरूप ॥

और जो शब्द का अभ्यास करें उनको सुगमता से सत्य शब्द की प्राप्ति हो और जो सकाम पढ़ें उनके लोक पर लोक की शुभ इच्छा पूर्ण हो और सब क्लेश दूरहों और गुरू साधु ब्राह्मण और भूखे की सेवा करने की उत्कंठा हो जो कि यह विनय और अभिलाषा सत्य अंतःकरण से जीवों के आनन्द और कल्याणके वास्तेकी गई है और जोकि यह प्रगट है जो सच्चे दिलसे पढ़े सुनेंगे वे निस्संदेह सज्जन और अच्छे कर्म कर्त्ता और सब के प्यारे होंगे इससे मुझे निश्चय है कि मेरी प्रार्थना स्वीकार होकर पूरी होगी आगे गुरू मालिक और हरिइच्छा अवलोकन करने वालोंसे यह प्रार्थना है कि जो मेरी भूल चूक दृष्टि पड़े उसे यह क्षमा करके मुझ पर कृपा दृष्टि देखें और आप दयालु कह लावैं एक पंथ दो काज ॥

भाग पांचवां समाप्त सत्य नाम की होय प्राप्ति ॥

गुरू की कृपासे बिहार बिन्द्राबन सांतबेद आगरेकी पन्नी गली के रहने वाले महाराज सच्चिदानंद सरूप श्री बिन्द्राबन जी आचार्य पंथ बिहार बिन्द्राबनी की कही हुई दूसरी बार छपी ॥

मिति सावन शुदी पंचमी सम्बत १९३० दिन मंगलवार
तारीख़ २९ जुलाई सन् १८७३ ई०
सतगुर राम ॥

———000———

शुद्ध पत्र

बिहार बिन्द्राबन सांत वेद का ॥

——oo——

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	११	घा	चा
६	१	ठ	उ
६	२	भा	मां
१३	७	करनो	करनारी
१३	११		व
२५	६	वुग	वुग़ज़
२७	१८		चो
२८	१०		जि
२८	२०	वि	व
४०	७	ना	ज़ा
४२	१	माग	मार्ग
४६	२०	ख	खे
४८	२७	जागा	लागा
४६	२६	शीघ	शीघ्र
५०	२	अधिक	अध
५१	२४	जा	जो
५२	२१	तनजव	तनजेव
५४	१	हठ	हट
५४	११	कूटल	धुन
५४	१६	गइया	रमयया
५४	१७	मेभेमा	भेसभा
५५	२७	दी	
५६	२७	जान	जाने
६०	१६	न	
६२	२४	शूता	शूलता
६३	२४	मये	मये

भाग दूसरा ॥

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
७२	१३	शच	शस्त्र
७५	१४	हे	
७७	१३	परका	परकार
७८	१४	अभ्यास	अभ्यास
७८	१५	न	
८०	१३	तय	लय
८५	१	जापत	जाग्रत
६२	१५	चोर	ओर
६५	२८	सिमरो	सिमिरों
६८	१२	ह	हे
११६	१८	घड़के	चड़के
१२१	६	घोका	धोका
१२२	२१	आया	माया

भाग तीसरा ॥

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३१	२४	अमलकरैगा	अमलनकरैगा
१५२	१	अच्छे	अच्छे
१५२	१५	उम	उस
१५४	१२	हलये	हलुये
१५४	२१	टो	टोनो
१५६	१५	उसा	उसी
१५६	२१	नहोने	होने
१६६	२६	कहते हैं	करते हैं
१६८	३	पड़े	पेड़े
१७०	१	साल	सील
१७१	१३	मा	भी
१७१	२५	जगत	जगत
१७६	१८	मिन	मिला
१८८	२४	लोहे	लोहेकि
१८६	६	छटा	छुटाया
१६०	१३	वहा	वह
१६०	१६	भाग	भागे
१६१	१	चल	चलूं
१६२	१०	समय	सम
१६४	१७	मंची	बची
१६५	४	टेस	देंह
१६५	२६	मरत	मूरत
१६५	२७	भगवान	भागवत
१६६	१५	ऐसा	अैश

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१६६	१	भंचो	मंची
२०६	१७	म	जम
२०७	११	क्षपा	क्षपाल
२०७	१७	न्ह	न्हा

चौथा भाग

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२११	१२	अह	अहं
२१२	१२	झठा	झूठा
२१३	४	अवरोत्त	अपरोक्ष
२२१	७	धप	धूप
२२१	१५	धप	धूप
२२२	१७	घप	घास
२२२	२४	मम्पन्न	सम्पन्न
२२६	८	जा	जो
२२६	२१	सुतोष	संतोष
२२७	४	असत्य	असत्य
२२७	६	मल	मूल
२३०	२४	प्रतिभासिक	प्रतिभासिकसे
२३१	२६	पछती	पूछती
२३२	६	हु	हुआ
२३२	२४	कड़का	लड़का
२३७	१७	अरो	औरों
२३८	१३	वचक	वचन
२३६	११	अप	आप
२४०	२६	हम	हम
२४१	२२	परण	पूरण
२४३	१४	हैं	है

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२४७	२४	ओर	
२५१	१३	संस्क	संस्कृत
२५२	२८	सहातया	सहायता
२५४	१५	ज	जि
२५४	२२	ठो	जो
२६०	४	चिन्	चिन्त
२७७	३	आट	आटा
२९४	५		या
२९४	१०	देतवा	देवता
२९६	१३	नाई	भाई
३०२	२	रचि	रवि
३०२	७	भति	मति
३०२	७		न
३०८	२	माया	माया
३०९	४	इसमे	इसमें
३१०	७	भुलाव	भुलावे
३१०	१४	व्यस	व्यासा
३१५	९	पपिले	पहिले
३१६	२४	नहिखाई	नदिखाई
३२०	५	लाई	भलाई
३२०	१३	इसको	इसको
३२२	२३	झठो	झूठो
३३०	१	ता	तुम
३३२	२३	टोष	दोष
३३३	२७	सुपना	सुखना
३४२	४	भानत	मानत
३८७	१३	भाया	माया
४०२	७	गमसु	सुगम
४०२	१८	दररैननहो	दरसैनही
४०५	३	महा	महा

पचवां भाग

४२४	२	कंरी	कंपेरी
४२४	६	ड	डर
४३१	२	बगले	बंगले
४५१	२	ओर	ओर

इति



